श्रीयतीन्द्रविहार-दिग्दर्शन.

संयोजक—

व्याख्यानवाचस्पत्युपाध्याय—

मुनिराज श्रीयतीन्द्रविजयजी महाराज.

श्रीमद्राजेन्द्रसूरि–जैनग्रन्थमाला–पुष्प २१

श्रीयतीन्द्रविहार-दिग्दर्शन

(प्रथम–भाग)

संयोजक—

व्याख्यानवाचस्पत्युपाध्याय—

मुनिराज–श्रीयतीन्द्रविजयजी महाराज ।

प्रकाशक–

फतापुरा (मारवाड) निवासी–

श्रीसौधर्मबृहत्तपागच्छीय–श्वेताम्बर–जैनसंघ ।

श्री वीर नि. सं. २४५५	प्रथमावृत्ति	विक्रम सं. १९८६
श्रीराजेन्द्रसूरि सं २३	५००	सन् १९२९ इस्वी

मूल्य-सदुपयोग ।

भावनगर–आनंद प्रीन्टींग प्रेसमें शाह गुलाबचंद लल्लुभाइने छापा.

समर्पण !

जैनपरिपन्थी-शिथिलाचारियों के बढते हुए विषम वातावरण के समय में जिन्होंने समस्त उपाधियों का त्याग कर के प्रभु श्रीमहावीर के कथित सिद्धान्तों का प्रचार किया, जिन्होंने श्रुतकेवली, पूर्वधर और बहुश्रुताचार्यों से समाचरित आगमानुसारिणी विशुद्ध क्रिया का भान करा के, मर्यादा पूर्वक अप्रतिबद्ध विहार और उपदेशों से जैनाभासों के चंगुल में फसी हुई अनेक भव्यात्माओं का उद्धार किया और जिन्होंने अपनी तत्त्वपूर्ण-सुन्दर कृतियों से जैन और जैनेतर जगत् में प्रसिद्धि पाई।

उन सर्वतंत्र-स्वतंत्र, परमयोगिराज, जगत्पूज्य, प्रातःस्मरणीय आबालब्रह्मचारी, शासनसम्राट, स्वर्गस्थ गुरुदेव श्रीमद्-विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज की पवित्र सेवा में मुझ पामर की यह लघु कृति सविनय, सादर और सप्रेम समर्पित है।

गुरुपदकजसेवाहेवाक-मुनियतीन्द्रविजय।

पूज्यपाद–व्याख्यानवाचस्पति

श्रीयतीन्द्रविजयजी महाराज

मधुराऽतिप्रियाचैव, भारती यस्य शोभते।
स श्रीयतीन्द्रविजयो, जयतान्मुनिसत्तमः॥

जन्म १९४०. दीक्षा १९५४.

Lakshmi Art, Bombay. 8

अकारादिविषय-निदर्शन ।

नंबर	विषय	पृष्ट
	अ	
३५	अखवाडा	५८
१२४	अगवरी	१४७
७६	अडिया	९३
१०१	अनादरा	११८
४९	अमरेली	७६
	आ	
५०	आकडिया	७७
११६	आकोली	१२९
१७०	आणा	१९०
७४	आदरियाणुं	९०
१००	आबू-तीर्थ	११२
२६	आमली	५४
१५३	आलावा	१६५
११९	आहोर	१३१
	ई	
०	ईढाटा	२४२
२०	ईसरवाडा	५२
	उ—ऊ	
१४	उमरेठ	५०
११२	ऊड	१२७
१३३	ऊन्दरी	१५२
१७१	ऊनडी	१९०
९४	ऊमरी	१०७
	ए	
२८	एबदपर	५४
१६२	एलाणा	१८६
	ओ	
७१	ओडुं	८९
१६५	ओरवाडा	१८७
	अं	
१२	अंगाडी	४९
९८	अंबावजी	११०
	क	
८२	कल्याणा	९८
१४५	कवलां	१६३
१३१	कानपुरा	१४९
१	कुकशी	३७
,,	वावनगजा	४०
,,	तालनपुर	३९
५१	कुकावाव	७७
८०	कुणधेर	९३
८	कुन्दनपुर	४८
९७	कुंभारिया	१०८

६६ कोंढ ८७
८७ कोदराम १००
१३० कोरटा—तीर्थ १४९
१४१ कोशिलाव १६०

ख

१६४ खरल १८६
९९ खराडी १११
१४० खिमाडा १६०
१३५ खिमेल १५६
६२ खोराणा ८६

ग–घ

० गणेशपुरा २५०
४७ गारियाधार ७६
६९ गाला ८८
३६ गिरनारजी ८०
१९३ गुडा-बालोतरा १४६
३६ गोघाबंदर ५८
५९ गोंडल ८४
१० गोधरा ४९
५८ गोमटा ८४
१११ गोयली १२७
१६३ गोल १८६
४४ घेटी ७५

च

३२ चमारडी ५६
१२० चरली १४२
८८ चाणशूल १०१
४६ चारोडीया ७५
५२ चूडा ७७
१६७ चोराउ १८८

छ

१७९ छोटाराणीबाडा २१३
१२८ छोटालखमावा १४८

ज–झ

१८३ जडिया २१७
७८ जमणपुर ९३
१८० जाखडी २१३
० जाणदी २५१
१६० जालोरगढ १६९
११३ जावाल १२७
६७ जीवा ८७
१४८ जुआणा १६४
५५ जूनागढ ७८
१९३ जेतडा २२७
५७ जेतपुर ८३
१५१ जोगापुरा १६५
७२ झींझुवाडा ८९

ट–ठ

३ टांडा ४१
११ टिम्बारोड ४९
९२ टेबू १०६
४१ ठासेज ६०

ड–ढ

४९ डभाड १०१
१३ डाकोर ५०
० ढीमा २४३

त

१४६	तखतगढ	१६३
३७	तणसा	५९
३९	तलाजा तीर्थ	५९
९०	तारंगातलेटी	१०१
९१	तारंगा तीर्थ	१०१
३८	त्रापज	५९

थ

१९५	थराद	२२७
१५६	थांवरा (ला)	१६८

द

१२२	दयालपुरा	१४५
९६	दांता-भवानगढ	१०७
१७३	दासपा	१९१
९	दाहोद	४८
•	दूधवा	२५१
४०	देवलां	६०
७०	देहगाम	८९

ध

१८४	धानेरा	२१७
७३	धामा	९०
६८	धांगध्रा	८८
२७	धोलेराबंदर	५४

न

१७५	नरता	१९२
९५	नागरमोरिया	१०७
११२	नांदिया	२२६
१८९	नेहडा	२२६
१२७	नोवी	१४८

प-फ

४५	परवडी	७५
८१	पाटण	९३
१७२	पांथेडी	१९१
१७४	पादरा	१९१
६	पारां	४६
१०२	पालरी	११९
४३	पालीताणा	६१
१९४	पावर (ड)	२२७
१२७	पावटा	१४७
१४३	पावा	१६१
२५	पीपली	५३
१५०	फतापुरा	१६४

ब

११४	बलदूट	१२८
३१	बला	५५
२	बाग	४०
११७	बागरा	१३०
१४२	बाबागाम	१६१
,,	दणो	१६१
१५५	बूडतरा	१६८
२९	बेलावदर	५५
२३	बोरु	५३
२४	बोलाद	५३
१३९	ब्राह्मी (वरासी)	१५९

भ

१८२	भाटी	२१७
१६८	भांडवातीर्थ	१८८
३४	भावनगर	५७

१९९	भारुंदा	१६४	
९३	भालूसण	१०६	
१५	भालेज	५०	
१३४	भूति	१६२	
१७६	भीनमाल	१९२	
१४८	भीलडियाजी	२२२	
१५७	भेंसवाडा	१६८	
०	भोरोलतीर्थ	२४४	
	म		
१६१	मांडवला	१८५	
१२१	मादडी	१४३	
७६	मुजपर	९२	
१६९	मेंगलवा	१९०	
८३	मेत्राणा तीर्थ	९८	
१०४	मेडा	१२०	
१८	मेलाय	५२	
४८	मोटा लीलिया	७६	
१२९	मोटा लखमावा	१४८	
	र		
१८१	रतनपुर	२१४	
३०	रतनपर	५५	
६१	राजकोट	८५	
५	राजगढ	४२	
,,	मोहनखेडा तीर्थ	४५	
५३	राणापर	७८	
७	राणापुर	४८	
१३८	राणी	१५९	
१३७	राणी–स्टेशन	१५८	
१८५	रामसेण	२१८	
४	रींगनोद	४१	
,,	भोपावर तीर्थ	४२	
६०	रीबडा	८५	
१४६	रोडला	१६३	
१७७	रोपी	२१२	
१५२	रोबाडा	१६५	
	ल		
१९२	लुआणा	२२६	
८६	लूणवा	१००	
६४	लूणसरी	८६	
१५९	लेटा	१६९	
	व		
२२	वटामण	५३	
५४	वडाल	७८	
१३६	वरकाणा तीर्थ	१५७	
३३	वरतेज	५६	
१८६	वरण	२२२	
१८७	वरनोडा	२२२	
१७	वरताल	५१	
२१	वरसडा	५२	
१९०	वात्यम	२२६	
१०९	वामनवाडजी	१२५	
०	वामी	२५०	
६३	वांकानेर	८६	
१	वावस्वस्थान	२४०	
१९१	वाहणा	२२६	
१०८	वीरवाडा	१२५	
१६	वोरियावी	५१	

श

७५ शंखेश्वर तीर्थ ९७
४३ शत्रुंजय तीर्थ ६३
१३२ शिवगंज १४९

स

१५८ सकराणा १६९
१०५ संदरुट १२३
१०७ सनवाडा १२४
८५ सभोडा १००
६५ सरा ८७
११५ सवणा १२८
१६६ सायला १८७
,, आलासण १८८
१३४ सांडेराव १५३
८४ सिद्धपुर ९९
११८ सियाणा १३०
१०६ सिरोही १२३
१०३ सीरोडी ११९
१७८ सीलाण २१२
१२५ सेदरिया १४७
१९ सोजीत्रा ५२

ह

० हमीरगढ १२१
१५४ हरजी १६६
७७ हारिजरोड ९२

जिनप्रतिमा, शिला और प्रशस्तिलेखवाले स्थान—

११६ आकोली १२९
११९ आहोर १३१
१ कुकसी ३७
१३५ खिमेल १५६
१८० जाखडी २१३
१६० जालोर १६९
० ढीमा २४३
८१ पाटण ९३
२ बाग ४०
१४४ भूति १६२
१७६ भीनमाल १९२
१८८ भीलडिया २२२
० भोरोल २४४
१२१ मादडी १४३
१८१ रतनपुर २१४
५ राजगढ ४२
० मोहनखेडा ४५
१८५ रामसेण २१८
१६६ सायला १८७
१३४ सांडेराव १५३
१०३ सीरोडी ११९
० हमीरगढ १२१
१५४ हरजी १६६

मननीय—सद्विचार—

उत्तमोत्तम ग्रन्थों का पढ़ना और उन पर मनन करने का सौभाग्य जिसे प्राप्त है उसके सामने चंचल लक्ष्मी का विनोद किस गिनती में है ?, उत्तम पुस्तकें ही सच्चे मित्र हैं। वे अपनी चिंताओं को दूर करते हैं। क्रोध आदि बुरी वृत्तियों को वश में रखने और निराशाओं को नाश कर उत्साह पूर्वक आनन्दमय जीवन व्यतीत करने में वे मदद देते हैं। विश्व का ज्ञान पुस्तकों में हैं। जिस घर में सद्ग्रंथों का पठन मनन नहीं होता, वहाँ हमेशा ही अशान्ति, आलस्य, विलासिता अनीति आदि दुर्गुणों का राज्य है।

विचारों को उत्तम बनाने का यदि कोई साधन है तो सत्संग या साहित्य ही है, परन्तु सत्संग को प्राप्त करना जितना दुःसाध्य है उतना पुस्तकों का संग्रह कर पठन और मनन करना नहीं है और पुस्तकें खुद भी तो एक प्रकार का सत्संग है। क्यों कि उनमें भूत और वर्त्तमानकाल के अनेक महा पुरुषों के सारे जीवन के अनुभवों और उपदेशों का सार है।

योरप, अमेरिका, जापान आदि देशों में राजा से लेकर गरीब मजदूर तक पढने लिखने और अपने ज्ञान बढाने की कोशीष करते हैं। वहाँ घर घर में उत्तम पुस्तकों का संग्रह मिलता है। कारण यही है कि वे देश इस गुण में समुन्नत हैं हम सब को उन गोरे (युरोपीय) भाईयों के इस गुण का अनुकरण करना चाहिये। हमारी उन्नतिकी खरी निशानी यही है।

दिव्य—जीवन

ॐनमोऽर्हद्भ्यः ।

प्रस्तावना

दीसइ विविहचरियं, जाणिज्जइ सज्जणदुज्जणविसेसो ।
अप्पाणं च कलिज्जइ, हिंडिज्जइ तेण पुहवीए ॥ १ ॥

देशाटन से विविध आश्चर्य देख पडते हैं, सज्जन दुर्जन की विशेषता का पता लगता है और आत्म विकाश होता है । अतएव देशाटन (विहार) करना चाहिये । (आगम)

देश विदेश फरी फरी, जुए जगत लालाश ।
तो उपजे उरमां पछी, विशेष बुद्धिप्रकाश ॥ १ ॥
अबुद्ध बुद्धि आपवा, विचरो चारे पास ।
फलशे फल अतियत्नथी, विशेष बुद्धिप्रकाश ॥ २ ॥
वहता पानी निरमला, भर्या गंधीला होय ।
साधु तो रमता भला, दाग न लागे कोय ॥ ३ ॥
प्रयाण करि परदेशमां, परवारि लांबे पन्थ ।
कोटि कला कौशल्यता, गुणिजन लावो ग्रन्थ ॥४॥

इन सूक्तों से विहार से मिलनेवाले लाभ का असली पता भले प्रकार लग सकता है । अतएव जैन साधु साध्वियों को चातुरिशकाल के सिवाय शेष काल में शास्त्र-मर्यादा पूर्वक विविध

सिद्धान्त सामग्री को प्राप्त करने, बुद्धिबल को बढाने, आत्म विकाश करने, देशाचार–विचारों को जानने, शरीरस्वास्थ्य प्राप्त करने, भिन्न भिन्न प्रकृतिक मनुष्यों के स्वभाव को समझने और संसारवासी भावुक वर्ग को आर्हद्धर्म संबन्धि वास्तविक तत्त्वों का भान कराने के लिये अप्रतिबद्ध विहार करते रहना चाहिये।

जो साधु साध्वी कूप मंडूकवत् गृहस्थों के मोह में फंस कर एक ही गाँव, या उपाश्रय में पडे रहते हैं, उन्हें संसार की वास्तविक, या अवास्तविक वस्तुस्थिति का पता नहीं लग सकता। इतना ही नहीं, बल्कि ऐसे शिथिल स्वच्छन्दचारी साधु साध्वी अपने अमूल्य संयमधर्म और मानवजीवन को बरबाद करके दुर्गति के पात्र बन जाते हैं। ऐसे साधु साध्वियों से समाज को कुछ भी फायदा हासिल नहीं होता. किन्तु उलटे वे समाज को भारभूत हो पडते हैं। दर असल में ऐसे ही शिथिलाचारियों के लिये लोगोंने यह सूक्त उच्चारण किया है कि—

स्त्री पीयर नर सासरे, संजमियां थिर वास।
एता होय अलखामणा, जो मंडे नित वास ॥ १ ॥

एक गुजराती साक्षरने ठीकही लिखा हैं कि—

કેટલાક મનુષ્યો જે જાત્યંધ થાય છે જેઓ બીજાને દેખતા નથી. તેમ કેટલાક મનુષ્ય પોતાના દેશ સિવાય બીજા દેશનું, બીજા ધર્મનું; બીજા સમાજનું કે જ્ઞાતિનું સારૂં જોઈ શકતા નથી અને જોઈ શકતા નથી તો સીખી પણ શકતા નથી. કુવાના દેડકાની માફક પોતાના નાના વર્તુલનેજ જગત સમજી લે છે.

આવા મિથ્યાભિમાની જનો ખરેખર પોતાને નુકશાન કરે છે. એટલું જ નહિ પરન્તુ પોતાના પાડોશના આંધળ દેશ, પોતાની સમીપના આંધળ ધર્મને, પોતાના પાસેના આંધળ સમાજને પણ વ્યર્થ નુકશાન કરે છે, આવા સ્વદેશની, સ્વધર્મની કે સ્વસમાજની અભિવૃદ્ધિના વૈરી જગતમાં રાક્ષસની પેઠે પોતાનો અને પરનો નાશજ કરે છે. આટલું જ નહિં પરંતુ ઉચ્ચમાં ઉચ્ચ મનુષ્ય જન્મ હોવા છતાં શાલારૂપ જગતમાં રહી જાણે આ જગતમાં રહેવાને લાયક ન હોય તેમજ પલાયન પણ કર્યા કરે છે.

जैनों की भारी कमी होने का आज जो जटिल प्रश्न खडा हो रहा है उसका असली कारण खोजा जाय तो मुनिविहार का अभाव ही है। यदि नियम पूर्वक सर्वत्र मुनिवरों का विहार होता रहे तो अधिक नहीं तो मूलपूंजी (अवशिष्ट जैन संख्या) में तो किसी तरह घाटा पडने की संभावना खडी नहीं हो सकती।

अरे ! अन्धश्रद्धालुओं का मोह और शिथिलाचार की मौजमजाह छोड कर अप्रतिबद्ध विहार किये विना प्रतिगाँवों, या प्रतिदेशों के भावुकों की धार्मिक स्थिति, जिनमन्दिर, ज्ञानभंडार, पाठशाला; आदि की आर्थिक स्थिति और जनसमृद्धि का पता किस प्रकार लग सकता है ? जब इन बातों का पता नहीं, तब उनके सुधारने की आशा निराशा ही समझना चाहिये।

आज इतिहास के अतिगहन विषय को परिस्फुट करके दिखलाने वाली, पूर्वकालीन जाहोजलाली को प्रत्यक्ष बताने वाली और आदर्श आत्माओं के कृतकार्यों का स्मरण करा के आश्चर्यान्वित करनेवाली तीर्थमालाएँ, ताम्रपत्रों के लेख, प्रशस्तिलेख और

दानपत्रा उपलब्ध हैं, वे अप्रतिबद्ध विहार के वास्तविक रहस्य को ही प्रगट कर रहे हैं।

जिन अश्रुतपूर्व बातों का हमे पता तक नहीं था, वे आज हमे हस्तामलकवत् दिखाई देती हैं, और हमारे पूर्वजों की आर्थिक शक्ति, धार्मिकशक्ति, और आत्मिकशक्ति का भान कराके आश्चर्य-निमग्न करती हैं। इतना ही नहीं किन्तु, हमारी हार्दिक भावनाओं में उत्तेजना शक्ति प्रगट करके वैसा ही बनने को उत्साहीत करती हैं।

सोचो कि यह सब प्रभाव किसका है ? कहना ही पडेगा कि क्षेत्रों का, उपाश्रयों का, श्रावकों का और श्राविकाओं का प्रेम न रखनेवाले परोपकारी आत्मदर्शी मुनि, पन्यास, उपाध्याय और आचार्यों के अप्रतिबद्ध विहारों का ही फल है। अगर उन्होंने उपकारदृष्टि को लक्ष्य में रख कर और प्रतिकूल, या अनुकूल अनेक उपसर्गों को सह कर प्रतिदेश, या प्रतिनगरों में विहार न किया होता तो हमारे पूर्वजों, हमारे प्रभावक तीर्थों और अद्वितीय ज्ञान-भंडारों का गहनातिगहन इतिहास आकाशकुसुमवत् ही बन जाता।

वर्त्तमान युग के पाश्चात्य विद्वान् जैनधर्म की विशालता और प्रमाणिकता स्वीकार करते हैं उन्हों के साधन भी पूज्य मुनिवरों के विशाल विहार और कृतकार्यों के फलस्वरूप ही समझना चाहिये। पूर्वकालीन पूज्य मुनिवर अनेक मुसीबतों का सामना करके भारत-वर्ष के चारों ओर विचरते थे, जिससे यह जैनधर्म विशालकोटी के ऊँचे शिखर पर विराजमान था। इस विषय में मिस्टर विन्सेन्ट स्मिथ साहब के उद्गार मानीय हैं—

" The field for exploration is vast. At the present day the adherents of the Jain religion are mostly to be found in Rajputana and Western India. But it was not always so. In olden days the creed of Mahavira was far more widely diffused than it is now. In the 7th century A. D. for instance, that creed had numerous followers in Vaisali (Basenti north of Patna) and in Eastern Bengal localities where its adherents are now extremely few. I have myself seen abundant evidences of the former prevalence of Jainism in Bundelkhand during the mediaeval period especially in the 11th and the 12th centuries. Further South, in the Deccan, and the Tamil countries, Jainism was for centuries a great and ruling power in regions where it is now almost unknown. "

—" खोज का क्षेत्र बहुत विस्तीर्ण है। आजकल जैनधर्म के पालन करनेवाले बहतायत से राजपूताना और पश्चिम भारत में ही पाये जाते हैं, पर सदैव ऐसा नहीं था। प्राचीन समय में यह महावीर का धर्म आजकल की अपेक्षा कही बहुत अधिक फैला हुवा था। उदाहरणार्थ, ईसा की ७ वीं शताब्दी में इस धर्म के अनुयायी वैशाली और पूर्व बंगाल में बहुत संख्या में थे, पर वहां आज बहुत ही कम जैनी हैं। मैंने स्वयं बुन्देलखंड में वहाँ ११ वीं और १२ वीं शताब्दी के लगभग जैनधर्म के प्रचार के बहुत से चिह्न पाये। दक्षिण में आगे को बढिये तो जिन तामिल और

द्राविडदेशों में शताब्दीयों तक जैनधर्म का शासन रहा है, वहाँ वह अब अज्ञात ही सा हो गया है।"

इन सब बातों का विचार किये बाद हमें इस निर्णय पर स्थिर रहना पडता है कि—जैन साधु भारत की एक धार्मिक संस्था है और वह अपने आचार—विचारों के नियमानुसार भ्रमणशील है। प्रतिवर्ष चातुर्मास के सिवाय शेषकाल के आठ महिनों तक एक गाँव से दूसरे गाँव अप्रतिहत विहार करना और तन्निवासियों को धार्मिक बोध देने के साथ साथ में ऐतिहासिक साहित्य सामग्री को विकाश में लाना यह उनका स्वाभाविक कर्त्तव्य—पथ है।

इसी कर्त्तव्यपथ को अपना लक्ष्यबिन्दु बना कर आधुनिक साधु साध्वी यदि विहार दरमियान आये हुए गाँवों की ज्ञातव्य बातों की नोंध प्रतिवर्ष प्रकाशित कर दिया करें तो इतिहास संबन्धी साहित्य को बडी भारी मदत मिल जाय और जो बातें अभी अंधारे में ही पडी हूई हैं वे प्रकाश में आ जायँ। अस्तु.

पाठको ! प्रस्तुत पुस्तक, जो आप लोगों के कर—कमलों में उपस्थित है इन्हीं बिषयों पर प्रकाश डालनेवाली है। सं १९२५ नवेम्बर तारीख ७ के दिन कुक्सी से काठीयावाड, गुजरात और मारवाड तक हुए लंबे विहार के दरमियान आये हूए गाँवों और गुडाबालोतरा से सन् १९२७नवेम्बर तारीख २२के दिन हुए लंबे विहार के गाँवों की संक्षिप्त नोंध इसमें दर्ज की गई है। यहाँ उन गाँवो के नाम, उनमें जैनों के घर और उनमें तारीखवार हूई स्थिरता की तालिका लिख देते हैं जो साधु साध्वियों को एक गाँव से दूसरे गाव विहार करने में उपयुक्त है।

कुक्सी से पालीताणा तक के गाँव–

नम्बर	गाँवों के नाम.	कोश	जैनघर	देहरासर	सन् इ० १९२९	तारीख.
१	कुक्सी	०	१३०	६	नवेंबर	०
२	रामपुरा	३	०	०	,,	७
३	बाग	३	१८	१	,,	८–१२
४	टाँडा	६॥	३५	१	,,	१३–१६
५	रींगनोद	५।	३९	१	,,	१७–१८
६	मोपावर(तीर्थ)	१	०	१	,,	१९
७	राजगढ	२	२२९	४	१९ फ०	से ज०१७
८	मोहनखेडातीर्थ	१	०	३	१९२६	०
९	छडावद	२	०	०	,,	१८
१०	पीथनपुर	९	०	०	,,	०
११	पाराँ	२	४०	१	,,	१९–२१
१२	राणापुर	४	४९	२	,,	२२–२५
१३	कुन्दनपुर	४	२	०	,,	२६
१४	गमलां	५	०	०	,,	२७
१५	दाहोद	३	२०	१	,,	२८–२९
१६	बलूंदी	६	०	०	,,	३०

१७	पीपलोद	६	०	०	,,	३१
१८	ओरवाडा	९	०		फेब्रुवारी	१
१९	गोधरा	६।	७०	२	,,	२
२०	टूबा	५॥	०	०	,,	३
२१	टिम्बा रोड	२	१	०	,,	०
२२	सेवालिया	२	६	०	,,	०
२३	अंगाडी	२	६	१	,,	४
२४	ठासरा	२॥	२	१	,,	०
२५	डाकोरजी	३	०	०	,,	५–६
२६	उमरेठ	३	५	१	,,	०
२७	भालेज	४	१२	१	,,	७
२८	बोरियावी	५	५	१	,,	०
२९	वरताल	१॥	१५	१	,,	८–९
३०	मेलाय	३	१०	१	,,	१०–११
३१	सोजीत्रा	४	१२	२	,,	१२
३२	ईसरवाडा	४	४	०	,,	१३
३३	वरसडा	५	१	०	,,	१४
३४	वटामण	४	२०	०	,,	१५
३५	बोरु	७	१०	०	,,	१६
३६	बोलाद	२	६	०	,,	०

३७	पीपली	३	७	१	,,	०
३८	आमली	४	४	१	,,	१७
३९	घोलेराबंदर	३	१३०	१	,,	१८
४०	एबदपर	६	५	०	,,	१९
४१	वेलावदर	५	२	०	,,	२०
४२	रतनपर	५	१०	१	,,	२१
४३	वला (वल्लभी)	४	१००	१	,,	०
४४	चमारडी	२	४	१	,,	२२
४५	करदेज	६	०	०	,,	०
४६	वरतेज (तीर्थ)	१	३०	१	,,	२३
४७	भावनगर	३	१०००	९	,,	२४–२५
४८	अखवाडा	२	३		,,	२६
४९	गोघाबंदर	५	७५	३	,,	२७
५०	तणसा	८॥	४०	१	,,	०
५१	त्रापज	३	६०	१	,,	२८
५२	तलाजा(तीर्थ)	३	६०	४	मार्च	१–२
५३	देवली	२	२	१	,,	०
५४	ठासेच	५॥	५	०	,,	३
५५	पालीताणा	४	७००	९	,,	४–३१
५६	सिद्धगिरी	॥	०	८०४	,,	०

सिद्धगिरी से गिरनार तक के गाँव—

नम्बर	गाँवों के नाम	कोश	जैन घर	देरासर	सन् इ० १९२६	तारीख
५७	घेटी	२	१५	१	अप्रेल	१
५८	परबडी	४	१०	१	,,	२
५९	चारोडिया	५	६	०	,,	३
६०	गारियाधार	३	४५	१	,,	०
६१	छोटालीलिया	२	०	०	,,	०
६२	मोटालीलिया	१	२०	०	,,	४
६३	अमरेली	४	१५०	२	,,	५
६४	आकडिया	४	०	०	,,	६
६५	कूकावाव	५	३०	०	,,	०
६६	चूडा	५	२५	०	,,	७
६७	राणपर	५	६०	१	,,	८
६८	बडाल	६	६२	१	,,	९
६९	जूनागढ	३	२५०	२	,,	१०—११
७०	गिरनारतलेटी	२	१	१	,,	१२
७१	गिरनार(तीर्थ)	१॥	०	२१	,,	०

गिरनार से शंखेश्वर और तारंगा तक के गाँव.

नम्बर	गाँवों के नाम	कोश	जैन घर	देरासर	सन् इ० १९२६	तारीख
७२	जूनागढ	३॥	२९०	२	अप्रेल	१३–१६
७३	वडाल	३	६२	१	,,	१७
७४	जेतपुर	६	३४०	१	,,	१८
७५	वीरपुर	४	१	०	,,	०
७६	गोमटा	२	१०	०	,,	१९
७७	गोंडल	६	४६०	१	,,	२०–२१
७८	बीलियारु	२	०	०	,,	०
७९	रीबडा	४	१०	०	,,	२२
८०	कोठारियुं	३	०	०	,,	०
८१	राजकोट	३	११९०	१	,,	२३–२७
८२	खोराणा	५	३	०	,,	२८
८३	सीधावदर	४	०	०	,,	२९–३०
८४	वांकानेर	३	२९०	२	मे	१–३
८५	जाली	३	०		,,	०
८६	लूणसरी	४	११	०	,,	४

८७	दांधोडियुं	९	२	०	,,	०
८८	सरा	२	२३	१	,,	९
८९	कोंढ	९	४३	१	,,	६–८
९०	जीचा	३	८	१	,,	०
९१	धांगध्रा	९	८३०	२	,,	९–१०
९२	गाला	४	४	१	,,	११
९३	भरडा	२	०	०	,,	०
९४	देहगाँव	३	८	०	,,	१२
९५	ओडुं	५	१२	१	,,	१३–१४
९६	झींझुवाडा	९॥	१००	१	,,	०
९७	धामा	२	७	०	,,	१९
९८	आदरियाणुं	२	३६	१	,,	०
९९	शंखेश्वरतीर्थ	४	६	१	,,	१६–२०
१००	मुजपर	४	३०	२	,,	२१
१०१	हारिजरोड	९	१९	१	,,	२२
१०२	जमणपुर	३	१०	१	,,	०
१०३	अडिया	३	२०	१	,,	२३
१०४	कुणघेर	३	१०	१	,,	०
१०५	पाटण (तीर्थ)	२	२०१९	११२	,,	२४–२८
१०६	सागोडियो	२	०	०	,,	०

१०७	कल्याणा	५	१५	१	,,	२९
१०८	मेत्राणा(तीर्थ	२	४	१	,,	३०
१०९	सिद्धपुर	५	१५	२	,,	०
११०	समोडा	२	५	०	,,	३१
१११	लूणवा	३	२०	१	जून	१
११२	बीठोडीं	२		०	,,	०
११३	कोदराम	२	२०	२	,,	०
११४	चाणशूल	२	३२	१	,,	०
११५	डभाड	।।	३५	१	,,	२
११६	वरठां	३		०	,,	३
११७	तारंगा(तीर्थ)	४	०	५	,,	४–७

तारंगा से आबु तक के गाँव—

तारंगा से आबू जाने के लिये तीन मार्ग हैं—एक मार्ग में उनडी कोश ७, फेचोड ३, ऊडा १, रत्नपुर ३, ईडर ३, वडाली ५, खेड ५, गढ ५, भाणपर ५, हदाद ३, राणपुर ३, कुंभारिया ४, अंबाजी ।।, खराडी ९ ये गाँव; और दूसरे मार्ग में टभो २, भालुसण ३, ऊभरी २।।, धनाली ४, गोडीयाल २, गोला ३, पालनपुर ५, चीमासण ५, चिरोत्रागाम ७, कीरोत्रा १, रीया-

गाम २, वाडा ४, आबू १० ये गाँव आते हैं। तीसरे मार्ग के गाँव नीचे तालिका में ही दर्ज हैं—

नम्बर	गाँवों के नाम		कोश	जैन घर	देरासर	सन् इ० १९२६	तारीख
११८	टीम्बा		३	९	१	,,	०
११९	भालूसण		३	२०	१	,,	८
१२०	ऊमरी		२॥	६	१	,,	०
१२१	नागरमोरिया		३॥	२९	१	,,	९
१२२	दांताभवानगढ		९	१२	१	,,	१०
१२३	कुंभारियातीर्थ		१२	०	९	,,	११–१२
१२४	अंबाजी		॥	०	०	,,	०
१२५	खराडी		९	२०	१	,,	१३–१४
१२६	चोकी		२॥	०	०	,,	१५
१२७	आबुकेम्प		७	०	०	,,	०
१२८	देलवाडा	आबू	२	०	६	,,	१६–२०
१२९	अचलगढ		३॥	१	३	,,	२१
१३०	ओरिया		१	०	१	,,	०

आबू से सिरोही और आहोर तक के गाँव--

नम्बर	गाँवों के नाम	कोश	जैन घर	देरासर	सन् इ० १९२६	तारीख
१३१	अनादरा	३॥	४०	१	जून	२२
१३२	पालरी	३	९	१	,,	०
१३३	सिरोडी	२	७०	२	,,	२३–२९
१३४	मेडा	३	२०	१	,,	२६
१३५	हमीरगढ(तीर्थ)	२॥	०	३	,,	०
१३६	सन्दरुट	२	१९	१	,,	०
१३७	सिरोही (तीर्थ)	३	५००	१७	,,	२७–२९
१३८	सनवाडा	३	१०	१	,,	०
१३९	वीरवाडा	२	९०	२	,,	३०
१४०	ऊंदरा	१	०	१	,,	०
१४१	वामनवाड तीर्थ	१	०	१	जुलाई	१–३
१४२	नांदिया तीर्थ	३॥	४०	२	,,	०
१४३	सिरोही	७	९००	१७	,,	४
१४४	गोयली	१	२९	१	,,	०
१४५	ऊड़	३	२९	१	,,	०

१४६	जावाल	१	२००	४	,,	९
१४७	बलदूठ	१	१००	२	,,	०
१४८	सवणा तीर्थ	४	०	१	,,	६
१४९	आकोली	४	८०	१	,,	७–१०
१५०	बागरा	२	२५०	१	,,	०
१५१	डूंडसी	१	३०	१	,,	०
१५२	सियाणा	३	३२५	२	,,	११
१५३	भांयलावास	२	०	०	,,	०
१५४	मेडा	४	०	०	,,	१२
१५५	छीपरवाडा	२	०	०	,,	०
१५६	आहोर (तीर्थ	१	६००	५	,,	१३–१५

आहोर से शिवगंज और वरकाणा तक के गाँव.

नम्बर	गाँवों के नाम	कोश	जैन घर	देरासर	सन् इ० १९२७	तारीख
१५७	चरली (तीर्थ)	१॥		१	नवेम्बर	९
१५८	मादडी	॥।	०	०	,,	०
१५९	दयालपुरा	०	९०	१	,,	०
१६०	गुडाबालोतरा	॥	३२५	३	,,	१०से२१

१६१	अगवरी	॥	१००	२	,,	०
१६२	सेदरिया	३	९०	१	,,	२२–२६
१६३	पावटा (तीर्थ)	।	२९	१	,,	०
१६४	नोवी	॥।	१००	२	,,	•
१६५	छोटालखमावा	॥	२	१	,,	०
१६६	मोटालखमावा	॥	१०	१	,,	०
१६७	कोरटा(तीर्थ)	१	६०	४	,,	२७–३१
१६८	कानपुरा	१॥	१९	१	,,	०
१६७	शिवगंज	२	६२९	७	डीसेम्बर	१–९
१६८	ऊंदरी	॥	१२	१	,,	०
१६९	सुमेरपुर		३०	१	,,	०
१७०	नेतरा	२॥	०	०	,,	१०
१७१	सांडेराव	३॥	३००	२	,,	११–१४
१७२	खिमेल	३	२००	२	,,	१५–१६
१७३	वरकाणातीर्थ	२॥	०	१	,,	१७–१८

वरकाणा से जालोर तक के गाँव—

नम्बर	गाँवों के नाम	कोश	जैनों के घर	देरासर	सन ई० १९२७	तारीख
१७४	राणीस्टेशन	२	९०	१	डीसेम्बर	१९–२३
१७५	राणीगाँव	१	१९०	१	,,	०
१७६	ब्रामी (बरामी)	३	३९	१	,,	०
१७७	खिमाडा	२	३०	१	,,	२४–२६
१७८	कोशिलाव	॥	२३०	२	,,	२७-जा. ४–१–२८
१७९	बावागाम	॥	३९	१	जान्यु०	९–६
१८०	पावा	२	३९	१	,,	७–११
१८१	भूति	२	९५	२	,,	१२–१८
१८२	कवलां	१	६	१	,,	०
१८३	रोडला	२	१२	१	,,	०
१८४	तखतगढ	४	९७९	९	,,	१९–२२
१८५	जुआणा	४	४	०	,,	०
१८६	भारुंदा	॥	९०	२	,,	०
१८७	फतापुरा	१॥	३९	१	,,	२३–२९
१८८	जोयला	१॥			,,	०

१८९	जोगापुरा	१॥	४०	१	,,	२६
१९०	रोबाडा	३	३९	१	,,	२७–३१
१९१	आलावा	१॥	१२	१	फेब्रु०	०
१९२	हरजी	२॥	२७९	२	,,	१–१०
१९३	बूडतरा	२	१०	०	,,	०
१९४	थांवरा (ला)	१	४०	१	,,	०
१९५	भेंसवाडा	२	७२	२	,,	११–१३
१९६	सकराणा	१॥	०	१	,,	०
१९७	लेटा	२	३०	१	,,	०
१९८	जालोर (तीर्थ)	१	८९९	१३	,,	१३–२४

जालोर से भीनमाल तक के गाँव—

नम्बर	गाँवों के नाम	कोश	जैनों के घर	देरासर	सन ई० १९२८	तारीख
१९९	मांडबला	४॥	११०	१	फेब्रु०	२५
२००	एलाणा	२	४०	१	,,	०
२०१	गोल	१	२००	२	,,	२६–२७
२०२	खरल	॥	७	०	,,	२८

२०३	ओटवाडा	१॥	२५	१	,,	२९
२०४	आलासण	१	३१	१	,,	०
२०५	सायला	१॥	१२८	२	मार्च	१–३१
२०६	चोराऊ	४	२४	१	अप्रेल	१–३
२०७	भांडवा (तीर्थ)	५	०	१	,,	४–६
२०८	मेंगलवा	१॥	८६	१	,,	७
२०९	आणा	६	१५	१	,,	८–९
२१०	ऊनडी	३	३०	१	,,	१०
२११	पांथेडी	३	३०	१	,,	११
२१२	दासपा	२	८०	१	,,	१२–१३
२१३	पादरा	३	३०	०	,,	१४
२१४	नरता	२	११	०	,,	१५
२१५	भीनमाल(तीर्थ)	३॥	४५१	७	,,	१६–२५

भीनमाल से थराद् तक के गाँव—

नम्बर	गाँवों के नाम	कोश	जैनों के घर	देरासर	सन् ई० १९२८	तारीख
२१६	रोपी	३	१	०	अप्रेल	२६
२१७	सीलाण	३॥	९	१	,,	२७

२१८	छोटारानीवाडा	९	१९	१	,,	२८
२१९	मोटारानीवाडा	॥	४०		,,	०
२२०	जाखडी	९	२०	१	,,	२९
२२१	रतनपुर	१	०	०	,,	०
२२२	भाटी	४	३	०	,,	०
२२३	जडिया	१॥	७	०	,,	३०
२२४	धानेरा	४	१८८	२	भे	१–१०
२२५	रामसेण	४	१९	१	,,	११
२२६	वरण	४	६	१	,,	१२
२२७	वरनोडा	२	९	०	,,	१३
२२८	भीलडियातीर्थ	९	४	३	,,	१४
२२९	नेहडा	२	१८	१	,,	१५
२३०	वात्यभ	७	१८	१	,,	१६–२१
२३१	वाहणा	२	२५	१	,,	२२
२३२	लुआणा	३	३५	१	,,	२३–२४
२३३	जेतडा	३	१८	१	,,	२५–२६
२३४	पावड	२	४	०	,,	०
२३५	मलूकपुर	१॥	०	०	,,	२७
२३६	थराद	१॥	३८५	११	,,	२८

२३७	इडाटा	९	७	०	डीसेंबर	२८
२३८	ढीमा	३	४०	१	,,	२९–३१
२३९	भोरोल तीर्थ	४	२१	१	जनवरी १९२९	१–२
२४०	गणेशपुरा	१	३	०	,,	०
२४१	वामी	१॥	९	०	,,	३–६
२४२	दूधवा	१	२०	०	,,	७
२४३	जाणदौ	१	२	०	,,	८

इस तालिका में प्रायः उन्हीं गाँवों का वृत्तान्त लिखा गया है जिनमें हमारा मुक़ाम, या जाना हुआ है। इस तालिका के पहले कोठे में प्रतिगाँवों की क्रमवार नंबर संख्या, दूसरे में गाँवों के नाम, तीसरे में एक गाँव से दूसरे गाँव के कोश, चौथे में प्रतिगाँवों के जैनों की घर संख्या, पांचवें में जिनमन्दिरों की संख्या, छठ्ठे में अंग्रेजी सन् और सातवें में प्रतिगाँवों में कितने दिन का मुक़ाम हुआ उसकी महिनों के सहित तारीखें दर्ज कीं गई हैं। इनमें से कतिपय गाँवों के जिनमन्दिर और जिनप्रतिमाँओं के लेख उन उन गाँवों के वर्णन में दर्ज हैं और उनका भावानुवाद हिन्दी में इस दिग्दर्शन के अन्त में ही नम्बर वार दर्ज कर दिया गया है जो संस्कृत लेखों के रहस्य को अच्छी तरह प्रगट करते हैं।

इस्वी सन् १९२९ नवम्बर की तारीख ७ से सन् १९२८ की मई तक हुए विहार गत कतिपय गाँवों के पोस्ट पते वार मुखिया (आगेवान) श्रावकों के नाम इस प्रकार हैं—

मु० पो० कुकसी जि० धार (नीमार) व्हाया—महु	चोधरी ओपाजी डूंगरचंद सेठ माणकचंद चंपालाल पारख चतराजी जवेरचंद
मु० पो० बाग (गवालियर स्टेट) व्हाया—महु	चोधरी भेराजी छगनलाल शा० नेमाजी गुलालजी
मु० पो० टाँडा (गवालियर स्टेट) व्हाया—सरदारपुर	सेठ उमेदमल चंपालाल छगनलाल रूपचंद नाहर
मु० पो० रींगनोद (गवालियर स्टेट) व्याया—सरदारपुर	सेठ खूबाजी मूलचंद हरकचंद जडावचंद
मु० पो० राजगढ गवालियर स्टेट (मालवा)वाया महू—धार	खजानची दोलतराम चुनीलाल गोकलजी लूणाजी मोदी वेणीराम रूपचंद
मु० पो० पारां, जि० झाबुवा, वाया— मेघनगर (मालवा)	शा० नंदाजी दलिचंद शा० हीराचंद फतेचंद
मु० पो० राणापुर जि० झाबुवा, वाया मेघनगर (मालवा)	शेठ सदाजी रखवाजी चोधरी जवरचंद पन्नालाल

मु० पो० दोहद जि० पंचमहाल	बोहरा मोतीजी धनराज
मु० पो० वरतेज जि० भावनगर (काठीयावाड)	सेठ ऊजमचंद खेमचंद*
मु० पो० भावनगर (काठीयावाड)	आत्मानंद जैन सभा* गुलाबचंद लल्लुभाई*
मु० पो० घोघा जि० भावनगर (काठीयावाड)	श्री जैनश्वेताम्बर कारखाना सेठ धर्मचंद मगनलाल*
मु० पो० तलाजा जि० भावनगर (काठीयावाड)	सेठ केसवजी झुंठाभाई* श्री जैनश्वेताम्बर कारखाना*
मु०पो० पालीताणा (काठीयावाड)	श्री आणंदजी कल्याणजी पेढी
मु० पो० अमरेली वडोदरा स्टेट (काठीयावाड)	वकील सुन्दरजीभाई*
मु० पो० जूनागढ (काठीयावाड)	देवचंद लखमीचंद जैनपेढी
मु० पो० गोंडल (काठीयावाड)	सेठ जगजीवन मोहनलाल*

मु० पो० राजकोट (काठीयावाड)	सेठ जुठाभाई केसवजी* मणिलाल वखतचंद*
मु० पो० वांकानेर (काठीयावाड)	पानाचंद चतुरभुज* कवि नेमचंद देवचंद सेठ*
मु० पो० शंखेश्वर (हारिजरोड)	सेठ जीवनदास गोडीदास जैनपेढी
मु०पो०पाटण,ठे०राज कावाडो चोखावटियानो पाडो (गुजरात)	जेसिंगभाई निहालचंद*
मु. मेत्राणा, पो. सिद्धपुर (गुजरात)	जैन श्वेताम्बर कारखाना
मु० तारंगा पो० तारंगाहिल (गुजरात)	सेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी
मु० कुंभारिया पो० अंबाजी (आबूरोड)	आणंदजी कल्याणजी जैन कारखाना
मु० देलवाडा, पो० आबुकेम्प (मारवाड)	जैन श्वेताम्बर कारखाना
मु० अचलगढ पो० आबुकेम्प (मारवाड)	श्री जैन श्वेताम्बर कारखाना
मु० सिरोडी पो० अनादरा (आबूरोड)	मूला कपूराजी फूआ नाथूजी

मु० पो० सिरोही राजपुताना आबूरोड	शा. पूनमचंद हांसाजी चोधरी जसराज हुकमीचंद कोंठारी सरेमल अखेचंद
मु० बलदूट, पो० जावाल (सिरोही) आबूरोड	शा० अव्वाजी हुकमाजी सेठ केसरीमल कपूरचंदजी शा० धनरूप मालाजी
मु० आकोली, पो० बागरा (मारवाड) वाया एरनपुर.	शा० जसा गोकाजी शा० मूकचंद हंसराज शा० मोती हकमाजी
मु० पो० बागरा. (मारवाड) व्हाया एरनपुरा रोड	शा० चमना हकमाजी शा० मूलचंद मथराजी शा० दला खसाजी जेठा खूमाजी कामदार
मु० डूंडसी, पो० बागरा (मारवाड) एरनपुरारोड	शा० भगवान दरगाजी
मु० पो० सियाना (मारवाड) व्हाया सिरोही; स्टेशन पिंडवाडा	मूता मगराज फूसाजी शा० नरसिंग हिन्दुजी शा० जेठा मूलाजी शा० भगवान लूंबाजी
मु० पो० आहोर (मारवाड) व्हाया एरनपुरा रोड	शा० नथमल लालाजी शेठ वागमलजी जसराज शा० डोगमल हिन्दुजी

मु. पो. गुडाबालोतरा (मारवाड) व्हाया एरनपुरारोड	शेठ जीवाजी लखाजी शेठ गुलाबचंद अचलाजी शा० सेराजी आईदानजी रामाणी शा० कपूरचंद खसाजी ,,
मु. सेदरिया पो.गुडा बालोतरा (मारवाड)	शा० पूनमचंद ऊमाजी शा० चेनाजी जीवाजी
मु. कोरटा पो. एरनपुरा छावनी(मारवाड)	मोदी धूरचंदजी कपूरचंद शा० चतरभाग्य किसनाजी
मु. पो. शिवगंज जि० सिरोही (राजपुताना) एरनपुरारोड	शा० धूला खेमाजी भटारक शा० वीरचंद वन्नाजी शा० चमना रूपाजी
मु. पो. सुमेरपुर (मारवाड) एरनपुरारोड	शा० मोतीलाल नथमल शा० भगवानजी हंजारीमल
मु. पो. सांडेराव, स्टेशन फालना (मारवाड)	शा० मोकमदास उमेदमल शा० अनोपचंद लखमीचंदजी
मु. पो. खिमेल, स्टेशन राणी (मारवाड)	शा० पुखराज धूराजी शा० दीपजी सेराजी शा० दलीचंद पन्नाजी
मु. वरकाणा पो० राणी स्टेशन (मारवाड)	श्री पार्श्वनाथ जैन कारखाना
मु. पो. रानी स्टेशन (मारवाड)	शा० गुलाबचंद बभूतमल शा० विमलचंद जडावचंद

मु० वरामी पो. रानी स्टेशन (मारवाड)	शा० जेठमलजी फोजमल*
	शा० देवीचंदजी गोमाजी*
मु. खिमाडा पो. स्टेशन फालना (मारवाड)	शा० सेसमलजी गलाजी
	शा० नवाजी चेलाजी
	शा० कपूरजी ओकाजी
	शा० कस्तूरचंद रखवाजी
मु. पो. कोशिलाव स्टेशन फालना (मारवाड)	शा० जवानमल जीताजी
	शा० खूमाजी जेताजी
	शा० जीवराज मूलाजी
	शा० प्रेमचंदजी कोठारी
मु. बावागाम, पो. चाणोद, स्टेशन राणी (मारवाड)	शा० चमनाजी वेलाजी
	शा० जसाजी वीसाजी
	शा० सरदारमल वरदाजी*
मु. पावा पो. तखतगढ (मारवाड) एरनपुरारोड	शा० ताराचंद मेघराजजी
	शा० हिमतमल पूनमचंदजी
मु० दणो पो. चाणोद स्टेशन राणी (मारवाड)	शा० दीपचंद शंभुलाल
मु. भूति पो. तखतगढ एरनपुरारोड (मारवाड)	शा० भीखमचंद कस्तूरचंद
	शा० गुलाबचंद भीमाजी
	शा० देवीचंद रामाजी
	शा० छोगमल रखबाजी
मु. कवलां, पो. चाणोद (मारवाड) स्टेशन राणी	शा. पनराज हीराचंदजी

मु० पो० तखतगढ, एरनपुरारोड (मारवाड)	शा० गुलाबचंद देवीचंदजी ।
	शा० जुहारमल रामाजी ।
मु० भारूंदा, पो. एरनपुरकी छावनी (मारवाड)	शा० सूरजमलजी उमेदमल ।
मु० फतापुरा. पो० एरनपुरकी छावनी (मारवाड)	शा० हजारीमल चांपाजी ।
	शा० चेनाजी दोलाजी ।
	शा० लाला हिन्दुजी ।
	शा० रतनाजी मोतीजी ।
मु० जोगापुरा, पो० एरनपुरकी छावनी (मारवाड)	शा० प्रेमचंद गोमाजी ।
	शा० चेनाजी गोमाजी ।
मु० रोवाडा, पो० एरनपुरकी छावनी (मारवाड)	शा० धूपा नवाजी ।
	शा० चतरा खेमाजी ।
मु० नोवी, पो० एरनपुरकी छावनी (मारवाड)	शा० रायचंद वदाजी*
	शा० रायचंद जेताजी*
मु० आलावा, पो० गुडाबालोतरा (मारवाड) एरनपुरारोड	शा० भूरा लखमाजी*
	शा० हकमा भगाजी*
मु० जोयला, पो० एरनपुरकी छावनी (मारवाड)	शा० पूनमचंद वनाजी ।

मु० पावटा, पो० गुडाबालोतरा (मारवाड) एरनपुरारोड.	शा० जोधा भीमाजी* शा० भीखा चतराजी*
मु० हरजी, पो० गुडाबालोतरा (मारवाड) एरनपुरारोड.	शा० नेमाजी धनरूपजी । शा० जवानमलजी वीराजी । शा० भीमा नथाजी । शा० रायचंद दोलाजी ।
मु० भैंसवाडा, पो० आहोर (मारवाड) एरनपुरारोड.	शा० हकमा नरसिंगजी । शा० नवा मनरूपजी । शा० परताप गलवाजी ।
मु० पो० जालोर, (मारवाड) एरनपुरारोड.	शा० सांकलचंद आईदानजी । मु० छोगालाल उमेदमल कानुगा । मोदी तेजसी कुशलसीजी । मोदी दीपसीजी रघुनाथसी ।
मु० मांडवला, पो० जालोर (मारवाड) एरनपुरारोड.	शा० आईदान धूलाजी दांतेवाडिया । शा० मानमल माणकचंदजी । शा० भंडारी जुहारमल धूडाजी ।
मु० गोल, पो० जालोर (मारवाड) एरनपुरारोड.	शेठ साहेबचंद कुंदनमल शा० फूलचंद नवाजी
मु० आलासण, पो० जालोर (मारवाड) एरनपुरारोड.	शा० गेमाजी वछाजी । शा० फोजाजी हीराजी । शा० मगनाजी नेथीजी । शा० तिलोकजी माजाजी ।

मु० सायला, पो० जालोर (मारवाड) एरनपुररोड.	शा० केनाजी नेथीजी । शा० फोजाजी सिवराजजी । शा० कबदी छोगा परतापजी । मु० हरकाजी ताराजी ।
मु० चोराऊ, पो० भीनमाल (मारवाड) माउन्ट आबू.	शा० गोविंदजी हीराजी । शा० सवाजी हीराजी । शा० धन्नाजी अचलाजी । शा० छोगाजी बन्नाजी ।
मु० मेंगलवा, पो० भीनमाल (मारवाड) माउन्ट आबू.	शा० छजाजी जवानजी । शा० सूरताजी वालाजी । शा० सदाजी चमनाजी । शा० मगाजी पन्नाजी ।
मु० आणा, पो० भीनमाल (मारवाड) माउन्ट आबु.	शा० चूनाजी भलाजी । शा० रुपाजी किसनाजी । शा० नरसिंग मादाजी । शा० छोगाजी दानाजी ।
मु० ऊनडी, पो० भीनमाल (मारवाड) माउन्ट आबु.	शा० परखा भूताजी । शा० जवान हीराजी । शा० खूबाजी किसनाजी । शा० मुलतानजी राजिंगजी ।
मु० पांथेडी, पो० भीनमाल (मारवाड) माउन्ट आबू	साजी अचलाजी धनराजजी शा० जोइता डाहाजी

मु० दासपा, पो० भीन माल (मारवाड) माउन्ट आबू	शा० केसा प्रागाजी*
	शा० हरजी प्रागजी*
	शा० वना दोलाजी मुता*
	कोठारी जवा दोलाजी*
मु० नरता, पो० भीन-माल (मारवाड) माउन्ट आबू	शा० केरा धूडाजी ।
मु० पो० भीनमाल जि० जसवंतपुरा, (मारवाड) माउन्ट आबू	शा० भगवानजी हेमराज आंचलिया
	शा० ताराचंद लखमाजी
	शा० नेणमल जुहारजी आंचलिया
	मु० छजुजी शिवराज ।
मु० रोपी, पो० भीन-माल (मारवाड) माउन्ट आबू	शा० लखमाजी गेनमल दोसी
मु० सीलाणा, पो. भा-लवाडा (मारवाड) माउन्ट आबू	शा० वन्नाजी भूराजी मेदानी*
	भंडारी सगाजी जानोजी*
मु० छोटारानीवाडा, पो० मालवाडा (मार-वाड) माउन्ट आबू	शा० गेमा मालाजी*
	शा० गोमा मानाजी*
मु० जाखडी, पो० बडगाँव (मारवाड)	शा० जेठा रताणी पोरवाड*

मु० जडिया, पो० धानेरा (पालनपुर)	शा० जसाजी खेमाजी । शा० पीथा मेघराज ।
मु० पो० धानेरा (पालनपुर) वाया डीसा	मेता वेलचंद तलकचंद । शा० भूता निहाल । शा० अक्का हेमजी । शा० उमेदमल मलूका । श्री यतीन्द्र जैन शिक्षाप्रचारक मंडल ।
मु० रामसेण, पो० धानेरा (पालनपुर) वाया डीसा	शा० धूरा पीथाजी* शा० हजारीजी सवलाजी*
मु० वरण, पो० डीसा (पालनपुर)	शा० सोभागचंद फतेचंद* शा० जेचंदजी भीखाजी*
मु० वरनोडा, पो० डीसा (पालनपुर)	शा० मोहनलाल पीताम्बर* शा० धूडाजी पन्नाजी*
मु० भीलडिया, पो० पो० नयाडीसा.	कारखाना जैनतीर्थ भीलडिया ।
मु० नेहडा, पो० डीसा (पालनपुर)	संगवी सोभागचंद बेचर*
मु० वात्यप, पो० दीयोदर (नयाडीसा)	मोरखिया गलाल वालजी । मोरखिया लाधा दीपचंद ।

मु० वाहणा, पो० डीसा (पालनपुर)	मोरखिया मगन दलीचंद ।
	अनोपचंद खेमचंद धरु ।
मु० लुआणा, पो० दीयोदर, वाया डीसा	मोरखिया केसरजी लालचंद ।
	मोरखिया मगन सवाई ।
मु० मोटीपावर पो० थराद, तालुके वाव.	सेठ फतेहचंद अवचल ।
मु० जेतडा, पो. थराद	दोसी गलबा वागजी ।
वाया डीसा (उत्तर-गुजरात)	दोसी कुवरजी उजम ।
मु० पो० थराद, वाया डीसा, बनास-कांठा एजन्सी (उत्तरगुजरात)	श्री राजेन्द्रजैन सेवा समाज ।
	संगवी पीतांबर वजेचंद ।
	पारख छगनचंद ऊजमचंद ।
	भणशाली जीतमल नरसिंग ।
	देशाई ऊजमचंद मियाचंद ।
मु० ईडाटा, पो० थराद, वाया डीसा.	दोसी खेतसी सवाइ
	दोसी छगन केवल
	दोसी सामजी भाणजी
मु० ढीमा, पो० वाव, व्हाया डीसा.	दोसी त्रिभुवन जेठमल
	संघवी अमीचंद मनरा
	संघवी अनोपचंद वकता

मु० भोरोल, पो० वाव, डीसा हो कर	मेता जीतमल केशवजी ।
	वीरवाडीया भाइचंद पवजी ।
	बोहरा भीखा निहाल ।
मु० गणेशपुरा, पो० वाव (डीसा)	शेठ पुरुशोत्तम नेमजी ।
	शेठ शोभा करसन ।
मु० वामी, पो० थराद (डीसा)	कुंवरजी जीवराज ।
	खेमचंद नेमजी ।
मु० दूधवा, पो० थराद (डीसा)	बोहरा मोजी बेचर ।
	,, बालचंद पूरण ।
	,, नेमजी गोकल ।
मु० जाणादी, पो० थराद (डीसा)	संगवी कानजी निहालचंद ।
मु० पो० वाव, व्हाया डीसा (बनास कांठा)	दोसी पानाचंद केवल*
	सेठ टीलचंद खेतसी*

व्याख्यानवाचस्पति—

श्रीमद्–यतीन्द्रविजय रचित पुस्तकानि–

१ तीनस्तुतिकी प्राचीनता।
२ भावनास्वरूप (संक्षिप्त)
३ गौतमपृच्छा (प्रश्नोत्तर-मात्र)
४ श्रीनाकोडा–पार्श्वनाथ।
५ सत्यबोध-भास्कर (चर्चात्मक)
६ जीवनप्रभा श्रीविजयराजेन्द्र-सूरीश्वरजी महाराजकी जीवनी)
७ गुणानुराग-कुलक (शब्दार्थ भावार्थ और विस्तृत विवेचन सहित)
८ जन्ममरण सूतक-निर्णय।
९ संक्षिप्त जीवन चरित्र(महाराज श्री घनचन्द्रसूरिजी का)
१० जीवभेद-निरूपण (हिन्दी)
११ पीतपटाग्रह-मीमांसा।
१२ जिनेन्द्रगुणगान लहरी।
१३ जैनर्षिपट-निर्णय।
१४ रत्नाकरपच्चीसीकाअन्वयार्थ।
१५ श्रीमोहनजीवनादर्श।
१६ अध्ययनचतुष्टय(दशवैकालिकसूत्रके शुरूके ४ अध्य० का अनुवाद।
१७ लघुचाणक्यनीतिकाअनुवाद।
१८कुलिंगिवदनोद्गार-मीमांसा।
१९ प्रतिकार-निर्णय।
२० गद्यबद्धं चरित्रचतुष्टयम्।
२१ श्रीयतीन्द्रविहारदिग्दर्शन।
२२ श्री कोरटातीर्थका इतिहास।
२३ गद्यबद्धंकयवन्नाचरित्रम्।
२४ गद्यबद्धं जगडु चरित्रम्।
२५ गद्यबद्धं सुलसा चरित्रम्।
२६ आर्हत्प्रवचन (संग्रहित)
२७ निक्षेप-निबन्ध।
२८ जीवभेदनिरूपण (गुजराती)

प्राप्तिस्थान–श्रीयतीन्द्रजैनयुवक मंडल।
मु० निम्बाहेडा (टोंक) व्हाया–नीमच, R. M. R.

श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरेभ्यो नमः

श्रीयतीन्द्रविहारदिग्दर्शन ।

यस्योदारविचारसारविलसत्तथ्योपदेशच्छटा-
सौरभ्यं जगदद्भुतं जगति तत्पाखण्डिनोऽलोपयत् ।
भव्यानां हृदयाम्बुजानि नितरां प्रोद्घाटयामास नः,
कल्याणं स हि तन्तनीतु सततं राजेन्द्रसूरीश्वरः ॥१॥

इस दिग्दर्शन में जिस रास्ते से परमपवित्र–प्राचीन तीर्थों की जियारत के लिये हमारा विहार हुआ, उसीके दरमियान आये हुए गांवों के नाम, उनमें श्वेताम्बर जैनों के घर, जिनमन्दिर, उपाश्रय, धर्मशाला और एक गांव से दूसरा गांव कितने कोश है ? इत्यादि बातों का यत्किञ्चित् उल्लेख किया जाता है, जो साधु साध्वियों को विहार करने में अति उपयोगी और इतिहास–प्रेमियों को लाभप्रद और मददगार होगा ।

१ कुकसी–

यह धार रियासत का नीमार–प्रान्त में छोटा, पर अति रमणीय कसबा है । इसके चारों ओर पहाडी प्रदेश है । यहाँ पोष्ट ऑफिस और तार घर है । गांव में चारों ओर पक्की सडकें बनी हुई हैं । यहाँ से रेल्वे स्टेशन महु ३० कोश और दाहोद स्टेशन ३९ कोश है । गाँव में श्वेताम्बर

जैनों के १३० घर, एक उपासरा, दो बडी धर्मशाला और छः जिनमान्दिर हैं।

सब से बडे और प्राचीन मन्दिर में भगवान् श्रीशान्तिनाथ स्वामी की एक हाथ बडी सफेद संगमर्मर की मूर्त्ति बिराजमान है, जो सातसौ वर्ष की प्रतिष्ठित और अति प्रभावशालिनी है। इसके चारों ओर चोवीस देवरियाँ हैं, जिनमें नयी प्रतिमाएँ विराजमान की गई हैं। दूसरा मन्दिर भगवान् श्रीआदिनाथस्वामी का, जो विक्रम की अठारहवीं शताब्दी का बना हुआ और बावन जिनालय है। इसके दाहिने भाग की बगीची में एक मकराणा-पाषाण की सुन्दर छत्री में जैनाचार्य श्रीमद्-विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज की भव्य-मूर्त्ति स्थापित है। तीसरा भगवान् श्रीशान्तिनाथ का और चौथा भगवान् श्री महावीर स्वामी का मन्दिर हैं जो नये बनाये गये हैं और इन की प्रतिष्ठा सं० १९३७ तथा १९५४ में हुई हैं।

पांचवां मन्दिर भगवान् श्रीसीमन्धरस्वामी का है, जो बिलकुल नया, सफाईदार और रेवाँ-विहार के नाम से प्रसिद्ध है। इसके बाहर के मंडप की सीढियों के दाहिनी बगल पर प्रतिष्ठा के समय इस प्रकार शिला-लेख लगाया गया है—

"त्रिस्तुतिक-जैनश्वेताम्बरीय बीसा पोरवाड चतराजी रूपचंद, किशनलाल, जवेरचन्द, गेन्दालाल, केसरीमल, मोतीलाल, धनराज पारखने संवत् १९८१ में रेवां-विहार नामक जिन-मन्दिर बनवाया और

इसमें संवत् १९८२ ज्येष्ठशुक्ल ११ बुधवार के दिन व्याख्यानवाचस्पति मुनि श्रीयतिन्द्रविजयजी महाराज के पास महोत्सव पूर्वक प्रतिष्ठा कराके मूल नायक विहरमान भगवान् श्रीसीमन्धरस्वामीजी, श्रीबाहुस्वामीजी, श्रीसुबाहुस्वामीजी, श्रीपार्श्वनाथस्वामीजी और गौतमस्वामीजी की प्रतिमाएँ बिराजमान कीं। मु० कुकसी (धार)"

छट्ठा ज्ञान-मन्दिर जो पंचायती धर्मशाला में शिखरबद्ध बना हुआ है। इसके भीतर एक आलमारी में हस्त-लिखित और मुद्रित ग्रन्थों का संग्रह है और मूलद्वार के सम्मुख एक ताक में श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज की मनोहर मूर्त्ति बिराजमान है।

कुकसी से तीन मील के फासले पर 'तालनपुर' नाम का एक छोटासा इन्दौर-रियासत का गांव है। यहाँ जैनों का एक भी घर नहीं है, परन्तु जिन-मन्दिर तीन हैं, जिनमें सब से बडे मन्दिर में भगवान् श्रीऋषभदेव स्वामी की सवा हाथ बडी श्वेत वर्ण की भव्य मूर्त्ति स्थापित है। कहा जाता है कि दहिने भाग के पिछाडी के एक किसान के खेत के जीर्ण कुए से यह मूर्त्ति प्रगट हुई है। दूसरा मन्दिर गोडी-पार्श्वनाथ भगवान् का जो कुकसी निवासी गोमाजी नेमचंद जवरचन्द पोरवाड का बनवाया हुआ है और इस में बिराजमान मूर्त्ति की प्रतिष्ठा सं० १९९० महासुदि २ सोमवार के दिन जैनाचार्य श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराजने की है। इसके वाम-भाग की बगल में तीसरा एक दिगम्बर-मन्दिर है और इससे

कुछ दूर सडक के किनारे पर दिगम्बरों की एक छोटी सी धर्मशाला है। जिसमें दो सौ यात्री आनन्दसे ठहर सकते हैं।

यहाँ से दक्षिणोत्तर अन्दाजन २३ मील के फासले पर 'बावनगजा' पहाड है, जो नर्मदानदी के किनारे पर स्थित है। पहाड की ढालू जमीन पर नीचे सोलह दिगम्बर मन्दिर बने हुवे हैं। पहाड के आधे चढाव पर एक ही पत्थर की खडे आकारवाली ३० हाथ बडी आदिनाथ भगवान् की मूर्त्ति है, जो दिगम्बर है। इस के सामने एक छोटे कंपाउन्ड में पांच हाथ बडी कार्योत्सर्गस्थ एक दूसरी प्रतिमा और भी है। पहाड की ऊपरी चोटी पर, एक मन्दिर है जिसमें जिनेन्द्र भगवान् के चरण स्थापित हैं। ये जिनचरण सार्वजनिक हैं इस कारण इनकी सेवा-पूजा जैन और जैनेतर सभी करते हैं। दरअसल में यह पहाड दिगम्बर जैनों के विशेष मान्य है। दिगम्बर जैनों के अनेक सिद्धक्षेत्रों में से यह एक है और यहाँ प्रतिवर्ष अनेक दिगम्बर यात्री आते हैं।

२ बाग--

गवालियर रियासत के मनावर प्रान्त में पहाडियों के बिच बाघनी नदी के किनारे पर यह गांव बसा हुआ है। इसमें श्वेताम्बर जैनों के १८ घर, एक मन्दिर और एक उपासरा है। मन्दिर में भगवान् श्रीविमलनाथ स्वामी की सवा हाथ बडी सुन्दर मूर्त्ति बिराजमान है। मन्दिर के गोखडे में एक शिला-लेख इस प्रकार लगा हुआ है—

" श्री विमलनाथ–स्वामी का मन्दिर। इसको बाग-नगर के श्वेताम्बर जैन पोरवाड त्रिस्तुतिक–संघने बनवाया, और संवत् १९६१ मगसिर सुदि ५ के दिन जैनाचार्य श्री मद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के पास प्रतिष्ठा कराके मूलनायक भगवान् श्रीविमलनाथ स्वामी आदि की प्रतिमा एँ स्थापन कीं। "

यह नगर प्राचीन है और यहाँ पर ध्वंसावशेष प्राचीन कईएक चिह्न भी देख पडते हैं। नगर के पास वाली पहाडी पर जूना किला भी है। जीर्ण होने से यह किला अब टूट गया है इसका जूना नाम ' वैराटनगरी ' है।

३ टाँडा—

गवालियर–स्टेट के अमिझरा जिले में मेलनदी के किनारे पहाडियों के बीच में यह छोटा सा गांव है। इस में श्वेताम्बर जैनों के ३९ घर, एक दोमंजिली धर्मशाला और एक मन्दिर है, जिसमें भगवान् श्रीअजितनाथस्वामी की सवा फुट बडी सुन्दर मूर्त्ति बिराजमान है। यहाँ मेलनदी के ऊपर एक जूना क़िला भी है, जो चारों ओर से टूट कर खंडिहर बन गया है। लोग कहते हैं, कि यहाँ की पहाडियों में बडी बडी उत्तम दवाएँ मिलती हैं और यहाँ के निवासी लोग प्रायः उन्हीं दवाओं को काम में लेते हैं।

४ रींगनोद—

गवालियर रियासत के अमिझरा–सरदारपुर जिले में

यह एक छोटासा गाँव है। इसमें श्वेताम्बर जैनों के ३९ घर एक धर्मशाला, एक उपाश्रय और एक शिखर-बद्ध जिनमन्दिर है। जिसमें एक हाथ बडी भगवान् श्रीचन्द्रप्रभस्वामी की संग-मर्मर की प्राचीन और चमत्कारिणी मूर्त्ति स्थापित है। इस मन्दिर की प्रतिष्ठा सं० १९५१ में महाराज श्री विजयराजेन्द्र-सूरीश्वरजी के कर-कमलों से हुई है।

यहाँ से दो मील के फासले पर पूर्वोत्तर 'भोपावर' नामक प्राचीन तीर्थ है। भोपावर गांव के पास वृक्षों की झाडी के समीप एक प्राचीन मन्दिर है, जिसमें दश फुट् बडी भगवान् श्रीशांतिनाथस्वामी की कायोत्सर्ग ध्यान (खडे आकार) की अति प्राचीन और प्रभावशालिनी श्यामरंग की मूर्त्ति बिराजमान है। यह तीर्थ महु स्टेशन से ४० मील की दूरी पर है और यहाँ पोषवदि १० का हरसाल मेला भी भराता है जिसमें ४०० यात्री एकत्रित होते हैं।

९ राजगढ—

गवालियर रियासत के अमिझरा जिले में यह एक छोटासा कसबा है। यहाँ श्वेताम्बर जैनों में त्रिस्तुतिक-संप्रदाय के १९० चतुर्थस्तुतिक-संप्रदाय के ५०, और स्थानक-वासी-संप्रदाय के २५, घर हैं। यहाँ तीन मन्दिर हैं, जिन में सब से बडा मन्दिर महावीर भगवान् का है. जो प्राचीन और बावन जिनालय है। इस में अन्तिम तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामी की अति सुन्दर, चमत्कारीणी और सवा दो हाथ बडी मूर्त्ति बिराजमान है।

इस मन्दिरसे उत्तर लगते ही 'श्रीराजेन्द्र-भवन' नाम की बडी धर्मशाला बनी हुई है, जिसमें व्याख्यानालय के पास ही दाहिने भाग में मकराणी पाषाण की एक छोटी छत्री में महाराज श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी की चरण-पादुका स्थापित हैं। इन चरण पादुका पर इस प्रकार लिखा है कि--

"संवत् १९८२ मगसिरसुदि पूर्णिमायां चन्द्रवारे राजगढ-वास्तव्य-लालचंद-चम्पालाल-खजांचिना श्रीराजेन्द्रसूरीश्वर-पादुका कारिता। प्रतिष्ठितं च मुनि यतीन्द्र-विजयेन।"

इसी भवन के चोक में महावीर-मन्दिर की वाम-भाग की भींती-बारी के पास एक गुरु-मन्दिर बना हुआ है। इस-की प्रवेश-द्वार की बगल की भींत पर एक शिलालेख लगा है, जिसमें लिखा है कि--

"श्रीसौधर्मबृहत्तपागच्छीय खजानची दोलतराम हीरा-चंद-सोभागमल, समीरमलने इस गुरुमन्दिर को बनवाया व उसमें जैनाचार्य श्री श्री १००८ श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरी-श्वरजी महाराज के कर-कमलों से अञ्जनशलाका कराके श्रीपार्श्वनाथ आदि ४ मूर्त्तियाँ बिराजमान कीं और श्रीसंघ को समर्पण किया। संवत् १९६३ मगसिरसुदि २, मु० राजगढ। (माळवा)"

राजेन्द्र-भवन के प्रवेश-द्वार के ऊपर के एक शिला-लेख में लिखा है कि--

कलिकालसर्वज्ञकल्प जङ्गमयुगप्रधान जैनाचार्य श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरचरणकमलेभ्यो नमः ।

श्रीश्वेताम्बरजैन–त्रिस्तुतिक सम्प्रदाय वाले ओसवाल व पोरवाडों का धर्मध्यान करने का

'श्रीराजेन्द्रजैन भवन'

सं० १९२५

दूसरा मन्दिर अष्टापदजी का है, इसमें वर्त्तमान चोवीस तीर्थंकरों की अष्टापदगिरि के समान भव्य मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। इसके मूल–द्वार के दोनों बंगलो के ताक में, एक में श्री-गौतमस्वामी और दूसरे में महाराज श्रीराजेन्द्रसूरीश्वरजी की हुबोहुब मूर्त्ति विराजमान है। इस मन्दिर के प्रवेश–द्वार के ऊपर एक शिला–लेख लगा है, जिसमें लिखा है कि–

"श्रीसौधर्मबृहत्तपागच्छीय बीसा–पोरवाड खजानची शेठ दोलतरामजी चुन्नीलालजीने पन्नालालजी, लालचंद, चंपालाल, चांदमल, रतनलाल, मथुरालाल. माधोलाल आदि परिवार से श्रीअष्टापदजी का मंदिर बनवा के, उस में संवत् १९६१ माघसुदि ५ गुरुवार के रोज परमयोगि-राज जंगमयुगप्रधान जैनाचार्य श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्व-रजी महाराज के कर–कमलों से अष्टाह्निक–महोत्सव पूर्वक चोवीस जिन–प्रतिमाओं की प्रतिष्ठाञ्जनशलाका कराके, बिराजमान कीं। मु० राजगढ, (मालवा)"

इसके प्रवेश–द्वार के सामने ओसवालजैनों का श्रीयतीन्द्र

भवन' और इसके दाहिने भाग की बगल पर गली में ओसवालों की हवेली है, जो संघजीमन के काम में आती है। तीसरा मन्दिर शान्तिनाथस्वामी का है, जिसके एक ही कंपाउंड में तीन गुम्बजदार छत्री बनी हुई हैं। इन तीनों में शान्तिनाथ भगवान् की भव्य मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। इसकी प्रतिष्ठा सं० १९५४ में महाराज श्रीराजेन्द्रसूरीश्वरजीने की है। इसके दाहिने बगल पर भींत से लगता ही एक जूना उपासरा है, जो जैनों के बालकों को पढाने के काम में आता है। इस के अलावा गांव में हरखाजी की और मूणाजी कपूरचंद की दो छोटी धर्मशालाएँ भी हैं—

यहाँ से तीन मील के फासले पर पश्चिम तरफ 'मोहनखेडा' नामक पवित्र तीर्थस्थान है। यहाँ दो जिनालय और दो समाधि–मन्दिर हैं, जिनके चारों ओर एक पक्का कोट बना हुआ है। सब से बडे मन्दिर में भगवान् श्रीऋषभदेवस्वामी की एक हाथ बडी सफेद वर्ण की भव्य मूर्त्ति प्रतिष्ठित है। इसके बाह्य-मंडपके छज्जे के नीचे एक शिला–लेख इस प्रकार लगा हुआ है।

" ॐ अर्हं नमः। श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छीय बीसा पोरवाड संघवी दल्लाजी सुत लूणाजी–नेमचंद्र चम्पालालने श्रीशत्रुंजयतीर्थ–दिग्यात्रा–फलार्थ श्रीमोहनखेडा–तीर्थ स्थापन किया और संवत् १९४० मार्गशीर्ष सुदि ७ बुधवार के दिन सितपट जैनाचार्य श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के कर कमलों से प्रतिष्ठाञ्जनशलाका कराके

मूलनायक भगवान् श्रीआदिनाथस्वामी आदि मूर्त्तियाँ बिराजमान कीं यह तीर्थ सनातन त्रिस्तुतिक-संप्रदायी राजगढ-श्रीसंघ को समर्पण किया।"

दूसरा जिनालय भगवान् श्रीपार्श्वनाथस्वामी का है। मुख्य जिनालय के दाहिनी तरफ, मंदिर की हद के बाहर श्रीराजेन्द्रसूरीश्वर-समाधि मन्दिर है। इसके मध्य में आरस की नक्सीदार सुन्दर छत्री बनी हुई है, जिसमें जाली के नीचे एक शिला-लेख लगा है। उसमें लिखा है कि-

श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छाचार्यविजयराजेन्द्रसूरीशः।
शशिनवरसगुणवर्षे, पौषसितषष्ठीकवौ राजगढनगरे ॥१॥
निर्वाणमियाय तनुं, मोहनखेडापुरी संश्रके संघः।
मानश्रीसदुपदेशादारसोपलै-स्तत्रैवाकरोच्छत्रीम् ॥ २ ॥
श्रीमान् यतीन्द्रविजयः स्थित्वा,मासत्रयमिहजनमिथः क्लेशम्।
अपनीय मुदा प्रतिष्ठाञ्जनशलाका, प्रबन्धमचीकरत्सर्वम् ॥३॥
चन्द्राष्टाङ्कशशाङ्कविक्रममिते वर्षे द्वितीया बुधे,
ज्येष्ठे राजगढस्थसंघसुजनः शुक्ले महोत्साहतः।
आहूय स्वगुरूनुदारयमिभिर्भूपेन्द्रसूरीश्वरां-
स्तद्धस्तेन चकार भूरिमुदितः श्रीसद्गुरोः स्थापनाम् ॥ ४ ॥

संवत् १९८१ में महाराज श्रीभूपेन्द्रसूरिजी की प्रतिष्ठित गुरु-मूर्त्ति को राजगढ के अंगतद्वेषी-धर्मभ्रष्ट दो चार चतुर्थ-स्तुतिकों ने आधी रात को जा कर खंडित कर दी। श्रीसंघ के तरफ से दूसरी हुबोहुब मूर्त्ति मंगाकर उसके स्थान पर

फिर से बिराजमान की गई है । उसकी पलांठी ऊपर का लेख इस प्रकार है—

" करवसुनिधिभूवर्षे मार्गशीर्षशुक्लदशम्यां तिथौ बुधवासरे राजगढवास्तव्य–त्रिस्तुतिक–जैनसंघेन प्रतिष्ठाञ्जनशलाका कारिता, कृता च श्रीविजयभूपेन्द्रसूरेरादेशात् मुनिश्रीयतीन्द्रविजयेन । "

इसके सामने महत्तरिका–प्रवर्त्तिनी श्रीविद्याश्रीजी का छोटा पर बडा सुन्दर समाधि–मन्दिर है । जिसमें उनकी चरणपादुका बिराजमान है । दोनों समाधि–मन्दिरों का स्थान इतना उत्तम है, कि जहाँ दर्शकों को पूर्ण शान्ति प्राप्त होती है और दिल में वैराग्य–रस का श्रोत बहने लगता है । यहाँ की भूमि के स्पर्श, दर्शन और विश्राम करने से ऐसा मालूम होने लगता है, मानों परमपवित्र शत्रुंजयगिरि की भूमि पर बैठे हुए हों । यहाँ पर कार्त्तिकी–पूर्णिमा, चैत्रीपूर्णिमा और पौषसुदि ७ एवं तीन मेला भी भराते हैं जिनमें अन्दाजन तीस गांवों के भावुक–यात्री उपस्थित होते हैं ।

६ पारां—

झाबुवा रियासत में मेघनगर स्टेशन से १० कोश दूर यह एक छोटासा गांव है । इसमें श्वेताम्बर जैनों के ४० घर, १ उपासरा और १ मन्दिर है । मंदिर में मूलनायक भगवान् श्रीऋषभदेवस्वामी की श्यामरंग की अति मनोहर मूर्त्ति बिराजमान है ।

७ राणापुर—

झाबुवा रियासत का यह छोटा कसबा है जो दाहोद स्टेशन से १२ कोश और मेघनगर स्टेशन से ९ कोश दूर है। यहाँ श्वेताम्बर जैनों के ४५ घर, एक उपासरा, एक धर्मशाला और दो जिन-मन्दिर हैं। सब से बडा मंदिर भगवान् श्रीधर्मनाथस्वामी का, जो तालाव के किनारे पर बना हुवा है। इसकी प्रतिष्ठाञ्जनशलाका सं० १९६१ में श्रीविजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराजने की है। दूसरा घर-मंदिर एक जीर्ण उपाश्रय में है जिस में कि श्रीऋषभदेवस्वामी की प्राचीन मूर्त्ति बिराजमान है। गांव में पक्की सडक, पोष्ट ऑफिस और सरकारी स्कूल भी हैं।

८ कुन्दनपुर—

पहाडियों के मध्य में झाबुवास्टेट के दाहोद स्टेशन से ६ कोश दूर यह गाँव बसा हुआ है। यहाँ मालवीसाथ के श्वेताम्बरजैन के २ घर हैं, पर येभी राणापुर जाते आते रहते हैं। उतरने के लिये सरकारी थाना और गृहस्थों का मकान मिलता है।

९ दाहोद—

रतलाम से आनन्द जंक्सन को जाने वाली रेल्वे का यह दाहोद नामका स्टेशन है, इससे पाव कोश की दूरी पर यह पंचमहल जिले का छोटासा कसबा है। यहाँ श्वेताम्बर जैनों के २० घर, एक उपासरा, दो धर्मशाला और एक मन्दिर

श्री यतीन्द्रविहार-दिग्दर्शन :—

व्याख्यान वाचस्पति मुनिराज श्री यतीन्द्रविजयजी महाराज.

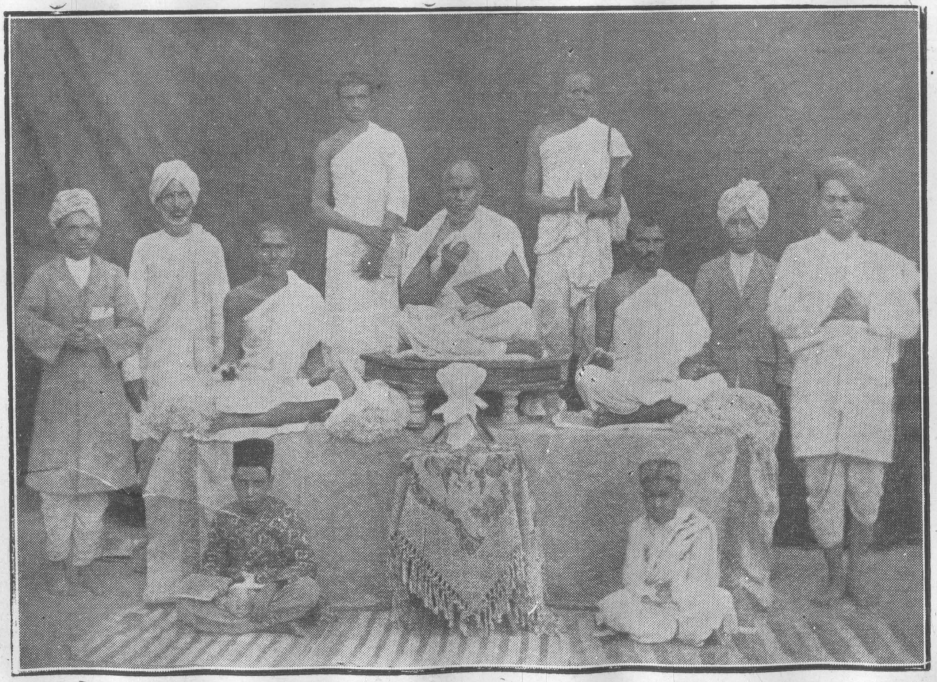

दर्शनार्थी—प्रदर्शन, मु० दाहोद, ता. २९—१—२६

है। मंदिर में मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी स्थापित हैं। यहाँ पक्की सडक चारों ओर बनी हुई है और दिन प्रतिदिन यह कसबा तरक्की पर है। गवर्मेन्ट के तरफसे यहाँ स्कूल नियत है।

१० गोधरा—

गुजरातदेश के पंचमहल जिले में रेवा-कांठा के पोलिटिकल एजेन्सी का सदर स्थान और जिले में सब से बडा कसबा है, इसके चारों ओर जंगल है। यहाँ अस्पताल, स्कूल, मातहतजेलखाना और सरकारी कचहरियाँ हैं। कसबे के पास एक बडा तालाब भी है, जिससे खेत पकाये जाते हैं। इस कसबे का दूसरा नाम 'गउझरा भी है। इसको सं० ११० में सोलंकी राजा केशरीसिंह के द्वितीय पुत्र दलकंददेवने वसाया और उसकी कई पीढीने यहां राज्य किया था। यहाँ श्वेताम्बर जैनों के ७० घर, दो जिनमंदिर, एक शान्तिनाथ और दूसरा धर्मनाथ का है। एक उपाश्रय, दो धर्मशाला हैं। इनके अलावा वैष्णवों की भी बडी बडी तीन धर्मशालाएँ बनी हुई हैं।

११ टिम्बारोड—

रतलाम से आनंदजंक्सन को जानेवाली रेल्वे का स्टेशन है, लोगों को विश्राम लेने के वास्ते यहाँ एक मुसाफर-खाना बना हुआ है। यहाँ स्टेशन पर श्वेताम्बरजैन का एक घर हैं, पर है बडा भक्ति करनेवाला।

१२ अंगाडी—

यह इसी नामकी स्टेशन से ४ फर्लांग पर बसा हुवा

है। यहाँ श्वेताम्बरजैनों के ६ घर, एक उपासरा और एक घर–मन्दिर जिसमें भगवान् श्रीवासुपूज्यस्वामी की भव्य मूर्त्ति बिराजमान है। यहाँ एक मुसलमानों की स्कूल भी है।

१३ डाकौर—

गुजरातदेश के खेडा जिले में यह एक छोटा कसबा है और वैष्णवों के प्रसिद्ध तीर्थों में से एक है। यहाँ रणछोडजी का मन्दिर देखने लायक है। इसके अलावा त्रिविक्रम का मंदिर, अस्पताल, और पोष्ट ऑफिस है। प्रति महिने में यहाँ बहुत से यात्री आते हैं और कार्त्तिक पूनम का मेला भी होता है जिसमें दस हजार यात्री तक एकत्रित होते हैं। यहाँ पक्की सडक और रेल्वे स्टेशन भी है। गाँव में बडी बडी छः धर्मशालाएँ हैं जिनमें यात्रीलोगों के उतरने और गोदडा–बरतन का अच्छा प्रबन्ध है।

१४ उमरेठ—

यह एक छोटा कसबा और रेल्वे का स्टेशन है। आनंदजंक्सन से पूर्व कुछ उत्तर १४ मील के फासले यह कसबा है। यहाँ श्वेताम्बरजैनों के पूर्ण भक्तिवाले और धर्मजिज्ञासु पांच घर हैं और एक ऋषभदेवस्वामी का छोटा मन्दिर तथा उपासरा है। गाँव में सरकारी एक धर्मशाला (सराय) भी है।

१५ भालेज—

यहाँ श्वेताम्बरजैनों के धर्मोपिपासु १२ घर और श्रीशा-

न्तिनाथ भगवान् का एक घर–मन्दिर है। इसके अलावा एक उपासरा और एक धर्मशाला भी है। इसमें सरकारी स्कूल और उसकी मेडी पर सरकारी कचहरी है। यहाँ के जैनों को धर्मोपदेश मिलने की पूरी आवश्यकता है। साधु मुनिराजों के उपदेशाऽभाव से कितने एक श्रावक श्राविकाओं ने डाकोर की कंठियाँ भी बांध ली है।

१६ बोरियावी—

यहाँ श्वेताम्बर जैनों के ५ घर, और एक घर–मन्दिर है जिसमें एक सर्वधात की चोबीसी विराजमान है। यहाँ के जैन भी नाम मात्र के जैन हैं।

१७ वरताल—

यह एक छोटा गाँव है, पर स्वामीनारायण के पन्थ का भारी धाम है। इस पन्थ के एक गादी के महन्त भी यहाँ रहते हैं, जिनका सारा रंग–ढंग राजशाही है। महन्त के निवास–स्थान के एक कम्पाउंड में स्वामीनारायण का दर्शनीय भव्य–मन्दिर, ग्रन्थालय और साध्वाश्रम बना हुआ है। यहाँ इस मजहब के प्रति महिने में हजारों यात्री आते हैं। महंत का बगीचा, उसमें एक तालाव, और यात्रियों के ठहरने के लिये बडी तीन धर्मशालाएँ हैं, जिन पर महन्त का ही आधिपत्य है। यह गाँव भी महन्त का ही है। यहाँ श्वेताम्बरजैनों के १५ घर, एक दो मंजिला उपासरा और एक सुन्दर जैनमन्दिर है।

१८ मेलाय—

बडोदा रियासत के भाल जिले में यह एक छोटा गाँव है। यहाँ श्वेताम्बरजैनों के पुख्ता श्रद्धालु और भक्तिमान् १० घर, एक उपासरा, एक धर्मशाला और एक घर-मन्दिर है। यहाँ स्वामीनारायण-पन्थ का बडा जोर है और उनका बडा एक मंदिर भी है।

१९ सोजीत्रा—

यह एक अति सुन्दर छोटा कसबा है। यहाँ श्वेताम्बर-जैनों के १२ घर, एक उपासरा, एक धर्मशाला और जोडा जोड दो प्राचीन जिन-मंन्दिर हैं। मन्दिर में सफेद वर्ण की प्रभावशालिनी-भगवान् श्री महावीरस्वामी की अति सुन्दर मूर्त्तियाँ बिराजमान् हैं, जो बहुत प्राचीन और जीवितस्वामी के नाम से पहचानी जाती हैं। इस गाँव में जैनेतरों की धर्मशाला और दिगम्बरजैनों के भी दो मन्दिर हैं।

२० ईसरवाडा—

इस छोटे गाँव में श्वेताम्बरजैनों के ४ घर के सिवाय जिन-मन्दिर, उपासरा और धर्मशाला नहीं है। परन्तु यहाँ के जैन बडे श्रद्धालु और भक्ति करनेवाले हैं।

२१ वरसडा—

साबरमति नदी के कांठे से ३ मील के दूर पूर्व तरफ यह छोटा गाँव बसा हुआ है। यहाँ श्वेताम्बरजैन का एक ही घर

है जो पचास घर जैसा उत्साह रखनेवाला और नामी है। इस गाँव में विश्राम के लिये महादेव की धर्मशाला सिवाय दूसरा कोई ठिकाना नहीं है। यहाँ से खंभात सीटी १४ कोस दूर है और रास्ते में गलियाणुं, मोरज, आदरुज, बुढ्ढेज, ये चार छोटे गाँव आते हैं।

२२ बटामण–

साबरमतिनदी के पश्चिम कांठे पर ३ मील दूर यह गाँव बसा हुआ है। यहाँ श्वेताम्बरजैनों के १० घर और एक जीर्ण उपासरा है। इसके अलावा स्थानकवासियों के १० घर और एक सरकारी स्कूल भी है।

२३ बोरु–

इस गाँव में श्वेताम्बरजैनों के १० घर, उपासरा और धर्मशाला एक है। इसके चारों ओर जंगली सपाट प्रदेश हैं जिसमें खारी के कारण घांस, या वृक्ष बिलकुल नहीं होते। यहाँ का जल भी प्रायः खारा है।

२४ बोलाद–

चारों ओर की खारियों के मध्य में यह गाँव वसा हुआ है। यहाँ श्वेताम्बरजैनों के ६ घर, और एक उपासरा है। इस गाँव के महाजन नाम के जैन और धर्मशून्य हैं और यहाँ के कुओं का भी जल अपेय और खारा है।

२५ पीपली–

यहाँ श्वेताम्बरजैनों के ७ घर, एक उपासरा और एक

घर–मन्दिर है। गाँव के तालाव के पास एक सरकारी बडी सराय बनी हुई है जिसमें तीनसौ आदमी उतारा कर सकते हैं। नम्बर २३ से २५ तक के गाँवों में पानी की पूरी तंगी है। गरमी के मौसिम में तो पशुओं को भी पानी और चारा मिलना दुश्वार (कठिन) है।

२६ आमली–

यह छोटा गाँव है, यहाँ श्वेताम्बरजैनों के ४ घर, और एक सरकारी सराय है। यहाँ के गरासिया लोग साधुओं के भक्त और धर्म के जिज्ञासु हैं। यहाँ का ठाकुर सतसंगी और समझदार है।

२७ घोलेरा बंदर–

यह एक प्राचीन कसबा है। प्राचीन समय में यह बडा भारी व्यापार का केन्द्र था। श्वेताम्बरजैनों के ६० घर और स्थानकवासियों के ७० घर हैं। दो उपासरा, और दो मंजिली बडी भारी एक धर्मशाला है, जिसमें पांच हजार यात्री आनन्द से ठहर सकते हैं। यहाँ एक प्राचीन भव्य जिन मन्दिर है जिसमें प्राचीन जिनमूर्त्तियाँ बिराजमान हैं। इस के अलावा अस्पताल, स्कूल, बोर्डिंग, गौशाला और लायब्रेरी भी है।

२८ एबदपर–

चारों तरफ खारियों से घिरा हुवा यह एक छोटा गाँव है, इसमें श्वेताम्बरजैनों के ५ घर हैं, जो साधु और संघ के

पूर्ण भक्त हैं। यहाँ भी गरमी की मौसिम में पानी की भारी तंगीरहती है।

२९ बेलावदर–

यहाँ श्वेताम्बरजैनों के २ घर और एक छोटी धर्मशाला है। यहाँ की जंगली भूमि पर न घांस है और न झाड, जिधर दृष्टि डालो उधर केवल सपाट खारी जमीन ही नजर आती है। यहाँ पीने के लिये पानी ४ कोश दूर से आता है, पर वह भी नमक से अधिक खारा है।

३० रतनपर–

यहाँ जैनश्वेताम्बरों के १० घर और एक छोटा उपासरा है। यहाँ के जैन अच्छे भावुक हैं और धर्मजिज्ञासा रखने वाले हैं। गाँव के बहार कुछ जूने आईठाण भी नजर आते हैं। यहाँ के लोग कहते हैं कि पेश्तर वल्लभी नगरी का दरवाजा यहीं था।

३१ बला–

यह[1] काठियावाड में तीसरे नम्बर का स्टेट है। इसका

---

१ बम्बई हाते के गुजरात प्रदेश के पास पश्चिमी भाग में यह प्रायद्वीप है। इसके उत्तर कच्छ की खाडी और कच्छ का रन, बाद कच्छ देश है। पूर्व साबरमती नदी और कांबे की खाडी बाद गुजरात देश है और दक्षिण व पश्चिम अरब का समुद्र है। इस के दक्षिण–पश्चिम के भागको, जो लगभग १०० मील लम्बा होगा, 'सौराष्ट्र देश' कहते हैं। काठियावाड की सब से अधिक लम्बाई २२० मील और सब से अधिक चौडाई १६५ मील है। यह पोलिटिकल एजेन्सी के अधीन है। यह एजेन्सी ४ भागों में विभक्त

प्राचीन नाम वल्लभीनगरी है। अब भी यहाँ प्राचीन शिला-लेख और खंडहर निकलते हैं। पेश्तर यहाँ शत्रुंजय की तलेटी थी। श्रीमान् देवार्द्धिगणिक्षमाश्रमणस्वामी ने आगमों को यहीं पुस्तकारूढ किये थे। यहाँ के मन्दिर में उनकी एक भव्य मूर्त्ति भी बिराजनान है। यहाँ श्वेताम्बर जैनों के १०० घर, २ उपासरा, २ धर्मशाला, १ जैनपाठशाला, १ कन्याशाला, १ अस्पताल और एक जिन मन्दिर है। मंदिर में मूलनायक भगवान् श्रीपार्श्वनाथस्वामी की भव्य मूर्त्ति स्थापित है। गाँव में पक्की सड़क और रेल्वे स्टेशन भी है।

३२ चमारड़ी-

यह गाँव एक छोटी पहाड़ी के नीचे वसा हुआ है। इसमें श्वेताम्बर जैनों के ४ घर, एक उपासरा और एक जिनगृहालय है। इसके अलावा गाँवसे कुछ दूर कबीर-पन्थी और दादु-पन्थी के दो अखाड़े बने हुए हैं और उन्हीं के पास दो धर्म-शाला यात्रियों के लिये बनी हुई हैं।

३३ वरतेज-

एक छोटी नदी के किनारे पर यह गाँव बसा हुआ है।

हैं-झालावाड, हालार, सौराष्ट्र, और गोहेलवाड। जिनमें एक पोलिटिकल एसीस्टेन्ट रहते हैं जिनको जिलाजज और माजीष्ट्रेट के समान अखतियार है। काठियावाड में जैनों-के शत्रुंजय और गिरनार ये दो भारी तीर्थ-धाम हैं। विक्रम की १३-१४ वीं सदी में काठिजाति के लोग कच्छ से आकर प्रायद्वीप में वसे, तब से इसका नाम काठियावाड पडा। इसका दक्षिण-पश्चिम भाग सौरा (सौराष्ट्र) के नाम से प्रसिद्ध है।

यहाँ भावसार श्वेताम्बर जैनों के ३० घर, एक उपासरा, दो बड़ी धर्मशाला, एक लायब्रेरी और एक भव्य कारीगिरीवाला शिखर बद्ध जिनमन्दिर है जो अति प्राचीन है और इसमें मूल-नायक श्रीसंभवनाथ स्वामी बिराजमान हैं। जो दर्शनीय और तीर्थस्वरूप हैं।

३४ भावनगर–

बम्बई हाते के काठियावाड़ में काठियावाड़ प्रायद्वीप के पूर्व किनारे के पास कांबे की काड़ी पर पश्चिम कुछ उत्तर देशी राज्य की यह राजधानी है जो बम्बइ के गवर्नर के अधीन के देशी राज्यों में का एक कसबा है। इसको लोग 'भाऊनगर' भी कहते हैं। इसको सन् १७२३ में भाऊसिंह ने अपने नाम से बसाया है। यहाँ श्वेताम्बर जैनों के ७०० घर और स्थानक-वासियों के ३०० घर हैं। शहर में छोटे बड़े नौ जिन–मन्दिर हैं। जिनमें सबसे बड़ा और रमणीय दादावाड़ी का मन्दिर है जो शहर के किनारे पर आया हुआ है। इसमें श्रीमहावीर प्रभु और आदिनाथ भगवान् की मनोहर मूर्त्ति बिराजमान है। शहर में आनन्द प्रिन्टींग–प्रेस, जैनधर्मप्रसारकसभा, जैनआत्मानन्दसभा, विजयधर्मप्रचारकसभा आदि संस्थाएँ और सरकारी लायब्रेरी देखने लायक हैं। इस के अलावा बीसा श्रीमाली बोर्डिंग, दशा-श्रीमाली–बोर्डिंग, त्रिभुवन–भाणजी कन्याशाला, वृद्धिचन्द्र जैन पाठशाला, जैनशुभेच्छकमंडल आदि अच्छे प्रधन्ध से चल रहे हैं। यहाँ से कईएक साप्ताहिक और मासिक पत्र भी नियमित निकलतें हैं, जिनमें सब से पहिला नम्बर 'जैन' साप्ताहिक

पत्र का है जो नियम पूर्वक जैन-समाज की सेवा बजा रहा है और जो चोवीस वर्ष से बिना रुकावट के जारी है। यहाँ रेल्वे स्टेशन दो हैं और कांबे की खाड़ी में बम्बई से माल के भरे स्टीमर आते जाते रहते हैं।

३५ अखवाड़ा-

यहाँ श्वेताम्बरजैनों के ३ घर और एक छोटी धर्म-शाला है। जो सड़क के किनारे पर बनी हुई है। यह गाँव बिलकुल छोटा है, परंतु यहाँ के जैन भावुक और धर्म-जिज्ञासु हैं।

३६ गोघाबन्दर-

कांबे की खाडी के किनारे पर यह एक छोटा कसबा है जो भावनगर से ८ कोश के फासले पर है। भावनगर से गोघा तक पक्की सड़क जाती है। यहाँ श्वेताम्बरजैनों के ७५ घर, दो बड़ी धर्मशाला और दो उपाश्रय हैं। यहाँ के जैन तीर्थमुंडिये और देवद्रव्य भक्षक हैं। इतने घर होने पर भी यहाँ साधु साध्वियों को पूरा आहार-पानी नहीं मिल सकता। गाँव में अति प्राचीन तीन मन्दिर हैं जिनमें सब से बड़े जिन-मन्दिर में नवखंडा-पार्श्वनाथ भगवान् की श्यामरंग की दो हाथ बड़ी सुन्दर मूर्त्ति बिराजमान है। इसकी प्रतिष्ठाञ्जनशलाका सं० ११६८ में श्रीमहेन्द्रसूरिजी के उपदेश से श्रीमाली माणावटी हीरुने कराई है। यह जूना खेड़ा है इसमें जमीन खोदते समय दश प्रतिमाएँ प्रगट हुई थीं जो बड़े मन्दिर में स्थापित हैं।

३७ तणसा–

यहाँ श्वेताम्बरजैनों के ४० घर, एक उपासरा और एक घर मन्दिर है। मन्दिर में भगवान् श्रीपार्श्वनाथस्वामी की भव्य मूर्त्ति विराजमान है। यह भावनगर से तलाजा जाने वाली रेल्वे–सड़क के किनारे पर ही बसा हुआ है। यहाँ पोष्ट ऑफिस और थोड़ी दूर रेल्वे स्टेशन भी है।

३८ त्रापज–

यह एक छोटा गाँव है जो रेल्वे सड़क के पास ही बसा हुआ है। श्वेताम्बरजैनों के यहाँ ६० घर, एक उपासरा, एक छोटी धर्मशाला और एक शिखरबद्ध जिनमन्दिर है–जिसमें भगवान् श्रीपार्श्वनाथस्वामी की मनोहर मूर्त्ति बिराजमान है। यहाँ के जैन बड़े भावुक और श्रद्धालु हैं।

३९ तलाजा–

भावनगर से १६ कोश के फ़ासले पर तलाजा स्टेशन है। इससे आध मील दूर एक छोटी नदी के किनारे तालध्वजगिरी के नीचे यह गाँव बसा हुआ है। यह स्थान शत्रुंजयतीर्थ की पंचतीर्थियों में से एक है जो सिद्धाचलजी के समान ही पवित्र माना जाता है। यहाँ श्वेताम्बरजैनों के ६० घर, दो उपासरा और दो मंजिली–दो बड़ी धर्मशालाएँ हैं जिनमें तीन तीन हजार यात्री आराम से ठहर सकते हैं। तालध्वजगिरि (तलाजा–पहाड़ी) की ऊंचाई ३२० फूट है। इसमें छोटी बड़ी २० गुफा हैं और हरएक गुफा के पास पानी के टांके हैं, जिन-

का पानी स्वच्छ और मधुर है। इस पहाड़ी की दो चोटी (शिखर–शृंग) हैं। नीचेकी सपाट चोटी पर अति मनोहर जिनमंदिर है, जिसमें तीर्थनायक भगवान् श्रीसुमतिनाथ की भव्य और चमत्कारिणी मूर्त्ति बिराजमान है। कहा जाता है कि यह मन्दिर सं० १३८१ में बना है। दूसरी शंकु आकृतिवाली चोटी पर चोमुखजी का मन्दिर है और पास ही में जिन–पादुका तथा अजितनाथ भगवान् की ध्यान भूमि है। नीचे की चोटी परके कूछ दूर ढालू प्रदेश पर एक मनोहर नया मन्दिर बना हुआ है, इसी में एक भूमिगृह भी है। इसका चढ़ाव पाव कोश से कुछ अधिक है और ऊपर तक पक्का रास्ता बंधा हुआ है।

गाँव में भी एक दिव्य जिनमन्दिर है जिसमें मूलनायक भगवान् श्रीशान्तिनाथस्वामी की भव्य मूर्त्ति स्थापित है। तीर्थ-स्थान होने पर भी यहाँ के जैन भावुक, श्रद्धालु और साधु साध्वियों की भक्ति करनेवाले हैं। यहाँ भी यात्री ठहर कर सिद्धगिरि के समान ९९ यात्रा करते हैं। यहाँ का जल–वायु बहुत ही शुद्ध और निरोगी है।

४० देवलां–

यहाँ श्वेताम्बरजैन के दो घर और एक जिन–मन्दिर है। यहाँ उतरने के लिये गृहस्थों के मकान सिवाय दूसरा कोई ठिकाना नहीं है। मंदिर मूर्त्ति छोटी, पर सुन्दर है।

४१ ठासेज–

यह छोटा गाँव है, इसमें श्वेताम्बरजैनों के ४ घर हैं जो

किसी काम लायक नहीं हैं। साधु साध्वियों को देख कर यहाँ के जैन घर बंद कर लेते हैं। यहाँ उतरने योग्य कोई भी स्थान नहीं है। तलाजा की यात्रा के लिये जानेवाला कोई संघ यहाँ मुकाम करता है, उससे यहाँ के जैन उपाश्रय बांधने के लिये रुपये मंडा कर स्वयं ॐ स्वाहा कर जाते हैं।

४२ पालीताणा–

बम्बई हाते के काठियावाड़ के गोहेलवाड प्रान्त में शत्रुंजय पहाड़ी की पूर्वीनेव के पास एक देशी राज्य की राजधानी है। यह काठियावाड़ के दूसरे दर्जे के राज्यों में से एक है। यहाँ के ठाकुर गोहेल राजपूत हैं। इसका स्थान, भूगोल में २१ अंश, ३१ कला, १० विकला उत्तर अक्षांस और ७१ अंश, ५३ कला, २० विकला पूर्वदेशान्तर है। इसमें राजकीय मकानों को छोड़कर, शेष सब जितने बड़े बड़े मकान हैं वे जैन–समाज के हैं। यहाँ जैनगुरुकुळ, जैनबालाश्रम, श्राविकाश्रम, हेमचन्द्राचार्यपाठशाला, वीरबाई पाठशाला, बुद्धिसिंहपाठशाला, तलकचंद लायब्रेरी, मोहनलाल लायब्रेरी और राजकीय महालयों के समान मोटी धर्मशाला आदि अनेक होने के कारण यह छोटा कसबा होने पर भी शहर के सदृश देख पड़ता है।

यहाँ कुल ९ जिनमंदिर हैं. जिनमें आदिनाथ भगवान् का सब से बड़ा है, इसमें मूलनायक समेत १४२ जिन–मूर्त्तियाँ हैं और शेष आठ मंदिरों में सब मिलकर १२२ मूर्त्तियाँ हैं जिनमें इधर उधर देने की मूर्त्तियाँ भी शामिल हैं। इनके अलावा

कच्छी रणसिंह की धर्मशाला के पीछे तालाब के नाम से प्रसिद्ध स्थान पर गढ के मध्य में श्रीऋषभदेवस्वामी की तीन जोड चरण–पादुका, दरबारी गुजराती निशाल के पीछे बाबा के अखाड़े के पास चूना पत्थर के चबूतरे के ऊपर रायण के वृक्ष के नीचे श्री आदिनाथस्वामी के दो जोड़ चरण–पादुका जो जूनी तलहटी के नाम से पहिचाने जाते हैं, और श्मशान से थोडी दूर नदी के घांघरका–घाट पर पीलुवृक्ष के नीचे श्रीगोड़ी–पार्श्वनाथ स्वामी की चरण–पादुका यहाँ दर्शनीय हैं। गोडीजी की चरण-पादुका पर आसोज और चैत्र की ओली में दशमी के दिन ओली करनेवाले श्रावक श्राविका धजा चढाते हैं। पालीताणा कसबे में भीतर और बाहर छोटी बड़ी ३२ जैनधर्मशालाएँ हैं। जिनके नाम इस प्रकार हैं—

१–सेठ हेमाभाई की, कोठरियाँ	....	....	२३
२–सेठ की धर्मशाला कोठरियाँ	....	....	१९
३–मोतीसाह सेठ की, कोठरियाँ	....	....	४१
४–उजम बाई की, कोठरियाँ	...	....	९
५–जोरावरमलजी की, कोठरियाँ	....	....	८
६–लल्लुभाई की, कोठरियाँ	....	....	८
७–हठीभाई की, कोठरियाँ	....	....	१७
८–मोतीकड़िया की, कोठरियाँ	....	....	१२
९–राधनपुरी–मसालिया की, कोठरियाँ		....	४
१०–वोहरा अमरचंद हठीसंग की, कोठरियाँ		....	१७
११–सात ओरड़ा की, कोठरियाँ	....	....	१८

१२–बदरीमलजी की, कोठरियाँ ८
१३–भावनगरी भंडारी की, कोठरियाँ.... .... १७
१४–डाह्याभाई की, कोठरियाँ ३
१५–रणसिंह देवराज की, कोठरियाँ २१
१६–नरसी केशवजी की कोठरियाँ ४७
१७–गोघावाला की, कोठरियाँ १२
१८–जामनगर कबुभाई की, कोठरियाँ... .... १०
१९–मोतीसुखिया की, कोठरियाँ ३०
२०–माणकचंद चंपालाल की, कोठरियाँ ३१
२१–कच्छी–पुरबाई की, कोठरियाँ ३०
२२–कोटावाला कमासा की, कोठरियाँ ... २६
२३–बाबु पन्नालालजी की कोठरियाँ ३३
२४–बाबु माधवलालजी की, कोठरियाँ २४
२५–पाटनवाला–रतनचंद की, कोठरियाँ.... .... ३२
२६–नहार–बिल्डिंग, कोठरियाँ १५
२७–जसकुँवरजी की, कोठरियाँ १६
२८–मगन मोदि की, कोठरियाँ १६
२९–देवसी पुनसी कच्छी की, कोठरियाँ १०
३०–कच्छी दशा नरसी नाथा की, कोठरियाँ ६३
३१–आनंदजी कल्याणजी को बंडो, कोठरियाँ ... ५६
३२–नगीनदास की, कोठरियाँ १०

४३ पवित्रतीर्थ–श्रीशत्रुंजय—

पालीताणा कसबे से १½ मील पश्चिम यह एक पहाड़ी है,

जो समुद्र के जल से १९८० फुट ऊंची है। मार्ग के चढ़ाव में बेडोल पत्थर की सीढ़ियाँ हैं, जो कहीं कहीं अच्छी भी हैं। पालीताणा से पहाड़ के मूल तक पक्की सड़क बनी हुई है और दोनों तरफ वृक्षों की पंक्तियाँ लगी हुई हैं। गिरिराज के मूल में भाथा–तलहटी, दो मकान और एक छोटा बगीचा है। यहीं से गिरिराज का चढ़ाव शुरू होता है, जो रामपोल तक चार मील का है। आगे जय–तलहटी, दर्शन–मंडप, गौतमस्वामी, शान्तिनाथ, अजितनाथ और आदिनाथ के चरण=पादुका के दर्शन किये बाद बाबुजी का मन्दिर आता है जो मुर्शिदाबादवाले रायबहादुर धनपतिसिंह लक्ष्मीपतिसिंहने अपनी माता महेताब कुंवर के स्मरणार्थ बनाया है। इसमें भगवान् श्रीआदिनाथस्वामी की भव्य मूर्त्ति बिराजमान है।

कुछ ऊंचे चढ़ने पर एक विश्राम आता हैं जिसे 'धोलीं-परब का विसामा' कहते हैं। यहाँ पानी की एक पो लगी है। इसके समीप ही एक छोटी देवरी है जिस में भरत चक्रवर्त्ति के चरण स्थापित हैं। आगे इच्छाकुंड और नेमनाथ के चरण के बाद, कुमारपालकुंड और कुमारपाल विश्राम स्थल है, जो चौलुक्यवंशीय परमार्हत् महाराज कुमारपाल के बनाये कहे जाते हैं और वे लीलीपरब का विसामा इस नाम से प्रसिद्ध है। जब पर्वत की चढाई लग भग आधी रह जाती है, तब हिंगलाजदेवी की देवरी आती है। यहाँ से चढ़ाई बिलकुल खड़ी और टेड़ी होने के कारण कुछ कठिन है। आगे रास्ते में कलिकुंड–पार्श्वनाथ के चरण, चारशाश्वताजिन के चरण, जिनेन्द्रटोंक, द्राविड, वारि-

खिल, नारद और अइमत्तामुनि की निर्वाण देवरी के दर्शन किये बाद, राम, भरत, शुकराज, थावच्चा और सेलक मुनि की कायोत्सर्गस्थ प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं। सब से अन्तिम हडे (टेकरी) पर शुकोशलमुनि के चरण और हनुमान की देवरी आती है जिसमें सिंदूर–लिप्त वानराकार हनुमान की मूर्त्ति है। इसी प्रकार की गणेश, भवानी आदि हिन्दू देव देवियों की मूर्त्तियाँ और कई जगह स्थापित हैं। यहाँ से आगे दो रास्ते निकले हैं–एक सीधा प्रथम टोंक को जाता है और दूसरा सब टोंकों में होकर प्रथम टोंक को जाता है।

पर्वत की चोटी के दो भाग हैं। ये दोनों ही लगभग तीनसौ अस्सी अस्सी गज लम्बे हैं और सर्वत्र ही जिन–मन्दिरमय हो रहे हैं। मन्दिरों के समूह को टोंक कहते हैं। टोंक में एक मुख्य मन्दिर और दूसरे अनेक छोटे छोटे मंदिर होते हैं। यहाँ की प्रत्येक टोंक, एक एक मजबूत कोट से घिरि हुई है। एक एक कोट में कई कई दर्वाजे हैं। इन में से कई कोट बहुत ही बड़े बड़े हैं। उनकी बनावट बिलकुल किलों के ढंग की है। टोंक विस्तार में छोटे बड़े हैं। पर्वत पर पहली टोंक सब से बड़ी है। उसने पर्वत की चोटी का दूसरा हिस्सा सब का सब रोक रक्खा है। पर्वत की चोटी के किसी भी स्थान में खड़े होकर देखा जाय तो हजारों मन्दिरों का बड़ा ही सुन्दर, दिव्य और आश्चर्य–जनक दृश्य दिखलाई देता है। इस समय दुनिया में शायद ही कोई पर्वत होगा जिस पर इतने सघन, अगणित और

बहु–मूल्य मंदिर बनवाये गये हों। पर्वत के बाहर के प्रदेशों का समूह–व्यापी दृश्य भी यहाँ से बडा ही रमणीय दिखलाई देता है।

पर्वत पर की सभी टोंकों के इर्द गिर्द एक बड़ा मजबूत पत्थर का कोट बना हुआ है। कोट में गोली चलाने योग्य भवांरियाँ भी बनी हुई हैं। इस कोट के कारण पर्वत एक किले ही का रूप धारण किये हुए है। टोंकों में प्रवेश करने के लिये आखे कोट में केवल दोही बडे दर्वाजे बने हुए हैं। कोट के भीतर प्रवेश करते ही एक चौक, बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा और मन्दिर मिलते जाते हैं। मन्दिरों में इतनी प्रतिमाएँ हैं कि एक श्रद्धालु–भक्त की जिधर को नजर जाती है, उधर ही ही उसे मुक्तात्माओं के प्रतिबिम्ब दिखलाई देते हैं। कुछ समय के लिये तो मानों वह आपको मुक्तिनगरी का एक पथिक समझने लगता है।

फार्बस साहब लिखते हैं कि—

"प्रत्येक मन्दिर के गर्भागार में तीर्थङ्करों की एक, या अधिक मूर्तियाँ बिराजमान हैं। उदासीन वृत्ति को धारण की हुई इन संगमर्मर की मूर्तियों का सुन्दर आकार, चांदी की दीपिकाओं के मन्द प्रकाश में अस्पष्ट, परन्तु भव्य दिखलाई देता है। अगरबत्तियों की सघन सुगन्धी सारे पर्वत पर व्याप्त है। संगमर्मर के चमकीले फर्श पर भक्तिमान स्त्रियाँ सुवर्ण के शृङ्गार और विविध रंग के वस्त्र पहिन कर जगमगाहट मारती हुई और एक स्वर से, परन्तु मधुर आवाज़ से स्तवना करती हुई, नंगे पैर से धीमे धीमे

मन्दिरों को प्रदक्षिणा दिया करती हैं। शत्रुंजय-पर्वत को सचमुच ही, पूर्वीय देशों की अद्भूत कथाओं के एक कल्पित पहाड़ की यथार्थ उपमा ही दी जा सकती है। और उसके अधिवासी मानो एका एक संगमर्मर के पुतले बन गये हों, परन्तु अप्सराएँ आकर उन्हें अपने हाथों से स्वच्छ और चमकित रखती हों, सुगन्धित पदार्थों के धूप धरती हों तथा अपने सुस्वरद्वारा देवों के शृङ्गारिक गीत गा कर हवा को गान से भरती हों ऐसा आभास होता है।"

पर्वत पर नौ, या दश टोंक हैं। प्रत्येक टोंक में छोटे बड़े सैकड़ों मन्दिर बने हुए हैं। नौ टोंकों का संक्षेप में हाल इस प्रकार है—

पहिली-आदीश्वर भगवान् की टोंक—शत्रुंजयगिरि के दूसरे शिखर पर यह टोंक बनी हुई है। यह टोंक सब से बड़ी है। *इस अकेलीने ही पर्वत का सारा दूसरा शिखर रोक रक्खा* है। इस तीर्थ की जो इतनी महिमा है वह इसी के कारण है। तीर्थपति आदिनाथ का ऐतिहासिक और दर्शनीय मन्दिर इसी के बीच में है। बड़े कोट के दर्वाजे में प्रवेश करते ही एक सीधा राजमार्ग जैसा फर्शबंध रास्ता दृष्टिगोचर होता है जिसकी दोनों ओर पंक्तिबद्ध सैंकड़ों मन्दिर अपनी विशालता, भव्यता और उच्चता के कारण दर्शकों के दिल एकदम अपनी ओर खींच लेते हैं जिससे देखनेवाला क्षणभर मुग्ध होकर मन्दिरों में बिराजित मूर्त्तियों की तरह स्थिर-स्तंभितसा हो जाता है। जिस मन्दिर पर दृष्टि डालो वही अनुपम मालूम होता है। किसी की कारीगरी,

किसी की रचना, किसी की विशालता और किसी की उच्चता को देख कर यात्रियों के मुंह से ओ हो ! हो ! ! की ध्वनियाँ निकलने लगती हैं। यहाँ महाराज संप्रति, महाराज कुमारपाल, महामात्य वस्तुपाल तेजपाल, पेथड़शाह, समरासाह आदि प्रसिद्ध पुरुषों के बनाये हुए महान् मन्दिर इन्हीं श्रेणियों में सुशोभित हैं।

मन्दिरों की श्रेणियों के मध्य में चलते चलते यात्रियों को हाथीपोल नाम का बड़ा दर्वाजा देख पड़ता है जिसमें सशस्त्र पहरेदार खड़े रहते हैं। इस दर्वाजे के सामने नजर करते ही महान् मंदिर तीर्थ का मुकूटमणि है। इसी में तीर्थपती आदिनाथ भगवान् की भव्य मूर्त्ति बिराजमान है। इसी मन्दिर के दर्शन, वन्दन और पूजन करने के लिये, भारत के प्रत्येक कौने में से श्रद्धालु जैन उस प्राचीन काल से चले आ रहे हैं जिसका हमें ठीक ठीक ज्ञान या, पत्ता भी नहीं है।

कर्नल टाड कहते हैं कि—

" इस पर्वत की प्राचीनता और पवित्रता के विषय में जो कुच्छ ख्यातें हैं वह सब इसी बड़ी टोंक की हैं। "

२ दूसरी–मोतीसाह सेठ की टोंक—बम्बई में मोतीसाह नाम के सेठ बड़े भारी व्यौपारी और धनवान् श्रावक हो गये हैं। इन्होंने चीन, जापान आदि दूर दूर के देशों के साथ व्यापार चला कर अगणित धन प्राप्त किया था। ये एक दफ़े शत्रुंजय की यात्रा करने के लिये संघ निकाल कर आये। उस समय अहमदावाद के

प्रधान सेठ हठीभाई भी वहाँ पर आये हुए थे। शत्रुंजय के दोनों शिखरों के मध्य में एक बड़ी भारी और गहरी खाई थी। इसे कुन्तासार की खाड़ कहा करते थे। मोतीसाह सेठ ने अपने मित्र सेठ हठीभाई से कहा कि—

" गिरिराज के दोनों शिखर तो मन्दिरों से भूषित हो रहे हैं, परन्तु यह मध्य की खाई, दर्शकों की दृष्टि में अपनी भयंकरता के कारण, आंख में कंकर की तरह खटकती है। मेरा विचार है कि इसे पूर कर ऊपर एक टोंक बनवा दूँ। "

यह सुन कर हठीभाई सेठने कहा—

" पूर्वकाल में जो बड़े बड़े राजा और महामात्य हो गये हैं वे भी इसकी पूर्त्ति न कर सके तो फिर तुम उस पर टोंक कैसे बनवा सकते हो ? "

भोतीसाह सेठ ने हंस कर जवाब दिया कि—

" धर्मप्रभाव से मेरा इतना सामर्थ्य है कि पत्थर से तो क्या ? परन्तु सीसे की पाटों से और सक्कर के थेलों से इस खाई को पूरा कर सकता हूं। "

बस, यह कह कर सेठने उसी दिन, वहाँ पर टोंक बांधने के लिये संघ से इजाजत ले ली और खाई को पूर्ण करने का आरंभ कर दिया। थोड़े ही दिनों में उस भीषण गर्त्त को पूर्ण कर, ऊपर सुन्दर टोंक बनाना आरंभ की। लाखों रुपयों की लागत का बहुत ही भव्य और साक्षात् देवविमान के सदृश मन्दिर तैयार करवाया।

इस मन्दिर की चारों ओर सेठ हठीभाई, दीवान अमरचंद दमणी, मामा प्रतापमल्ल आदि प्रसिद्ध धनिकोंने अपने अपने मन्दिर बनवाये। सब मन्दिरों के इर्द गिर्द पत्थर का मजबूत किला करवाया। मन्दिोरों का कार्य पूरा होने पाया था कि इतने में सेठ मोतीसाह का देहान्त हो गया। इस से उनके पुत्र सेठ खीमचंद ने बड़ा भारी संघ निकाल कर शत्रुंजय की यात्रा के साथ इस रमणीय टोंक की सं० १८९३ में प्रतिष्ठा करवाई।

यह संघ बहुत ही बड़ा था, इसमें ९२ गांवों के और संघ आकर मिले थे और उन सब का संघपतित्व खीमचंद सेठ को प्राप्त हुआ था। कहा जाता है कि इस टोंक के बनवाने में एक करोड़ से भी अधिक खर्चा हुआ था। इसमें १६० तो बडे बड़े मन्दिर हैं और सवासौ देवरियाँ हैं। जहाँ ८०–८५ वर्ष पहिले भयंकर गर्त्त यात्रियों के दिल में भय पैदा करता था वहीं आज स्वर्गविमानों के समान मन्दिरों को देख कर आनंद का पार नहीं रहता। 'सचमुच ही संसार में समर्थ मनुष्य क्या नहीं कर सकता?।'

३ **तीसरी–बालाभाई की टोंक**—गोघाबन्दर के रहनेवाले सेठ दीपचंद कल्याणजी, जिनका बचपन का नाम **बालाभाई** था। लाखों रुपये व्यय कर संवत् १८९३ में इस टोंक को बनवाया है। इसमें छोटे बड़े अनेक मन्दिर अपने ऊन्नत शिखरों से आकाश के साथ बातें कर रहे हैं। इस टोंक के ऊपर के सिरे पर एक मन्दिर है, जो "**अद्भूतबाबा**" का मन्दिर कहा जाता है।

१–बहुत से मुर्ख लोग इसे भीम की मूर्त्ति समझ कर पूजते है. पर यह भीमकी नहीं, आदिनाथ भगवान् की मूर्त्ति है।

इस में आदिनाथ भगवान् की, पांचसौ धनुष् जितने विशाल शरीरमान का अनुकरण करनेवाली, मूर्त्ति है। यह पर्वत ही में से उकेरी गई है। यह प्रतिमा १८ फुट ऊंची है। एक घुटने से दूसरे घुटने तक १४॥ फुट चौड़ी है। सं० १६८६ में धरमदास सेठने इसकी अंजनशलाका करवाई है। इसकी वर्षभर में एक ही वार वैशाख सुदि ६ के दिन पूजा की जाती है। जो शत्रुंजय के अन्तिम उद्धार का वार्षिक दिन गिना जाता है। यहाँ पर खड़े रह कर पर्वत के शिखर पर नजर डालने से, सभी मन्दिर मानों पवन से फरकते हुए अपने ध्वजरूप हाथों द्वारा अपने गर्भ में बिराजमान अर्हद्बिम्बों को पूजने के लिये आव्हान कर रहे हों, ऐसा आभास होता है।

४ चौथी--प्रेमचंद मोदी की टोंक—अहमदावाद के धनिक मोदी–प्रेमचंद सेठने शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा करने के लिये एक बड़ा भारी संघ निकाला था। तीर्थ की यात्रा किये बाद उनका दिल भी यहाँ पर मन्दिर बनाने का हो गया। लाखों रुपये खर्च कर यह टोंक बनवाई और इसकी प्रतिष्ठा करवाई। इसमें छः बड़े मन्दिर और ५१ देवरियाँ बनी हुई है। इस सेठने अपनी अगणित दौलत धर्म–कार्य में खर्च की थी।

कर्नलटाड साहबने अपने पश्चिम भारत के प्रवास वर्णन में लिखा है कि—

" मोदी–प्रेमचंद की दौलत का कुछ ठिकाना नहीं था, उसकी कीर्त्तिने संप्रति जैसे प्रतापी और उदार राजाओं की कीर्त्ति को भी ढाँक दी है। "

५ पांचमी–हेमाभाई सेठ की टोंक—इसको अहमदाबाद के नगर सेठ हेमाभाई ने सं० १८८२ में बनवाया है और सं० १८८६ में प्रतिष्ठित किया है। इसमें चार बड़े मन्दिर और ४३ छोटी देवरियाँ हैं।

६ छट्ठी–उजमबाई की टोंक—अहमदाबाद के प्रख्यात सेठ प्रेमाभाई की फूफी उजमबाईने इस टोंक की स्थापना की। इस कारण इसका नाम 'उजमबसही' है। इसमें नन्दीश्वर–द्वीप की अद्‌भूत रचना की गई है। भूतलपर छोटे छोटे ५७ पर्वत–शिखर संगमर्मर के बनाये गये हैं और उन प्रत्येक पर चौमुख प्रतिमाएँ स्थापित की हैं। इन शिखरों की चो तरफ सुन्दर कारीगरीवाली जाली लगाई गई हैं। इस मन्दिर के सिवाय और अनेक मन्दिर इसमें बने हुए हैं।

७ सातवीं–साकरचंद प्रेमचंद की टोंक—इसको अहमदाबाद के नगर सेठ साकरचंद प्रेमचंदने सं० १८९३ में बनवाया है। इसका नाम सेठ के नामानुसार 'साकरबसही' ऐसा रक्खा गया है। इसमें तीन बड़े मन्दिर और बाकी बहुतसी छोटी छोटी देवरियाँ हैं।

८ आठवीं–छीपावसही की टोंक—यह टोंक छोटी ही है। इसमें ३ बडे मन्दिर और ४ छोटी देवरियाँ हैं। इसे छीपा (भावसार) लोगोंने बनवाई है, इसलिये यह 'छीपा-वसही' कही जाती है। इसका निर्माण सं० १७९१ में हुआ है। इसके पास एक पांडवों का मन्दिर है जिसमें पांचों पांडवों की, द्रौपदी और कुन्ती की मूर्त्तियाँ स्थापित हैं।

९ नवमी—चौमुखजी की टोंक—यह टोंक दो विभागों में बंटी हुई है। बाहर के विभाग को 'खरतरवसही' और अन्दर के विभाग को 'चौमुखवसही' कहते हैं। यह टोंक पर्वत के सब से ऊंचे भाग पर बनी हुई है। चौमुखवसही के मध्य में आदिनाथ भगवान् का चतुर्मुख मन्दिर है। यह मन्दिर क्या है, मानों एक बड़ा भारी गढ है। इसकी लम्बाई ६७ फूट और चौड़ाई ५७ फूट है। इसका गुम्बज ९६ फूट ऊंचा है। मन्दिर के पूर्व मंडप है जिसके पश्चिम ३१ फूट लम्बा और इतना ही चौडा एक कमरा है। इस कमरे के दोनों बगलों में चबूतरे पर एक एक द्वार है। मध्य में १२ स्तंभ हैं, इसकी छत गोल गुम्बजदार है। कमरे में हो कर गर्भागार में, जो २३ फुट लम्बा और उतना ही चौड़ा है, जाया जाता है। इसमें मूर्त्ति के सिंहासन के कोनों के पास ४ विचित्र खंभे लगे हैं। फर्श से ५६ फुट ऊंचा मूर्त्ति के बैठने का स्थान है। चारों ओर ४ बड़े बड़े द्वार हैं। गर्भागार की दीवार, जिस पर मूर्त्तियाँ बिराजमान हैं, बहुत ही मोटी है। उसमें अनेक छोटी छोटी कोठरियाँ बनी हुई हैं। फर्श में नील, श्वेत तथा भूरे रंग के सुन्दर संगमर्मर के टुकड़े जड़े हुए हैं। गर्भागार में २ फुट ऊंचा, १२ फुट लम्बा और उतना ही चौड़ा श्वेत संगमर्मर का सिंहासन बना हुआ है। सिंहासन पर श्वेत ही संगगर्मर की बनी हुई १० फुट ऊंची आदिनाथ भगवान् की ४ मनोहर मूर्त्तियाँ पद्मासनासीन हैं। गर्भागार में के चारों ओर के द्वारों में से प्रतिद्वार की ओर एक एक मूर्त्ति का मुख है; इस लिये यह

मन्दिर ' चौमुखवसही ' के नाम से प्रसिद्ध है। यह मन्दिर, एक तो पर्वत के ऊंचे भाग पर होने से और दूसरा स्वयं बहुत ऊंचा होने से आकाश के स्वच्छ होने पर २९–३० कोश की दूरी पर से दर्शकों को दिखलाई देता है। इस टोंक को अहमदाबाद के सेठ सोमजी सवाईने संवत् १६७५ में बनवाया है।

मीराते–अहमदी सें लिखा है कि—

" इस मन्दिर (टोंक) के बनवाने में ५८ लाख रुपये लगे थे। " लोग कहते हैं कि " केवल ८४००० हजार की तो रस्सियाँ ही इसके काम में आई थीं। "

विक्रमसंवत् १९७९ की गणनानुसार नौ टोंकों में १२७ बड़े मन्दिर, ६७७ देवरियाँ और उनमें ८५९० भव्य जिन–प्रतिमाएँ, तथा ८९०६ चरण–पादुकाएँ हैं। प्रति महिना में यहाँ दश हजार यात्री आते जाते हैं और कार्त्तिकी और चैत्री पूनम के दो बड़े मेले होते हैं जिनमें २५–३५ हजार यात्री एकत्रीत हो जाया करते हैं।

जैनशास्त्रकारोंने लिखा है कि–

मयूर–सर्प–सिंहाद्या, हिंस्रा अप्यत्र पर्वते।
सिद्धाः सिध्यन्ति सेत्स्यन्ति प्राणिनो जिनदर्शनात् ॥१॥
बाल्येऽपि यौवने वार्ध्ये, तिर्यग्जातौ च यत्कृतम्।
तत्पापं विलयं याति, सिद्धाद्रेः स्पर्शनादपि ॥ २ ॥

—मयूर, सर्प, सिंह, आदि क्रूर और हिंसक प्राणि भी, जो इस पर्वत पर रहते हैं, जिनदेव के दर्शन से सिद्ध हूए,

सिद्ध होते हैं और सिद्ध होयंगे। तथा बाल, तरुण और वृद्धावस्था में, और तिर्यंच जाति में जो पाप किये हों वे इस सिद्धगिरि (शत्रुंजय) के स्पर्श–मात्र ही से नष्ट हो जाते हैं।' इस प्रकार इस तीर्थ की बहुत महिमा ग्रन्थकारोंने लिखी है। इसी कारण यह तीर्थ संसार में सब से अधिक पवित्र और पूजनीय माना जाता है।

४४ घेटी—

शत्रुंजय की पहाड़ी से तीन मील के फासले पर यह एक छोटा गाँव है। यहाँ श्वेताम्बरजैनों के १५ घर, एक उपासरा और एक घर–मन्दिर है जिसमें श्री पद्मप्रभस्वामी की प्रतिमा स्थापित है। इसके अलावा सरकारी एक धर्मशाला और एक स्कूल है, जिनमें साधु साध्वियों के उतरने के लिये अच्छा प्रबंध है। यहाँ के जैन तीर्थ–मुंडिये और नाम मात्र के जैन हैं।

४५ परवड़ी—

यहाँ श्वेताम्बर जैनों के १० घर और एक उपासरा है। इसके अलावा गाँव के बहार महादेव की एक जीर्ण धर्मशाला है। गाँव में एक जिनगृह–मन्दिर है जिसमें श्री कुन्थुनाथजी की प्रतिमा स्थापित है। सफाई अच्छी है और पूजा वगैरह का इन्तिजाम उत्तम है। यहाँ के जैन भावुक और धर्मजिज्ञासावाले हैं।

४६ चारोड़िया—

यहाँ श्वेताम्बरजैनों के ६ घर, एक उपासरा और एक जैने-

तरों की छोटी धर्मशाला है जो उतरने लायक है। यहाँ के जैन श्रद्धालु, भावुक और धर्मजिज्ञासु हैं।

४७ गारियाधार—

पालीताणा रियासत का यह एक छोटा कसबा है। यहाँ श्वेताम्बरजैनों के ४५ घर, एक उपासरा, एक धर्मशाला और एक शिखरबद्ध मनोहर जिनमन्दिर है जिसमें मूलनायक भगवान् श्रीशान्तिनाथस्वामी की भव्य मूर्त्ति बिराजमान है।

४८ मोटालीलिया—

यहाँ स्थानकवासीजैनों के २० घर और एक स्थानक है। इस के सिवाय वैष्णवों की एक छोटी धर्मशाला है, जो मुकाम करने लायक है। यहाँ के जैन नाममात्र के ही जैन हैं, साधु साध्वियों के लिये यहाँ आहार-पानी मिलने की पूरी कठिनाई पड़ती है।

४९ अमरेली—

बडोदा रियासत का यह एक छोटा कसबा है जिसमें चारों ओर पक्की-सड़कें बनी हुई हैं और उन पर ग्यास की रोशनी लगी हुई है। यहाँ पोष्ट ओफिस, रेल्वे स्टेशन अस्पताल और स्कूल भी हैं। इसके अलावा खेलकूद-स्कूल, हिन्दूवनिताश्रम, और अनाथालय देखने लायक हैं। यह एक छोटी नदी के किनारे पर बसा हुआ है।

यहाँ श्वेताम्बर जैनों के ५० घर, स्थानकवासीजैनों के १०० घर, दो उपासरा, दो धर्मशाला और दो सुन्दर जैन

मन्दिर हैं। बड़े मन्दिर में मूलनायक भगवान् श्रीशान्तिनाथ-स्वामी की भव्य मूर्त्ति बिराजमान है जो प्राचीन है।

५० आकाड़िया—

इस गाँव में श्वेताम्बर जैनों का एक भी घर और जिन-मंदिर नहीं है, परन्तु स्थानकवासी जैनों के २५ घर और एक छोटा स्थानक है। यहाँ के जैन मंदिर मार्गी साधु साध्वियों को उतरने के लिये स्थान देने में भी पाप मानते हैं। भला ! जहाँ स्थान देने में पाप समझा जाता हो, वहाँ आहार पानी की आशा रखना तो शशश्रृंगवत् ही है।

५१ कुकावाव—

यहाँ संकुचित वृत्तिवाले, जैनेतरों से भी गये गुजरे और नाममात्र के जैन कहानेवाले स्थानकवासी जैनों के ३० घर हैं, जो हिंसकदेवों और पीर–दरगा को शिर झुकाने वाले हैं। इस से इनकी स्थिति भी साधारण है।

५२ चूडा—

इस छोटे गाँव में मिथ्यादृष्टियों हिंसक देवी देवताओं के उपासक और मूर्त्तिपूजक साधु साध्वियों के द्वेषी स्थानकवासी मात्र नाम रखाने वाले जैनों के, अथवा यों समझिये कि जैनाभासों के २५ घर हैं। जिनके घरों में स्थानकवासी मुनि, आर्याओं को भी आहार जल मिलना दुर्लभ है, तो मंदिरमार्गी साधु साध्वियों की बात ही क्या करना ? यहाँ के जैनेतर लोग बहुत भावुक और सत्संगी हैं।

५३ राणपर—

यह गाँव गिरनार पहाडी के नीचे २ मील की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ से गिरनार के पांचवें टोंक होकर प्रथम टोंक को एक सीधा रास्ता जाता है, परन्तु रास्ता भयंकर है। यहाँ के वासियों के सिवाय दूसरा कोई भी इस रास्ते नहीं जाता। यहाँ से पक्की सडक वडाल होकर जूनागढ को गई है। यहाँ श्वेताम्बर जैनों के १० घर, एक उपासरा, और एक जिनमंदिर है जिसमें शान्तिनाथ भगवान् की दिव्य मुर्त्ति स्थापित है। इनके अलावा यहाँ स्थानकवासी जैनों के ५० घर और एक स्थानक भी है।

५४ वडाल—

यहाँ रेल्वे स्टेशन, सरकारी स्कूल, और धर्मशाला है। श्वेताम्बरजैनों के यहाँ १२ घर, स्थानकवासीजैनों के ५० घर, एक उपासरा और एक छोटा मन्दिर है। मंदिर में श्रीअजितनाथ भगवान् की मूर्त्ति स्थापित है।

५५ जूनागढ—

यह सुन्दर छोटा शहर, बम्बई हाते के काठियावाड में देशी राज्य की राजधानी है जो, काठियावाड के प्रथम दर्जे के राज्यों में से एक है। यहाँ कुछ पूर्वकाल में बौद्धों का और राजपूतों का राज्य था। अपरकोट (पुराना जूनागढ) राजधानी था। सन् १४७२ में अहमदाबाद के सुलतान महम्मद बेगडाने अपरकोट के राजपूतों को जीत कर वर्त्तमान 'जूनागढ'

बसाया। सोलहवीं सदी में अकबर के राज्य के समय यह दिल्ली के अधिकार में हुआ और गुजरात के खुबेदार के अधीन रक्खा गया। जब गुजरात से मुगलों का अधिकार उठ गया, तब सन् १७३५ मे शेरखां बांबी नामक एक सिपाहीने मुगलों के गवर्नर को निकाल कर अपना अधिकार कर लिया। शेरखां के पुत्र सलावतखांने अपने वारिश पुत्र को यहाँ का नव्वाब बनाया और छोटे पुत्रों को जागीर दे दी। तभी से यहाँ नव्वाबी राज्य हुआ, जो अब तक विद्यमान है। मणिपुर, चन्द्रकेतुपुर, रैवत, जीर्णदुर्ग और मुस्तफाबाद; ये प्राचीन नाम इसी जूनागढ़ के समझना चाहिये।

इसके पूर्व–दक्षिण गिरनार पहाड़ियाँ और पश्चिम रेल्वे लाईन है। रेल्वे के पास शहर के पश्चिम का फाटक और दक्षिण–पूर्व गिर का मेदान है। यहाँ कई मकबरे, मस्जिदें, देवालय, धर्मशाला, सदावर्त्त, और स्कूलें तथा एक अस्पताल और जेलखाना है। शहर के उत्तरी भागमें दूसरे बहादुरखां दूसरे हमीदखां और लाडलीबू नामक स्त्री इन तीनों के मकबरे बने हुए हैं। शहर के उत्तरवाले फाटक से ½ मील दूर बजीरसाहब का सांकरबाग़ नामका उद्यान है, जिस में दो मंजिले बंगला के बगलों में पानी से पूर्ण एक नाला है। उससे ९० गज के अन्तर पर एक जन्तुशाला में नाना जाति के जन्तु घिरे हुए हैं। सांकरबाग से दक्षिण सरदारबाग़ है। जिसमें गिर के जंगलों से लाकर अनेक सिंह सिंहनी घेरी हुई हैं। इसके अलावा यहाँ ज़मियालशाह का स्थान, महबतखां का मक़बरा, नव्वाब साहब

की मसजिद, अपरकोट, उसमें नूरीशाह का मकबरा, चक्करदार बावड़ी और बाबा प्यारा की गुफा देखने लायक हैं। इस राज्य का एक भाग गिर कहलाता है, इसमें सघन वृक्षों का जंगल और पहाड़ियाँ हैं।

यहाँ पर श्वेताम्बर जैनों के १२५ घर, स्थानकवासी जैनों के १२५ घर, दो बड़ी धर्मशाला, दो उपासरा और दो शिखर-बद्ध जिनमन्दिर हैं। सब से बड़े और भव्य मन्दिर में मूल-नायक भगवान् श्रीनेमनाथ स्वामी की परिकर-सहित श्यामरंग की अतिप्राचीन मनोहर मूर्त्ति बिराजमान है। दूसरे मन्दिर में श्रीआदिनाथ भगवान् की सफेदरंग की भव्य मूर्त्ति स्थापित है। यहाँ जैनस्वयंसेवकमंडल, जैनपाठशाला, स्त्रीउद्योगशाला, लाय-ब्रेरी, और पुस्तकालय भी है।

५६ गिरनारतीर्थ—

जूनागढ़ से पूर्व गिरनार पहाड़ियाँ स्थित हैं जिनमें गिर-नार-पहाड़ी ३६०५ फीट, योगिनिया-पहाड़ी २५२७ फीट, बेंसला-पहाड़ी २२९० फीट और दत्तात्रयी (वरदत्त) पहाड़ी २७८० फीट समुद्र के जल से ऊंची है। इनके अलावा लक्ष्म-णटेकरी आदि भी छोटी छोटी पहाड़ियाँ हैं। जूनागढ़ से १० मील पूर्व २१ अंश, ३० कला उत्तर अक्षांश और ७० अंश, ४२ कला पूर्व देशान्तर में पवित्र गिरनार पहाड़ी है और जूनागढ़ से ४ मील दूर गिरनार-तलेटी है। रास्ते में वागेश्वरी फाटक होकर पत्थर का पुल, चट्टानों पर खुदे हुए जूने शिला-लेख, सोनारोखा (स्वर्णरेखा) नदी, अनेक जैनेतर-मन्दिर,

दामोदरकुंड, रेवतकुंड और तापसों के अखाड़े वगैरह नजर पड़ते हैं। तलेटी पर दो जैन धर्मशाला, एक रसोड़ा भवन, एक बग़ीचा और एक श्वेताम्बर जैनमन्दिर, और दिगम्बर जैन मन्दिर बने हुए हैं। दोनों मन्दिरों में भगवान् श्रीनेमनाथस्वामी की भव्य मूर्त्तियाँ बिराजमान हैं। जो श्वेताम्बर जैन—यात्री पहाड़ पर से यात्रा करके नीचे उतरते हैं उनको रसोड़ा—भवन में ताजी रसोई जीमने को मिलती है। रसोई का सारा प्रबंध जूनागढ़ की गिरनारजी जीर्णोद्धार तथा तलाटी रसोड़ा कमेटी के तरफ़ से नियत रसोईदार करते हैं और यात्रियों से भोजन का पैसा नहीं लिया जाता।

पहाड़ के नीचे एक पक्का पत्थर का दर्वाजा बना हुआ है। यहाँ से प्रथम टोंक तक पत्थर की मजबूत सीढियाँ बनी हुई हैं और रास्ते में जगह जगह पर विश्राम स्थान बने हुए हैं। लगभग ५०० फिट ऊपर पत्थर की एक छोटी धर्मशाला हैं, जहाँ से भैरवझम्पा नामक चट्टान देख पड़ती है। पूर्वकाल में अनेक अज्ञानी लोग इस चट्टान से १००० फीट नीचे कूद कर आत्म-घात करते थे। उनका मन्तव्य था कि—जो इस प्रकार आत्म-घात करता है वह दूसरे जन्म में राजा होता है।

जैनमन्दिर जूनागढ़ के मैदान से २३७० फीट और समुद्र के जल से ३००० फीट ऊपर देवकोट के घेरे का जिसको खेंगार का महल भी कहते हैं, फाटक है। फाटक से भीतर पहाड़ी के बाम—भाग की तरफ़ पश्चिम किनारे के पास जैन

मन्दिरों का बड़ा घेरा और दाहिनी ओर मानसिंह का पुराना मन्दिर है। यहाँ पहाड़ी की चोटी से ६०० फीट नीचे पहाड़ी के खड़े भाग के शिखर पर १६ जैन मन्दिर हैं। जिनमें सबसे बड़ा और पुराना श्रीनेमनाथ का मन्दिर है, जो १९९ फीट लम्बे और १३० फीट चौड़े चौकोने आंगन में स्थित है। नेमनाथस्वामी के मन्दिर से बांये ओर तीन जिन मन्दिर हैं। जिनमें दक्षिणवाले मन्दिर में श्रीऋषभदेवस्वामी की भव्य मूर्त्ति बिराजमान है। इसके सामने पंचभाई का नया मन्दिर और उसके पश्चिम श्रीपार्श्वनाथस्वामी का बड़ा मन्दिर और इस से उत्तर श्रीपार्श्वनाथ का दूसरा भव्य मन्दिर है। उत्तर बगल के पास कुमारपाल राजा का सुन्दर मन्दिर है जिसका उद्धार हंसराज जेठाने सन् १८२४ में कराया था। नेमनाथ भगवान् के मन्दिर के पीछे वस्तुपाल–तेजपाल का अति रमणीय नकसीदार मन्दिर जो चोमुख है और जिसमें श्रीमल्लिनाथ भगवान् की दिव्य मूर्त्ति स्थापित है। इसके सामने अति मनोहर कोरणीवाला राजा संप्रति–सम्राट का मन्दिर है। इन के सिवाय पंचमेरु, मेकरवसी, संभवनाथ, संग्रामसोनी आदि मन्दिर भी दर्शनीय हैं।

वस्तुपाल–तेजपाल के मन्दिर के पास से होकर कुछ ऊंचे जाने पर राजुलगुफा, उससे कुछ आगे दिगम्बर जैनों का मन्दिर, उससे आगे गोमुखी आती है। यहाँ से एक रास्ता सहसावन की ओर जाता है, जो पहाड़ी की ढालू जमीन पर नीचे आया हुआ है। सहसावन में भगवान् श्रीनेमनाथ स्वामीने दीक्षा ली थी। दीक्षास्थान पर आम्र की सघन झाड़ी के मध्य में एक पत्थर की

बनी हुई छत्री (देवरी) में नेमनाथ भगवान् की चरण–पादुका बिराजमान हैं। गोमुखी से दूसरा रास्ता रहनेमि, अंबावजी और गोरख टेकरी होकर पांचवीं टोंक को जाता है। पांचवी टोंक पर श्रीनेमनाथ भगवान का केवलज्ञान और निर्वाण कल्याणक हुआ है और नेमनाथस्वामी के वरदत्त नामक गणधर मोक्ष गये हैं। इसी से इस पहाड़ी का नाम वरदत्तटेकरी प्रसिद्ध है। जैनेतर लोग इसको दत्तात्रयी टेकरी कहते हैं। यहाँ पर वरदत्तगणधर के चरण–पादुका स्थापित हैं जिनको जैन, हिन्दू और मुसलमान सभी वांदते पूजते हैं। चरण–पादुका के पास ही एक पत्थर में नेमनाथस्वामी की एक मूर्त्ति भी उकेरी हुई है। सिद्धाचल के समान यह तीर्थ भी पवित्र माना जाता है। इसके कैलासगिरि, उज्जयन्तगिरि, रैवतगिरि सुवर्णगिरि और नन्दनभद्रगिरि ये प्राचीन और गुण–निष्पन्न नाम हैं।

५७ जेतपुर—

बम्बई हाते के काठियावाड सौराष्ट्रडिवीजन में यह एक देशी राज्य की राजधानी है जो जेतलसर जंक्सन से तीन मील पूर्व स्थित है। यहाँ रेल्वेस्टेशन है और यहाँ से राजकोट, धोराजी, जूनागढ़ को और मानपाडाको पकी सडक गई है। यह कसबा छोटा होनेपर भी उन्नति पर है और इसमें १७ तालुकदार हैं। इसमें श्वेताम्बर जैनों के ४० घर, स्थानकवासी जैनों के ३०० घर, एक उपासरा, एक धर्मशाला और एक जैनमंदिर है। मन्दिर में मूलनायक भगवान् श्रीआदिनाथस्वामी की दिव्य मूर्त्ति बिराजमान है।

५८ गोमटा--

यहाँ स्थानकवासी जैनों के १० घर, और एक दो मंजिला छोटा थानक है। इस के अलावा एक महादेव की छोटी धर्मशाला है। यहाँ के जैन वैष्णवों से भी गये गुजरे हैं, इनके यहाँ मन्दिर मार्गी साधु साध्वियों को न आहार मिलता है और न गर्म पानी। इनसे यहाँ के वैष्णव लोग भक्ति करनेवाले और धर्मप्रेमी हैं।

५९ गोंडल—

काठियावाड के हालार विभाग में यह देशी राज्य की राजधानी है जो जाडेजा राजपूत नरेश के ताबे में है और यह राज्य काठियावाड के प्रथम दर्जे के राज्यों में से एक है। यहाँ से राजकोट, जेतपुर, जूनागढ, धोराजी और उपलेटा को पक्की सडक गई है। यहाँ छोटे बडे ४० स्कूल, रेल्वे स्टेशन, अस्पताल और कई नामी दवाखाने हैं। इसके चारों ओर पक्की सडक और मजबूत किला बना हुआ है। यह बडा गुलजार शहर है, जो पथरीली नदी के किनारे बसा हुआ है। यहाँ श्वेताम्बर जैनों के ६० घर, स्थानकवासी जैनों के ४०० घर, एक उपासरा, छोटी धर्मशाला और एक जिनमन्दिर है। मन्दिर में श्री चन्द्रप्रभ भगवान् की सुन्दर मूर्त्ति स्थापित है। इसके सिवाय जैन पाठशाला, पुस्तकालय और लायब्रेरी भी है और जैनेतरों के यहाँ कई मन्दिर तथा धर्मशालाएँ हैं।

६० रीबड़ा—

यह एक छोटा गाँव है, इसमें स्थानकवासी जैनों के १० घर और एक छोटा थानक है। यहाँ के जैन भावुक और भक्तिवाले हैं। गाँव के बाहर सडक के किनारे पर सरकारी थाना और पोष्ट ऑफिस है। यहाँ भी उतरने का अच्छा सुभीता है।

६१ राजकोट—

काठियावाड के हालार–विभाग में यह देशी राज्य की राजधानी और काठियावाड के पोलिटिकल एजेंट का सदर स्थान है। यहाँ सिविल–स्टेशन, फौजी छावनी, जेलखाना, राजकुमार कालेज, धर्मशाला, बंगला, कई गिरजे, और दो स्कूल हैं। कसबे के पूर्वोत्तर के रजुबलीवाटरवर्क्स से राजकोट में पानी आता है। यह राज्य काठियावाड के राज्यों में दूसरे दर्जे का है और यहाँ के नरेश जाडेजा राजपूत हैं। यहाँ श्वेताम्बर जैनों के ३५० घर, स्थानकवासी जैनों के ८०० घर, और एक ही कमरे में उपासरा, धर्मशाला, व्याख्यानालय तथा जिनमन्दिर एक एक है। मन्दिर में मूलनायक भगवान् श्रीसुपार्श्वनाथ की भव्य–मूर्त्ति बिराजमान है। यहाँ के श्रावक समझदार, भक्तिवाले, और बडे धर्मोत्साही हैं। यहाँ जैनपाठशाला, श्राविकाशाला, कन्याशाला, पुस्तकालय और लायब्रेरी अच्छे प्रबन्ध से चल रही हैं।

६२ खोराणा—

यहाँ स्थानकवासी जैनों के तीन घर और एक थानक है। यहाँ के जैन बिलकुल सामान्य स्थिति के हैं, साधु साध्वी को आहार पानी देने तक की इनकी सत्ता नहीं है । मन्दिरमार्गी साधु साध्वी दर किनारे रहे, परन्तु स्थानकवासी साधु आर्याओं को भी पूरी मुसीबत उठाना पडती है।

६३ बांकानेर—

यह कसबा मच्छुनामक नदी के किनारे पर बसा हुआ है, जो अच्छा रवन्नकदार और शहर के समान है। यहाँ पक्की सडक बनी हुई है और रल्वेस्टेशन, पोष्टऑफिस भी है। यहाँ श्वेताम्बरजैनों के १२५ घर, स्थानकवासीजैनों के १२९ घर, एक दो मंजिला फेन्सी उपासरा, एक धर्मशाला और एक ही कमरे में शिखरबद्ध दो जिन मन्दिर हैं जिन में मूलनायक भगवान् श्रीअजितनाथस्वामी और शान्तिनाथस्वामी की भव्यमूर्त्तियाँ स्थापित हैं। यहाँ एक जैनसंगीतमंडली भी है जो गुजरात काठीयावाड के कई गाँवों में उस्सवों पर जाती है और अपने संगीत–गुण के कारण सर्टिफिकेट प्राप्त करती है। यहाँ पुस्तक भंडार, जैनपाठशाला, और लायब्रेरी भी है। यहाँ के जैन धर्मप्रेमी, गुणग्राही, भक्तिवान और समझदार है।

६४ लूणसरी—

यहाँ स्थानकवासीजैनों के १० घर, श्वेताम्बरजैन का १ घर और एक छोटा उपासरा है। यहाँ के जैन साधु और साध्वियों

की भक्ति करनेवाले और धर्मप्रेमी हैं। स्थानकवासी होने पर भी इस गाँव के जैनी मन्दिर-मार्गी और स्थानकवासी साधु साध्वियों की भक्ति समान भाव से और प्रेम पूर्वक करते हैं। यहाँ के जैनेतर लोग भी भक्ति-भाव वाले हैं।

६५ सरा—

यहाँ श्वेताम्बरजैनों के ८ घर, स्थानकवासियों के १५ घर, एक उपासरा, एक थानक और एक शिखरबद्ध सुन्दर जैनमन्दिर है जिसमें मूलनायक श्रीचन्द्रप्रभस्वामी की भव्य और प्राचीन मूर्त्ति बिराजमान है। मन्दिर में सफाई, पूजा आदि का प्रबन्ध प्रशंसा के योग्य है। यहाँ के जैन सरल परिणामी और धर्म-जिज्ञासु हैं।

६६ कोंढ—

यह एक छोटा कसबा है, जो देखने में रमणीय है। यहाँ श्वेताम्बरजैनों के ४० घर, स्थानकवासियों के ३ घर, एक उपासरा, एक छोटी धर्मशाला और एक शिखरवाला जिनमान्दिर है। जिसमें भगवान् श्रीपार्श्वनाथस्वामी की भव्य प्राचीन मूर्त्ति स्थापित है। इसके अलावा गाँवके बाहर एक छोटी नदी के किनारे पर मयधर्मशाला के देखने लायक शंकर का मन्दिर है और एक पशुशाला है। यहाँ के जैन व्याख्यान सुनने, धार्मिक क्रिया करने और साधुभक्ति करने के भारी उत्सुक हैं।

६७ जीवा—

इस छोटे गाँव में श्वेताम्बरजैनों के ८ घर, एक छोटा

उपासरा और उपाश्रय के बगल में लगते ही एक जिनगृह है जिसमें श्रीशान्तिनाथ भगवान् की भव्य और छोटी मूर्त्ति स्थापित है। जैनियों के थोडे घर होने पर भी जिन मन्दिर की पूजा वगैरह की व्यवस्था बडी अच्छी है जो प्रशंसा योग्य है।

६८ ध्रांगध्रा—

यह एक बडा सुन्दर कसबा है जो एक नदी के किनारे पर वसा हुआ है। इसके चारों ओर पत्थर का पक्का कोट बना हुआ है जिसमें बाहर जाने आने के लिये चारों दिशा में एक एक दर्वाजा है। यह काठियावाड के राज्यों में प्रथम दर्जे का राजस्थान है। यहाँ के नरेश झाला राजपूत हैं। शहर में अस्पताल, स्कूलें और पक्की सडकें हैं। यहाँ रेल्वे स्टेशन और शहर में तामरेल भी है। यहाँ श्वेताम्बरजैनों में तपागच्छ के ३६० घर, पार्श्वचन्द्रगच्छ के ६० घर, और लोंकागच्छ के ४०० घर हैं जो अपने अपने गच्छ के नियमों को पालन करने में बडे मजबूत हैं। यहाँ बडे दो मंजिले तीन उपासरे, एक धर्मशाला, दो थानक और तीन जिनमन्दिर हैं जिनमें एक में श्री संभवनाथ और दो में श्रीअजितनाथस्वामी की प्राचीन दिव्य मूर्त्तियाँ बिराजमान है। यहाँ के जैन विद्वान्, गुणानुरागी और सत्संगी हैं।

६९ गाला—

यहाँ श्वेताम्बरजैनों के ४ घर, एक उपासरा और एक प्राचीन जिनमन्दिर है जो संवत् १२१७ का बना हुआ है।

इसमें मूलनायक भगवान् श्रीकुन्थुनाथस्वामी की भव्य और दर्शनीय मूर्त्ति बिराजमान है।

७० देहगाम—

इस छोटे गाँव में श्वेताम्बरजैनों के ८ घर और सरकारी एक स्कूल है। स्कूल में उतरने की अच्छी जगह है। इस के सिवाय ठाकुरजी का मन्दिर भी विश्राम करने योग्य है। यहाँ के जैन अतिश्रद्धालु, भावुक और भक्तिवाले हैं।

७१ ओडुं—

यहाँ श्वेताम्बरजैनों के १२ घर, एक उपासरा, एक छोटी सराय और एक जिनमन्दिर है जिसमें श्रीशान्तिनाथ भगवान् की भव्य मूर्त्ति स्थापित है। देहगाम और इसके बीच रास्ते में तीन कोश चौडी खारी आती है जिसमें सामुद्रनमक तैयार होता है। रास्ते की जमीन इतनी खारी है कि-जिस में चलने से पैरों की चमडी फट जाती है।

७२ झींझूवाड़ा—

यह एक छोटा कसबा है जो पुराना है, इसके इर्द गिर्द पुराना कोट और उस के दर्वाजे अब भी टूटी फूटी दशा में मौजूद हैं, जो इस कसबे की प्राचीनता के द्योतक हैं। यहाँ श्वेताम्बर जैनों के १०० घर, एक उपासरा, एक धर्मशाला और एक सुन्दर शिखर वाला जिनमन्दिर है जिस में मूलनायक भगवान् श्रीमहावीर स्वामी की दिव्य मूर्त्ति बिराजमान है जो प्राचीन और दर्शनीय है। यहाँ एक जैन पाठशाला भी है जि-

समें विद्यार्थियों को धर्मक्रिया के सिवाय सार्थ छः कर्मग्रन्थ तक अभ्यास कराया जाता है और पढ़ानेवाले प्रज्ञाचक्षु सुखलालजी पंडित हैं जो जैनप्रकरण ग्रन्थों के अच्छे ज्ञाता हैं। यहाँ के जैनी गुणग्राही, धर्मानुरागी और विद्याप्रेमी हैं।

७३ धामा—

यहाँ श्वेताम्बर जैनों के ७ घर और एक उपासरा है। साधु साध्वियों को यहाँ किसी तरह की तकलीफ़ नहीं पडती क्योंकि यहाँ के थोडे घर होने पर भी श्रावक भावुक हैं और अंतरंग-भाव से भक्ति करने वाले हैं। एक छोटे मंदिर में श्रीशान्तिनाथ भगवान् की भव्य प्रतिमा विराजमान है जो दर्शनीय है।

७४ आदरियाणुं—

इसमें श्वेताम्बर जैनों के ३६ घर, एक उपासरा और एक प्राचीन जिनमन्दिर है जिसमें मूलनायक भगवान् श्री शांतिनाथ स्वामी की भव्य मूर्त्ति स्थापित है। यहाँ के जैन विवेकशील, भक्तिशील और धर्मजिज्ञासु हैं।

७५ पवित्रतीर्थ-श्रीशंखेश्वर—

भुंड स्टेशन से १९ कोश और हारिजरोड से ६ कोश खुरकी रास्ते यह तीर्थ स्थान है। यहाँ एक छोटा गाँव है जो शंखेश्वर नाम से प्रसिद्ध है। इसका ऐतिहासिक वृत्तान्त इस प्रकार है कि—जो पार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा यहाँ विद्यमान है उसको भरतक्षेत्र की गत की चोवीसी के नोवें तीर्थंकर श्रीदामोदर भगवान्

के उपदेश—श्रवण से अपने भावी उपकारक समझ कर आषाढी श्रावकने भराई और प्रतिष्ठाञ्जनशलाका कराई। कितने एक काल बाद यह प्रतिमा धरणेन्द्रजी के द्वारा भगवान् श्रीऋषभदेवस्वामी के प्रपौत्र नमि विनमि विद्याधर राजाओं को प्राप्त हुई। बाद में इस दिव्य प्रभावशालिनी मूर्त्ति को प्रथम देवलोकाधिपति शक्रेन्द्र-जीने लेजा कर अपने विमान—चैत्य में स्थापित की, वहाँ देव देवेन्द्रों से पूजी गई। कितने एक समय बाद शक्रेन्द्रने गिरनार—पर्वत के कांचनबलानक नामके शिखर पर बिराजमान की।

तदनन्तर सूर्यविमान में, उसके बाद चन्द्रविमान में, उसके बाद उज्जयन्तगिरि पर, उसके बाद नागेन्द्र—भवन में, और उसके बाद धरणेन्द्र—भवन में यह प्रतिमा पूजी गई। बाद में पद्मावती के कहने से धरणेन्द्रजीने श्रीकृष्ण को दी। श्रीकृष्णने इस प्रतिमा का अभिषेकजल छांट कर अपनी जराविद्या से मूर्छित सेना को अच्छी की और भगवान् श्रीनेमनाथने जहाँ शंख पूर करके यादव-सेना की रक्षा की थी, उसी जगह शंखपुर नामक नया गाँव बसा कर और सुन्दर मन्दिर बना कर, उसमें इस चमत्कारिणी भव्य—मूर्त्ति को बिराजमान की। तब से यह मूर्त्ति श्रीशंखेश्वर—पार्श्व-नाथ के नाम से प्रसिद्ध हुई। संवत् ११९१ में सज्जनमंत्रीने यहाँ के मूल मन्दिर, बावन देवरियाँ और गढ़ वगैरह का पुनरुद्धार कराया था। बाद में विक्रम की तेरहवीं शताब्दी के अन्त में श्रीवर्द्ध-मानसूरिजी के उपदेश से महामात्य वस्तुपालने फिर से इसका उद्धार कराया था।

यह तीर्थ बडीयार प्रदेशमें स्थित शंखेश्वर गाँव में है। यहाँ श्वेताम्बर जैनों के साधारण स्थितिवाले ६ घर और दो बडी धर्मशालाएँ हैं। गाँव वाली बडी धर्मशाला के बीच में शंखेश्वर–पार्श्वनाथ का दर्शनीय मन्दिर है और इसी में **शेठ जीवनदास गोड़ीदास नामक शंखेश्वर–पार्श्वनाथ की पेढ़ी** (दूकान) है जिसमें यात्रियों को बरतन और बिछोना आदि सामान नकरा से मिलता है। इसी के सामने धर्मशाला के बाहार एक रसोडा खुला हुआ है जिसमें यात्रियों के लिये भोजन पाने का अच्छा प्रबन्ध है। दूसरी धर्मशाला गाँव के बाहर बनी हुई है, जो प्रायः मेला सिवाय काम में नहीं आती।

७६ मुजपर—

यहाँ श्वेताम्बर जैनों के ३० घर, एक उपासरा, एक बडी धर्मशाला और दो जिनमन्दिर हैं। एक में श्री शान्तिनाथ और दूसरे में श्री गोडीपार्श्वनाथ भगवान् की भव्य और प्राचीन मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। धर्मशाला के ऊपरी होल में एक जैनपाठशाला है जिसमें पंचप्रतिक्रमण और जीव विचार, नवतत्त्व आदि प्रकरण ग्रन्थ पढ़ाये जाते हैं।

७७ हारिजरोड़—

यहाँ श्वेताम्बर जैनों के व्यापार के लिये बाहर के आये हुए १५ घर, एक जिनगृह, एक छोटी दो मंजिली धर्म धर्मशाला और एक उपासरा है। मंदिर में श्री शांतिनाथ भगवान् की मूर्त्ति स्थापित है। यहाँ रेल्वे स्टेशन, अस्पताल और पक्की सडक है। यहाँ के जन संकुचितवृत्तिवाले और द्वेषाकुल हैं।

७८ जमणपुर—

यहाँ श्वेताम्बर जैनों के १० घर, एक उपासरा, एक धर्मशाला और एक जिनमन्दिर है। मन्दिर में भगवान् श्रीचन्द्रप्रभस्वामी की दिव्य मूर्त्ति स्थापित है। इस गाँव के जैन साधुओं से भडकनेवाले हैं और भक्तिभाव से कोशों दूर रहनेवाले हैं।

७९ अड़िया—

इस गाँव में श्वेताम्बर जैनों के २० घर, एक उपासरा और एक जिनमन्दिर है, जिसमें भगवान् श्रीशीतलनाथस्वामी की मूर्त्ति बिराजमान है, जो प्राचीन और दर्शनीय है। यहाँ के जैन बेसमझ, भक्तिभाव शून्य और धार्मिक प्रेम से रहित हैं। यहाँ उपदेशक की और साधु विहार की पूरी आवश्यकता है।

८० कुणघेर—

यह एक छोटा गाँव है, इसमें श्वेताम्बर जैनों के १० घर, एक छोटा उपासरा और शिखरबद्ध जिन मन्दिर है, जिसमें श्रीशान्तिनाथ भगवान् की भव्य मूर्त्ति स्थापित है। इस गाँव के जैन धर्मभावना रहित होने से नाम मात्र के ही जैन हैं। यहाँ मन्दिर की सफाई और पूजा का प्रबंध भी ठीक नहीं हैं।

८१ पाटण—

महसाना जंक्शन से २५ मील पश्चिमोत्तर इस नाम का रेल्वे स्टेशन है। गुजरात देश के बडौदा राज्य के काडे विभाग में सरस्वति नदी के किनारे पर यह कसबा सबडिवीजन का सदर

स्थान है। यह अणहिलपुर–पाटन, सिद्धपुर–पाटन और अणहिलवाड़ा के नाम से भी विख्यात है। मुसलमानों की पुस्तकों में इसका नाम **नहरवाला** लिखा है। इस कसबे की विशेष प्रख्याति का कारण यहाँ के पुरातन जैनपुस्तक–भंडार और जिनमन्दिर हैं।

संवत् ८०२ में वनराज चावडेने पाटण की स्थापना की। तभी से यहाँ के पुस्तक–संग्रह की भी स्थापना हुई। शीलगुणसूरिजी महाराज की साहाय्य से वनराजने अपने कार्य में बहुत सफलता प्राप्त की थी। नगर प्रतिष्ठा करते समय सब से प्रथम उसने जैन मन्दिर की प्रतिष्ठा की थी। पंचासर नामक गाँव से श्रीपार्श्वनाथ भगवान् की भव्य मूर्त्ति ला कर उसने अपने निर्माण किये मन्दिर में स्थापित की थी। यह गाँव पहले पाटनगर कहाता था। वनराज के पिता जयशिखर के राजत्व काल में कनौज के राजा भूआने इसे विध्वस्त कर दिया था। जिस समय पाटण की स्थापना हुई उस समय वह ऊजड पडा था। पाटण की स्थापना होनेपर थोडे ही समय में वह अच्छी तरह आबाद हो गया। दिन पर दिन इसकी उन्नति होने लगी। मारवाड और काठियावाड आदि से आ आ कर सैंकडों जैन और जैनेतर कुटुम्ब वहाँ बस गये और यह एक अच्छे शहर के समान गिना जाने लगा।

नवाङ्गवृत्तिकार श्रीअभयदेवसूरिजी, द्रोणाचार्य, श्रीचन्द्रसूरिजी और मलधारी श्रीहेमचन्द्रसूरिजी आदि व्याख्याताओंने अपनी व्याख्या (टीका)एँ यहीं पर रहकर लिखीं थीं। वादिदेवसूरिजी ने ८४००० हजार श्लोक प्रमाण का स्याद्वादरत्नाकर नामक तर्क

ग्रन्थ यहीं पर रचा था और कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्रसूरिजीने सिद्ध-हेमशब्दानुशासन, काव्यानुशासन, छन्दोनुशासन, अभिधानचिन्तामणि, अनेकार्थसंग्रह, निघन्टुसंग्रह, देशीनाममाला, प्राकृतद्वाश्रय-महाकाव्य, संस्कृतद्वाश्रय—महाकाव्य, त्रिषटिशलाका—पुरुषचरित्र, योगशास्त्र, आदि अनेक ग्रन्थों की रचना इसी पाटण में की थी।

कुमारपालराजा के स्थापित भंडार और त्रिभुवन—विहार, कुमार—विहार आदि सुन्दर मन्दिरों को उसके उत्तराधिकारी अजयपालने समूल नाश कर दिये थे। इस विहार (चैत्य) के विषय में उपदेशतरङ्गिणी—कारने लिखा है कि—

" पत्तने स्वपितृ—त्रिभुवनपालस्य नामाङ्कितः त्रिभुवन—विहारः कारितः। ७२ देवकुलिकायुतः। तासु २४ प्रतिमारत्नमयः, २४ पित्तलसुवर्णमयः, २४ रूप्यमयः, १४ भारमय्यः मुख्यप्रासादे १ शत २५ अङ्गुलप्रमाणारिष्टरत्नमयी नेमिनाथप्रतिमा कारिता। तत्र द्रव्यव्ययः १६ कोटीप्रमाणः। "

इसी त्रिभुवन—विहारके अंदर कुमार—विहार था, जिसमें हेमचन्द्राचार्य प्रतिष्ठित श्रीपार्श्वनाथ भगवान् की भव्य मूर्त्ति थी। वर्त्तमान में इन दोनों मन्दिरों का नाम—निशान भी नहीं रहा।

यहाँ वर्त्तमान में छोटे बडे ११२ मन्दिर हैं जिनमें सब से प्राचीन पंचासरा—पार्श्वनाथ का मन्दिर है। यहाँ के सभी जिन-मन्दिरों में सफाई और पूजा का बहुत ही अच्छा प्रबन्ध है। इस समय यहाँ छोटे बडे १०—१२ जैनभंडार हैं। जिनमें पांच बड़े

हैं। सभी भंडारों में पुस्तकों की संख्या १४००० के लगभग है, उनमें ६९० ताडपत्र पर लिखी हुई हैं, बाकी कागज पर। पहिले ये भंडार यति–पूज्यों के हाथ में थे, परन्तु कुछ वर्षों से इन भंडारों का कार्यभार गृहस्थों के ऊपर है। सरकार सयाजीराव गायकवाड की आज्ञा से चिमनलाल डाह्याभाई दलाल एम. ए. ने यहाँ के भंडारों का निरीक्षण करके महत्व के जितने ग्रन्थ थे, उनकी विस्तृत सूची तैयार की है।

यहाँ के भंडारों में सब से पहिला नम्बर लघुपोशालिकगच्छ के भंडार का है, जो संघवी के पाडे में है। इसमें सब पुस्तकें ताडपत्र पर ही लिखी हुई हैं। पुस्तक (ग्रन्थ) संख्या ४१३ है। ये सब पुस्तकें लकडी के तीन मञ्जूषाओं में भरी हुई हैं और ये बहुत ही पुरानी और बडे महत्व की हैं। दूसरा नम्बर वाडी-पार्श्वनाथ के मन्दिर के भंडार का है जो झवेरीवाडे में है। इसमें ७५० पुस्तकें हैं और ये सब कागज पर लिखी हुई हैं। इस भंडार की स्थापना विक्रम की पन्द्रवीं शताब्दी में, खरतरगच्छ के आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिजी के आधिपत्य में हुई जान पडती है। क्यों कि इसकी अधिकांश पुस्तकें संवत् १४८०–९० के बीच में लिखी गई हैं। इन पुस्तकों के देखने से जान पड़ता है कि ये सभी ताड़पत्र पर लिखी गई पुस्तकों की प्रतिकोपी (नकल) है। इनके पत्रों का जो संख्या–क्रम है वह ताड़पत्रों के सदृश ही है। इस में साहित्य के बड़े अच्छे अच्छे ग्रन्थ हैं, अन्य भंडारों में ऐसे ग्रन्थ नहीं हैं। तीसबा नम्बर, फोफलवाड़े की आगली–सेरी का है। इसमें ३०३५ पुस्तकें कागज पर और २२ ताड़पत्र पर

लिखी हुइ हैं। सोलहवीं सदी में छदुशाह नाम के एक करोड़-पति सेठ यहाँ हो गये हैं। इसकी बहुतसी पुस्तकें उसी की लिखाई हुई हैं। चौथा नम्बर, फोफलियावाड़े की वखतजी की सेरी के भंडार का है। इसमें २६८६ पुस्तकें काग़ज़ पर और १३७ ताड़पत्र पर आलेखित हैं। पांचवां नम्बर, सागरगच्छ के उपाश्रय के भंडार का है इसमें छोटे छोटे दो तीन संग्रह हैं जिनमें काग़ज़ पर लिखी हुई बहुतसी पुस्तकें हैं।

तीसरे और चौथे नम्बर के भंडारों में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंस और गुजराती भाषा में लिखे हुए सिद्धान्त, तर्क, प्रमाण, व्याकरण, काव्य, कोश, अलङ्कार, ज्यौतिष, छन्द, इतिहास, आदि प्रायः सभी विषयों के ग्रन्थ हैं। ये सभी पुस्तकें भले प्रकार सुरक्षित हैं। ताड़पत्र पर लिखी पुस्तकों के मध्य में एक बारीक छेद में सूत या रेशम की पतली डोरी पोकर सब पत्र एक साथ बांधे हुए हैं और प्रतिपुस्तक के दोनों ओर मजबूत लकड़ी की पट्टियाँ लगा कर सूत की नाड़ियों से कपड़े की चौरस झोलियों में बांधी हुई हैं।

यहाँ श्वेताम्बर जैनों के २००० घर, स्थानकवासी जैनों के १५ घर, दो धर्मशाला, कई उपाश्रय, जैन पाठशाळा और लायब्रेरी है। शहर में सर्वत्र नल लगे हुए हैं. लोग उन्हीं का जल काम में लेते हैं और इसी कारण यहाँ गलीचवाड़ा अधिक है। यहाँ से सवा मील के फ़ासले पर अणहिलवाड़ा है जो राजा कुमारपाल की राजधानी था और उसका विध्वंस होने बाद

वर्त्तमान पाटण की स्थापना हुई है। अणहिलवाड़ा में अब भी अनेक पुरातन चिन्ह मौजूद हैं जो उसकी प्राचीन स्थिति को दिखला रहे हैं। यहाँ वणकर लोग भी जैन हैं और उनका बनवाया हुआ एक जिनमन्दिर भी है, जिसकी सार सम्भाल और पूजा आदि का खर्च वणकर लोग ही करते हैं।

८२ कल्याणा—

यहाँ श्वेताम्बर जैनों के १५ घर, एक उपासरा और एक जिनमन्दिर है, जिसमें भगवान् श्रीआदिनाथस्वामी की प्राचीन भव्य—मूर्त्ति बिराजमान है। इसके अलावा गाँव के बाहर एक मठ भी है जो साधु साध्वियों के उतरने लायक है। इस गाँव के जैनों को साधु उपदेश की बहुत ही जरूरत है।

८३ प्राचीन तीर्थ—मेत्राणा—

यह एक छोटा गाँव है, परन्तु तीर्थ के वजह से दर्शन यात्रा करने लायक है। एक विशाल धर्मशाला के बीच में सौधशिखरी एक बड़ा सुन्दर जिनमन्दिर बना हुआ है। उस में अति चमत्कारिणी और प्रभावशालिनी भगवान् श्रीऋषभदेवस्वामी की सवा फुट बड़ी सफ़ेद वर्ण की मूर्त्ति बिराजमान है। इसी धर्मशाला में मन्दिर के दाहिने बगल पर मेत्राणातीर्थ की पेढ़ी (दूकान) है। यात्रियों के लिये बरतन बिछोना आदि सामान पेढ़ी से नकरे पर मिलता है। इस तीर्थ की देख—रेख सिद्धपुर—संघ के हस्तक में है। यह तीर्थ पाटण—स्टेशन से ७ कोश और सिद्धपुर—स्टेशन से ९ कोश के फ़ासले पर है। यहाँ श्वेताम्बर जैनों के साधारण स्थितिवाले चार घर हैं।

८४ सिद्धपुर—

ऊंझा से ८ मील उत्तर सिद्धपुर–रेल्वे स्टेशन है, रेल्वे स्टेशन के पास बड़ौदा नरेश की सराय है। इससे आगे यह कसबा सरस्वति नदी के किनारे पर बसा हुआ है जो पुराना और प्रसिद्ध वैष्णव तीर्थस्थल है। इसका दूसरा नाम मातृगया भी है। सरस्वती नदी जिसका दूसरा नाम कुमारिका है जो आबू पहाड़ से निकल कर पालनपुर, राधनपुर के राज्य और बड़ोदा राज्य के पाटण सबडिवीजन होकर १०० मील से अधिक दक्षिण–पश्चिम वहने के पीछे कच्छ के रण में जा मिली है, यह कसबे के बाहर ही है। कसबे के पास नदी के किनारे पर पक्का घाट बंधा हुआ है। यहाँ रुद्रमहालय का खंडहर, गोविन्दराव, माधवराव और बिन्दुसार ये स्थान पुराने और देखने योग्य हैं। कसबे से एक मील दूर बिन्दुसार के पास अल्पा सरोवर नामका बड़ा तालाव है। इसके चारों ओर पक्के फाटक बने हुए हैं। यहाँ से एक मील की छेटी पर राजचन्द्र का समाधि–भवन हैं जिसमें राजचन्द्रमत के साधु सेवक रहते हैं।

यहाँ श्वेताम्बर जैनों के २५ घर, एक उपासरा, एक बड़ी धर्मशाला और दो जिन–मन्दिर हैं। सब से बड़ा मन्दिर सुल्तान–पार्श्वनाथ का है। इसका इतिहास यों प्रसिद्ध है कि– सुल्तान अलाउद्दीन खूनीने सिद्धपुर के रुद्रमहालय का नाश किया। उसी समय उसने पार्श्वनाथ की मूर्त्ति–मन्दिर को भी तोड़ने का विचार किया। इस बात का पता लगते ही सिद्धपुर के भोजकोंने अलाउद्दीन बादशाह की हाजिरी में जा कर और

दीपक राग गाकर १०८ दीपक प्रगट किये और उसी समय एक सांप भी प्रगट हुआ जो सुल्तान के सामने गया। इस चमत्कार को देख कर सुल्तानने मूर्त्ति तोड़ने का इरादा बंद रक्खा और ये देव तो 'बादशाहों के भी बादशाह हैं' ऐसा कह कर पीछा रवाना हो गया। तभी से ये मूर्त्ति सुल्तान–पार्श्वनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुई।

८५ समोड़ा—

इस छोटे गाँव में श्वेताम्बर जैनों के पांच घर हैं। यहाँ उपाश्रय, धर्मशाला और जिनमन्दिर नहीं है। यहाँ के जैन भावुक, धर्मश्रद्धालु, भक्तिवान् और गुणग्राही हैं। थोड़े घर होने पर भी साधु साध्वियों को किसी तरह की तकलीफ़ नहीं पड़ती।

८६ लूणवा—

यहाँ श्वेताम्बर जैनों के २० घर, दो उपासरे और एक जिनमन्दिर है। मन्दिर में मूलनायक भगवान् श्रीवासुपूज्यस्वामी की भव्य मूर्त्ति स्थापित है जो विक्रम की अठारहवीं सदी की प्रतिष्ठित है।

८७ कोदराम—

इस छोटे गाँव में श्वेताम्बर जैनों के २० घर, एक उपासरा, और एक जिनमन्दिर है। मन्दिर में श्रीवासुपूज्य भगवान् की प्राचीन मूर्त्ति बिराजमान हैं। यहाँ के जैन साधु साध्वियों के पूर्ण भक्तिवाले हैं।

८८ चाणशूल—

यहाँ श्वेताम्बर जैनों के ३२ घर, दो उपासरा, एक धर्मशाला और एक जिन–मन्दिर है। मन्दिर में श्रीऋषभदेव भगवान् की सुन्दर मूर्त्ति स्थापित है। यहाँ का जिनमन्दिर छोटा परन्तु बहुत ही अच्छा बना हुआ है जिस में पूजा आदि का अच्छा प्रबन्ध है।

८९ डभाड—

यह एक छोटा कसबा है, इसमें श्वेताम्बर जैनों के ३५ घर, दिगम्बर जैनों के १५ घर, दो उपासरा, एक छोटी धर्मशाला, एक श्वेताम्बर जिनमन्दिर है जिसमें श्रीऋषभदेव भगवान् की मूर्त्ति स्थापित है। यहाँ एक दिगम्बर मन्दिर भी है।

९० तारंगा–तलेटी—

यहाँ गाँव या बसति नहीं हैं, परन्तु टीन के पत्रों के दो केम्प बने हुए हैं। तारंगाजी की यात्रा के लिये आनेवाले यात्रियोंको यहाँ भाता मिलता है और यात्री यहाँ कुछ विश्राम लेकर तारंगा–पहाड़ी पर चढ़ते हैं। यहीं से तारंगा का चढ़ाव शुरू होता है। कितने एक यात्री अपना सर सामान यहाँ रखते हैं। तारंगा–पेढ़ी के तरफ़ से यहाँ बन्दोबस्त के वास्ते कुछ नौकर आदमी रहते हैं जो यात्रियों को निर्भयता से पहाड़ पर पहुंचाने के लिये साथ आते जाते हैं।

९१ प्राचीनतीर्थ–तारंगा—

यह जैनों के प्राचीन प्रसिद्ध तीर्थों में से एक है जो सिद्धा-

चल और गिरनार तीर्थ के समान ही पूजनीय माना जाता है। इसके प्राचीन नाम तारणगढ़, तारंगनाग, तारांगनाग, तारण-दुर्ग, तारंगढ़, तारंगक आदि हैं। यह तारंगा हिल रेल्वे स्टेशन से २ कोश के फ़ासले पर है और इस पहाड़ी के चारों ओर तथा ऊपर सघन झाड़ी है जिसमें वाघ, चीता, आदि जानवरों का भय अधिक है। तलहटी से लगभग एक मील ऊंचे चढ़ने बाद तारंगगढ़ का पश्चिम दर्वाजा आता है। दर्वाजे में प्रवेश करते ही दाहिने भाग की भींत में गणेशाकार यक्ष-मूर्त्ति और बाम भाग की भींत पर देवी की मूर्त्ति नजर आती है। इसी प्रकार की दो मूर्त्तियाँ मूल मन्दिर में प्रवेश करने के दर्वाजे के भीतरी भाग में भी है। यहाँ से आधा मील आगे जाने पर पूर्व के बाद अग्नि कोन में जिन-मन्दिर दृष्टिगोचर होते हैं। सब से पहिले दिगम्बरों की धर्मशाला और उसके आगे जोड पर ही श्वेताम्बरीय धर्मशाला तथा मन्दिर में जाने का उत्तर दर्वाजा आता है। मुख्य मन्दिर का मुख और मुख्य दर्वाजा पूर्वदिशा सम्मुख है परन्तु यात्रियों का गमनाऽऽगमन उत्तर दर्वाजे से ही होता है।

उत्तर दर्वाजे में प्रवेश करते ही श्रीतारंगाधिपति अजित-नाथ भगवान् का मुख्य मन्दिर आता है जो अपनी उच्चता के कारण मानों आकाश का स्पर्श कर रहा है। यह मुख्य मन्दिर इतना ऊंचा है कि हिंन्दुस्तान भर में इस की समानता रखनेवाला कोई मन्दिर नहीं है। इसकी ऊंचाई चोरासी हाथ से भी कुच्छ अधिक है। इसमें बिरा-

जमान वर्त्तमान श्री अजितनाथस्वामी की भव्य मूर्त्ति पांच हाथ से कुच्छ बडी है, जो ईडरगढ के राव श्रीपुंजाजी के मान्य और संघ में अग्रेसर वत्सराज संघवी के पुत्ररत्न गोविन्द संघवी की भराई हुई है, और इसकी प्रतिष्ठाञ्जनशलाका श्रीसोमसुन्दरसूरिजी महाराज के कर कमलों से हुई है। दर असल में यह तीर्थ परमार्हत् महाराजा कुमारपाल का स्थापित किया हुआ है। इसके विषय में एक ऐसी कथा प्रचलित है कि–

'राजा कुमारपालने शाकंबरी के राजा अर्णोराज का राज्य लेने के लिये दो चार वार चढाई की, परन्तु उसे विजय प्राप्त नहीं हुआ। तब उसके वाग्भट नामक मंत्रिने कहा कि राजन्! पाटण के जिनालय की देवरी में मेरे पिता उदयन मंत्रि की स्थापित श्रीअजितनाथ की प्रतिमा है जो अद्भुत प्रभावशालिनी है। उसकी विधिपूर्वक पूजा करके चढाई की जाय तो बहुत जल्दी विजय होगा। मंत्रि-के वचन को सुन कर कुमारपालने संकल्प किया कि यदि पूजा किये बाद चढाई करने में मेरा विजय होगा तो मैं इसके स्मारकरूप में एक तीर्थ की स्थापना करूंगा। इस प्रतिज्ञा से श्रीअजितनाथ की पूजा करके राजाने अर्णोराज पर चढाई की, जिस में राजा को शीघ्र ही विजय–लाभ मिला। कृतज्ञ-शिरोमणि चौलुक्यराज कुमारपालने अपनी कृत प्रतिज्ञा के अनुसार तारंगा–पहाड़ी पर अद्वितीय ऊंचाईवाला जिन-मन्दिर बनवाया और उसमें निजगुरु श्रीहेमचन्द्राचार्य के

हाथ से प्रतिष्ठाञ्जनशलाका कराके १०८ अंगुलप्रमाण बडी भगवान् श्रीअजितनाथस्वामी की प्रतिमा विराजमान की।

कुमारपाल–प्रबन्ध में लिखा है कि—

" जिनधर्मप्राप्तौ चैकदा श्रीगुरुवन्दनायागतेन राज्ञा श्रीगुरवः श्रीअजितनाथस्तुतिं पठन्तो दृष्टाः । तदा श्रीअजितनाथबिम्बप्रभावः स्मृतिपथमायातः । हृष्टेन श्रीगुरुभ्यो विज्ञप्तं तत्स्वरूपम् । गुरुरपि हे श्रीचौलुक्यभूप ! अयं तारणदुर्गोऽनेकमुनिसिद्धि प्रापकत्वेन श्रीशत्रुञ्जयतीर्थ-प्रतिकृतिरूप एवेति व्याख्याते श्रीकुमारपालभूपेन तत्र कोटिसिद्धिपूतकोटिशिलादिमनोरमे श्रीतारणदुर्गे चतुरशीति-हस्तोच्च–एकोत्तरशताङ्गुलश्रीअजितबिम्बालङ्कृतः प्रासादः कारितः। "

—जिनधर्म की प्राप्ति हुए बाद किसी समय गुरुवन्दन के लिये आये हुए राजाने श्रीहेमचन्द्रसूरिजी को श्रीअजि-तनाथ भगवान् की स्तुति पढते हुए देखा। उस समय राजा को अजितनाथ की प्रतिमा का प्रभाव याद आया। आनन्दित–राजाने वह हकीकत गुरु के सामने प्रगट की। गुरुने कहा राजन् ! यह तारंगा पर्वत अनेक मुनि को सिद्धिदायक होने से शत्रुंजयतीर्थ का प्रतिरूप ही है। इस व्याख्या को सुन के राजा कुमारपालने करोड़ों पुरुषों को सिद्धिप्रदान करने और कोटिशिला आदि से पवित्रित तारंगा–पर्वत पर एकसौ एक अंङ्गल प्रमाणवाली श्रीअजितनाथ की प्रतिमा से शोभित चौरासी हाथ ऊंचा मन्दिर बनवाया।

इस पवित्र तीर्थ पर इस समय राजा कुमारपाल की स्थापित अजितनाथप्रतिमा नहीं है। मुनिसुन्दरसूरिजी रचित श्रीतारणदुर्गालङ्कार श्रीअजितस्वामीस्तोत्ररत्न के लेखानुसार कुमारपाल स्थापित प्रतिमाको म्लेच्छोंने उठा के अलग कर दी। फिर गोविन्दसंघवीने उसी जगह दूसरी प्रतिमा प्रतिष्ठित की जो अब तक तारंगा–पर्वत पर पूजी जा रही है। तारंगा के मुख्य–मन्दिर के ही बाह्य–द्वार पर दोनों और महामात्य वस्तुपाल के बनवाये हुए दो खत्तक (देवरी आकार के ताक) हैं जिसमें सं० १२९६ में जिनप्रतिमाएँ स्थापित की गई थी, परन्तु वे अब नहीं हैं, इस समय उन में यक्ष यक्षिणी की मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। इसी मन्दिर के कोट के पास ही अग्निकोन में नन्दीश्वर और अष्टापद के दो छोटे मन्दिर हैं। मन्दिर से पूर्व १ मील चढ़ाववाली एक टेकरी है जो पुण्यपाप की बारी के नाम से पहिचानी जाती है। इसकी टोंच पर एक देवरी है जिसमें स्थित प्रतिमा के परिकर में सं० १२७९ वैशाखसुदि ३ का लेख है, देवरी के नीचे एक गुफा में चरण–पादुका भी स्थापित हैं।

मुख्यमन्दिर से दक्षिण कोटिशिला और उत्तर सिद्धशिला नामकी ऊंची दो टेकरियाँ हैं जिन पर देवरियाँ बनी हुई हैं और जिनप्रतिमाएँ स्थापित हैं। इन टेकरियों पर श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों की देवरियाँ तथा प्रतिमाएँ हैं। सिद्धशिला–टेकरी के रास्ते में पत्थरों की छोटी छोटी गुफाओं में दिगम्बर–मूर्त्तियाँ भी दृष्टिगोचर होती

हैं। धर्मशाला से टेकरियों के तरफ थोडी दूर जाने पर एक जीर्ण कुआ और जलकुंड दिखाई देता है। मूल-मन्दिर के पिछले भाग में कोट से लगते ही एक कमरे में छोटे पांच मन्दिर दिगम्बरों के हैं, जो श्वेताम्बरीय मन्दिरों के बाद के बने हुए हैं। मूल-मन्दिर से २ मील दूर पश्चिम-उत्तर तारण-देवी की देवरी और एक गुफा है। जिनमें बौद्धों की मान्य देवी-देवताओं की मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। मुख्यमन्दिर के सामने वाम-भाग में तारंगा की पेढ़ी है जिसमें यात्रियों के लिये बिछोना, बरतन आदि का अच्छा प्रबन्ध है।

९२ टेबू—

तारंगा-पहाड़ी के नीचे यह एक छोटा गाँव है, यहाँ श्वेताम्बर जैनों के ५ घर, एक उपासरा, एक बड़ी धर्मशाला और एक प्राचीन जिनमन्दिर है जिसमें भगवान् श्रीअजितनाथस्वामी की पुरातन-मूर्त्ति बिराजमान है। पेश्तर तारंगा तीर्थ की यात्रा के लिये आने वाले यात्री और संघ इसी रास्ते से पहाड़ पर चढ़ते थे।

९३ भालूसण—

यह गाँव छोटी छोटी पर्वत श्रेणि के पास बसा हुआ है। इसके चारों ओर वेलुमय प्रदेश है और खाड़ाखुड़ी अधिक हैं। यहाँ के मार्ग ऐसे हैं जिनमें भूले पड़ा हुआ मनुष्य फिर इच्छित स्थान पर आना कठिन है। मार्ग में जाते समय यहाँ का एक बोलाउ साथ में रखना पड़ता है जो सीधे रास्ते ले जाता है।

यहाँ श्वेताम्बर जैनों के २० घर, एक छोटा उपासरा और एक जिन–मन्दिर है जिसमें श्रीऋषभदेव भगवान् की प्राचीन मूर्त्ति स्थापित है।

९४ ऊमरी––

यहाँ श्वेताम्बर जैनों के ६ घर, एक उपासरा और एक जिन–मन्दिर है जिसमें भगवान् श्रीशान्तिनाथस्वामी की मूर्त्ति प्रतिष्ठित है। यहाँ के जैन धार्मिक भावना से रहित और साधु–भक्ति से शून्य हैं।

९५ नागर–मोरिया––

इस छोटे गाँव में श्वेताम्बर जैनों के २५ घर, एक उपासरा और एक जिन–मन्दिर है। मन्दिर में भगवान् श्रीअजितनाथ-स्वामी की भव्य मूर्त्ति स्थापित है। यहाँ के जैन धर्मपिपासु, श्रद्धावान् और साधु–सेवा करनेवाले हैं।

९६ दाँता भवानगढ़––

यह छोटा कसबा और राजस्थान है जो पहाड़ियों के मध्य में बसा हुआ है। इसके चारों ओर पहाड़ी प्रदेश और सघन जंगल हैं। जंगल में वाघ, चीता, भालु आदि जानवरों का हर-वक्त भय रहता है। पहाड़ियों के ऊपरी भाग से कसबे तक भग्नावशेष जूना कोट नज़र पडता है। यहाँ श्वेताम्बर जैनों के १२ घर, एक उपासरा और प्राचीन जिन–मन्दिर है। मन्दिर में ऋषभदेव भगवान् की मूर्त्ति बिराजमान है। यहाँ मन्दिर की पूजा और सफाई का कोई प्रबंध नहीं है और मन्दिर का उद्धार

होने की भी पूरी आवश्यक्ता है। इस कसबे के निवासी जैन नाम मात्र के जैन और साधारण स्थितिवाले हैं। इसके अलावा यहाँ एक दिगम्बरजैनों का भी मन्दिर है जो जीर्ण हालत में है।

९७ प्राचीनतीर्थ-कुंभारिया—

चारों ओर पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ सघन झाड़ी के मध्य में बसा हुआ किसी समय यह बडा भारी शहर था। यहाँ अब भी भूशायी हजारों खंड़हरों की श्रेणियाँ मौजुद हैं जिनके अवलोकन से किसी समय में हजारों की गृह-संख्या का अनुमान किया जा सकता है। खंडहरों में पुराने जमाने की १४×९ इंच लंबी पहोली इंटें अब भी देख पडती हैं। इस नगरी के चोतरफ का कोट भग्नावशेष और जला हुआ दिखाई देता है। इस के प्राचीन नाम आगसन, आरासुर, आरसन आदि हैं। इस समय यह दांता-भवानगढ के राज्य में है और दश वीस झोंपडों के सिवाय यहाँ कोई वसती नहीं है।

यहाँ श्वेताम्बर जैनियों के सौधशिखरी पुरातन पांच जिन-मन्दिर हैं जो कोरणी-धोरणी में आबू-देलवाडा के मन्दिरों से किसी प्रकार कम नहीं हैं। सब से बडा मन्दिर नेमनाथ का है जो अपनी उच्चता और कारीगिरी से सुशोभित और यात्रियों के चित्त को मोहित करने वाला है। इस में तीर्थपति श्रीनेमनाथ भगवान् की ३ हाथ बडी सफेदवर्ण की भव्य मूर्त्ति बिराजमान है जो सं० १६७९ महासुदी ४ शनिवार के रोज श्रीदेवसूरिजी के कर-कमलों से प्रतिष्ठाञ्जनशलाका कराके वृद्धशाखीय ओसवाल

बोहरा राजमलने स्थापित की है। इसके दोनों तरफ सवा सवा हाथ बडी दो मूर्त्तियाँ बिराजमान हैं। मन्दिर के गभारे में चार कायोत्सर्ग ध्यान की मूर्त्तियाँ हैं। दीवार के दाहिने भाग में एकही पट का समवसरण है जिसमें १६४ मूर्त्तियाँ हैं। दाहिने भाग में दर्वाजे पर एक ही पट पर १६ मूर्त्तियाँ है जो सं० १३४५ में श्रीपरमानन्दसूरिजी के हाथ से प्रतिष्ठित हुई हैं। रंग-मंडप में एक ओर नन्दीश्वर का पट और दूसरी ओर देवी की मूर्त्ति है। दाहिने भाग की देवरी में श्रीआदिनाथस्वामी की ढाई हाथ बडी और वामभाग में ५॥ हाथ बडी श्रींपार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा बिराजमान है जो सं० १६७५ की प्रतिष्ठित हैं। यह मन्दिर चोवीस जिनालय है और इसका दर्वाजा तिमंजिला है।

दूसरा मन्दिर महावीरप्रभु का है, इसके चोतरफ समवसरण के आकार के चोवीस देवालय हैं जो प्रतिमा-शून्य हैं। इस में मूलनायक भगवान् श्रींमहावीरस्वामी की ढाई हाथ बड़ी मूर्त्ति स्थापित है जो सं० १६७५ की प्रतिष्ठित है। गभारे के बाहर दोनों बगल में दो कायोत्सर्गस्थ और दो छोटी मूर्त्तियाँ भी हैं।

तीसरा मन्दिर शान्तिनाथ का है, इसमें सोलह देवालय हैं जो प्रतिमा रहित है। यह देवालय सं० ११३८-४६ के बने हुए हैं, ऐसा इसकी परकम्मा के लेखों से विदित होता है। इसमें मूलनायक श्रीशान्तिनाथ भगवान् की सफेद वर्ण की सवा हाथ बड़ी मूर्त्ति बिराजमान हैं।

चौथा मन्दिर गोडी-पार्श्वनाथ का है और इसमें सफेद वर्ण

की ढाई हाथ बड़ी श्रीपार्श्वनाथस्वामी की मूर्त्ति स्थापित है जो सं० १६६९ की प्रतिष्ठित है। इस मन्दिर की परकम्मा में भी सं० १६६१ के बने हुए छोटे छोटे देवालय हैं जो खाली पडे हुए हैं। इस के रंग–मंडप में सफेद वर्ण के तीन हाथ बडे दो काउसग्गिया हैं जो बडे सुन्दर और प्राचीन है।

पांचवां मन्दिर संभवनाथ का है, इसमें सफेदवर्ण की दो हाथ बडी अतिसुन्दर श्रीसंभवनाथस्वामी की मूर्त्ति स्थापित है। इसके गंभारे के बाहर आठ ताक बने हुए हैं जिनमें से एक में मूर्त्ति बिराजमान है, बाकी खाली हैं। यहाँ के सभी मन्दिर विक्रम की ग्यारहवीं और बारहवीं शताब्दी के बने हुए मालूम पडते हैं। यह तीर्थ आबूरोड–स्टेशन से १० कोश और दांता–भवानगढ से १२ कोश दूरी पर हैं। यहाँ दो धर्मशाला और आणंदजी कल्याणजी का कारखाना है। कारखाने में यात्रियों के लिये बरतन, गोदडा और सरसामान का अच्छा प्रबन्ध है। यात्रियों को यहाँ किसी तरह की तकलीफ नहीं पडती।

९८ अंबावजी—

यह छोटी पहाडियों के सघन जंगल में वैष्णवों का धाम है। यहाँ अंबावजी का एक छोटा मन्दिर है और इसी नामकी पोष्ट ऑफीस भी है। यह एक छोटा गाँव है परन्तु छोटी बडी ५०–६० पक्की धर्मशालाओं के कारण शहर के समान देख पडता है। इस में हमेशा भिन्न भिन्न गाँवो के २००–३०० यात्री पडे रहते हैं और मेला के समय में हजारों की संख्या में यात्री एक-

त्रित होते है। इस धाम में लोगों के मकानों, मन्दिर और हल-वाइयों की दूकानों पर दीपक में घी के सिवाय घांसलेट या मीठा तेल जलाने की सख्त मुमानीयत है। अंबावजी के मन्दिर को महामात्य वस्तुपालने बनवाया था और कुंभारीया की तरक्की के समय यह जैनियों के अधीन था। परंन्तु आरासणध्वंस के बाद इस पर वैष्णवोंने अपना अधिकार जमा लिया। अंबावजी भगवान् श्रीनेमिनाथस्वामी की अधिष्टायिका है, और इसका दूसरा नाम आरासुरी देवी है। यहाँ पर यात्रा के लिये जैन और विष्णु दोनों आते हैं। आबूरोड और दांता–भवानगढ से यहीं तक मोटर आती है। यहाँ से कुंभारीया पौन मील के लगभग दूर है। यहाँ से कुंभारिया तक बैलगाडियाँ जाती हैं।

६६ खराडी (आबूरोड)–

यह रेल्वे स्टेशन है और स्टेशन के पास ही खराडी नाम का कसबा है जो एक छोटे शहर के समान मालूम होता है। इसमें पक्की सडक सदर बाजार में बनी हुई हैं। एक अस्प-ताल और इसाई स्कूल भी हैं। इस के पास ही बनासनदी हैं जो सिरोही की पहाडियों से निकली है और दक्षिण की ओर मुडकर आबूरोड, सांतलपुर, पालनपुर के राज्य में होकर कच्छ के रण में जा कर मिली है। यहाँ पर केसर शुगर मैन्युफैक्चरिंग कंपनी का चीनी बनाने का कारखाना, सरकारी बाग और कोठी भी है। इस कसबे में श्वेताम्बर जैनों के २० घर और एक बडी धर्मशाला है। धर्मशाला के प्रवेश द्वार के ऊपर एक जिनगृह है जिसमें भगवान् श्रीऋषभदेवस्वामीं की सुन्दर मूर्त्ति बिराजमान है।

१०० आबू (अर्बुदगिरि) तीर्थ—

जैनों के प्रसिद्ध तीर्थों में से यह एक है, जो अति पवित्र और पूजनीय माना जाता है। यह सिरोही राज्य में अर्बुदगिरि का, जिसको अर्बली कहते हैं, एक भाग है। यह अर्बली के सिल सिले से आबू पहाड एक तंग घाटी द्वारा अलग हो गया है। इसका ऊपरी हिस्सा लंबाई में १२ माइल और चौडाई में २ से ३ माइल तक है। इसकी अधिक से अधिक ऊंचाई ५६५० फीट है, परन्तु ऊपरी समान–भूमि की ऊंचाई ४००० फीट है। इसकी नेव के पास और ढालू बगलों में अनेक प्रकार के सघन वृक्षों की झाडीयाँ हैं जिनमें भालू, चीता, सिंह, आदि अनेक पशु रहते हैं। पहिले इसका चढाव मार्ग कठिन (विकट) होने से यात्रियों को बडी मुसीबत पडती थी। परन्तु जब से यहाँ अंग्रेजों का सेनिटेरियम नियत हुआ और राजपूताना के एजेंट गवर्नर जनरल साहब का मुख्य निवास स्थान हुआ तब से रास्ते की दुरुस्ती और आबूरोड से ऊपर तक १८ मील लंधी पक्की सडक बना दी गई है जिससे आबूरोड से ऊपर तक मोटर, इक्का, गाडी सुगमता से जाती आती हैं। पहाड के ऊपर रेजीडेन्सी, बंगलें, गिरजाघर, कुवधर, मदर्से, अस्पताल, राजाओं, वकीलों और धनाढ्य लोगों के बंगले बन जाने से और स्थान स्थान पर सडके हो जाने से ईसकी मनोहरता बहुत ही बढ गई है। इन्हीं के पास ' नखी–तालाव ' नाम की एक झील है जिसको लोग नैनातालाव भी कहने हैं। उसके चारों ओर वृक्ष लगे हुए हैं। हाल में झील के पास अधिक जल रहने के वास्ते पश्चिम किनारे

व्या० वा० मुनिराज श्री यतीन्द्रविजयजी महाराज.

संघ सहित आबुजी से सिरोही तरफ विहार, ता. २२–६–२६

के पास एक बांध बनाया गया है। बांध की ओर झील के मध्य भाग में १०० फीट गहरा पानी है। महियासुर के भय से देवोंने भागकर छिपने के लिये नखों (नैल) से खोद कर इस झील को बनाई, इसी से इसका नाम 'नखी–तालाव' पडा है।

नखी–तालाव से अचलगढ़ की तरफ़ जाते हुए उत्तर अंबादेवी नामक पहाड़ी की चोटी है, जो समुद्र के जल से ४७२० फ़ीट ऊंची है। इसके अधबीच में ४५० सीढ़ियाँ चढ़ने पर अधरदेवी का मन्दिर और उसके पास ही एक छोटी गुफा है। इस मन्दिर में अंबिकादेवी की खड़ी श्याम वर्ण की मूर्त्ति है, जिसे लोग अर्बुदादेवी, या अधरदेवी कहते हैं। इसके दर्शन के लिये जैनेतर यात्री बहुत आते हैं।

अधरदेवी से लगभग एक मील उत्तर–पूर्व में देलवाडा गाँव है, जो जैनदेवालयों से ही प्रसिद्ध है। यहाँ श्वेताम्बर जैनों के पांच छः मन्दिर हैं। उनमें कारीगिरी की दृष्टि से विमल-शाह और तेजपाल का मन्दिर सारे भारत वर्ष में अधिक प्रसिद्ध है। धंधुक से जमीन खरीद करके विमलशाहने करोड़ों रुपया लगा कर आदिनाथभगवान् का सौधशिखरी मन्दिर बनवाया है, जो १४० फ़ीट लंबे और ९० फ़ीट चौड़े एक आंगन में स्थित है। इसके चारों ओर फिरती ५५ देवरियाँ हैं, जो समय समय पर अलग अलग लोगों की बनाई हुई हैं। इसके प्रवेश–द्वार के सामने मुरब्बा–मण्डप में एक हस्तिशाला है। जिस में सफ़ेद मार्बुल के ४ फ़ीट उंचे ९ हाथी हैं, जो सं० १२०५ से

१२३७ तक के बने हुए हैं और वे नेढक, आनन्दक, पृथ्वीपाल, धीरक, लहरक, मानक; आदि महामात्यों के बनवाये हुए हैं। प्रत्येक हाथी पर विमलशाह और उनके वंशजों की मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। इसीके वाम भाग पर एक छोटा आदिनाथ भगवान् का मन्दिर है। विमलशाह के मन्दिर का कुछ हिस्सा म्लेच्छोंने खण्डित कर दिया था। उसको महणसिंह के पुत्र लल्लने सुधराया ऐसा विविधतीर्थकल्प में लिखा है। इस मन्दिर के बगल में थोड़ी दूर श्रीनेथमनाथ भगवान् का दिव्य मन्दिर है, जो 'लूणगवसही' के नाम से प्रसिद्ध और महामात्य वस्तुपाल तेजपाल का बनवाया हुआ है। इसके चोतरफ़ ९२ देवरियाँ हैं और मन्दिर के भीतरी मुख्य प्रवेशद्वार के दोनों बगल में उत्तम कारीगिरीवाला एक एक ताक है, जो देराणी जेठाणी के आलिये कहाते हैं। इन ताकों को तेजपालने अपनी दूसरी स्त्री सुहड़ा देवी के श्रेयो निमित्त बनवाये हैं। सुहड़ादेवी पाटण के रहनेवाले मोढ़जाति के ठक्कुर जाल्हण के पुत्र ठाकुर आसा की लड़की थी। इस मन्दिर में पिछली बगल में एक हस्तिशाला के अन्दर संगमर्मर की उत्तम कारीगिरी वाली एक ही पंक्ति में १० हथनियाँ खड़ी हैं। हथनियों की पूर्व दीवार में १० ताक हैं, जिनमें पुरुषों सहित १० स्त्रियों की खड़ी मूर्त्तियाँ हैं और उन सब के हाथ में पुष्पों की मालाएँ हैं। इनमें प्रत्येक मूर्त्तियाँ पर पुरुष और स्त्रियों के नाम खुदे हैं। कहा जाता है कि यह स्मारकचिह्न वस्तुपाल तेजपाल के कुटुम्ब का है। मुसलमानों से तोड़े गये इस मन्दिर के हिस्से का

उद्धार चण्डसिंह के पुत्र पेथड़संघपतिने कराया है। इन दोनों मन्दिरों के विषय में युरोपियन विद्वानों का कहना है कि—

" इन मन्दिरों में, जो संगमर्मर के बने हुए हैं, अत्यन्त परिश्रम सहन करनेवाली हिन्दुओं की टांकी से फीते जैसी बारीकी के साथ ऐसी मनोहर आकृतियाँ बनाई गई हैं कि उनकी नकल कागज पर बनाने को कितने ही समय तथा परिश्रम से भी मैं शक्तिवान् नहीं हो सका। "

फर्गसन–साहेब.

" इनके गुम्बज का चित्र तैयार करने में लेखिनी थक जाती है और अत्यन्त परिश्रम करनेवाले चित्रकार की कलम को भी महान् श्रम पडेगा "

कर्नल–टोड.

" इन मन्दिरों की खुदाई के काम में स्वाभाविक निर्जीव पदार्थों के चित्र बनाये हैं, इतना ही नहीं किन्तु सांसारिक जीवन के दृश्य, व्यापार और नौका शास्त्र सम्बन्धी विषय, एवं रणखेत के युद्धों के चित्र भी खुदे हुए हैं। इनकी छतों में जैनधर्म की अनेक कथाओं के चित्र भी खुदे हुए हैं। "

फार्बस–साहेब.

वस्तुपाल के मन्दिर से थोड़ी दूर ही बगल में भीमाशाह का जिसको लोग भेंसाशाह कहते हैं, बनवाया हुआ मन्दिर है। इसमें १०८ मन तोल की सर्वधात की परिकर सहित मय-

पंचतीर्थी के भगवान् श्रीआदिनाथस्वामी की अतिमनोहारिणी भव्य मूर्त्ति विराजमान है, जो सं० १९२९ में श्रीमालजाति के मंत्री मण्डन के पुत्र मंत्री सुन्दर और गन्दाने स्थापित की है। इसके अलावा यहाँ के कारखाना के सामने की बगल पर तिमंजिला चोमुखजी का और श्रीशान्तिनाथ भगवान् का सौधशिखरी जिनमन्दिर है। यहाँ पर अहमदाबाद वाले हठीसिंह केशरीसिंह की बडी और पञ्चायती छोटी; एवं दो श्वेताम्बर जैनधर्मशालाएँ और धर्मशालाओं से कुछ दूर दिगम्बरीय मन्दिर है, जो छोटी धर्मशाला के भीतरी कमरे में ही है।

देलवाडा से ९ मील उत्तर–पूर्व में अर्बुदाचल की 'अचलगढ़' नामक चोटी है, जो समुद्र के जल से ४६८८ फ़ीट ऊंची है। इसके नीचे ढालू भूमि पर पहाड से लगते ही श्रीशान्तिनाथ भगवान् का सुन्दर मन्दिर है, जो परमार्हत् राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ है। इसमें तीन मूर्त्ति पद्मासनस्थ और मण्डप में दो कायोत्सर्गस्थ हैं। जिन में एक पर सं० १३०२ का लेख है। इससे थोडी दूर अचलेश्वर महादेव का मन्दिर, इसके बगल में मन्दाकिनी नामका कुंड है। जिसके तट पर राजा धारावर्ष की धनुषसहित मूर्त्ति और पत्थर के तीन भैंसे खडे हैं। तट के पास ही मानसिंह का शिवमन्दिर है, जो सं० १६३४ में धारबाईने बनवाया है। अचलेश्वर के बगल से अचलगढ़ तक पत्थर की मजबूत सीढ़ियाँ बनी हुई हैं, जो उपर चढ़ने का सुन्दर मार्ग है। गणेशपोल से अचलगढ़ की चढ़ाई शुरू होती है। मार्ग में दाहिने भाग पर लक्ष्मीनारायण का मन्दिर और

उसके आगे एक छोटा गाँव आता है। यहाँ एक छोटी धर्मशाला में अचलगढ़ का कारखाना और श्रीकुन्थुनाथस्वामी की सर्वधात की प्रतिमा बिराजमान है जिस पर सं० १५२७ का लेख है।

आगे ऊंचे जाने पर पहाड़ के शिखर के पास एक जैन धर्मशाला और उससे ऊपर मन्दिरों में जाने की पोल आती है। यहाँ मय कारतुस-बन्दूक और तलवार के पहरेदार रहते हैं, जो मन्दिर और यात्रियों की रक्षा के लिये कारखाने के तरफ़ से नियत हैं। इससे कुछ आगे जाने पर श्रीशान्तिनाथ और नेमनाथस्वामी के मन्दिर के दर्शन होते हैं। यहाँ से पन्द्रह सीड़ियाँ चढ़ने पर इस गढ़ का मुकुटमणि दोमंजिला चोमुख-मन्दिर है, जिसकी ऊपर की छत पर खड़े होकर देखने से दूर दूर गाँवों और आबू के सुन्दर दृश्य दृष्टिगोचर होते हैं। इसके दोनों खंडों में सर्वधात की अतिरमणीय १४ प्रतिमा बिराजमान हैं, जो तोल में १४४४ मनकी मानी जाती हैं। ये प्रतिमाएँ बिलकुल स्वर्ण के समान चमकती हुई हैं और इनमें सब प्रतिमाएँ सं० १५१८ और १५६६ की प्रतिष्ठित हैं।

नयी जैन धर्मशाला के सामने के रास्ते से कुछ ऊंचे चढ़ने बाद सावन, भादवा नामके दो जलासय आते हैं, जिनमें सदा जल रहता है। पर्वत-शिखर के पास टूटा हुआ जूना किला है, जो मेवाड़ के महाराणा कुम्भकर्णने सं० १५०६ में बनवाया था। यहाँ से नीचे के ढाल में पहाड़ को काट कर बनाई हुई दो मंजल की एक छोटी गुफा है, जो हरिश्चन्द्र की गुफा के नाम से

प्रसिद्ध है। अचलगढ़ गाँव के नीचे के हिस्से में एक छोटी बगीची और छोटा तालाब भी है। यहाँ के कारखाने में सब बात का शुभीता होने पर भी यात्री रात नहीं रहते, किन्तु पूजा करके वापिश देलवाड़े आकर ठहरते हैं।

अचलगढ़ से दो मील उत्तर में ओरिया नामका गाँव है। यहाँ महावीरस्वामी का मन्दिर है—जिसमें मूलनायक श्रीमहावीर भगवान्, उनके आजू बाजू पार्श्वनाथ और शान्तिनाथ की मूर्त्तियाँ बिराजमान हैं।

यहाँ से ३ मील सब से ऊंची और विकट चढ़ाववाली पर्वत की गुरुशिखर नामक चोटी है। जिसपर दत्तात्रय के चरणचिह्न हैं और इस पर कई बावे पड़े रहते हैं। इसके सिवाय गौतम, गोमुख और वास्थानजी आदि वैष्णवों के भी कई धर्मस्थान हैं, जहाँ हजारों वैष्णवयात्री आते हैं। वास्थानजी में १८ फ़ीट लम्बी, १२ फीट चौड़ी और ६ फीट ऊंची एक सुन्दर गुफा है, जो देखने लायक है।

१०१ अनादरा—

आबू पहाड़ के नीचे पहाड़ से १ मील दूर यह छोटा गाँव है। इसमें श्वेताम्बर जैनों के ४० घर, एक उपासरा, दो धर्मशाला और एक प्राचीन जिनमन्दिर है। मन्दिर में श्री ऋषभदेव भगवान् की मूर्त्ति स्थापित है। आबूरोड़ की सड़क नहीं थी, उस समय यात्री इसी रास्ते होकर पहाड़ पर जाते थे। देलवाड़ावाले वस्तुपाल के मन्दिर के शिला-लेख में जो विक्रम सं० १२८७ का है, इस गाँव का नाम 'हंडाउद्रा' मिलता है।

१०२ पालरी—

यह छोटा गाँव है इसमें श्वेताम्बर जैनों के ५ घर, एक धर्मशाला और एक पुराना मन्दिर है—जिसमें शान्तिनाथ भगवान् की प्राचीन प्रतिमा स्थापित है। यहाँ मन्दिर में पूजा का प्रबन्ध अच्छा नहीं है और मन्दिर में पूरा कचरा भी नहीं निकलता।

१०३ सीरोड़ी—

यह सिरोही रियासत का छोटा कसबा है, जो एक छोटी टेकरी के नीचे बसा हुआ है। इस में श्वेताम्बर जैनों के ७० घर, २ उपासरे, एक धर्मशाला और एक प्राचीन जिनमन्दिर है। मन्दिर में मूलनायक भगवान् श्रीपार्श्वनाथस्वामी की भव्य मूर्त्ति स्थापित है। इसमें छोटी बड़ी सोलह मूर्त्तियाँ हैं, जो सं० १२८७—१३०८ के बीच की प्रतिष्ठित हैं। इस मन्दिर पर सं० १९७३ में प्रतिष्ठा पूर्वक ध्वजादंड और कलश फिर से चड़ाये गये हैं। मन्दिर के मण्डप में उसी समय का दाहिने भाग पर एक शिला—लेख लगाया गया है। जिसकी नक़ल इस प्रकार है—

" अर्बुदात्पश्चिमे भागे, सिरोही राज्यमण्डले।
वापीकूपतड़ागादिरम्योपाश्रयशोभिते ॥ १ ॥
आवासैः श्रावकानां च, मध्ये चत्वरशोभिते।
सिरोड़ीनगरे रम्ये, जिनदेवालयैर्युते ॥ २ ॥
तत्त्रत्य श्रावकानां च, प्रार्थनेन समागताः।
भट्टारकपदेनाढ्यतपोगच्छीयमण्डले ॥ ३ ॥

राजेन्द्रसूरिशिष्येषु, यतीन्द्रविजयाभिधाः ।
भुवनामृतविजयास्तथा तदनुगाः सदा ॥ ४ ॥
सर्वे सम्प्राप्य तत्रैव, सिरोड़ीनगरे खलु ।
मन्दिरे पार्श्वनाथस्य, जीर्णे दण्डेन खण्डिते ॥ ५ ॥
त्र्यंगाङ्केन्दुमिते वर्षे, ज्येष्ठे मास्यसिते दले ।
प्रतिपद्गुरुणा युक्ते, मुहुर्त्ते विजयाभिधे ॥ ६ ॥
महोत्सवं च पूजां च, कारयित्वा विधानतः ।
सुवर्णदण्डकलशारोहणं कारितं च तैः ॥ ७ ॥ ”

गाँव के बाहर सिरोही जानेवाली सड़क के दाहिने भाग में एक सुन्दर मन्दिर है, जिसमें बिना गढ़ा हुआ एक पत्थर स्थापित है जो वामनवाड़ के नाम से पूजा जाता है। लोग कहते हैं कि कारीगर (सलावट) इसकी महावीर प्रतिमा बनाने लगे, परन्तु टांकियाँ इस पर बेकार हो गई और टूट गई, बहूत परिश्रम करने पर भी यह गढ़ा नहीं गया तब लोगोंने इसको बिना गढ़ा हुआ ही ज्यों का त्यों स्थापित कर दिया।

१०४ मेड़ा—

इस छोटे गाँव में श्वेताम्बर जैनों के २० घर, एक उपासरा और एक जिन मन्दिर हैं—जिसमें भगवान् श्रीशान्तिनाथस्वामी की मूर्त्ति स्थापित है जो अर्वाचीन है। यहाँ से ४ मील के फासले पर आबू की छोटी त्रिकोण पहाड़ियों के बीच में 'हमीरगढ़' नामक स्थान है जो किसी समय बड़ा आबाद शहर था। अभी यहाँ खंडहरों के सिवाय बिलकुल आबादी नहीं है। इसके

चारों ओर जंगल है, इसका मार्ग भी कंकटमय, भयंकर, और-कंकरीला है। यह सिरोही से ९ मील दूर है।

इस समय इस स्थान पर चार जैनमंदिर, एक जैनधर्मशाला, एक सुन्दर और छोटा हिन्दुदेवल तथा टेकरी पर ध्वंसावशिष्ट किला मौजूद है। यहाँ के जैनमंदिरों में से तीन जिनमन्दिर पर्वत की ढालू जमीन पर स्थित हैं—जिनमें ऐक सब से बडा मकराणा पाषाण का सुंदर नक्शीदार है और सब से पुराना है। वाकी दो मन्दिर अर्वाचीन और सादे हैं, जो विक्रम की १५ वीं सदी में बने मालूम पडते हैं। चौथा मन्दिर रास्ते के ऊपर है, जो छोटा और प्राचीन है। ऊपर के तीनों मन्दिरों की सभी प्रतिमाएँ इसी चौथे मंदिर में पीछे से स्थापन कर दी गई हैं, जो प्रायः खंडित हैं। मूर्त्तियों में अजितनाथ और शान्तिनाथ के दो काउसगिये प्राचीन हैं और उन पर एकही मतलब का इस प्रकार लेख है—

१—संवत १३४६ वर्षे फागुणसुदि २ सोमे श्रे० बोहरि भा० अच्छिणी, पुत्र छोगा, भा० कडू पु० श्रे० समधर भा० लाडी, पु० पूनपाल भा० २ चांपल ताल्हू पु० देवपाल मदन कर्मसिंह श्रे० आसपाल भा० लाछू पु० महिपाल भा० ललता पितु—मातृश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथदेव प्रतिष्ठितं श्रीचंद्रसिंहसूरि संतानीय श्रीपूर्णचंद्रसूरिशिष्यैः श्रीवर्धमानसूरिभिः।

इनके सिवाय एक चोवीसी का पट्ट है, जो सब से प्राचीन है और यह श्रीचन्द्रसिंहसूरिजी के हाथ से सं० १२१६ आषाढ सुदि १० रविवार के दिन प्रतिष्ठत हुआ है। वाकी सब प्रतिमाएँ

सं० १५५२ के लगभग की प्रतिष्ठित हैं। मूलमन्दिर के चारों ओर की देवरियाँ भी पीछे से जुदे जुदे सद्गृहस्थों के तरफ से बनी हुई मालूम पडती हैं। उनमें से देवरी नम्बर १–५–६ में क्रमशः इस प्रकार लेख उकेरे हुए हैं—

२ सं० १५५६ वर्षे वैशाखसुदि १३ रवौ प्राग्वाटज्ञातीय सं० वाछा, भा० बीजलदे सुत सं० कान्हा कुतिगदे जाणिदेसी सुत सं० रत्नपाल भार्या करमाई....स्वभर्तृ श्रेयसे श्रीजीराउला पार्श्वनाथप्रासादे देवकुलिका कारिता, बृद्धतपापक्षे श्री उदयसागरसूरीणामुपदेशन। सं० करमाई सुता भांगी प्रणमति, सं० कान्हा सुता (प्रक्रमति) सुता करमाई नित्यं श्रीपार्श्वं प्रणमति।

३ सं० १५५६ वर्षे द्वितीयज्येष्टसुदि १ शुक्रे महाराज श्रीराणाजी प्रसादात्, प्राग्वाट ज्ञातीय संघवी समहा भार्या.... दे पुत्ररत्न संघवी सचवीर भार्या पदमाई पुत्ररत्न संघवी देवा सकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीजगन्नाथप्रासादे श्रीदेवकुलिका कारापिता, भट्टारकप्रभुश्रीहेमविमलसूरिभिः प्रतिष्ठिता। संघस्य शुभं भवतु।

मुख्य मन्दिर के गूढमंडप में बने हुए दोनों तरफ के ताकों में एक ही किस्म का यह लेख है—

४ स्वस्तिश्री संवत् १५५२ वर्षे पोषवदि ७ सोमे श्री बृहत्तपापक्षीय भ० श्रीधर्मरत्नसूरिणामुपदेशेन श्रीस्तंभतीर्थवास्तव्य श्रीउपकेशबृद्धशाखायां सा० नाथा भा० वा० हेमीसुता जीवी भा० शिवा तया निजपितृस्वसुः श्रेयोर्थं श्रीजीरापल्लीश प्रासादे आलकद्वयं कारितः।

इन लेखों से इसके तीर्थनायक श्रीजीराउली—पार्श्वनाथ मालूम पडते हैं। इस समय इस प्रभावशालिनी प्रतिमा का यहाँ पता नहीं है। यह मुख्य मंदिर कब किसने बनाया ? यह खोज करने पर निर्भर है। यह जिनमन्दिर कोरणी (नकशी) की सजावट में आबुदेलवाडे के मन्दिरों से मिलता जुलता है। यह स्थान तीर्थ तुल्य होने से पूजनीय और दर्शनीय है।

१०५ सन्दरुट—

इस छोटे गाँव में श्वेताम्बर जैनों के १५ घर, और एक प्राचीन जिनमन्दिर हैं, मंदिर में भगवान् श्रीकुन्थुनाथ स्वामी की भव्य मूर्त्ति विराजमान है। यहाँ के जैन साधु—धर्म से और गृहस्थ धर्म से बिलकुल अनभिज्ञ हैं। यहाँ जिनमन्दिर की पूजा और सफाई का कुछ भी प्रबन्ध नहीं और न यहाँ के जैन कभी दर्शन करते हैं। मन्दिर का सारा भार पूजारी के ही हस्तक में है इससे कभी कभी पूजा भी नहीं होती।

१०६ सिरोही—

यह शहर सिरणावा—नामक पर्वत—श्रेणि के नीचे बसा हुआ है, जो राजपूताने के दक्षिण—पश्चिमी हिस्से में २४ अंश २० कला, तथा २५ अंश १७ कला उत्तर अक्षांश, और ७२ अंश १६ कला, तथा ७३ अंश १० कला पूर्वरेखांश के बीच है। इसका क्षेत्रफल १९६४ मील है। राजपूताना मालवा रेल्वे के पिंडवाड़ा स्टेशन से यह १६ मील दूर है। इसको महाराव सैंसमलने विक्रम सं० १४८२ में बसाया था। यहाँ पोष्ट ऑफिस,

तारघर, मदर्सा, अस्पताल और पक्की सड़कें बनी हुई है। शहर से १॥ मील दूर केसरविलास नामका बाग़ है—जिसमें सरकारी दो कोठी और बंगले हैं। सिरोही से दो मील उत्तर में सारणेश्वर का शिवालय है, जो ५०० वर्ष का पुराना माना जाता है और वैष्णवों का यात्रा—स्थान है।

राज महल से नीचे थोड़ी दूर पर जैनमन्दिरों का समूह है जो 'देरासेरी' के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें एक ही लम्बे चौक में श्रेणिबद्ध पन्द्रह जिन मन्दिर हैं, जो अतिरमणीय और दर्शक यात्रियों के चित्त को मोहित करते हुए शत्रुंजय महातीर्थ का स्मरण कराते हैं। इन सब में अपनी उच्चता, विशालता और कारीगिरी की अपेक्षा अधिक सुन्दर चोमुखजी का मन्दिर है, जो संवत् १६३४ का बना माना जाता है। यहाँ के जिन मन्दिरों का इतिहास अभी तक अंधारे में ही पड़ा हुआ है। सिरोही के सुशिक्षित जैनयुवकों को चाहिये कि ऐसे प्रसिद्ध जिनमन्दिरों का इतिहास शीघ्रता से प्रकाश में डालें। इनके अलावा शहर में श्रीऋषभदेव भगवान् का एक और भी भव्य मन्दिर है, जो अर्वाचीन है। यहाँ श्वेताम्बरजैनों के ५०० घर, दो श्वेताम्बर धर्मशाला और पांच उपाश्रय हैं। शहर के बाहर आधे मील दूर एक जिनगृह है—जिसमें भगवान् श्रीमहावीर स्वामी की प्राचीन भव्य मूर्त्ति बिराजमान है, जो वाम-नवाड के नाम से प्रसिद्ध है।

१०७ सनवाड़ा—

यहाँ श्वेताम्बर जैनों के १० घर, एक उपासरा, और एक जिनमन्दिर है। मन्दिर में भगवान् श्रीचन्द्रप्रभस्वामी की सुन्दर

मूर्त्ति बिराजमान है। इसमें सफ़ाई और पूजन आदि का इन्तिजाम बराबर नहीं है और न यहाँ के जैन मन्दिर के कभी दर्शन करते हैं।

१०८ वीरवाड़ा—

सिंरणवा पहाड़ी के नीचे यह छोटा गाँव है, जिसमें श्वेताम्बर जैनों के ५० घर, एक उपासरा, एक बड़ी धर्मशाला और दो जिनमन्दिर हैं। गाँव वाला मन्दिर ९२ जिनालय और बाहर का मन्दिर सामान्य है। इन दोनों मन्दिरों में मूलनायक भगवान् श्रीमहावीरस्वामी की भव्य और प्राचीन मूर्त्तियाँ बिराजमान हैं।

१०९ वामनवाड़जी—

यह अर्बुदगिरि की पंचतीर्थी में से एक है, जो पूजनीय और अति पवित्र तीर्थ माना जाता है और यहाँ प्रतिवर्ष हजारों यात्री दर्शन करने के लिये आते हैं। सालमें एक वार फाल्गुन सुदि ७ से १४ तक मेला भराता है, जो सिरोही रिसायत के सभी मेलों में मुख्य है। इस मेले में १०,००० आदमी तक जमा होते हैं और बहुतसा माल दूर दूर से बिकने को आता है। परन्तु रेल्वे के जारी होने से अब उसमें प्रतिदिन न्यूनता होती जाती है। यहाँ मजबूत और विशाल कोट के घेरे में दो धर्मशाला, मेला के योग्य दूकानें, बंगले, कारखाना और पुलिस तथा नौकरों के रहने के मकान बने हुए हैं। पहाड़ के नीचे कोट के भीतर ही यहाँ के तीर्थपति भगवान् श्रीमहावीरस्वामी का प्रसिद्ध, विशाल

और प्रभावशाली सौधशिखरी मन्दिर है, जो ५२ जिनालय और प्राचीन है। इसकी सभी देवरियों में प्राचीन–अर्वाचीन प्रतिमाएँ स्थापित हैं। परन्तु मूलनायक श्रीमहावीर भगवान् की प्रतिमा सब से अधिक प्राचीन है। इसके बामभाग की पहाड़ी के शिखर पर एक देवरी है–जिसमें महावीरप्रभु की चरण–पादुका स्थापित हैं। यह तीर्थ पिंडवाडा स्टेशन से ४ मील उत्तर–पश्चिम में स्थित है। यहाँ की आबहवा और जल शुद्ध होने से कुछ दिन यात्रियों को ठहर कर यहाँ के तीर्थपति की सेवा करने योग्य है।

११० नांदिया—

यह पिंडवाडा स्टेशन से ९ मील पश्चिम और बामनवाडजी से ६ मील दूर एक छोटा गाँव है, जो आबू की पंचतीर्थी में से एक माना जाता है। यह चारों ओर उंची पहाडियों से घिरा हुआ है। इसमें श्वेताम्बर जैनों के ४० घर, दो उपासरे, एक धर्मशाला और एक गृहमन्दिर है–जिसमें श्रीमहावीरस्वामी की प्रतिमा स्थापित है। यहाँ से उत्तर पहाडी की ढालू जमीन पर एक पुराना और ९२ जिनालय शिखरबद्ध सुन्दर मन्दिर है। जिसमें मूलनायक भगवान् श्री महावीरप्रभु की अति प्रभावशालिनी प्रतिमा बिराजमान है। यह तीर्थ इसी मन्दिर के कारण प्रसिद्ध और पूजनीय माना जाता है, परन्तु यहाँ पूजन और सफ़ाई का प्रबन्ध बराबर नहीं है। इस मन्दिर के बाहर की दीवार में लगे हुए एक लेख में, विक्रम सं० ११३० में नन्दीश्वरचैत्य के आगे बावडी बनाये जाने का लिखा है। नन्दगिरि

(आबू) की पहाडी के नीचे बनाये जाने के कारण इस मन्दिर का नाम नन्दीश्वरचैत्य रक्खा गया हो, ऐसा जान पड़ता है ।

१११ गोयली—

सिरोही रियासत के इस छोटे गाँव में श्वेताम्बर जैनों के २५ घर, एक उपासरा, एक धर्मशाला और एक सौधशिखरी जिनमन्दिर है—जिसमें भगवान् श्रीपार्श्वनाथस्वामी की भव्य मूर्त्ति स्थापित है, जो नवीन है, पर दर्शनीय है ।

११२ ऊड़—

इस छोटे गाँव में श्वेताम्बर जैनों के २५ घर हैं, जो धार्मिक भावना और साधुसेवा से विमुख हैं। यहाँ एक उपासरा और एक छोटा गृह—मन्दिर भी है। परन्तु यहाँ के जैन उसके पर्युषण के एक दो दिन के सिवाय कभी दर्शन नहीं करते ।

११३ जावाल—

सिरोही स्टेट का यह एक छोटा कसबा है, इसमें श्वेताम्बर जैनों के २०० घर, एक उपासरा, एक धर्मशाला और दो जिन मन्दिर हैं। सबसे बड़ा मन्दिर जो त्रिशिखरी है, और उंची कुरसी पर बना हुआ है, भगवान् श्रीऋषभदेवजी का है। दूसरा मन्दिर श्रीपार्श्वनाथस्वामी का है जो तीनथुईवालों के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी प्रतिष्ठा महाराज श्रीमद्धनचन्द्रसूरिजी के कर-कमलों से सं० १९९२ माहसुदि १३ शुक्रवार के दिन हुई है और इसको जावाल के रहनेवाले जसाजी सुरतिंगजी पोरवाड़ने

बनवाया है। इनके अलावा गाँव के बाहर अंबावजी के स्थान पर एक नया तीसरा मन्दिर बना है जो सफ़ेद पाषाण का और शिखरबद्ध है।

११४ **बलदूट**—

सिरोही स्टेट के इस गाँव में श्वेताम्बर जैनों के १०० घर, एक उपासरा, एक विद्याशाला, एक बडी धर्मशाला और दो जिनमन्दिर हैं। सब से प्राचीन और दर्शनीय मन्दिर भगवान् श्रीआदिनाथस्वामी का है। दूसरा मन्दिर संघ के तरफ़ से नया त्रिशिखरी बनाया गया है, जो विशाल, उंचा और सफ़ेद पाषाण का है। इसमें मूलनायक भगवान् श्रीशान्तिनाथ स्वामी की भव्य मूर्त्ति बिराजमान है। इसकी प्रतिष्ठाञ्जनशलाका संवत् १९६४ वैशाखसुदि ३ बुधवार के दिन श्रीमद्धनचन्द्रसूरिजी महाराज के कर-कमलों से हुई है।

११५ **सवणा**—

जोधपुर रियासत के जालोर परगणे का यह छोटा गाँव है, यहाँ पेश्तर श्वेताम्बर जैनों के ५० घर थे, परन्तु अब एक भी नहीं है। यहाँ एक जीर्ण और मूर्त्ति रहित जिन मन्दिर था। देलंदर निवासी सेठ कर्पूरचन्द्रजी बभूतमलजीने इसका उद्धार कराके, उसमें मूलनायक भगवान् श्रीवासुपूज्यस्वामी आदि की तीन मूर्त्तियाँ बिराजमान की हैं। इनकी प्रतिष्ठाञ्जनशलाका संवत् १९६९ फाल्गुन सुदि ३ भृगुवार के दिन आचार्य श्रीविजयधनचन्द्रसूरिजी महाराज के हस्त-कमलों से हुई है। इस मन्दिर की बगल की

एक छोटी धर्मशाला में दो कायोत्सर्गस्थ मूर्त्ति योंही पड़ी हैं, जो प्राचीन और कहीं से लाकर यहाँ रख दी गई हैं।

११६ आकोली—

जोधपुरस्टेट के जालोर परगने में बाकरा ठाकुर का यह छोटा गाँव है, जो आबू से निकली हुई खारी नदी के किनारे पर बसा हुआ है। इस में त्रिस्तुतिक श्वेताम्बर जैनों के ८० घर, एक उपासरा, एक बड़ी धर्मशाला और एक शिखरबद्ध जिनमन्दिर है। मन्दिर में मूलनायक भगवान् श्रीआदिनाथ की प्राचीन प्रतिमा स्थापित है, जो एक किसान के खेत को खणते हुए निकली है। इसके साथ ही चार मूर्यित्ताँ और भी निकली थीं, जो इसी मन्दिर में बिराजमान हैं। जिनमन्दिर में प्रतिष्ठा—महोत्सव के समय इस प्रकार शिला—लेख लगाया गया है—

"ॐ नमोऽर्हद्भ्यः। श्रीसौधर्मबृहत्तपागच्छीय श्री १००८ श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के उपदेश से आकोली नगर के जैनश्वेताम्बर संघने यह सौधशिखरी—मन्दिर बनवाया।

इस में प्रातःस्मरणीय श्रीविजयधनचन्द्रसूरिजी महाराज के पट्टप्रभावक श्रीमद्विजय—भूपेन्द्रसूरिजी महाराज के पास मुनि श्रीयतीन्द्रविजयजी के प्रबन्ध से सं० १९८४ वैशाख सुदि ५ शुक्रवार के दिन महामहोत्सव सह प्रतिष्ठा कराके मूलनायकजी श्री आदिनाथ, श्रीपार्श्वनाथ, श्रीशान्तिनाथ, श्रीसुपार्श्वनाथ,

श्रीवासुपूज्य, श्रीऋषभदेव, श्रीपार्श्वनाथ, भगवान् की प्राचीन मूर्त्तियाँ विराजमान की, तथा स्वर्णमय कलश और दंडध्वज आरोहण किया।"

११७ बागरा—

जोधपुर राज्य के जालोर परगने में दासपा ठाकुर का यह गाँव है। इसमें श्वेताम्बर—त्रिस्तुतिक जैनों के २५० घर, और दो बड़ी धर्मशालाएँ हैं। जैनाचार्य्य श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के उपदेश से यहाँ के संघने मार्बुल पाषाण का सौधशिखरी सुन्दर मन्दिर बनवाया है, जो चौवीस जिनालय है। इसकी प्रतिष्ठा संवत् १९७२ महा सुदि १३ बुधवार के दिन उपाध्यायजी श्री मोहनविजयजी के प्रबन्ध से, आचार्य श्रीविजयधनचन्द्रसूरिजी महाराज के हाथ से हुई है।

११८ सियाना—

जोधपुर स्टेट के जालोर परगने में यह छोटा कसबा है, जो खारी नदी के किनारे पर खेतला नामक छोटी पहाड़ी के नीचे बसा हुआ है। इसमें त्रिस्तुतिक श्वेताम्बर जैनों के ३२९ घर, दो उपासरे, दो बड़ी धर्मशालाएँ और दो सौधशिखरी जिन—मन्दिर हैं। उनमें परमार्हत् राजा कुमारपाल का मन्दिर बड़ा सुन्दर है, जो खेतला पहाड़ी की ढालू भूमि पर बना हुआ है। इसमें मूलनायक भगवान् श्रीसुविधिनाथस्वामी की अति चमत्कारिणी सफेद वर्ण की सवा हाथ बड़ी प्रतिमा स्थापित है, जिसकी प्रतिष्ठाञ्जनशलाका सं० १२१४ में कलिकाल—सर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य के हाथ से हुई है।

ऐसा कहा जाता है। इसके चारों तरफ चोवीस देवालय संघके तरफ से नये बनाये गये हैं, जिनकी प्रतिष्ठाञ्जनशलाका सं० १९५८ माह सुदि १३ गुरुवार के दिन जैनाचार्य श्रीमद्विजय—राजेन्द्र-सूरीश्वरजी महाराजने की है। मुख्य मन्दिर के पिछले भाग में पंचतीर्थी और राजेन्द्ररत्नटोंक बना हुआ है। टोंक के मूलनायक श्रीशान्तिनाथस्वामी हैं। इस मन्दिर में प्राचीन और अर्वाचीन सब मिलाकर १३६ मूर्त्तियाँ हैं। दूसरा मन्दिर श्रीऋषभदेव भगवान् का है, जो इसी कसबे के रहनेवाले जेरूपचन्द कस्तूरजी पोरवाड़ने महाराज श्रीविजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी के उपदेश से बनवाया है। इसकी प्रतिष्ठा सं० १९६९ ज्येष्ठ सुदि १२ रविवार के दिन महाराज श्री धनचन्द्रसूरिजीने की है। इसमें छोटी बड़ी गट्टाजी के सहित कुल १२ मूर्त्तियाँ हैं।

११९ आहोर—

सूखड़ी नदी के किनारे पर बसा हुआ जोधपुर रियासत के जालोर परगने में यह अच्छा कसबा है। इसमें श्वेताम्बर जैनों में त्रिस्तुतिक शुद्ध सम्प्रदाय के ४५० घर, चतुर्थस्तुतिक—पूनमियागच्छ के १५० घर, दो उपासरे, तीन जैन धर्मशाला, एक प्राचीन हस्तलिखित—जैनागमसंग्रहभंडार और एक सराय हैं। यहाँ पांच जिन—मन्दिर हैं। जिनमें सब से प्राचीन श्रीशान्तिनाथ भगवान् का मन्दिर है, जो सं० १४४४ का बना हुआ है। दूसरा मन्दिर सब से बड़ा विशाल श्रीगोडी—पार्श्वनाथ का है, जो दोवरते शिखरवाला और ५२ जिनालय है। गोडीजी का मन्दिर गाँव के बाहर है, इसमें प्रवेश करते ही दर्वाजे के भीतरी चौक में दाहिने भाग पर आ-

रस पाषाण की सुन्दर गुरुछत्री है, जो मूता चमनमल–भूरमल डूंगाजी की बनवाई हुई है। उसके आगे ऊपरी भाग में दो देवरियाँ आरस–पाषाण की हैं, जिनमें एक में श्रीऋषभदेवस्वामी और दूसरी में श्रीनेमनाथस्वामी की नई मूर्त्ति स्थापित हैं। मुख्य मन्दिर के मध्यद्वार के पासवाले चौक में दाहिने तरफ वीर प्रभु का मन्दिर है, जिसमें मूलनायक भगवान् श्रीमहावीरस्वामी की चार हाथ बडी और इनके दोनों बाजू श्री शान्तिनाथ की तीन हाथ बडी भव्य तथा विशाल मूर्त्तियाँ बिराजमान हैं। इसके पिछाडी एक कोठार में प्राहुणा तरीके १३४ मूर्त्तियाँ रक्खी हुई हैं, जो उनके खपी को निछरावल से दी जाती हैं। मुख्य–मन्दिर के वाम–भाग में यतिसुरेन्द्रसागरजी की छत्री है, जिसमें उनके चरण–पादुका स्थापित हैं।

गोडी–पार्श्वनाथ के मन्दिर में जाने के मध्यद्वार के ऊपर चोमुख सुमेरु है, जो आरस–पाषाण का बना हुआ है। मुख्य मन्दिर के चारों तरफ बावन देवरियाँ और तीन बडे जिनमन्दिर, जिनमें कि सुन्दर जिनप्रतिमाएँ स्थापित हैं। बीच के मुख्य जिनालय में अति प्राचीन और चमत्कारिणी श्रीगोडी–पार्श्वनाथ की सफेद वर्ण की २॥ हाथ बडी भव्य मूर्त्ति बिराजमान है। जिसकी प्रतिष्ठा सं १९३६ में महाराज श्रीविजयराजेन्द्रसूरिजीने की है। इसकी अञ्जनशलाका किस साल में किस आचार्यने की ? यह नहीं कहा जा सकता। परन्तु इसके पलांठी के चिन्हों से यह अति प्राचीन मालूम होती है। इसकी देवरियाँ और मन्दिरों में स्थापित मूर्त्तियों की अञ्जनशलाका संवत् १९९५ फाल्गुन वदि ५ गुरु-

वार दिन जैनाचार्य श्रीविजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराजने की है। अञ्जनशलाका के समय का प्रशस्तिलेख इस प्रकार है—

श्रीआहोर-गोड़ीपार्श्व-मन्दिर का शिला-लेख।

श्रीगोड़ीपार्श्वनाथाय नमः।

इन्द्रवंशा-छन्दः—

सुस्नापितःकुङ्कुमचन्दनार्चितो, धूपैः प्रदीपैर्महितः स्तवैः शुभैः
स्पष्टं जयध्वानयुतैश्च संस्तुतो, गोडीजिनेशो दिशतु श्रियःस्थिराः

स्रग्धरा-छन्दः—

श्रीर्वृद्धिं यस्य राज्ये व्रजति कुशलिनी सर्वतोऽपि प्रजाऽऽस्ते,
भद्राप्रीता स्व स्वर्गे निजकृतिनिपुणा गोव्रजास्सम्प्रहृष्टाः।
धर्म्मो जागर्त्ति नित्यं कृतिवरमहितः सत्फलानां प्रदाता,
श्रीमान् शिदारसिंहो जयति मरुधराधीश्वरो राजराजः ॥२॥

आर्या-छन्दः—

श्रीमान् प्रतापसिंहो, धीरो धाम्ना यथार्थनामाऽसौ।
मरुधरणीशपितृव्यो, राजति राजा प्रजां रक्षन् ॥ ३ ॥

इन्द्रवज्रा-छन्दः—

यो भारतेशस्य विजित्य शत्रून्,
म्लेच्छान्मृधे भारतसीम्नि वीरः।
गौराङ्गसम्राज्यति सुप्रसन्ने,
स्वनाम देशान्तरमप्यनैषीत् ॥ ४ ॥

उपेन्द्रवज्रा–छन्दः—

प्रजा निजा यस्य शुभैः प्रबन्धैः, समासते शोभनमत्र राज्ये ।
विरोधिनो यान्ति वशंवदत्वं, निरीतयः सर्वसमृद्धयो वै ॥५॥

अनुष्टुब्–छन्दः—

आहोरनगरे पूर्णे, सर्वसंपत्समृद्धिभिः ।
जालोरमण्डलान्तःस्थे, बहुभूभागनायकः ॥ ६ ॥

द्रुतविलम्बित–छन्द—

मरुधरेशकुलागतवीरतो–न्नतकुलस्सकलेष्वपि राजसु ।
मरुधराधिपसत्कृतसत्कृतिः, प्रभुरभूद्बलवान् वसुधामृताम् ।

उपजाति–छन्दः—

राठौरवंश्यो वशिनां वरेण्यो, ह्यनारसिंहो रिपुहस्तिसिंहः ।
शुभ्रासने तस्य सुतोऽधिरूढो, बलेन दानेन च विक्रमार्कः॥८॥

आर्या–छन्दः—

यः शक्तिदानसिंहः, सूनुस्तस्याभवद्युतो यशसा ।
यशवन्तसिंह नामा, पुत्रोऽभूल्लालसिंहोऽस्य ॥ ९ ॥
लालयतैव हि सर्वाः, प्रजाः स्वकीया वशीकृता येन ।
तस्य भवानीसिंहो, राजति सिंहासने भव्ये ॥ १० ॥

इन्द्रवज्रा–छन्दः

दाता दयालुर्बलवान् सुशीलो, देवद्विजार्चा निरतो मनस्वी ।
सद्धार्मिकः सर्वसमृद्धिकारी, संपत्समृद्धो भुवि भाग्यशाली ॥

इन्द्रवज्रा-छन्दः—

यस्मिन् महीं शासति चात्र सर्वाः,
प्रजाः प्रजाताभिनवानुरागाः ।
समृद्धिभाजस्सहपुत्रपौत्रै-
श्चिरं स जीयाज्जनताधिपालः ॥ १२ ॥

शिखरिणी-छन्दः—

मरुद्वोणीरत्नं सुभगजनतालंकृततरं,
परं जालोराख्यं विदितभवनौ बुद्धिमहितम् ।
दिशि प्राच्यां तस्मान्नगरमतिजुष्टं गुणिजनै-
र्वदन्त्याहोरं यन्निपुणमतयः श्रीविलसितम् ॥१३॥

उपेन्द्रवज्रा-छन्दः—

शृणोति शास्त्राणि मुनीश्वरेभ्यो, जहात्यधर्मं यतते स्वधर्मे ।
अहिंस्रवृत्त्या वसु सञ्चिनोति, सुकर्मणैतद्वितरत्यकृष्टम् ॥१४॥
न राटिकारी न परापवादी, न दुष्टभावो न निजार्थगृद्धः ।
विराजते यत्र समृद्धसङ्घः, पवित्रकीर्त्तिः प्रथितः पृथिव्याम् ॥

इन्द्रवज्रा-छन्दः—

निर्मापितस्तेन जिनालयोऽयं,
षड्बाणसंख्यानि मनोहराणि,
राजन्ति देवाऽऽयतनानि यत्र,
मुष्णन्ति चक्षूंषि विलोकिनृणाम् ॥ १६ ॥

इन्द्रवंशा–छन्दः––

शरेषु रत्नेन्दु (१९५५) मिते हि विक्रमे,
संवत्सरे फाल्गुनिकेऽसिते दले ।
इज्येऽह्निलक्ष्मान्वितबाण (५) सत्तिथौ,
तेषु प्रतिष्ठां मुनिराडकारयत् ॥ १७ ॥

इन्द्रवज्रा–छन्दः––

राजेन्द्रसूरिर्विधिना जिनानां, पट्टावलीं गायति सच्चरित्राम्।
आकर्ण्य यां वेत्ति नरश्चरित्रं, श्रामण्यभाजां प्रियमार्हतानाम् ॥

वंशस्थ–छन्दः—

श्रीवर्द्धमानस्य च विश्ववेदिनो, जातः सुधर्मा गणधारिपञ्चमः ।
तस्यैव पट्टेऽधिकृतोऽतिभूरिषु, वर्षेष्वतीतेष्वभवन्मुनीश्वरः ॥

इन्द्रवज्रा–छन्दः––

यो मेदपाटक्षितिभर्तृराणा–मान्यस्तपागच्छपयोधिचन्द्रः ।
आसीज्जगच्चन्द्र इति प्रसिद्धः, सूरीश्वरस्तस्य च रत्नसूरिः ॥
पट्टं समारुह्य विशुद्धशीलः, प्राद्योतयच्छासनमार्हतं यः ।
शिष्योऽभवत्तस्य यथार्थनामा, श्रीमान् क्षमासूरिवरो मनीषी

अनुष्टुब्–छन्दः—

आरुरोह च तत्पट्टं, कल्याणविजयो गुरुः ।
येन प्रभावितो धर्मे, कल्याणानि पदे पदे ॥ २२ ॥

आर्या–छन्दः—

श्रीमान् प्रमोदविजय–स्तस्य च पट्टं समास्थितो यस्य ।
धर्मकथाऽमृतपानाच्छ्राद्धकुलानि प्रमुदितानि ॥ २३ ॥

शिष्यस्तस्य महर्षेः, सद्भिः श्लाघ्यस्य सच्चरित्रस्य ।
सुविनीतः समयज्ञः सूरिवरो विजयराजेन्द्रः ॥ २४ ॥

शार्दूलविक्रीडित—छन्दः—

योऽधीती जिननायकस्य समये पारक्यशास्त्रेषु च,
श्रामण्ये परिनिष्ठितोऽतिधिषणोऽस्पृष्टोऽतिचारव्रजैः ।
बोधिं येन दृढां कुलानि गमितान्यासासते सद्गतिं,
संविग्नाः प्रविमोचिताः कृतिनराः संसारकारागृहात्, ॥ २५ ॥

शिखरिणी—छन्दः—

यथाच्छन्दो लूकाः कृतकपटवेषा भयवशा-
न्निलीयन्ते नीडायितकुचरगेहेषु झटिति ।
प्रफुल्लन्ति श्रद्धिप्रवरजलजानि द्रुततरं,
प्रकाशो लोकेषूद्यति विजयराजेन्द्रतरणौ ॥ २६ ॥

अनुष्टुब्—छन्दः—

शिक्षयित्वा बहूञ्शिष्याञ्जैनधर्मप्रवर्त्तकान् ।
विशोध्य यतिचारित्रं, निर्ग्रन्थाननुशास्ति यः ॥ २७ ॥

द्रुतविलम्बित—छन्दः—

दशदिगन्तविसर्पियशस्ततिः, प्रकटगीतशुचीभवदान्तरा ।
भवति यत्सदुपासकमण्डली, जिनपदाब्जपरागमधुव्रती ॥२८॥

अनुष्टुब्—छन्दः—

येनोपदिष्टाः सच्छ्राद्धा, नानाजनपदोद्भवाः ।
जिनचैत्यान्यकुर्वंस्ते, शतशो वसुसञ्चयैः ॥ २९ ॥

उपाश्रयान् सुरम्याँश्च, साधुप्रायोग्यभूमिषु ।
वसतिं यत्र कुर्वन्ति, निर्ग्रन्था भिक्षुसत्तमाः ॥ ३० ॥

भाण्डागारं सरस्वत्याः, प्रतिग्रामं प्रतिष्ठितम् ।
स्वशास्त्रं परशास्त्रं वा, सुलभं यत्र विद्यते ॥ ३१ ॥

मणिबन्ध–छन्दः—

पौषधशालारम्यतमाः, श्रावकवृन्देनाऽऽरचिताः ।
यत्र तपस्यन्ति फलं, संयतयोग्यं चापि गृही ॥ ३२ ॥

अनुष्टुब्–छन्दः—

श्रीमद्विजयराजेन्द्र–सूर्याचार्येण पालितः ।
श्रीश्वेताम्बरसाधूनां, गच्छो भाति सुसंयतः ॥ ३३ ॥

स्रग्धरा–छन्दः—

आचार्यो जैनतत्त्वं निखिलमधिगतस्तस्य शास्त्रार्थवेत्ता,
शासत्साधून्समस्तानपि च निजगुणैस्तर्पयन्सूरिमुख्यान् ।
उद्युक्तस्सिद्धिमार्गे विषयविषलतां दूरयन्स्वैश्चरित्रै–
र्यत्रोपाध्यायमुख्यो धनविजयमुनि राजते शिष्यवर्गैः ॥३४॥

उपगीति–छन्दः—

मोहनविजयो मोह–प्रमुखाद्विमुखस्सदा सिद्ध्यै ।
यतते यत्र तपस्वी, निर्ग्रन्थो रूपविजयाख्यः ॥३५॥

हिम्मतविजयो हृदये, ध्यायन्नाऽऽस्ते परं तत्त्वम् ।
लक्ष्मीविजयो दीप–प्रकाशधीर्दीपविजयो वै ॥३६॥

गीति–छन्दः—

आस्ते यतीन्द्रविजयो विचित्रबुद्धिश्च सर्वशिष्येषु ।
साधुस्सपद्मविजयो गौतमविजयो गुलाबविजयश्च॥३७॥
केशरविजयस्साधु–स्सहर्षविजयोऽपि हंसविजयश्च ।
वल्लभविजयश्चास्तेऽपराश्चिमन्विजय नामको भिक्षुः॥३८॥

आर्य्या–छन्दः—

गच्छेश्वरस्य सूरेस्तस्यैवोपासकाः सहस्राणि ।
तेषामिमेऽतिधन्या अनुष्ठिताञ्जनशलाका यैः ॥३९॥

शालिनी–छन्दः—

गोडीदासस्यात्मजो वाग्भलाख्यः,
श्रद्धा श्रेयः संयुतः श्रावकोऽसौ ।
पुण्ये कार्येऽत्रोपयुक्तान्तरात्मा,
सर्वश्रेष्ठि श्रेष्ठतामादधानः ॥ ४० ॥

आर्या–छन्दः—

तस्यानुजो वरीयान्, नवलाख्यः सुनुरस्ति यशराजः ।
शश्वत्कार्यविधायी, प्रतापमल्लस्सदा भक्तः ॥ ४१ ॥

अनुष्टुभ्–छन्दः—

कर्पूरचन्द्रपुत्रेण, श्रावकप्रवरेण हि ।
श्रीमज्जिनपदाम्भोजं हृदि संध्यायता सता ॥ ४२ ॥

भुजङ्गप्रयातं–छन्दः—

सुता बाफणा जीतमल्लेन कार्ये,
समाधारि कर्तृत्वमस्मिन्स्वभक्त्या ।

धनानां व्ययेनाग्रजो यस्य धन्यो
यशोरूपजी यस्य पुत्रं त्रयं सत् ॥ ४३ ॥

इन्द्रवज्रा–छन्दः—

कस्तूरचन्द्रो यशराज–चिम्नी–
रामस्तथा पौत्रवरौ च भक्तौ ।
यः खूबचन्द्रादथ हर्षचन्द्रः,
कस्तुरचन्द्राच्च शिरेमल्लनामा ॥ ४४ ॥

श्रीगोडी–पार्श्वनाथ के सौधशिखरी मन्दिर में पाषाण और सर्वधातु की छोटी बडी सब मिलाकर २२१ जिन प्रतिमाएँ बिराजमान हैं। इसके कोट के लगते ही पीछे के भाग में एक बगीचा और उसमें पक्का बंधा हुआ एक कुआ (अरठ) है। गोडी–पार्श्वनाथ का प्रतिवर्ष फाल्गुन वदि ५ का मेला भराता है, जिसमें कि अन्दाजन ८००० हजार यात्री तक एकत्रित होते हैं। उसकी नोकारसी (प्रीतिभोजन) की सारी सामग्री बगीचे में ही तैयार होती है और नोकारशी करनेवाले को १०१) रुपया नकरा गोडीजी की दुकान में जमा कराना पडता है। यहाँ यही जिनालय दर्शनीय और तीर्थस्वरूप है। यह महाराज श्री राजेन्द्रसूरिजी के उपदेश से नया बनाया गया है। मारवाड में नये मन्दिरों में इसकी समान रखनेवाला कोई मन्दिर नहीं है।

तीसरा मन्दिर श्री आदिनाथका है, जो बाजार के मध्य में बहुत ऊंची कुरसी पर शिखरबद्ध बना हुआ है। इसमें आदि-

नाथ भगवान् की ढाई हाथ बडी सुन्दर मूर्त्ति स्थापित है। इस की अञ्जनशलाका सं० १९५५ फाल्गुन वदि ५ गुरुवार के दिन अशुभ-लग्न में खरतरगच्छ के श्रीपूज्य जिनमुक्तिसूरिजीने की है। अशुभ मुहूर्त्त के कारण अञ्जनशलाका के महोत्सव समय में भी बहुत उपद्रव हुआ था और अब भी हर तीसरे वर्ष के इसके मेला पर कुछ न कुछ उपद्रव अवश्य ही हो जाता है। खराब मुहूर्त्त में प्रतिष्ठा, या अञ्जनशलाका करने, कराने से कितनी नुक-शानी में उतरना पडता है ? इसका ताजा दृष्टान्त इस मन्दिर-गत मूर्त्ति की अञ्जनशलाका का ही समझना चाहिये। चौथा मन्दिर पूनमिया गच्छ के उपाश्रय के पीछे बना हुआ है, जो घर-देरासर और उसमें श्रीपार्श्वनाथ भगवान् की मूर्त्ति स्थापित है।

पांचवां मन्दिर श्रीसौधर्मबृहत्तपागच्छीय बडी जैनधर्मशाला के ऊपर के होल में है। इसमें मूलनायक भगवान् श्रीशान्तिनाथ और उनके दोनों तरफ शान्तिनाथ आदिनाथस्वामी की सर्वधात की तीन मूर्त्तियाँ बिराजमान हैं। इनकी प्रतिष्ठा महाराज श्रीवि-जयराजेन्द्रसूरीश्वरजीने सं० १९५९ माहवदि १ बुधवार के दिन है। ये मूर्त्तियाँ तलावत गदैया जसा सुत सिरेमल के स्मरणार्थ श्राविका गंगा और धापूने स्थापन की हैं। और एक आरस-पाषाण की सुन्दर छत्री (देवरी) में स्थापित हैं।

इसी धर्मशाला के प्रवेशद्वार के दाहिने भाग पर कडोद (धार) के रहने वाले खेताजी वरदाजी के सुपुत्र शेठ उदय-चन्द्रजी पोरवाड़ का बनवाया हूआ मजबूत आरस-पाषाण का

श्रीराजेन्द्रजैनागमज्ञान-भंडार है। इसमें हस्त-लिखित प्राचीन-अर्वाचीन ग्रन्थों के २६० बिंडल हैं, जिन में कागज पर लिखी हुई ३५२६ प्रतियाँ हैं और मुद्रित पुस्तकों के १२७ बिंडल हैं, जिनमें छपी हुई ११६६ पुस्तकें हैं। इनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंस और गुजराती भाषा में आगम, व्याकरण, न्याय, तर्क, काव्य, कोश, छन्द, अलंकार आदि सभी विषयों के ग्रन्थ संग्रहित हैं। यह जैनाचार्य श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज का संग्रह किया हुआ है, और इसमें कई ग्रन्थ बड़े महत्व के हैं। मारवाड़ में जेसलमेर और बीकानेर को छोड़ कर सायद ही कोई ऐसा ज्ञानभण्डार होगा, जो इसकी समानता रख सकता हो।

१२० चरली--

जोधपुर रियासत के जालोर परगने में एरनपुरारोड से २५ मील के फासले पर पश्चिम तरफ बसा हुआ यह छोटा गाँव है। यहाँ श्वेताम्बर-मूर्त्तिपूजक जैनों के २५ घर, एक छोटी धर्मशाला और एक शिखरबद्ध प्राचीन समय का बना जिन-मन्दिर है। मन्दिर में मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ भगवान् की २॥ हाथ बड़ी सफेद वर्ण की भव्य-मूर्त्ति बिराजमान् है। इसके बाह्य मंडप में तीन तीन हाथ बडे दो काउसागिये (खडे आकार की मूर्त्तियाँ) हैं। ये सभी विक्रम की तेरहवीं शताब्दी की प्रतिष्ठित हैं और इनके प्रतिष्ठाकार षंडेक गच्छ के कोई आचार्य हैं। कहा जाता है कि पेश्तर यह बडी नगरी थी। इसके प्रमाण--भूत यहाँ के प्राचीन ईंटे और पत्थर हैं, जो जमीन से निकलते हैं। यहाँ

हरसाल पोष वदि १० का मेला भराता है, जिसमें सेंकडों श्रावक श्राविकाएँ उपस्थित होते हैं।

१२१ मादड़ी—

कहा जाता है कि दोसौ वर्ष पहले यहाँ तीनसौ घर श्वेताम्बर जैनों के वसते थे, परन्तु वर्त्तमान में यहाँ जैनों का एक भी घर नहीं है, शिर्फ किसानों के ३० घर हैं। तारीख ६–५–२७ के रोज जमीन खोदते हुए यहाँ सर्वाङ्ग- सुन्दर और अखण्ड दो जिन–प्रतिमाएँ निकली थीं। उनमें एक ३॥ फुट बडी श्रीनेमिनाथ भगवान् की, और दूसरी २ फूट बडी श्रीपद्मप्रभस्वामी की सफेद–वर्ण की है। इन पर लेख नहीं, किन्तु गाँव के बाहर आडवला अरठ के पासवाले शंकर के छोटे मन्दिर के परकोटे में लगे हुए एक खंडित तोरण के नीचे लिखा है कि—

श्रीषडेरकगच्छसूरिचरणोपास्ति प्रवीणान्वयो,
दुःसाधोदयसिंहसूनुरखिलक्षमाचक्रजाग्रद्यशः।
बिम्बं शान्तिविभोश्चकार स यशोवीरे गुरुमन्त्रिणो,
मातुः श्रीउदयः शिवकृते चैत्ये स्वयं कारिते ॥१॥
ज्येष्ठशुक्लत्रयोदश्यां, वसुवस्वर्कवत्सरे।
प्रतिष्ठा मादडीग्रामे, चक्रे श्रीशान्तिसूरिभिः २
संवत् १२८८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ बुधे।

—खंडेरकगच्छाचार्यो के चरणोपासक, शुद्धवंशवाले और समस्त राजाओं में जागृत यशवाले उदयसिंह के पुत्र यशोवीर

मन्त्रीने अपनी मातुश्री उदयश्री के कल्याणार्थ श्रीशान्तिनाथ की प्रतिमा स्वयं कारित मन्दिर में सं० १२८८ ज्येष्ठ सुदि १३ बुधवार के दिन श्री शान्तिसूरिजी से प्रतिष्ठा कराके मादडी–गाँव में विराजमान की ।

इस लेख से जान पडता है कि उपरोक्त दोनों प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा भी इसी अरसे में हुई होगी । इसी प्रकार तारीख २१–१०–२७ के दिन दो कायोत्सर्गस्थ, और एक पद्मासनस्थ एवं तीन प्रतिमाएँ दूसरी वार निकली थीं। ये प्रतिमाएँ भी सफेद–वर्ण की और कायोत्सर्गस्थ–मूर्त्ति चार फूट चार इंची, तथा पद्मासनस्थ मूर्त्ति एक फूट चार इंची बडी है । कायोत्सर्गस्थ दोनों मूर्त्तियों पर एक ही प्रकार का यह लेख है—

संवत् १२८८ वर्षे ज्येष्ट सुदि १३ बुधे वंडेरकगच्छं श्री यशोभद्रसूरिसन्ताने दुःसाधु–श्रीउदयसिंह पुत्रेण मन्त्री–श्री यशोवीरेण स्वमातुः वाट्यां जिनयुगलं कारितं, प्रतिष्ठितश्च श्रीशान्तिसूरिभिः ।

इसी मतलब का लेख पद्मासनस्थ–मूर्त्ति पर भी है । इसके अलावा गाँव के मध्य–भाग में 'सतियों का चोतरा' है, इसमें एक जिनमन्दिर का बारसाख लगा है, जिस पर भी सं० १६६६ खुदा हुवा देख पडता है । इन लेखों में इस गाँव का प्राचीन नाम 'मादडी' ही जान पडता है, लेकिन वर्त्तमान में यह माद्री के नाम से प्रसिद्ध है, जो मादडी का ही अपभ्रंस है । अस्तु, इन उपरोक्त लेखों से निश्चित है कि–किसी समय (सं०

१२८८) यहाँ मंत्री–यशोवीर का बनवाया हुआ सौधशिखरी जिनमन्दिर अवश्य था। परन्तु वह किस कारण भूमि–शायी हुआ ? यह खोज करने की आवश्यकता है। माद्री के जमीदारों का कहना है कि यदि खोज की जाय, और कुछ खर्च से यहाँ का खोद–कार्य कराया जाय तो और भी जिनप्रतिमाएँ निकलने की संभावना है। ठाकुर के पडवे में और गाँव बाहर के मिट्टी डुब्बों को खोदने से अच्छी शिल्पकारी के पत्थर और ईटें निकलती हैं। इनसे भी यहाँ की प्राचीनता का और भारी जिन–मन्दिर होने का अनुमान किया जा सकता है। गाँव से पश्चिम एक जूनी वावडी है, उसमें भी मन्दिर के अनेक पत्थर और ईटें लगी हुई देख पडती हैं। यहाँ से निकलीं जिन पांच जिनमूर्त्तियों का हाल ऊपर दर्ज है, वे इस समय गुडावालोतरा के यति श्री राजविजयजीने राजकीय काररवाई करके, अपने कब्जे में लेकर खुद के अरहट के बगीचे के एक मकान में बिराजमान की हैं।

१२२ दयालपुरा—

यहाँ श्वेताम्बर जैनों के ९० घर, एक पक्की धर्मशाला, और एक उपासरा है। गाँव में एक शिखरबद्ध छोटा भव्य मन्दिर है। जिसमें मूलनायक श्रीमहावीरस्वामी की दो फुट बडी सफेद वर्ण की सुन्दर मूर्त्ति विराजमान है। यहाँ के जैनों में बहुत भाग विघ्नसन्तोषी है, इस वजह से इस गाँव में पूरति वस्ती होने पर भी किसी योग्य साधु का चोमासा, या शेषकाल में भी उनकी स्थिरता नहीं होती।

१२३ गुडा-बालोतरा—

सुखड़ी नदी के दक्षिने किनारे पर वसा हुआ यह छोटा, पर अच्छा कसबा है और इसका असली नाम ' गुडाबालोटान ' है। यह आहोर ठाकुर की जागीर का गाँव है, जो एरनपुरा-रोड से ३० मील पश्चिम है। यहाँ जैनों में त्रिस्तुतिक-प्राचीनसंप्रदाय के १००, और चतुर्थस्तुतिक-नवीन संप्रदाय के २२५ घर हैं, जिनमें ओसवालों के चार घर सिवाय, शेष सभी बीसा पोरवाड हैं और इनमें प्रायः त्रिस्तुतिकसंप्रदाय के जैन श्रीमन्त और धार्मिक कार्यों में अच्छा भाग लेनेवाले हैं। गाँव में दो उपासरे, छोटी-बडी चार धर्मशाला और तीन जिन-मन्दिर हैं।

सब से प्राचीन मन्दिर शिखरबद्ध है, जिसमें मूलनायक श्री-सम्भवनाथस्वामी की एक फुट बडी भव्य-मूर्त्ति बिराजमान है, जो अठारहवीं सदी की प्रतिष्ठित है। दूसरा मन्दिर इसीके पास वाम-भागमें एक ऊंची खुरसी पर शिखरबद्ध नया बना हुआ है। इसको जैनाचार्य श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के उपदेश से सं० १९५८ में बीसा पोरवाड अचला दोला नरसिंगजीने बनवाया है। इसमें संवत् १९५९ माहसुदि ५ के दिन प्रतिष्ठा कराके मूलना-यक श्रीधर्मनाथस्वामी की सफेदवर्ण की ३ हाथ बड़ी सुन्दर प्रतिमा बिराजमान की गई है। इस मन्दिर के पिछले भाग में आरसो-पल की दो छत्रियाँ हैं, जिनमें श्रीमुनिसुव्रतस्वामी आदि की ९ नौ मूर्त्तियाँ बिराजमान हैं। तीसरा गृह-मन्दिर है, जिसमें श्री-ऋषभदेव आदि की ९ प्रतिमाएँ हैं।

व्या० वा० मुनिराज श्री यतीन्द्रविजयजी महाराज.

गुड़ाबालोतरा (मारवाड) से विहार, ता. २२—११—२७

१२४ अगवरी—

इस गाँव में श्वेताम्बर जैनों के १०० हैं, तथा ३ धर्मशाला, दो उपासरा और दो जिन–मन्दिर हैं। एक शिखरबद्ध अति रमणीय मंदिर है, जिस के चारों ओर २४ देहरियाँ हैं, इसमें मूलनायक श्रीऋषभदेव भगवान् की सफेद वर्ण की दो हाथ बडी मूर्त्ति बिराजमान है। एक दूसरा गृहमंदिर है, जिसमें भी श्रीआदिनाथ भगवान् की तीन फुट बड़ी मूर्त्ति स्थापित है।

१२५ सेदरिया—

सुखडी नदी के बिलकुल किनारे पर बसा हुआ यह छोटा गाँव है। यहाँ त्रिस्तुतिक प्राचीन संप्रदाय के ९० घर हैं, जो अच्छे भावुक और श्रद्धालु हैं। यहाँ एक दो मंजिली पक्की धर्मशाला और एक गृह–मन्दिर है, जिसमें मूलनायक श्रीचन्द्रप्रभस्वामीजी की छोटी सुन्दर मूर्त्ति बिराजमान है।

१२६ पावटा—

यह छोटा गाँव है, इसमें जैनों के २९ घर और एक अच्छी विशाल धर्मशाला है। गाँव के बाहर लगते ही एक भव्य शिखरबद्ध मन्दिर है, जो नया बनाया गया है। इसमें मूलनायक श्रीऋषभदेवस्वामी की प्राचीन और सर्वाङ्ग सुन्दर मूर्त्ति बिराजमान है, जो मंदिर के वाम भाग के एक मिट्टी के ढुब्बे को खोदते हुए उसके नीचे से नीकली है। यह तेरहवीं सदी की प्रतिष्ठित प्रतिमा है। इस मंदिर के मण्डप में श्रीसुव्रतसूरिजी की प्रतिमा है जिसकी पलाठी में 'सं० १३ श्रीषाटादि ६० वर्षे आषाढसुदि ९ सोमे' ऐसा लिखा है।

१२७ नोवी—

इस छोटे गाँव में जैनों के १०० घर, दो धर्मशाला और दो शिखरवाले जिन–मन्दिर हैं। सब से बडे पंचायती मन्दिर में मूलनायक श्रीचन्द्रप्रभस्वामी की दो फुट बडी सफेद मूर्त्ति स्थापित है। इसकी अंजनशलाका सं० १९५५ फागुणवदि ९ के दिन आहोर में श्रीपूज्य–जिनमुक्तिसूरि के हाथ से हुई है। जिस दिन से यह मूर्त्ति गाँव में लाई गई है उस दिन से इस गाँव में तीन तेरह की नोबत बजने लगी है। खोटे मुहूर्त्त में अंजनशलाका करने से कैसा नुकशान होता है ? इस बात को समझने के लिये यहाँ की हालत ही बस समझना (जानना) चाहिये। दूसरा मंदिर अभी अधूरा ही पडा है और गाँव–कलह के वजह से पूरा होने की आशा रखना भी कठिन है।

१२८ छोटालखमावा—

यहाँ जैनों के २ घर और एक गृह–मन्दिर है। मन्दिर में मूलनायक श्रीऋषभदेवजी की एक फुट बडी मूर्त्ति स्थापित है। यहाँ पूजा का प्रबन्ध रोवाडा-संघ के तरफ से है, पर आशातना बहुत हैं. देख–रेख बराबर नहीं है।

१२९ मोटा लखमावा—

यहाँ जैनों के १० घर हैं और १ गृह–मन्दिर है। मूलनायक श्रीगोडी–पार्श्वनाथ की सवा फुट् बडी मूर्त्ति बिराजमान है, जो अतिसुन्दर है। इसकी अञ्जनशलाका आहोर में संवत् १९५९ फाल्गुनसुदि ५ के दिन श्रीमद्–विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के हाथ से हुई है।

१३० कोरटा (तीर्थ)—

यह प्राचीन तीर्थस्थान एरनपुरा स्टेशन से ७ कोश पश्चिम है। इसके पास ही धोले पत्थर की एक छोटी पहाडी है, जो धोलागढ के नाम से पहचानी जाती है। यहाँ जैन ओसवालों के ५० घर हैं, जो विवेकशून्य हैं। सब मिलकर यहाँ चार सौधशिखरी जिनमन्दिर हैं, जिनमें महावीरप्रभु का सब से अधिक पुराना हैं और इसी मन्दिर के कारण यह स्थान तीर्थ स्वरूप माना जाता है। इस तीर्थ का विशेष वृत्तान्त अस्मल्लिखित 'श्रीकोरटा तीर्थ का इतिहास' नामक किताब से जान लेना चाहिये।

१३१ कानपुरा—

यह छोटा गाँव हैं इसमें जैनों के १५ घर और १ गृहमंदिर है, जिसमें शान्तिनाथजी की भव्यप्रतिमा बिराजमान है।

१३२ शिवगंज—

जवाँई नदी के दहिने किनारे पर यह कसबा वसा हुआ है। सं० १९१० में सिरोही के महाराव शिवसिंहजीने इसको आबाद किया और इसकी तरक्की के लिये उन्होंने सिर्फ १।) लेकर एक एक मकान की जमीन का पट्टा कर देने की आज्ञा दी। सब से पहले इसकी नींव पालीनिवासी कालुरामजी–ओसवालने डाली थी, बाद में सरकार की रहमदिली और एरनपुरा स्टेशन नजदीक होने से यहाँ पर कई गावों के जैन और जैनेतर कुटुम्ब के कुटुम्ब आ आकर वस गये। इस समय इसकी आबादी २००० घर के अन्दाजन होगी।

यहाँ पर श्वेताम्बरजैनों में ओसवालों के ३००, और पोरवाड़ों के ३२९ घर हैं, जिनमें सनातन–त्रिस्तुतिक संप्रदाय के ३९ और स्थानकवासियों के नाममात्र के १९ घर हैं। यहाँ के जैन जिज्ञासु और गुणिसाधुओं की कदर करने वाले हैं। गाँव में चार बड़ी बड़ी पक्की धर्मशालाएँ और पांच उपासरे हैं, जो हजारों की लागत के हैं। यहाँ बड़े आलिशान तीन सौधशिखरी और चार गृह जिन–मन्दिर हैं।

सब से बड़ा मन्दिर जो बाजार के पश्चिम किनारे पर है और मोटा–मन्दिर के नाम से पहचाना जाता है। इसका वहीवट ओसवालों के हाथ में है और इसमें मूलनायक श्रीरिखभदेवस्वामी की सफेद वर्ण की तीन फुट बढ़ी सुन्दर मूर्त्ति स्थापित है, जिसकी प्रतिष्ठा सं० १९२८ वैशाख सुदि ३ के दिन हुई है। इसके पास ही दूसरी मूर्त्ति श्यामरंग की श्रीऋषभदेवजी की है, जो सं० १९२१ माघसुदि १३ सोमवार की और तीसरी मूर्त्ति सं० १९६२ माघसुदि ११ की प्रतिष्ठित है। इसके अलावा मण्डप में कई प्रतिमाएँ विराजमान हैं, जो प्राचीन और अर्वाचीन हैं और कहीं से लाकर यहाँ पीछे से बैठा दी गई हैं।

दूसरा मन्दिर पोरवाड़ों का, जो बहुत ऊंची खुरशी पर त्रिशिखरी बना हुआ है। इसकी बनावट अतिसुन्दर, सफ़ाईदार और दर्शनीय है। इसमें मूलनायक श्रीऋषभदेवजी की भव्य–मूर्त्ति है, जिसकी प्रतिष्ठा सं० १९४३ फाल्गुनसुदि ५ के दिन हुई है। इस मन्दिर की छोटी बड़ी सभी प्रतिमाएँ पालीताणा से लाई हुई हैं और इनकी अञ्जनशलाका सं० १९२१ में हुई है।

तीसरा चोमुखजी का मन्दिर है, जो तुलसाजी रामाजी पोरवाड़ का बनवाया हुआ और शिखरवाला है। इसमें मूलनायक श्रीऋषभदेव आदि की प्रतिमाएँ बिराजमान हैं, जिनकी अंजनशलाका सं० १९५९ वैशाखसुदि १५ गुरुवार के दिन कोरटा-तीर्थ में श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरिजी महाराजने की है और यहाँ स्थापना सं० १९६१ माहशुदि ६ के रोज हुई है।

चौथा मन्दिर त्रिस्तुतिक संप्रदाय का है, जो बिशाल और मजबूत धर्मशाला के ऊपरी भाग में है। इसको शा० बन्नाजी मेघाजी पोरवाड़ने बनवाया है, जो अतिरमणीय और दर्शनार्थियों के चित्त को लुभानेवाला है। इसमें मूलनायक श्रीअजितनाथजी की दो फुट बड़ी सफेदवर्ण की भव्य मूर्त्ति बिराजमान है, जिसकी अञ्जनशलाका-प्रतिष्ठा संवत् १९४५ माहसुदि ९ के दिन श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराजने की है। इस सुअवसर पर दोसौ जिन प्रतिमाओं की अञ्जनशलाका भी की गई थी।

पाचवां मन्दिर वीरप्रभु का है, जो घर देरासर है। इसमें मूलनायक श्रीमहावीरस्वामी की मूर्त्ति बिराजमान है, जिसकी प्रतिष्ठा और अंजनशलाका सं० १९७२ माहसुदि ५ के दिन यति रूपसागरजी और नाडोलवाले यति प्रतापरतनजीने की है। जैनशास्त्रों का कथन है कि असंयती, अविरति और अप्रत्याख्यानी यतियों की प्रतिष्ठित जिनप्रतिमा पूजनीय नहीं होती, अतः इसका पूजन और नमन करना विचारणीय है।

छट्ठा मन्दिर कलापुरा में है, जो दो मंजिला गृह देरासर है। नीचे के भाग में मूलनायक श्रीऋषभदवस्वामी की मूर्त्ति स्था-

पित है, जिसकी अञ्जनशलाका सं० १८२६ में हुई है और ऊपर के भाग में पार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा है, जो सं० १९२१ माघसुदि ७ गुरुवार की प्रतिष्ठित है। इस कसबे में सब से पहले यहि मन्दिर बना है, इस से यह जूने मन्दिर के नाम से पहचाना जाता है।

सातवां मन्दिर कसबे से दक्षिण एक छोटी बगीची में है जिसको लोढ़े साजन (दशा ओसवाल) मूलचन्द गांधीने बनवाया है। इसमें भगवान् महावीर की एक फुट बड़ी मूर्त्ति स्थापित है।

इस कसबे के पास ही एरनपुर नामक छावनी है, जिसको सं० १८९४ में सेना के अफसर मेजर डाउनिंगने अपनी जन्मभूमि के टापू एरन के नाम से बसाई है। यहाँ से एरनपुरा स्टेशन ७ मील पूर्व–दक्षिण है। छावनी और शिवगंज में अंग्रेजी हिन्दी स्कूल भी है और जैनियों के तरफ से जैन–स्कूल है जिसमें धार्मिक और व्यवहारिक अभ्यास कराया जाता है।

१३३ ऊँदरी—

एरनपुरारोड़ की सडक के दहिने भाग में यह गाँव बसा हुआ है। यहाँ ओसवाल जैनों के १२ घर, एक छोटी धर्मशाला और उसीके एक कमरे में गृहमन्दिर है, जिसमें छोटी चार जिन प्रतिमाएँ बिराजमान हैं। इससे लगते ही जूना सुमेरपुर है, जिसमें जैनों के पांच घर और एक गृह मन्दिर है। इसमें मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान् की छोटी मूर्त्ति स्थापित है। इसके पास ही 'नया–सुमेरपुर' है जिसमें जैनों की ३० दुकानें,

एक धर्मशाला, और उसीके एक कमरे में जिनमूर्त्ति बिराजमान है। यहाँ व्यापार की अच्छी तरक्की होने से दिनों दिन बसति अच्छी जमती जाती है।

१३४ सांडेराव—

अजमेर जानेवाली सडक के दहिने तरफ़ महादेव–पहाड़ी के नीचे बसा हुवा यह अच्छा कसबा है। इसे राव सांडेजीने बसाया, इसीसे इसका नाम सांडेराव पडा है। यहाँ जैनों में ओसवालोंके १९० और पोरवाडों के १५० मिल्ल के ३०० घर हैं, जिनमें सनातन–त्रिस्तुतिकों के २० घर और स्थानकवासियों के ६० घर हैं। यहाँ दो धर्मशाला, दो उपासरे और दो शिखरबद्ध मन्दिर हैं। एक बड़ावास में प्राचीन और विशालचोक में स्थित है। कहा जाता है कि यह मन्दिर राजा गन्धर्वसेन के समय का बना हुवा है। इसके मूलनायक श्री शान्तिनाथजी हैं, जो तोरण और परिकर सहित हैं। इनके दोनों तरफ पार्श्वनाथजी की दो प्रतिमाएँ बिराजमान हैं। मन्दिर के मंडप में दहिने भाग पर जिनप्रतिमाओं के सिवाय एक आचार्य प्रतिमा है। जिसकी पलांठी पर लिखा है कि—

"श्रीषंडेरकगच्छे पंडितजिनचन्द्रेण गोष्ठियुतेन विजयदेव नागमूर्त्तिः कारिता मुक्तिवांछता, संवत् ११९७ वैशाखवदि ३ थिरपालः शुभंकरः"

इसके प्रवेशद्वार के अन्दर एक बारसाख के ऊपर लंबी दो पंक्ति का लेख जूनी लिपी में इस प्रकार उकेरा हुआ है—

ॐ संवत् १२२१ माघवदि २ शुक्रे अद्येह श्रीकेल्हण-देवविजयराजे तस्य मातृराज्ञी श्रीआनलदेव्या श्रीषंडेरकीय-मूलनायकश्रीमहावीरदेवाय चैत्रवदि १३ कल्याणिकनिमित्तं राजकीयभोगमध्यात् युगंधर्याः हाएल एकः प्रदत्तः। तथा राष्ट्रकूटपातूकेल्हण तद्भ्रातृज-उत्तमसिंह-सुद्रग-काल्हण-आहड-आसल-अणातिगादिभिः तलाराभाव्यथ सगट-सत्कात् अस्मिन्नेव कल्याणके द्र० १ प्रदत्तः। तथा श्रीषंडेरक-वास्तव्य रथकार धणपालसूरपालजेपालसिगडा अभियपाल जिसहडदेल्हणादिभिः चैत्रसुदि १३ कल्यणके युगंधर्याः हाएल एकः प्रदत्तः।"

इसी मंडप के स्तंभ पर का एक लेख प्राचीनजैनलेखसं-ग्रह-द्वितीयभाग में लेखाङ्क ३९० तरीके उद्धृत किया है। वह इस प्रकार है—

"थांथासुत राल्हापाल्हाभ्यां मातृपदश्रीनिमित्ते स्तंभको दत्तः, संवत् १२३६ कार्त्तिकवदि २ बुधे अद्येह श्रीनद्दूले म-हाराजाधिराजश्रीकेल्हणदेवकल्याणविजयराज्ये प्रवर्त्तमाने राज्ञीश्रीजाल्हणदेवी भुक्तौ श्रीषंडेरकदेवपार्श्वनाथप्रतापतः थां-थासुतराल्हाकेन भ्रातृपाल्हापुत्रसोढासुभकर-रामदेव-धरणि-हर्ष-वर्द्धमान-लक्ष्मीधर-सहतिग-सहदेव--रासा-धरण-ह-रिचंद्र-वरदेवादिभिः युतेन म.....परमश्रेयोऽर्थे विदित-निजगृहं प्रदत्तां राल्हासत्क मानुषैः वसद्भिः वर्षप्रति द्राएला ४ प्रदेयाः, शेषजनानां वसतां साधुभिः गोष्ठिकैः सारा कार्या,

संवत् १२३६ वर्षे ज्येष्टसुदि १३ शनौ सोऽयं मातृधारमति पुण्यार्थं स्तंभको हृतः । "

इन दोनों लेख में ' हाएल ' ' तलाराभाव्य ' और 'युगंधरी ' ये शब्द ध्यान खींचने लायक हैं । एक हल से एक दिन में खेडी हुई जमीन में उत्पन्न धान्य को **हाएल** कहते हैं, पुराध्यक्ष, या नगररक्षक अथवा तलारागाँव के महसूल को **तलाराभाव्य** कहते हैं और जुआर को **युगंधरी** कहते हैं ।

दूसरा शिखरबद्ध जिनमंदिर खिमेल जानेवाले दरवाजे के पास है । इसको पोरवाड़ मोतीजी वरदा की गृहलक्ष्मी श्राविका हांसीदेवीने नया बनवाया है । यह मन्दिर छोटा होने पर भी बड़ा सुन्दर है और इसकी प्रतिष्ठा होना बाकी है ।

विक्रमीय १० वीं शताब्दी में **षंडेरकगच्छ** की उत्पत्ति इसी कसबे के नाम पर से हुई मालूम पड़ती है । इस गच्छ में अनेक प्रभावशाली आचार्य हो गये हैं और उन्होंने अनेक स्थानों पर प्रतिष्ठा आदि शासनोन्नति के कार्य किये हैं । षंडेर कगच्छ के आचार्यने सीसोदिया वंश की स्थापना की थी । मेवाड के सीसोदियाराजा और सीसोदिया राजपूत षंडेरिया कह लाते हैं । प्रसिद्धि भी है कि—

सीसोदिया षंडेसरा, चउदशिया चोहाण ।
चैत्यवासिया चावडा, कुलगुरु एह वखाण ।। १ ।।

सागरदत्तरास के रचयिता आमदेवसूरि के शिष्य शान्तिसूरि और ' ललितांगचरित्ररास ' के कर्त्ता शान्तिसूरि के शिष्य

ईश्वरसूरि इसी गच्छ के आचार्य हैं। वल्लभी (वला) से श्री-आदिनाथजिनालय को उडाके नांडोल लानेवाले आचार्य यशो-भद्रसूरि इसी षंडेरकगच्छ के थे।

१३५ खिमेल.—

यह कसबा जोधपुर रियासत के गोडवाड परगने में राणी स्टेशन से दक्षिण २ मील के फ़ासले पर है। यहाँ ओसवालजैनों के १९० तथा पोरवाडजैनों के १० घर हैं। इनमें स्थानकवासियों के ७ घर तथा एक जीर्ण थानक है और सनातनत्रिस्तुतिक श्वेताम्बरजैनसंप्रदाय के २५ घर हैं, जो श्रद्धालु विवेकी, धर्मप्रेमी और भक्तिसंपन्न है। इन्हों की सदर बाजार के बीच में दोमंजिली और पक्की धर्मशाला है, जिसमें २५० श्रावक श्राविका आनन्द से बैठ सकते हैं। इसके अन्दर की दहिने तरफ की भींत के ऊपर इस प्रकार एक शिलालेख लगा है—

ॐनमोऽस्तु सिद्धेभ्यः। जैनाचार्य श्रीसौधर्मबृहत्तपागच्छीय कलिकालसर्वज्ञकल्प श्री श्री १००८ श्रीमद्भट्टारक श्री विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के सदुपदेश से यह धर्मशाला बनवाई। श्रीसकल तीनथुइवालोंने संवत् १९४८ फाल्गुनसुदि १ दिने। इसलिये इस धर्मशाला में तीनथुईवालों की मुकत्यारी है दूसरों की नहीं है, मुकाम नगर-खिमेल, सर्वेषां शुभं भवतु।

यहाँ प्राचीन जैनमंदिर के सामने जैनाचार्य श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज का समाधिमन्दिर बना हुआ है, जो

सुन्दर और दर्शनीय है और जिसमें भव्य आचार्यप्रतिमा स्थापित है।

इसके अलावा गाँव के पूर्व किनारे पर लगते ही एक सौधशिखरी जिन–मन्दिर है, जो सं० १२४६ में लीलाशाह ओसवाल का बनवाया हुआ है। इसमें मूलनायक श्रीशान्तिनाथजी की सफेद वर्ण की १॥ हाथ बड़ी मूर्त्ति मय परिकर के विराजमान है। इसकी अञ्जनशलाका सं० ११३४ वैशाखसुदि १० के दिन श्रीहेमसूरिजी महाराजने की है। मूलनायक के दहिने तरफ एक फुट बड़ी दूसरी मूर्त्ति है, जिसकी प्रतिष्ठा सं० १६५३ वैशाखसुदि ११ के दिन श्रीविजयसेनसूरिजी महाराज के हाथ से हुई है। प्रवेश–द्वार के वाम–भाग में २॥ हाथ बड़ी एक कायोत्सर्गस्थ मूर्त्ति है, जो अति प्राचीन और सर्वाङ्गसुन्दर है।

दूसरा मन्दिर गाँव से दक्षिण बाहर बगीचे में है, यह बावन जिनालय है, इसमें मूलनायक श्री आदिनाथजी की श्यामरंग की १ हाथ बड़ी भव्य मूर्त्ति स्थापित है। इसकी अंजनशलाका सं० १९२८ में हुई है और देहरियों में विराजमान करने के लिये ५५ मूर्त्तियों की अंजनशलाका सं० १९६१ माघसुदि १५ बुधवार के दिन तपागच्छ के श्रीपूज्य विजयमुनिचन्द्रसूरिजीने की है। ये सभी प्रतिमाएँ मन्दिर के एक कमरे में रक्खी हुइ हैं। इस मंदिरको सं० १९२० में यहीं की रहनेवाली श्राविका नगीबाईने गाँवों गाँव से पानटी करा के बनवाया है।

१३६ वरकाणा–तीर्थ—

गोड़वाड परगने की पंचतीर्थियों में से यह एक है।

यह राणीस्टेशन से २॥ मीलके फासले पर है। इसमें प्राचीन समय का बना बावन जिनालय सौधशिखरी भव्य-मन्दिर है। मन्दिर में मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी की सफ़ेदवर्ण की १ हाथ बडी मूर्त्ति स्थापित है। जिसके चारों तरफ सर्वधात के एक तोरण में तेवीस जिनप्रतिमाएँ हैं। कहा जाता है कि पहले यहाँ १५ वीं सदी का प्रतिष्ठित तोरण लगा था, परन्तु उसको हटा कर यह दूसरा तोरण लगाया गया है, जो दोसौ वर्ष का पुराना है। यहाँ जैनों का एक भी घर नहीं है, परन्तु यहाँ की विशाल धर्मशाला के ऊपर के कमरे में एक पार्श्वनाथजैन-विद्यालय है, जिसमें १०० जैनबालक शिक्षण पाते हैं। बालकों के खान-पान आदि की व्यवस्था विद्यालय-कमेटी के तरफ से की जाती है। इस विद्यालय की प्रथम नींव घाणेरावनिवासी जसराजजी पोरवाड़ने डाली और बाद में विजयवल्लभसूरिजीने इस को कार्यरूप में परिणत किया।

१३७ राणी-स्टेशन—

बी. बी. एन्ड. सी. आई. रेल्वे का यह स्टेशन है। इसी के दहिने भाग में दो लाइन का छोटा बाजार है। जिसमें जैनों की ५० दुकाने हैं और बाजार के बीच में एक सौधशिखरी अच्छा जिनमन्दिर है। इसमें मूलनायक श्रीशान्तिनाथजी की एक हाथ बड़ी सुन्दर मूर्त्ति स्थापित है। मन्दिर के बाह्य प्रवेश-द्वार के गोखडे के नीचे एक लेख लगा है। जिसमें लिखा है कि—' तपागच्छीय श्रीपूज्य विजयसिंहसूरि सन्तानीय यति तिलोकविजयजी के शिष्य यति यशोविजयजीने निजोपार्जित

द्रव्य से इस मंदिर को बनवाया और मेडतियावंशीय प्रताप-सिंहजी के राज्य में समस्त श्री संघ के सहित श्रीपूज मुनि-चन्द्रसूरिजीने सं० १९६४ माघसुदि ५ बुधवार के दिन प्रतिष्ठा करके शान्तिनाथ की मूर्त्ति विराजमान की।'

मन्दिर के बगल में ही पक्की दो मंजिली धर्मशाला है और दूसरी दूसरे बगल पर है। पंचतीर्थी की यात्रा के लिये आनेवाले यात्री इन्हीं धर्मशाला में विश्राम लेते हैं। यहाँ के जैन धर्म के जिज्ञासु और साधुओं के भक्त हैं।

१३८ राणी—

यह राणी–स्टेशन के पास ही १ मील के फासले पर वसा हुआ अच्छा गाँव है। यहाँ जैनों के १५० घर, ४ धर्म-शाला, एक उपासरा और एक जिन–मन्दिर शिखरबद्ध है। मन्दिर में मूलनायक श्रीशान्तिनाथजी की भव्य–प्रतिमा स्थापित है, जिसकी प्रतिष्ठा सं० १८५६ माहसुद ५ के दिन खर-तरगच्छीय श्रीपूज श्रीचन्द्रसूरिजी के हाथ से हुई है। यहाँ जैनपाठशाला भी है, जिसमें धार्मिक और व्यवहारिक शिक्षण दिया जाता है। इसके मास्तर भीखचंदजी अच्छे श्रद्धालु और समझदार हैं।

१३९ ब्राह्मी (बरामी)—

यह छोटा गाँव है, इसका दूसरा नाम बरामी है, जो ब्राह्मी का ही अपभ्रंस है। इसमें ओसवाल जैनों के ३५ घर, १ धर्मशाला और १ जिन–मन्दिर है। मन्दिर में मूलनायक श्रीशान्तिनाथजी की भव्य प्रतिमा स्थापित है।

१४० खिमाडा—

इस गाँव में ओसवाल जैनों के ९ और पोरवाड जैनों के २५ घर, एक उपासरा, एक छोटी धर्मशाला और एक गृह-मन्दिर है, जिसमें मूलनायक श्रीश्रेयांसनाथजी की प्राचीन मूर्त्ति स्थापित है। मन्दिर में पाषाण की ७ और सर्वधात की ३ मूर्त्तियाँ है। यहाँ के जैन सनातन त्रिस्तुतिक संप्रदाय के हैं।

१४१ कोशिलाव—

गोडवाड परगने में यह अच्छा कसवा है। यहाँ ओसवालों के १९० और पोरवाडों के ८० घर हैं, जिनमें सनातन-त्रिस्तुतिकों के ६० घर हैं। गाँव में दो जिन-मन्दिर हैं। प्रथम पंचायती बड़ा सौधशिखरी है, जिसमें श्रीशान्तिनाथ भगवान् की १ हाथ बड़ी प्राचीन मूर्त्ति स्थापित हैं। इसके दोनों तरफ बिराजमान दो प्रतिमाएँ नवीन हैं। यह मन्दिर सं० १९९१ में बन के तैयार हुआ और सं० १९९२ माहसुदि ९ को, इसकी प्रतिष्ठा हुई।

दूसरा मन्दिर सदर बाजार में बहुत ऊंची खुरशी पर बना हुआ है। इसको त्रिस्तुतिक-जैनसंघने बनवाया है, इसकी प्रतिष्ठा सं० १९९५ माहसुदि १३ के दिन तपस्वी श्रीरूपविजयजीने की है। इसके मूलनायक भगवान् श्रीपार्श्वनाथजी हैं-जिनकी अञ्जनशलाका कोरटानगर में १९५९ के साल महाराज श्रीराजेन्द्रसूरीश्वरजीने की है। इसके वाम-भाग के विशाल कमरे में श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरिजी महाराज की भव्य-मूर्त्ति

बिराजमान है। इसके बगल में नीचे एक उपासरा और इसके सामने दो मंजिली पक्की धर्मशालाएँ हैं। धर्मशाला में एक छोटा ज्ञानभंडार भी है। इसके अलावा पंचायती तीन उपासरे, और दो ओसवाल–पोरवाड़ों की धर्मशाला है। यहाँ एक श्रीशान्ति-नाथजैनलायब्रेरी है, जो नवयुवकों के उत्साह से चलती है। गाँव में सरकारी–स्कूल, पोस्ट ओफिस और पुस्तकालय भी है। यह गाँव चाणोद ठाकुर की जागीर में है।

१४२ बाबागाँव—

यहाँ जैन ओसवालों के १०, और पोरवाड़ों के २५ घर हैं। एक दो मंजिला अच्छा उपासरा, और एक गृह–मन्दिर है, जिसमें श्रीसंभवनाथजी की प्राचीन प्रतिमा बिराजमान है। इसके अलावा दो पाषाण की, और दो सर्वधात की मूर्त्तियाँ हैं जो नवीन हैं। यहाँ से तीन मील के फासले पर 'दणो' नामक छोटा गाँव है जिसमें जैनों के ८ घर हैं, जो अति भावुक, श्रद्धालु और साधु साध्वियों की खूब सेवा करनेवाले हैं। छोटा गाँव होने से यहाँ जिनमन्दिर या उपासरा नहीं है।

१४३ पावा—

इस गाँव में पोरवाडों के २५ और ओसवालों के १० घर और एक छोटी धर्मशाला है। यहाँ एक जूना सौधशिखरी जिनमंदिर है जिसमें श्रीशान्तिनाथजी की १। हाथ बड़ी मूर्त्ति बिराजमान है। यहाँ के जैन श्रद्धालु भक्तिवाले और सनातन–त्रिस्तुतिक संप्रदाय के हैं।

१४४ भूति—

इस गाँव के दो विभाग हैं जो दो वास के नाम से पहचाने जाते हैं। यहाँ ओसवालों के ३९ और पोरवाड़ों के ६० घर हैं, जो सभी सनातन त्रिस्तुतिक संप्रदाय के हैं। रामसिंहजी के वास में छोटी पहाड़ी की ढालू जमीन पर एक नवीन सौधशिखरी जिन–मन्दिर है। इसके मूलनायक श्रीमहावीरस्वामी हैं जिनकी पलांठी के ऊपर लिखा है कि—

" संवत् १९६९ शाके १८३४ माघशुक्ला १० मंडवारियानगरवास्तव्य खूमाजी सुत–जेठा–डाहा–विजयचन्द्रकारिताञ्जनशलाकायां भूतिनगरवास्तव्य ओ० वेदमूथा खीमासुत सहसमलस्य केशामात्रा श्रीमहावीरजिनबिम्बाञ्जनशलाका कारापिता। कृता च श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छीयश्रीविजयराजेन्द्रसूरीश्वरशिष्यश्रीधनचन्द्रसूरिभिः। लि० उ० मोहनविजयेन।

दूसरा मन्दिर चतरसिंहजी के वास में है, जो गाँव के मध्य भाग में है और शिखरबद्ध है। इसके मूलनायक श्रीऋषभदेवस्वामीजी हैं जो श्याम–रंग के ४ फुट बडे हैं। इनकी पलांठी पर इस प्रकार लेख है—

सं० १९६९ माघशुक्ल १० रविदिने पुनर्वसुनक्षत्रे मंडवारियानगरवास्तव्य शा० खूमाजीसुतजेठाडाहाविनयचन्द्रकारापिताञ्जनशलाकायां श्रीभूतिनगरे ओशवंशीय वेदमूता हीराजीदेवीवंदखेपराजैः श्रीआदिनाथबिम्बाञ्जनशलाकासह–प्रतिष्ठा

कारापिता। कृता च श्रीसौधर्मबृहत्तपागच्छाधिराज भट्टारक श्रीविजयराजेन्द्रसूरीश्वरशिष्य-भ० श्रीविजयधनचन्द्रसूरीश्वरैः। लि०यतीन्द्रविजयेन श्रीशुभं भवतु।"

१४५ कवलाँ—

यह कवलाँ नामक पहाडी के नीचे बसा हुआ है, यहाँ जैनों के ६ घर और एक पुराना जिन-मंदिर हैं, जिसमें श्रीसंभवनाथ की सफेदवर्ण की एक हाथ बडी मूर्त्ति बिराजमान है, जो खरतर-गच्छीय जिनचन्द्रसूरिजी की प्रतिष्ठित है। इसके दोनों बगल में दो मूर्त्तियाँ हैं, जो सं० १५८९ की प्रतिष्ठित हैं और बाह्यमंडप में दहिनी बाजू जो मूर्त्ति आदिनाथस्वामी की है उसकी प्रतिष्ठा सं० ११०१ में हुई है। यहाँ के प्राचीन खंडेहरो के देखने से अनुमान किया जा सकता है कि पेस्तर इस नगर में जैन जैनेतरों की बहुत वसती (आबादी) होगी।

१४६ रोडला—

यहाँ ओसवाल पोरवाडों के १२ घर, एक उपासरा और उसके कमरे में ही श्रीआदिनाथ और पार्श्वनाथ की सफेदवर्ण की १६ अंगुल की प्रतिमाएँ स्थापित हैं, जो नवीन हैं।

१४७ तखतगढ—

यह कसबा एरनपुरारोड से १८ मील पश्चिमोत्तर है। इसको सं० १९१८ में सेखमियाने बसाया था, फिर सरकार की मदत से यह आबाद हो गया। यहाँ ओसवाल जैनों के १२५, और पोरवाडजैनों के ४५० घर हैं। जिनमें सनातन चैत्यस्तुतिक संप्रदाय

के १५ घर हैं और उनकी धर्मशाला भी जुदी है। त्रिस्तुतिकों के सिवाय प्रायः सभी जैन जैन–भावना से रहित और क्लेश–प्रिय हैं। गाँव में चार धर्मशाला, दो उपासरे और पांच सौधशिखरी जिन–मन्दिर हैं। जिनमें से तीन में श्रीआदिनाथ, एक में श्रीशान्तिनाथ और एक में श्रीपार्श्वनाथजी मूलनायक हैं। मोटे मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध बाजारवाले जिनालय में सब से प्राचीन और शेष में सभी नवीन प्रतिमाएँ स्थापित हैं।

१४८ जुआणा—

यहाँ जैनों के धार्मिक–भावना शून्य चार घर हैं, जो कहने मात्र के जैन हैं परन्तु जैनोंतरों से भी गये गुजरे हैं और जैन-साधुओं को देख कर घरों में ताले लगा लेते हैं, या देखते ही दूसरे गांव चले जाते हैं।

१४९ भारुंदा—

इस गाँव में ओसवाल जैनों के ९०, घर एक उपासरा, एक धर्मशाला और एक शिखरवाला सुंदर मन्दिर है। इसमें मूलनायक श्रीशान्तिनाथजी की ३ फुट् बडी भव्य मूर्त्ति मय दो मूर्त्तियों के बिराजमान है, जो नवीन हैं। बाह्य–मंडप में सर्वाङ्गसुन्दर नवीन प्रतिष्ठित दो मूर्त्तियाँ स्थापित हैं।

१५० फतापुरा—

बालीपरगने में जोधपुर रियासत का यह छोटा गाँव है, जो एरनपुरा–छावनी से ८ मील पश्चिम है और एरनपुर–छावनी पोस्ट के हलके में हैं। यहाँ ओसवाल जैनों के ३९ घर हैं, जो

सभी त्रिस्तुतिक संप्रदाय के हैं। गाँव में एक उपासरा, एक धर्मशाला और एक शिखरवाला जिन-मन्दिर है, जिसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी हैं, जो सफेदवर्ण के १। हाथ बडे हैं और मय दो प्रतिमाओं के बिराजमान हैं। गाँव से पूर्व थोडी दूर पर तपस्वी श्रीहिम्मतविजयजी की समाधि (छत्री) है जिसमें उनके चरण-चिन्ह स्थापित हैं।

१५१ जोगापुरा--

सिरोही-स्टेट का यह छोटा गाँव है, यहाँ ओसवालों के ४० घर, एक धर्मशाला और एक जिन मन्दिर है, जिसमें मूलनायक श्रीऋषभदेवजी की श्वेतवर्ण की १ फुट् बडी प्रतिमा स्थापित है। यहाँ के जैन श्रद्धालु होने पर भी साधुगमनाऽभाव से विवेकशून्य हैं।

१५२ रोवाडा—

यहाँ ओसवालों के १५ और पोरवाडों के १५ घर हैं, जो श्रद्धालु, विवेकी और साधु-भक्तिवाले हैं। गाँव में दो धर्मशाला और एक शिखरवाला जिनालय है, जिसमें श्रीऋषभदेवस्वामीजी की मूर्त्ति मय दो मूर्त्तियों के स्थापित हैं, जो सं० १९९० की प्रतिष्ठित हैं और यहाँ सं० १९६१ माहसुदि ६ के दिन बिराजमान हुई हैं। यह गाँव झारोली-पहाडी से १ मील उत्तर है और यहाँ के तथा जोगापुरा के सभी जैन सनातन त्रिस्तुतिक शुद्ध संप्रदाय के हैं।

१५३ आलावा—

मलादर-पहाडी की ढालू जमीनपर बसा हुआ यह छोटा गाँव

है और इसके उत्तर अर्ध–मील छेटी पर सूखडी नामक नदी है। यहाँ जैनों के १२ घर हैं, जो पोरवाड और विवेक–विहीन हैं। यहाँ एक छोटा उपासरा और एक छोटा शिखरवाला जिन–मन्दिर हैं जिसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ की छोटी प्रतिमा स्थापित है, जो अर्वाचीन है।

१५४ हरजी—

जोधपुर–रियासत के जालोर परगने में सूखडी नदी के वांये किनारे पर वसा हुआ यह कसवा है। इसमें ओसवालों के २५ और पोरवाडों के २५० घर हैं। जिनमें सनातन–त्रिस्तुतिक संप्रदाय के १४५ घर हैं और उनकी एक पक्की दो मंजिली अच्छी धर्मशाला है। इसीकी एक कोठरी में छोटा ज्ञानभंडार है जिसमें मुद्रित और हस्तलिखित ग्रन्थों के २५ बिंडल है। गाँव के सदर बाजार में एक सौधशिखरी मन्दिर है जिसमें श्रीऋषभदेव भगवान् की सफेदरंग की सवा हाथ बडी भव्य मूर्त्ति मय दो प्रतिमाओं के स्थापित है, जो सातसौ वर्ष की पुरानी है। गाँव से दक्षिण बाहर एक विशाल–शिखरवाला नया जिनालय तैयार हो रहा है उसमें बिराजमान करने के लिये पाषाण की ३०, सर्वधात की ९, सर्वधात के गट्टाजी १८ और श्रीविजयराजेन्द्र-सूरिजी महाराज की मूर्त्ति १, गाँववाले मंदिर के वांये भाग की त्रिस्तुतिकधर्मशाला की एक ओसारी में रक्खी हुई हैं। इनमें मूलनायक श्रीऋषभदेव भगवान् की सर्वधात की दो हाथ बड़ी अतिसुन्दर मूर्त्ति है। उसकी पलांठी पर इस प्रकार लेख खुदा हुआ है—

संवत् १६५६ वैशाखसितपूर्णिमास्यां तिथौ, गुरौ, मरुधरायां हरजीनगरवास्तव्य-प्राग्वटज्ञातीय वृ० चांपासुत केरा तस्य भार्या जेतीदे तया स्वात्मार्थे श्रीआदीश्वरबिम्बं कारितं, प्रतिष्ठितं भ० श्रीरत्नसूरि तत्पट्टे क्षमासूरि तत्पट्टे श्री देवेन्द्रसूरि तत्पट्टे कल्याणसूरि त० श्रीविजयप्रमोदसूरिशिष्य भ० श्रीविजयराजेन्द्रसूरिभिः। श्रीसुधर्मतपगणे शिष्य मोहनविजयलिपिकृतं श्रीकोरटानगरे।"

इतनी ही बड़ी दूसरी पाषाण-मय श्रीआदिनाथजी की प्रतिमा है। उसकी पलांठी पर लेख है कि—

"विक्रमार्कतः संः १६५५ वर्षे शालिवाहनशाके १८२० प्रवर्त्तमाने मासोत्तमे फाल्गुनकृष्णपंचम्यां गुरौ वासरे मरुधरायां राष्ट्र० वंशीय-महाराजाधिराज-राजराजेश्वरश्रीश्री सिरदारसिंहजी तेषां मान्य-राष्ट्र० वंशीयचांपावतठकुरश्रीरत्नसिंहजीराज्ये हरजीनगरे श्रीआदिनाथबिम्बं का०, प्रतिष्ठितं भट्टारकश्रीविजयरत्नसूरि, तत्पट्टे क्षमासूरि-देवेन्द्रसूरि-कल्याणसूरि-प्रमोदसूरि-पट्टप्रभावक-क्रियोद्धारकर्त्ता भ० श्री विजयराजेद्रसूरिभिः। प्रतिष्ठा कारिता प्राग्वाटज्ञातीयवृद्धशाखायां मनासुतसूरतिंगतत्पुत्रौ चमनाटेकचंदाभ्यां सपितृभ्यां, आहोरनगरे सुधर्मतपागच्छे लिपिचक्रे मोहनविजयः।"

इनके अलावा गाँव में एक दो मंजिला पक्का उपासरा, तीन बडी धर्मशाला, एक श्रीमहावीरजैनयुवकमंडल, और एक जैन-स्कूल है। स्कूल में जैन जैनेतर बालक धार्मिक और व्यवहारिक शिक्षा पाते हैं, और इसके निभाव के वास्ते १००००

हजार रुपयों का फंड साहूकारों में जमा है। इसके व्याज से इसका खर्चा चलता है।

१५५ बूड़तरा—

यह छोटा गाँव है जो सूखडी नदी के वांये किनारे पर वसा हुआ है। इसमें जैनों के १० घर हैं, जो विवेकी और भक्तिशाली है। यहाँ एक छोटा उपासरा है और गाँव छोटा होने के वजह से जिनमंदिर नहीं है।

१५६ थाँवरा—

सूखडी नदी के दहिने किनारे पर जालोर हकुमत के नीचे जोधपुर रियासत का यह कसबा है। यहाँ जैनों के ४० घर, एक धर्मशाला और एक शिखरबद्ध जिनालय है। जिसमें प्राचीन एक खंडित मूर्त्ति श्री शान्तिनाथजी की स्थापित है। आहोर–पट्टी की पंचायत के अडतालीसी का यह सदर स्थान है। अडतालीस गाँवों के पंच महाजन यहाँ एकत्रित हो करके जातीय पंचायत करते हैं। यहाँ के जैन विवकशून्य और नाम–मात्र के जैन हैं।

१५७ भेंसवाडा—

जालोर परगने के इस गाँव में ओसवालों के २० और पोरवाड़ों के ५२ घर हैं, जो सभी सनातन–त्रिस्तुतिक संप्रदाय के हैं। यहाँ एक दो मंजिला उपासरा, एक छोटी दो मंजिली धर्मशाला और जोडा जोड दो सौधशिखरी जिन–मन्दिर हैं। प्रथम–मन्दिर म मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ की और दूसरे में श्री-शान्तिनाथजी की भव्य मूर्त्ति विराजमान हैं।

१५८ सकराना—

यहाँ जैनों का एक भी घर नहीं है, परन्तु एक सौधशिखरी प्राचीन जिन-मन्दिर है, जिसका जीर्णोद्धार आहोर-मंडन श्रीगोड़ी-पार्श्वनाथ के मन्दिर तरफ से हुआ है। इसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी की भव्य मूर्त्ति बिराजमान है जो प्राचीन, सुन्दर और दर्शनीय है।

१५९ लेटा—

सूखडीनदी के बांये किनारे पर यह गाँव है। यहाँ दसा ओसवाल जैनों के ३० घर, एक उपासरा और एक छोटा-शिखरवाला जिनालय है। मन्दिर में मूलनायक श्रीचन्द्रप्रभस्वामी की नवीन प्रतिष्ठित प्रतिमा स्थापित है। यहाँ के जैन भावुक और साधु साध्वियों के अनुरागी होने पर भी विवेकशून्य हैं।

१६० जालोरगढ़—

सोनागिर-पहाड़ के नीचे उत्तर-पूर्व की ढालू जमीन पर बसा हुआ यह पुराना शहर है, जो चारों ओर पुराने जीर्ण और पतितावशिष्ट कोट (शहर-पना) से घिरा हुआ है और इसके पूर्व और उत्तर चार दरबाजे हैं, जो पक्के मजबूत बने हुए हैं।

मारवाड़ के इतिहास से पता लगता है कि-लगभग विक्रम की दशवीं सदी में वारा नामक परमार राजपूतने मारवाड़ के चौदह हजार गाँवों को नव विभागों में विभक्त किये जो नवकोटी-मारवाड़ के नाम से सुप्रसिद्ध हुए। जालोर का पहाड़ी हिस्सा वारा-पंवार के छोटे भाई भोज की पांति में आया।

उसने यहाँ शहर वसा के किला बंधवाया और यहाँ भोज का नव पीढ़ी तक अधिकार रहा। जालोर तोपखाने के वि० सं० ११७४ के एक शिला-लेख में पवारों की वंशावली इस प्रकार दी है कि १ वाक्पतिराज, २ चन्दन, ३ देवराज, ४ अपराजित, ५ विज्जल, ६ धारावर्ष, और ७ वीसल।

विक्रम की तेरहवीं सदी में नांदोल के चौहान कीर्त्तिपाल (कितुक) ने जालोर को पंवारों से छीन कर अपने अधिकार में ले लिया और नांदोल को छोड़ कर जालोर के सोनागिर के किले में रहना कायम किया। सोनागिर के किले में रहने के कारण ही कीर्त्तिपाल के वंशज 'सोनगरा-चौहाण' कहलाये। यहाँ के सोनगरा चौहानों की वंशावली इस प्रकार है—१ कीर्त्तिपाल, २ समरसिंह, ३ उदयसिंह, ४ चाचिगदेव, ५ सामन्तसिंह, ६ कन्हणदेव, ७ मालदेव, ८ वनवीरदेव, और ९ रणवीरदेव। चौहानों के बाद सन् १३९८ के लगभग विहारी-पठान मुसलमानों का अधिकार जालोर पर हुआ। उनकी वंशावली इस प्रकार है—

१ खुरमखान, २ युसुफखान, ३ हसनखान, ४ सालारखान, ५ उस्मानखान, ६ बुढनखान, ७ मुजाहिदखान (मुझामलेक), मुझा मलेक का अपुत्र मरण होने की खबर मिलते ही गुजरात-बादशाह के भेजे हुए अमीर जीवाखान-बझुखान की देखरेख नीचे सन् १५१० से १५१३ तक जालोर रहा। बाद में पीछा विहारी-पठानों के सुपुर्द हुआ।

८ अलीशेरखान, ९ सिकन्दरखान, १० गजनीखान

(प्रथम), ११ सिकन्दरखान, (द्वितीय), इनके बाद सन् १५३५ से १५५३ पर्यन्त लगातार अठारह वर्ष तक जालोर रियासत बिहारियों के अधिकार से निकल कर बलोच और राठोडों के अधिकार में रही, और बाद में देहली के बादशाह की प्रसन्नता से पीछी मलेकखान बिहारी को मिल गई।

१२ मलेकखान, १३ गजनीखान (द्वितीय), १४ पहाडखान (प्रथम), इसके बाद इस्वीसन् १६१८ से १६८० तक जालोर पर दिल्ली के जहांगीर बादशाह की हकुमत रही और शहेनशाह के भेजे हुए हाकम हकुमत करते रहे। उनके नाम ये हैं (१) महाराज शूरसिंह राठौड सन् १६१८ से १६२०, (२) सीसोदिया—भीमसिंहराणा सन् १६२० से १६२१, (३) महाराज गजसिंह राठौड १६२१ से १६३८, (४) नबाब मीरखान १६३८ से १६४३, (५) नबाब फेज अलीखान १६४३, (६) हंसदास राठौड १६४३ से १६५५, (७) महाराज जसवंतसिंह राठौड १६५५ से १६७९, और (८) महाराज सुजानासिंह १६७९ से १६८०; इस प्रकार चौसठ वर्ष तक जालोर जागीर बादशाह के अधीन रह कर, सन् १६८० में दिवान कमालखान (करणकमाल) के भाई फतेहखान के अधीन हो गई और सन् १८९७ में दुर्गादास राठौड़ के कृत उपकार के बदले में औरंगजेब बादशाहने जालोर जागीर महाराज अजितसिंह राठौड को सोंप दी। तब से अब तक यह जागीर जोधपुर के नीचे उन्हीं के वंशजों के अधिकार में है।

यह शहर जोधपुर से ७१ मील के फासले, नैऋत्य–कोण में सुकडी नदी के दक्षिण किनारे पर वसा हुआ है। इसके पूर्व सिरोही–राज्य, पश्चिम लूनी नदी, उत्तर पाली, बालोतरा परगना, और दक्षिण सांचोर, तथा जसवंतपुरा परगना है। इसकी लम्बाई पूर्व और पश्चिम ७२ मील, और चौडाई उत्तरदक्षिण ५० मील के अन्दाजन है। इसमें दो पहाडियाँ हैं–एक इसके पश्चिम और दूसरी दक्षिण–पूर्व जो २७५७ फिट ऊंची है। पश्चिम–पहाडी पर मशहूर किला जो ८०० गज लम्बा और ४०० गज चौडा और १२०० फुट ऊंचा है। जादुदान चारण की नूंध के अनुसार जालोर का किला १२४७ गज लम्बा और ४७० गज पहोला है। इसका चढाव दो हजार कदम का है। इसके तीन दरवाजे और बावन बुरज हैं। इस किले की सब से पहले नींव भोजने डाली थी, उसके बाद इसका कितुक, चाचींगदेव, और सामंतसिंह चौहान ने उद्धार कराया, तथा दिवान फतेखान प्रथमने इसके पतित हिस्से की मरामत कराके यहाँ एक महल बनवाया।

जालोर पहाड का असली नाम सोनागिर (सोने का पहाड) है और कईएक लोग इसको जालन्धर जालीन्धर[1] और जालीपुर' भी कहते हैं, जो जलन्धरनाथ की समाधि, अथवा अधिक

---

१ भूस्तरवेत्ताओं का अनुमान है कि–यह प्राचीन काल में ज्वालामुखी पर्वत होगा क्योंकि इस पहाड में से किसी किसी वक्त बहुत सख्त भूकम्प के आंचके निकलते हैं। बोयलो साहब का अभिप्राय है कि इस पहाड में सीसा, लोहा, तांबा आदि धातुओं की भी खाने हैं।

जालों (पीलुवृक्षों) के होने के कारण है। इसके ऊपर का किला राजपुताना के प्रसिद्ध किलों में से एक है। यह चौहानों और परमारों का जूना निवास स्थान है। इस किले की लम्बाई १ ½ मील और चौडाई १ मील के लगभग तथा चढाई २ मील की इस समय (वर्त्तमान) में मानी जाती है।

मजबूती के लिये इस किलेने बडी नामवरी पाई है और मुसलमानी बादशाहों की कइ टक्करें खाई हैं। इतिहासों से पता लगता है कि–अलाउद्दीन खिलजी बादशाह और उसके सेनापति अलफखान और नसरतखान ने सन् १२०६ में किलेका घेरा ड़ाला और यहाँ ११ वर्ष तक बराबर लड़ाई चलती रही। इस विग्रह में इस किले को बहुत नुकशानी पड़ी। 'मारवाड राज्य का इतिहास' में लिखा है कि अलाउद्दीन खिलजीने ८ वर्ष के घेरे के बाद राव कीतू के छट्ठी पीढी में उत्पन्न राव कानडदे चौहान से लड कर नष्ट किया। इस युद्ध में कान्हणदेने संवत् १३३८ वैशाखसुदि ९ को वीरगति पाई थी, किन्तु यह घटना 'तवारिखफरिस्ता' के लेखानुसार हीजरी सन् ७०९ (इस्वीसन् १३०९=वि० सं० १३६६) में और 'मुहणोत-नेणसी की ख्यात' के अनुसार वि० सं० १३६८ की हुई है। और वीसलदेव (विग्रहराज) चतुर्थ की मृत्यु होने बाद भी मलेक खुरमखान लोहानीने गुजरात के सुलतान झफरखान की मदत से खूब लडाई की और आखिर किले पर अधिकार करके मुसलमानी झंडा खडा किया। इन मुसलमानी हमलों से केवल किले को ही नुकशान नहीं पहुंचा, किन्तु किले में स्थित जिन-मन्दिरों का भी भारी नुकशान हुआ।

इस किले पर तीन सौधाशिखरी जिन–मन्दिर हैं, जो अति रमणीय और परमार्हत राजा कुमारपाल के बनवाये हुए हैं। सब से बडा और तारंगा–जिनालय का अनुकरण करनेवाला भगवान् वीरप्रभु का मन्दिर है। जिसमें मूलनायक श्रीमहावीर-स्वामी की सफेद वर्ण की दो हाथ बडी भव्य मूर्त्ति बिराजमान है, जो प्राचीन है और सं० १६८१ में श्रीदेवसूरिजी महाराज की आज्ञा से जयसागरगणि के हाथ से प्रतिष्ठित हुई है। इस-के भी पहले की प्रतिमा जो अतिप्राचीन और खंडित है, मन्दिर के बाह्य–मंडप के एक तोक में स्थापित है। इस जिनालय में पाषाण की छोटी बडी कुल प्रतिमाएँ २९ हैं, जो सोलहवीं सदी की प्रतिष्ठित हैं।

दूसरा मन्दिर चोमुखजी का है, जो पहाडी की ऊंची टोंच पर दो खंडवाला और सुमेरु शिखरवाला है। इसके नीचे ऊपर के खंडों में चारों दिशाओं में आदिनाथ, सुपार्श्वनाथ, अजित-नाथ और श्रेयांसनाथ की एक एक प्रतिमा बिराजमान है, जो प्रायः प्राचीन हैं। ऊपर के खंड में सुविधिनाथ अरनाथ वगैरह ४ प्रतिमा हैं। प्रवेश द्वार के दहिने और मूलनायक से बांये भाग पर एक सर्वाङ्ग सुन्दर मूर्त्ति स्थापित है। इस मन्दिर में सं० १९३२ में सरकारी तोपें भरी हुई थीं. उनको कारवाई करके जैनाचार्य श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराजने निकला के इसके जीर्णोद्धार के समय यहाँ पर कतिपय मूर्त्तियों की स्थापना भी की और मूलनायक श्रीऋषभदेवजी के नीचे के पबासण पर लेख लिखा कि—

सम्वच्छुभे त्रयस्त्रिंशन्नन्दैके विक्रमाद्वरे ।
माधमासे सिते पक्षे, चन्द्रे प्रतिपदा तिथौ ॥ १ ॥
जालन्धरे गढे श्रीमान्, श्रीयशस्वन्तसिंहराट् ।
तेजसा द्युमणिः साक्षात्, खण्डयामास यो रिपून् ॥२॥
विजयसिंहश्च किल्लादारधर्मा महाबली ।
तस्मिन्नवसरे संघैर्जीर्णोद्धारश्च कारितः ॥ ३ ॥
चैत्यं चतुर्मुखं सूरिराजेन्द्रेण प्रतिष्ठितम् ।
एवं श्रीपार्श्वचैत्येऽपि, प्रतिष्ठा कारिता वरा ॥ ४ ॥
ओसवंशे निहालस्य, चोधरीकानुगस्य च ।
सुतप्रतापमल्लेन, प्रतिमा स्थापिता शुभा ॥ ५ ॥
श्रीऋषभजिनप्रसादादुल्लिखितमिति ।

तीसरा मन्दिर जो छोटा पर रमणीय सिखरवाला है और इसमें श्रीपार्श्वनाथजी की सुन्दर प्राचीन प्रतिमा स्थापित है। इस मन्दिर का जीर्णोद्धार और प्रतिष्ठा भी महाराज श्री राजेन्द्र-सूरिजी के उपदेश से हुई है, ऐसा चोमुखजी के ऊपर दिये हुए शिलालेख से जाहिर होता है।

इनके अलावा यहाँ एक महादेव का मंदिर भी है, जो कीर्त्ति-पाल चौहान की पुत्री रूदलदेवी का बनवाया हुआ है। इसी के पिछाडी के भाग में उसी समय का एक जलकुंड है और इससे आगे वीस कदम पर एक छोटा बगीचा है, जो सार-संभाल न होने के वजह से लुप्त प्राय हो रहा है। चोमुखजी से वीस कदम पर तीन राज-महल मजबूत और जूने हैं जो समरसिंह

सोनगरा चोहान और दिवान फतेहखान प्रथम के बनवाये माने जाते हैं। इन महलों के अन्तराल में पानी का टांका भी है जिसमें वारिश का जल बारहो महिना रहता है। किले के ऊपर के तीसरे दरवाजे के पास दहिनी तरफ एक छोटी मसीद है, जो मुसलमानी अमल में बनाई गई है। यहाँ से २ मील के फासले पर वीरमचोकी है, जो विकट झाडी के बीच में है और उसका रास्ता भी अति भयङ्कर है।

वर्त्तमान जालोर शहर का प्राचीन नाम 'जाबालिपुर' और 'जालंधर है। इस समय शहर में दशा वीसा ओसवालों के ७५५, और पोरवाडों के १०० घर हैं जिनमें सनातन–त्रि-स्तुतिक संप्रदाय के १३५ घर, चतुर्थस्तुतिकों के ३०० घर, स्थानकवासियों के ३२५ और दादुपन्थी–रामसनेहियों के ५ घर हैं। गाँव में ४ उपासरे, दो पोसालें, तीन धर्मशालाएँ और एक लायब्रेरी है। तीन थुईवालों की धर्मशाला सब से बडी पक्की दो मंजिली है और उसके एक कमरें में ज्ञानभंडार है जिसमें मुद्रित और हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह है। यहाँ की केशरविजयजैनलायब्रेरी में भी अच्छे अच्छे ग्रन्थो का संग्रह है जो पबलिक आमको नियमाली के अनुसार वाचने को दिये जाते हैं। शहर के महाजनी मुहल्लो में सौधशिखरी ८, गृहमन्दिर १ और सूरजपोल के बाहर शिखरबद्ध १. एवं दस जिन मन्दिर हैं, जो प्राचीन–अर्वाचीन है, और उनकी मूलनायक समेत मूर्त्तियों की संख्या वास (मुहल्ले) वार इस प्रकार है—

मूलनायक	पाषाण की	सर्वधातु की	मुहल्लों का नाम	चरण पादुका
१ पार्श्वनाथ	४	०	कांकरिया वास	१
२ वासुपूज्य	३	२	फोला वास	०
३ पार्श्वनाथ	२९	०	खरतर वास	०
४ पार्श्वनाथ	१	०	पोशाल में	१
५ मुनिसुव्रत	९	०	खानपुरा वास	०
६ महावीर	४९	४	तपा वास	१
७ नेमनाथ	२४	७	,,	०
८ शांतिनाथ	१६	१	,,	२
९ आदिनाथ	५	९	,,	१
१० ऋषभदेव	५	५	सूरजपोल	१

यहाँ शहर में एक जूना तोपखाना है, जो मुसलमानी अमल-दारी में विशाल जैन–मन्दिर को तोड़ कर बनाया गया है। कहा जाता है कि पेश्तर यह बड़ा भारी विशाल और ७२ जिनालय सौधशिखरी जिन–मन्दिर था। इसका नीचे का विभाग अब भी जैन–मन्दिर के अस्तित्व को बतला रहा है। इसके भीतरी कमरे के स्तंभे और छत्रने के लेख इसको जिन–मन्दिर सिद्ध करते हैं। इसमें यों तो दस बारह लेख जुदे जुदे समय के लगे हुए हैं, परन्तु

उनमें से पांच ब्लॉ शिला-लेख जो अच्छी तरह बांचे जा सकते हैं, यहाँ ज्यों के त्यों उध्दृत कर दिये जाते हैं।

१ बांये हाथ की शाला के ब्लवने में—

शश्वत् त्रैलोक्यलक्ष्मीविपुलकुलगृहं धर्मवृक्षालवालं,
श्रीमन्नाभेयनाथक्रमकमलयुगं मङ्गलं वस्तनोतु।
मन्ये मङ्गल्यमाला प्रणतभवभृतां सिद्धिसौधप्रवेशे,
यस्य स्कन्धप्रदेशे विलसति गवलश्यामलाकुन्तलाली ॥१॥

श्रीचाहुमानकुलाम्बरमृगाङ्क श्रीमहाराज-अणहिलान्वयोद्भवश्रीमहाराज-आल्हणसुतकार्यावली-दुर्ललितदलितरिपुबलश्रीमहाराजकीर्त्तिपालदेवहृदयानन्दिनन्दन-महाराजश्रीसमरसिंहदेवकल्याणविजयराज्ये तत्पादपद्मोपजीविनि निजप्रौढिमातिरेकतिरस्कृतसकल पील्वाहिकामण्डलतस्करव्यतिकरे राज्यचिन्तके जोजलराजपुत्रे, इत्येवं काले प्रवर्त्तमाने—

रिपुकुलकमलेन्दुः पुण्यलावण्यपात्रं,
नयविनयविधानं धामसौन्दर्यलक्ष्म्याः।
धरणितरुणनारी लोचनानन्दकारी,
जयति समरसिंहक्ष्मापतिः सिंहवृत्तिः ॥२॥ तथा—

औत्पत्तिकीप्रमुखबुद्धिचतुष्टयेन,
निर्णीतभूपभवनोचितकार्यवृत्तिः।
यन्मातुलः समभवत्किल जोजलाह्वो,
दोर्दण्डखण्डितदुरन्तविपक्षपक्षः ॥ ३ ॥

श्रीचन्द्रगच्छमुखमण्डनसुविहितयतिकुलश्रीश्रीचन्द्रसूरि-चरणनलिनयुगलसुललितराजहंसश्रीपूर्णभद्रसूरिचरणकमलप-रिचरणचतुरमधुकरेण समस्तगोष्ठिकसमुदायसमन्वितेन श्री-श्रीमालवंशविभूषणश्रेष्ठियशोदेवसुतेन सदाज्ञाकारीनिजभ्रा-तृयशोराजजगधरविधीयमाननिखिलमनोरथेन श्रेष्ठियशोवीर-परमश्रावकेण सं० १२३९ वैशाखसुद ५ गुरौ सकलत्रिलो-कीतलाभोगश्रमणपरिश्रान्तकमलाविलासिनां विश्रामविला-समन्दिरं, अयं मण्डपो नृपार्पितः । तथाहि--

नानादेशसमागतैर्नवनवैः स्त्रीपुंसवर्गैर्मुहु-
र्यस्याहोरचनावलोकनपरैर्नातृप्तिरासाद्यते ।
स्मारं स्मारमथो यदीयरचना वैचित्र्यविस्फूर्जितं,
तैः स्वस्थानगतैरपि प्रतिदिनं सोत्कण्ठमावर्ण्यते ॥४॥

विश्वम्भरावरवधूतिलकं किमेत-
च्छीलारविन्दमथ किं दुहितुः पयोधेः ।
दत्तं सुरैरमृतकुण्डमिदं किमत्र
यस्यावलोकनविधौ विविधौ विकल्पाः ॥ ५ ॥

गर्त्तापूरेण पातालं, विस्तारेण महीतलम् ।
तुङ्गत्वेन नभो येन, व्यानशे भुवनत्रयम् ॥ ६ ॥

किञ्च--

स्फूर्जद्व्योमसरः समीनमकरं कन्यालिकुम्भाकुलं,
मेषाढ्यं सकुलीरसिंहमिथुनं प्रोद्यद्वृषालङ्कृतम् ।
ताराकैरवमिन्दुधामसलिलं सद्राजहंसास्पदं,
यावत्तावदिहादिनाथभवने नन्द्यादसौ मण्डपः ॥ ७ ॥

कृतिरियं श्रीपूर्णभद्रसूरीणां भद्रमस्तु श्रीसंघाय सम्पूर्णमिति ।

२–बीच मंडप के छबने में—

संवत् १२२१ श्रीजालिपुरीयकाञ्चनगिरीगढस्योपरि-प्रभुश्रीहेमसूरिप्रबोधित-गुर्जरधराधीश्वरपरमार्हत–चौलुक्यमहाराजाधिराजश्रीकुमारपालदेवकारिते श्रीपार्श्वनाथसत्कमूल बिम्बसहिते श्रीकुवरविहाराभिधाने जैनचैत्ये सद्विधिप्रवर्तनाय बृहद्गच्छीयवादीन्द्रश्रीदेवाचार्याणां पक्षे आचन्द्रार्कं समर्पिते । संवत् १२४२ वर्षे एतद्देशाधिपचाहुमानकुलतिलकमहाराजश्रीसमरसिंहदेवादेशेन भां०पासूपुत्र भां०यशोवीरेण समुद्धृते श्रीमद्राजकुलादेशेन श्रीदेवाचार्यशिष्यैः श्रीपूर्णदेवाचार्यैः । सं० १२५२ वर्षे ज्येष्ठसु०११ श्रीपार्श्वनाथदेवे तोरणादीनां प्रतिष्ठाकार्ये कृते मूलशिखरे च कनकमयध्वजदंडस्य ध्वजारोपणप्रतिष्ठायां कृतायां, संवत् १२६८ वर्षे दीपोत्सवदिने अभिनवनिष्पन्नप्रेक्षामध्यमंडपे श्रीपूर्णदेवसूरिशिष्यैः श्रीरामचन्द्राचार्यैः सुवर्णमयकलशारोपणप्रतिष्ठा कृता, शुभं भवतु ।

३ बैठक के कमरे के छबने में–

संवत् १२९४ वर्षे श्रीमालीयश्रीवीसलसुत–नागदेवस्तत्पुत्रा–देल्हा–सलक्षण–झांपाख्याः, झांपापुत्रो विजाकस्तेन देवडसहितेन पितृझांपाश्रेयोऽर्थं श्रीजालीपुरीयश्रीमहावीरजिनचैत्य करोदिः कारिता, शुभं भवतु ।

४ बांये हाथ के स्तंभ पर—

सं० १३२० वर्षे माघसुद १ सोमे श्रीनाणकीयगच्छप्रतिबद्धजिनालये महाराजश्रीचंदनविहारे श्रीचींवरायेश्वरस्थानपतिना भट्टारकरावललक्ष्मीधरेण देवश्रीमहावीरस्यआसोजमासे अष्टाह्निकामहे द्रम्माणां १०० शतमेकं प्रदत्तं, तद्व्याजमध्यान्मठपतिना गोष्ठिकैश्च द्रम्म१०दशकं वेचनीयं पूजाविधाने देवश्रीमहावीरस्य ।

५ द्वितीय स्तंभ पर—

ॐ संवत् १३२३ वर्षे मार्ग०सुदि ५ बुधे महाराज श्रीचाचिगदेवकल्याणविजयराज्ये तन्मुद्रालङ्कारिणि-महामान्य--श्रीजयदेवे श्रीनाणकीयगच्छप्रतिबद्धमहाराजश्रीचंदनविहारे विजयिनी श्रीमद्धनेश्वरसूरौ तैलगृहगोत्रोद्भवेन महं नरपतिना स्वयं कारितजिनयुगलपूजानिमित्तं मठपतिगोष्ठिकसमक्षं श्रीमहावीरदेवभांडागारे द्रम्माणां शतार्द्धं प्रदत्तं, तद्व्याजोद्भवेन द्रम्मार्द्धेन नेचकं मासं प्रति करणीयं शुभमस्तु ।

६ पश्चिम परसाल के स्तंभे पर—

ॐ संवत् १३५३ वर्षे वैशाखवदि ५ सोमे श्रीसुवर्णगिरौ अद्येह महाराजकुलश्रीसामंतसिंहकल्याणविजयराज्ये तत्पादपद्मोपजीविनि राजश्रीकान्हडदेवराज्यधुरामुद्वहमाने इहैव वास्तव्यसंघपतिगुणधर ठक्कुर आंबडठक्कुरजसपुत्रसोनीमहणसिंह भार्या मान्हणिपुत्र सोनीरतनसिंह णाखो मान्हण

गजसिंह, तिहणापुत्र सोनी नरपति जयता विजयपाल नरपतिभार्या नायकदेवी पुत्र लखमीधर भुवणपाल सुहडपाल, द्वितीयभार्या जाल्हणदेवी इत्यादि कुटुंबसहितेन भार्यानायकदेवी श्रेयोऽर्थे देवश्रीपार्श्वनाथचैत्ये पंचमीबलिनिमित्तं निभानिचेपहट्टमेकं नरपतिना दत्तं, तद्भाटकेन देवश्रीपार्श्वनाथ गोष्ठिकैः प्रतिवर्ष आचन्द्रार्कं पंचमीबलिः कार्यः। शुभं भवतु।

जालोर से पश्चिमोत्तर कोण में लालदरवाजे से चार फर्लांग के फासले श्रीगोड़ीजी का मन्दिर है, जो एक परकोटे के बीच में मजबूत बना हुआ है। इसमें श्रीगोडी—पार्श्वनाथ के चरण स्थापित हैं। इनके पव्वासन पर इस प्रकार लेख है—

" श्रीपरमात्मने नमः। सम्वद्वैश्वानर—कृत्तिकातनयानन-नाग—रोहिणीरमण (१८६३) प्रमिते वसुनयनाश्ववसुन्धरा (१७२८) परिमिते शके च प्रवर्त्तमाने मासोत्तम—फाल्गुन-मासबलत्ते पत्ते द्वादशी १२ तिथौ भृगुवासरे कुन्दकुमुदचञ्च-त्चारुचन्द्रचन्द्रिकातिविशदविलसद्यशोवितानधवलिताखिलजग—न्मंडलेषु, तरुणतरणिमंडलसमप्रभाऽखंडाऽस्खलितजयोत्थ-तापज्वलज्ज्वालामालावलीढवैरिजनकाननोद्भूतप्रभूतधूमधूसरि-तगीर्वाणपथेषु, राजराजेश्वरमहाराजाधिराजश्री १०८ श्रीमान-सिंहेषु, तत्सुत श्रीमन्महाराजराजकुमारश्रीछत्रसिंहजीविजयपा-लितश्रीजालोरदुर्गे श्रीमद्गवडीपार्श्वनाथजिनेन्द्राणामयं प्रासादः, श्रीबृहत्खरतरभट्टारकीयगच्छाधिराजजंगमयुगप्रधान—भट्टारकश्री श्रीजिनहर्षसूरीश्वरैः प्रतिष्ठितः। ओशवंशोद्भव—बदाभिधानगो-

त्रीयमुख्यमंत्री मु० अखयचन्द्रेण सुत–लक्ष्मीचन्द्रयुतेनाऽयं प्रासादः कारितश्च । कारिगर सोमपुराकाशीराम–कृतः ।

शहर के बाहर 'संडेलाव' नामका बड़ा तालाव है, उसके किनारे पर एक चामुंडामाता का देवल है । उसके लगते ही एक झोंपडी में एक मूर्त्ति है, जो चोसठजोगणी के नाम से प्रसिद्ध है। उसके नीचे लेख खुदा हुआ है कि–

" संवत ११९५ वैशाखवदि १ शनौ श्रीजाबालिपुरीयचैत्ये सामंतश्रावकेण वीरकपुत्रेण उवोचनपुत्र शुभंकर खेहडसहितेन च तत्पुत्रदेवांगदेवधर....तथा जिनमतिभार्या प्रोत्साहितेन श्रीसुविधिदेवस्य खत्तके द्वारं कारितं धर्मार्थमिति, मंगलं महाश्रीः ।

इस लेख से पता लगता है कि–जालोर में सं० ११७९ में सुविधिनाथ का मन्दिर विद्यमान था, परन्तु उसके ध्वंस हो जाने से उसके उक्त लेखवाले ताक की कायोत्सर्गस्थ जैनमूर्त्ति को उठा कर जैनेतरोंने यहाँ स्थापन कर दी और उसके अंग प्रत्यंग घिसा कर जोगिनी के समान बना डाली ।

शहर के निकटवर्त्ती सोनागिर के किले के जिनमन्दिरों की कतिपय जिनमूर्त्तियों पर रहे हुए लेख इस प्रकार हैं—

१–संवत् १६८१ वर्षे प्रथम चैत्रवदि ५ गुरौ अद्येह श्रीराठोडवंशे श्रीसूरसिंघपट्टे श्रीमहाराज श्रीगजसिंहजीविजयीराज्ये मुहणोत्रगोत्रे वृद्धउसवालज्ञातीय सा० जेसा भार्या जयवंतदे पुत्र सा०जयराज भार्या मनोरथदे पुत्र सा०सादा सुभा

सामल सुरताण प्रमुख परिवारपुण्यार्थं श्रीस्वर्णगिरिगढदुर्गो-परिस्थित–श्रीमत्कुमरविहारे श्रीमतिमहावीरचैत्ये सा० जेसा भार्या जयवंतदे पुत्र सा० जयमलजी वृद्धभार्या सरूपदे पुत्र सा महणसी सुंदरदास आसकरण लघुभार्या सोहागदे पुत्र सा० जगमालादि पुत्रपौत्रादि श्रेयसे सा० जयमलजी नाम्ना श्रीमहावीर बिंबं प्रतिष्ठामहोत्सवपूर्वकं कारितं, प्रतिष्ठितं च श्रीतपागच्छपक्षे सुविहिताचारकारक शिथिलाचारनिवारक साधुक्रियोद्धारकारक श्रीआणंदविमलसूरि-पट्टप्रभाकरश्रीविजयदानसूरि-पट्टशृंगारहारमहाम्लेच्छाधिपतिपातशाहि–श्रीअकबरप्रतिबोधकतदत्त--जगद्गुरुविरुदधारक श्रीशत्रुंजयादितीर्थजीजीयादिकरमोचक तदत्तषण्मास अमारिप्रवर्त्तक भट्टारक श्री ६ हीरविजयसूरिपट्ट-मुकुटायमान भ० श्री ६ विजयसेनसूरिपट्टे संप्रति विजयमानराज्यसुविहितशिरःशेखरायमाण भट्टारक श्री ६ विजयदेवसूरीश्वराणामादेशेन महोपाध्याय श्रीविद्यासागरगणिशिष्य पंडित श्रीसहजसागरगणिशिष्य पं० जयसागरगणिना श्रेयसे कारकस्य।

२—संवत् १६८३ वर्षे आषाढ वदि ४ गुरौ श्रवणनक्षत्रे श्रीजालोरनगरे स्वर्णगिरिदुर्गे महाराजाधिराजमहाराजाश्रीगजसिंहजीविजयराज्ये मूहणोत्रगोत्रे दीपक मं० अचला पुत्र मं० जेसा भार्या जैवंतदे पु० मं० श्रीजयमल्लनाम्ना भा० सरूपदे द्वितीया सुहागदे पुत्रनयणसी सुंदरदास आसकरण नरसिंहदास प्रमुख कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीधर्मनाथबिंबं कारितं, प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छनायक भट्टारक श्रीहीरविजयसूरि–पट्टालंकार-भट्टारक–श्रीविजयसेनसूरिभिः।

३—संवत् १६८३ आषाढवदि ४ गुरौ सूत्रधार उद्धरण तत्पुत्र तोडरा-ईसर-डाहा-दुहा-हाराकेन कारापितं, प्रतिष्ठितं तपागच्छे भ० श्रीविजयदेवसूरिभिः ।

४—संवत् १६८१ वर्षे प्रथम चैत्र वदि ५ गुरौ श्रीमुहणोत्रगोत्रे सा० जेसा भार्या जसमादे पुत्र सा० जयमल भार्या सोहागदेवी श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठामहोत्सवपूर्वकं, प्रतिष्ठितं च श्रीतपागच्छे श्री ६ विजयदेवसूरीणामादेशेन जयसागरगणिना ।

५—संवत् १६८४ माघसुदि १० सोमे श्रीमेडतानगरवास्तव्य उकेशज्ञातीय पामेचागोत्रतिलक सं० हर्षा लघुभार्या मनरंगदे सुत संघपति सामीदासकेन श्रीकुंथुनाथबिंबं कारितं, प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छे श्रीतपागच्छाधिराज भट्टारक श्रीविजयदेवसूरिभिः आचार्यश्रीविजयसिंहसूरिप्रमुखपरिवारपरिकरितैः; श्रीरस्तु ।

ये पांचों लेख मुनिजिनविजयलिखित 'प्राचीन जैनलेखसंग्रह' द्वितीयभाग के पृष्ठ २१३ से उद्धृत किये गये हैं और उसमें ये लेखाङ्क ३५४, ३५५, ३५६, ३५८ और ३५९ नम्बर तरीके दर्ज किये गये हैं ।

१६१ मांडवला—

यहाँ ओसवाल जैनों के ११० घर हैं, जो जिज्ञासु पर साधुओं के अनागमन से विवेकशून्य हैं । गाँव में एक उपासरा, एक धर्मशाला और उपासरा के एक कमरे में गृहमन्दिर है जिसमें

भगवान् श्रीमहावीर स्वामी की एक हाथ बडी प्राचीन प्रतिमा स्थापित है, जो सुन्दर और दर्शनीय है ।

१६२ एलाणा—

इस छोटे गाँव में ओसवाळ जैनों के ४० घर, एक उपासरा और एक गृह—मन्दिर है। जिसमें मूलनायक श्रीमहावीरजी हैं जो अर्वाचीन हैं। गाँव के बाहर गोलजाने के रास्ते पर एक जूना शिखरवाला मन्दिर हैं, जिसमें महावीर भगवान् के चरण स्थापित हैं, जो श्री गोडीजी के नाम से पूजे जाते हैं ।

१६३ गोल—

सुगरीनदी के बांये किनारे पर बसा हुआ यह छोटा, पर अच्छा कसबा है। यहाँ ओसवाल जैनों के २०० घर हैं, जो भावुक, और लकीर के फकीर हैं। गाँव में एक उपासरा, एक धर्मशाला और दो जिनमन्दिर हैं। उपासरा के दहिने भाग में पहला जूना मन्दिर है जिसमें सफेदवर्ण की सवा हाथ बड़ी श्रीऋषभदेव की प्राचीन—मूर्त्ति स्थापित है। उपासरा के बांये भाग में दूसरा नया मन्दिर है, जो अति सुंदर और ऊंची खुरशी पर बना हुआ अप्रतिष्ठित है ।

१६४ खरल—

यहाँ ओसवाल जैनों के ७ घर हैं, जो विवेकशून्य और जैनेतरों के समान हैं। यहाँ के महाजन मिथ्यात्वी भोपा, खेतला, भवानी आदि देव देवियों के उपासक हैं। साधुओं के योग्य यहाँ कोईस्थान नहीं है और न कोई साधुओं की आहारादि भक्ति करनेवाला है ।

१६५ ओरवाड़ा—

यह छोटा गाँव है, जो सुगरीनदी के ठीक दहिने तट पर है। इसमें ओसवालों के २५ घर और एक पक्की छोटी धर्मशाला है। धर्मशाला की पिछली पड़तल जमीन पर जिनालय की नींव भरी पड़ी है लेकिन आपसी रंज के कारण मन्दिर नहीं बना। यहाँ के जैन भी आचार-विचार और धार्मिक भावना से रहित हैं।

१६६ सायला—

सूकड़ी (सुगरी) नदी के दहिने तट पर यह कसबा बसा हुआ है। यहाँ ओसवाल जैनों के १२८ घर हैं, जो सनातनत्रिस्तुतिक संप्रदाय के और अति श्रद्धालु हैं। सदर चोवटे में शिखरबद्ध अच्छा जिनमन्दिर है और उसमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी की श्यामवर्ण की दो हाथ बड़ी तथा उनके दोनों तरफ इतनी ही बड़ी दो मूर्त्तियाँ विराजमान हैं। इसमें पाषाण की कुल प्रतिमाएँ दश हैं और इसके प्रवेशद्वार के ऊपरी भाग में एक शिलालेख इस प्रकार लगा हुआ है—

श्रीविजयराजेन्द्रसूरिभ्यो नमः। श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैनश्वेताम्बर-सायलानगर के सकल संघने इस मन्दिर को बनवाया, और इसमें सं० १९७१ माघसुदि १४ शनिवार के दिन श्रीविजयधनचन्द्रसूरिजी महाराज के हाथ से प्रतिष्ठांजनशलाका करा के श्रीपार्श्वनाथ भगवान् आदि (१०) प्रतिमाएँ बैठाई.”

गाँव से पश्चिम ब्रह्मपुरी के फला पर (बाहर के समतल

मैदान में) एक दूसरा शिखरवाला छोटा मन्दिर है जो प्राचीन और महावीरप्रभु का माना जाता है। पेश्तर इसमें महावीर भगवान् की प्रतिमा स्थापित थी, परन्तु उसके अलोप (गुम) हो जाने से मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ, और दोनों बाजू नेमनाथ तथा नमिनाथजी की प्रतिमा श्रीधनचन्द्रसूरिजी के उपदेश से विराजमान की गई हैं। इसके भीतरी प्रवेशद्वार के बांये तरफ जने समय का शिला-लेख लगा है कि--

संवत् १६६९ वर्षे वैशाखवदि १३ दिने शमदानगरे समस्तसंघेन श्रीमहावीरचैत्यं कारापितं, तेलहरागोत्रे शाह खेता शा० धाडसी समेन बृहच्छीखरतरगच्छे युगप्रधानश्रीजिनचन्द्रसूर्यादेशेन पंडितराज-प्रमोदगणिवराणां शिष्यनन्दिजयेन प्रतिष्ठितं, श्रीमस्तु।"

यहाँ से पूर्वोत्तर 'आलासण' नामक छोटा गाँव है, जिसमें ओसवाल त्रिस्तुतिकजैनों के ३१ घर हैं, जो भावुक और श्रद्धालु हैं। यहाँ एक शिखरबद्ध मन्दिर है जो अप्रतिष्ठित है और इसकी प्रतिमाएँ सायला के गाँववाले मन्दिर में रक्खी हुई हैं।

१६७ चोराऊ—

गाँव छोटा, पर भावुक है, यहाँ ओसवालजैनों के ३४ घर और एक छोटी धर्मशाला है। यहाँ पर जिन-मन्दिर नहीं हैं, पर अब एक गृहमन्दिर बनवाना शुरू किया गया है।

१६८ भांडवा—

यह छोटा गाँव, तीर्थस्थान है और इसका प्राचीन नाम

मांडवपुर है। यहाँ जैनियों की वस्ती नहीं है, परन्तु सौधशिखरी प्राचीन एक जिन मन्दिर है, जिसमें श्रीमहावीर भगवान् की १ हाथ बडी प्रतिमा विराजमान है जो प्राचीन, चमत्कारिणी और खंडित है। यहाँ के जैनेतरों की भी इस प्रतिमा पर अटल श्रद्धा है और हरएक सांसारिक कार्यों के लिये ये लोग वीरप्रभु की मानता लेते हैं और इन लोगों के अटल विश्वास से वह सफल भी होती है।

इसके भीतरी मंडप के दहिने भाग के भींति स्तंभे पर चार पंक्ति का जूना शिला-लेख है, जो घिसा जाने से बराबर उकलता नहीं है। लेकिन जितना अंश वांचा जाता है उस से जान पड़ता है कि यह मन्दिर विक्रम की बारहवीं सदी में बना है और इसकी संवत १३४० पोष सुदि ९ को प्रतिष्ठा हुई है। तेरहसौ के साल की प्रतिमा विलुप्त हो जाने से वर्त्तमान महावीर प्रतिमा कहीं से लाकर पीछे से विराजमान की गई है। इसके मंडप में पाषाण की छ प्रतिमा और भी स्थापित है जो नवीन हैं।

मन्दिर के बगल में ही एक दो मंजिली मजबूत धर्मशाला है जिसमें ४०० आदमी आनन्द से ठहर सकते हैं। यहाँ हरसाल चैत्री और कार्त्तिकी पूर्णिमा के दो मेले भराते हैं जिनमें तीस तीस कोश तक से ९, या ६ हजार यात्री इकट्ठे होते हैं और दूज तक ठहरते हैं। इस अवसर पर नवकारासियाँ और प्रभावनाएँ जुदे जुदे गाँववाले सद्गृहस्थों के तरफ से होती हैं। मन्दिर में भी दोनों मेलाओं में तीन चार हजार रुपयों की पैदास

होती है। इसके अलावा दो चोवीसी गाँवों में वसनेवाले जैनों में इस मन्दिर के लिये लगे हुए लागे की रकम भी सालियाना दो हजार की आती है। इस प्रकार पांच छ–हजार रुपया सालियाना पैदावारी होने पर भी यहाँ पूजा का प्रबन्ध अच्छा नहीं है और न यात्रियों के ठहरने के लिये कोई अच्छा बन्दोबस्त है।

१६९ मेंगलवा—

यहाँ ओसवालजैनों के ८६ घर, एक छोटा उपासरा, और एक जिन मन्दिर है। यहाँ साध्वागमन के अभाव से जैनियों में विवेक की बहुत खामी है पर तो भी भक्ति–संपन्न है। यहाँ के सभी जैन सनातन त्रिस्तुतिक संप्रदायके हैं और भाँड़वा तीर्थ का वहीवट इन्हीं के हाथ में है।

१७० आणा—

यह गाँव छोटा है, इसमें जैन ओसवालों के १५ घर हैं, जो अच्छे भावुक हैं। यहाँ एक उपासरा और उसके एक कमरे में प्रतिमा है जो नवीन और भगवान पार्श्वनाथजी की है। कहा जाता है कि पेश्तर यहाँ जैनों के १०० घर थे, परन्तु व्यापार की कमी होने से आजीविका के लिये आसपास के दूसरे गाँवों में जाके बस गये। यहाँ के ठाकुर लक्ष्मणसिंहजी अच्छे सत्संगी और धर्मानुरागी हैं।

१७१ ऊनडी—

इस गाँव में ओसवालजैनों के ३० घर हैं, जो विवेकहीन

और कलह–प्रेमी हैं। यहाँ एक उपासरा और उसके एक विभाग में जुदा प्रतिमा विराजमान करने का स्थान है। परन्तु पारस्परिक कलह के कारण अभी जिनप्रतिमा स्थापित नहीं हुई।

१७२ पांथेडी—

इस गाँव में ओसवाल जैनों के ३० घर हैं, परन्तु उनमें कई वर्षों से तीन तड़ें पडी हुई हैं, जो तीन तेरह की उक्ति को चरितार्थ करती हैं। यहाँ के जैन किसी संप्रदाय विशेष के नहीं है किन्तु जैनतरों से भी गये गुजरे हैं। साधुओं के ठहरने लायक यहाँ कोई स्थान नहीं है। गाँव से पश्चिम थोडी दूरी पर एक छोटा देवल है, जिसमें गोडीपार्श्वनाथजी के चरण स्थापित हैं। चरणों के ऊपर के लेख से मालूम होता है कि–सं० १८८६ वैशाखसुदि ५ भृगुवार के दिन विजयधर्मसूरिजी के आदेश से पं० भाग्यविजयजीने प्रतिष्ठा करके इन चरणों की स्थापना की।

१७३ दासपा—

यहाँ ओसवालजैनों के ८० घर हैं, जिनमें मन्दिरमार्गीयों के ५० और स्थानकवासियों के ३० घर हैं। गाँव के मध्य भाग में शिखरबद्ध जिनमन्दिर है, जिसमें श्रीचन्द्रप्रभस्वामी की पोन हाथ बड़ी मूर्त्ति स्थापित है। इसके लगते ही दहिने तरफ पक्का उपासरा है।

१७४ पादरा—

एक छोटी पहाडी के पास यह गाँव बसा हुआ है। इस

में ओसवालजैनों के ३० घर हैं, जो नाममात्र के जैन और मिथ्यात्वी देवों के श्रद्धालु हैं।

१७५ नरता—

यह गाँव छोटा है, इसमें ओसवालजैनों के ११ घर हैं, जिनमेंभी कई वर्षों से दो तडे हैं। यहाँ के महाजन धर्मभावनासे रहित होने से यहाँ साधुयोग्य कोई स्थान नहीं है।

१७६ भीनमाल—

मारवाड में जोधपुरियासत के जसवन्तपुरा परगने का यह अच्छा कसबा है। जो लगभग २० से ३० फीट ऊंची और उत्तर–दक्षिण पौन मील लंबी विस्तृत टेकरी (पहाड़ी ज़मीन) पर बसा हुआ है। यह उत्तर २४°४२' अक्षांश और पूर्व ७२०४० रेखांश है। इसकी सीमा में उत्तर सुकडी (सुकी) नदी, पूर्व आबू की पर्वतमाला, दक्षिण सांचोर प्रदेश और पश्चिम लूणी नदी है

यह अणहिलवाड़ (पाटण) की स्थापना के पूर्व गुजरात की मुख्य राजधानी का नगर समझा जाता था और तेरहवीं सदी तक इसकी गौरवता, तथा व्यापार समृद्धि ज्यों की त्यों बनी रही। परन्तु सन् १५८७ इस्वी में मुगल शहेनशाह अकबरने मारवाड़–विभाग के साथ इसको जोड़ दिया, बाद में जोधपुर के महाराजा

---

१ यह सिरोही और मारवाड के सरहद के पहाडों से निकली है और जालोर होकर लूणी नदी में मिल गई है। यह १३० मील लंबी है, और इसमें हमेशां जल नहीं रहता।

जसवन्तसिंहजीने राणा सालजी से लोयाणा (जसवंतपुरा) को छीन कर उस परगने में भीनमाल को मिला दिया। उस समय से अब तक यह उसी परगने में गिना जाता है।

श्रीमालपुराण के लेखानुसार यह नगर सत्ययुग (कृतयुग) में श्रीमाल, त्रेतायुग में रत्नमाल, द्वापरयुग में पुष्पमाल और कलियुग में भिन्नमाल के नाम से प्रसिद्ध हुआ और लावण्यसमय-रचित 'विमलप्रबन्ध' के कथनानुसार सत्ययुग में पुष्पमाल, त्रेता में रत्नमाल, द्वापर में श्रीश्रीमाल और कलियुग में भिल्लमाल नाम से पहचाना गया। श्रीइन्द्रहंसगणिने स्वरचित 'उपदेशकल्पवल्ली' नामक ग्रन्थ में लिखा है कि--

"श्रीमालमिति यन्नाम, रत्नमालमिति स्फुटम्।
पुष्पमालं पुनर्भिन्नमालं युगचतुष्टये ॥ १ ॥
चत्वारि यस्य नामानि, वितन्वन्ति प्रतिष्ठितम्।
अहो नगरसौन्दर्यमाहार्यं त्रिजगत्यपि ॥ २ ॥"

प्रबन्धचिन्तामणि, विमलप्रबन्ध और ओसवंशमुक्तावली आदि जैन ग्रन्थ, और श्रीमालपुराण तथा भोजप्रबन्ध आदि जैनेतर ग्रन्थों में इसके जुदे जुदे नाम पडने के कारणों की कथाएँ लिखी हुई हैं, जो उन्हीं ग्रन्थों से बांचकर समझ लेना चाहिये।

प्राचीन जमाने में इस नगरी के चारों ओर पांच योजन (२९ कोश) की शहरपना और खाई थी, जो जल से परिपूर्ण भरी हुई थी। इस शहरपना (कोट) के चोरासी दरवाजे और

उनेंम चोरासी दरीखाने थे। एक हजार गणपति, ४००० क्षेत्र-पाल, ८४ चंडिका, ११००० महादेव के लिंग, और १८००० दुर्गादेवी, आदि के देवल थे। इनके अलावा चार हजार वेदशाला, १००० ब्रह्मशाला, ४००० मठ, १८००० व्यापारशाला, दो लाख दुकानें, और एक लाख साठ हजार चोसठ सतखंडे महेल थे। ४५००० ब्राह्मण, ७०० ऋग्वेदी, १२००० यजुर्वेदी, २२००० सामवेदी, ४००० अथर्ववेदी ब्राह्मण रहते थे, और ६०००० श्री मालबंशी—महाजन, तथा पोरवाड़ और आठ हजार चोसठ धनोत्कटा (सुनार), २००० कंसारा, ९००० नगरनायिका, ३६००० क्षत्रिय, ५००० रंगारे, ५००० सोमपा, ५००० कुंभार, ३००० नट, १००० नाई, १००० धोबी, ४००० माली और अन्य-जातियों के ५००० वैश्य, तथा २५०० शूद्र निवास करते थे; और वे सभी समृद्धि—पूर्ण थे। परन्तु काल की विचित्रता से और नगर के ऊपर समय समय पर आये हुए राजकीय हमलों से इस नगर की उक्त समृद्धि दिनों दिन घटती गई और वह सन् १८९१ में नीचे मुताबिक रह गई—

३७५ महाजन जैन	१२ कुंभार	१२ गोला
२०० श्रीमालब्राह्मण	४ मुसलमान कुं०	२ जाट
७५ सेवक, भोजक	७० रबारी	१ देशंत्री
३० सुनार	१० भिक्षुक, साधु	१ आचारी
३५ बंधारा	१० सामी अलीक	१३ कोली
४ कंसारा	१५ पिंजारा मु०	३० वेश्या
३० घांची	३ लुहार	२ मेमन

२९ माली	१२ दरजी	२ रंगरेज
११ कठियारा	७ नाई	३० मोची
१२० भाट	१९ सोलंकी–जागीरदार	१ खाटकी
		१२० भील
१ विसायती मुसलमान तालावाला	२ बांभी	
१ सिलावट (कडीया)	४० वणकर (वांभीया)	
२ चूडीगर मुसल्मान	१ वाधरी	
१७ चमार (जूतीया)	८ मीरासी मुसलमान ढोली	
१ सरगरा		
५ नीरगर	१ भंगी (महतर)	

सन् १६११ में एक अंग्रेजी व्यापारी निकोलश उफ्लेट मारवाड़ में आया था, उसने भीनमाल को ३६ मील (१८ कोश) का घेराववाला, लुप्तप्राय अनेक तालाव और किलेवाला लिखा है। लेकिन आज यहाँ उसी जगह अनेक खंडेहर नजर पडते हैं और उनपर पीलुवृक्षों की भर–भार है। दक्षिण, उत्तर और पश्चिम तरफ सपाट तथा खुला मैदान है, जो पश्चिम में वेलुमय भूमि में मिल जाता है। मेदान की सपाटी पर छूटी छवाई पांचसौ और आठसौ फीट ऊंची छोटी छोटी पहाडियाँ (टेकरियाँ) हैं। शहर के बाहर पांच छः मील के फासले पर उत्तर में जालोरद्वार, पश्चिम में सांचोरद्वार, ईशान में सूर्यद्वार, अग्निकोन में लक्ष्मीद्वार; इन चार द्वारों के खंडेहर पड़े हैं। इसके भूमिशायी मकान, देवालय, और तालावों के विशाल खंडेहरों से अनुमान किया जा सकता है कि किसी समय यह शहर जन और धनसमृद्धि से परिपूर्ण होगा।

शहर से दक्षिण ८० वार दूर पूर्व में एक इंटो कीं बनी हुई टेकरी (धोरासा) है, जिस पर सूर्य (जगसोम) का सौधशिखरी दो मंजिला मन्दिर था, जो दो ओसवाल और एक पोरवाड़ का बनवाया हुआ था। सूर्य–मन्दिर के छबने के एक खंडित पत्थर पर लिखा है कि संवत् १११७ माहसुद ६ के दिन परमार राजा कृष्णदेव के समय में दो ओसवाल और एक पोरवाड जैनने मिलकर इसका उद्धार किया। इससे विदित होता है कि जैनोंने इसका उद्धार कराया है। दर असल में इस मन्दिर को सूर्यपूजक किसी शक, या हून जाति के राजाने सन् १६६ ईस्वी में बनवाया था। कहा जाता है कि ४२ फीट पहोली, ६० फीट लंबी और २० फिट ऊंची टेकरी पर यह मन्दिर बनाया गया था और इसका भीतरी प्रदक्षिणा मार्ग चार फीट पहोला तथा ग्यारह फीट लंबाईवाला था।

एक दन्तकथा में इसके बनने का कारण यह बताया जाता है कि परमार्हत राजा कुमारपाल के पांचसौ वर्ष पूर्व सन् ६८० इस्वी में यहां जगसोम नामक राजा हो गया है जो कनक, कनिष्क, या कनिष्कसेन इन नामों से भी प्रसिद्ध था। उसके पेट में सर्प था, जिससे उस को बहुत तकलीफ होती थी और शरीर भी दुर्बल हो गया था। एकदा समय राजा दक्षिण दरबाजे के पास गया और शीतल छाया देख कर सो गया। इस समय राजा फे पास एक कायस्थ उसकी सुरक्षा के लिये बैठा हुआ था। राजा को निद्रा आने बाद उसके पेटवाले सांपने अपना मुंह बाहर निकाला। उसे देखकर किसी भू–निवासी सांपने कहा कि ' तुं राजा के पेट से निकल जा और राजा को निश्चिन्त

कर ' पेटवाले सांपने निकल जाने के लिये आनाकानी की और फूंफाटे करने शुरू किये । तब बाहरवाले सांपने जोर से कहा कि ' यदि इस करीरवृक्ष के पत्ते और उसके नीचे रहे पुष्प के रस को शामिल घोंटके और मीठे तेल में उबाल के राजा को पिला दिया जाय तो राजा के पेट का सांप मर जायगा और वह दस्तके साथ निकल जायगा । ' इसके उत्तर में पेटवाले सांपने कहा कि ' अगर दरवाजे के पासवाले बिल में कल कलता हुआ तेल डाला जायगा, तो बिलगत सांप मर जायगा और दरमें से अगणित धनराशि मिलेगी।'

राजा के पास में बैठे हुए कायस्थने दोनों सांपों की कही हुई सांप विनाशक तरकीब को अपनी नोटबूक में लिख लीं और औषधी तैयार करके राजा को पिलाई जिससे गजा का शरीर तन्दुरस्त हो गया । बाद किसी अपराध के कारण राजाने कायस्थ को मरा डाला और उसकी नोटबुक के लिखे अनुसार दरवाजेवाले बिल में गर्म तेल डलाया, जिससे सांप मर गया और बिल से अपरिमित धन निकला, इस द्रव्य से राजा जग-सोमने सूर्य–मन्दिर तैयार कराया । इस मन्दिर के कतिपय सुरम्य सफेद पत्थर के स्तंभे शान्तिनाथ, सुपार्श्वनाथ के मन्दिर और सरकारी जूनी कचेरी में पड़े हुए हैं ।

शहर के पास एक जाकब (यक्षकूप) नामक तालाव है उसके उत्तर तट पर गजनीखान की कबर के पास एक खंडेहर है । इसमें एक थंभा है, जिस पर चाचिगदेव के समय का लेख है । उसमें थिरापद्रगच्छीय पूर्णचन्द्रसूरि का नाम और सं०

१३३३ आसोजसुद १४ के दिन श्रीमहावीरस्वामी की वार्षिक पूजा के लिये १३ द्रम और ७ विंशोपक दानमें दिये और महावीरप्रभु श्रीमाल लाये गये ऐसा लिखा है। इससे जान पड़ता है कि यह खंडेहर महावीर जैन मन्दिर का है। इसका अच्छी नकशीवाला जिनमूर्त्ति सहित एक तोरण का खंडित अंश तालाव की नैऋत्य नहर की भींत में लगा हुआ है।

वर्त्तमान भीनमाल में ओसवाल जैनों के ४९१ घर हैं, जो प्रायः सनातन त्रिस्तुतिक संप्रदाय के हैं और उनमें तपागच्छ तथा अंचलगच्छ ये दो विभाग हैं। तपागच्छ का एक उपासरा, एक धर्मशाला और अंचलगच्छ का एक उपासरा, एक धर्मशाला है। यहाँ सात जिन मन्दिर हैं, जो प्राचीन, भव्य और दर्शनीय हैं।

१ सब से प्राचीन और सौधशिखरी मन्दिर वधुवास में है, जो राजा कुमारपाल का बनवाया माना जाता है। कहा जाता है कि पेश्तर इसमें श्री आदिनाथ भगवान् की सर्वाङ्ग सुन्दर प्रतिमा विराजमान थी, जो महाराज श्रीहेमचन्द्रसूरिजी की प्रतिष्ठित थी। परन्तु उसके खंडित हो जाने से उसके स्थान पर सफेदवर्ण की दो हाथ बड़ी श्रीमहावीरस्वामी की भव्य मूर्त्ति पीछे से बैठाई गई है। इसकी पलांठी के नीचे लिखा है कि–

संवत् १८७३ वर्षे माघशुक्ला ७ शुक्रे महावीरजिनबिंबं श्रीभीनमालनगरे समस्तसंघेन कारापितं, भ० श्रीश्रीविजयजिनेंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं, श्रीतपागच्छे, कल्याणमस्तु।"

इस जिनालय में पाषाण की ७, सर्वधात की ७ और चांदी के गट्टा (सिद्धचक्र) जी २, एवं कुल १६ प्रतिमाएँ स्थापित हैं, जो सभी १८७३ के साल की प्रतिष्ठित हैं। यह मन्दिर अति जीर्ण है और एक विशाल चोक में बना है। चोक में एक जूने समय का बना हुआ भोंयरा भी है जो बन्द किया हुआ है।

२–३ दूसरा मन्दिर गांधी मूता के वास में है, जो शिखर बद्ध है। इसमें श्रीशान्तिनाथजी की सफेद वर्ण की तीन फुट बड़ी मूर्त्ति स्थापित है, जो सं १६३४ फागुण वदि १ शुक्रवार के दिन श्रीविजयहीरसूरिजी महाराज के हाथ से प्रतिष्ठित हुई है। इसमें पाषाण की १६, सर्वधात की २१, गट्टाजी १ और पादुका जोड़ १ एवं ३९ मूर्त्तियाँ बिराजमान हैं। इसीके दहिने भाग में तीसरा गृह–मन्दिर है, जिसमें परिकरसहित सफेदवर्ण की सवा हाथ बड़ी श्रीपार्श्वनाथजी की मूर्त्ति स्थापित है। इसकी पलांठी पर लिखा है कि—

"संवत् १६८३ वर्षे आषाढवदि ४ गुरौ श्रीमालवासी सा० पेमा खेमा पार्श्वबिंबं का०, प्र० श्री श्रीविजयदेवसूरिभिः।"

इसमें पाषाण की ७ और सर्वधात की १ एवं ८ प्रतिमाएँ हैं, जो १९ और १६ वीं सदी के बीच की प्रतिष्ठित हैं। इसके दहिने तरफ तपागच्छ का जूना उपासरा है जिसके एक कमरे के ताक में बादामीवर्ण की एक हाथ बडी श्रीमहावीर भगवान् की १८ वीं सदी की प्रतिष्ठित मूर्त्ति है। इसकी दृष्टि के

सामनेवाले कमरे में यतीजी का खान, पान, आसन और शयन होता है।

४ चौथा मन्दिर सेठों के वास में एक ऊंची खुरशी पर शिखरबद्ध बना हुआ है। इसमें सर्वधात की सवा हाथ बडी सुपार्श्वनाथ भगवान् की अति प्राचीन मूर्त्ति बिराजमान है, जो भीनमाल और नरतागाँव के बीच के खेत से प्रगट हुई थी। कहा जाता है कि जिस समय यह मूर्त्ति प्रगट हुई और इसकी खबर जालोर के मुसलमान राजा गजनीखान प्रथम को हुई, तब वह इस मूर्त्ति को सोनेकी समझ कर जालोर ले गया और सुनारों को बुला कर इस मूर्त्ति के हाथी, घोड़े तथा बैलों के गहने बनाने की आज्ञा दी। सुनारोंने मूर्त्ति को तोडने के लिये चोट लगाई, पर टांकियाँ टूट गई, किन्तु मूर्त्ति अंशमात्र भी टूटी नहीं, और उसी समय अगणित सांप विच्छु प्रगट हो गये जिनसे घबरा कर सुनार भग गये।

गजनीखानने सोचा कि यदि मूर्त्ति यहाँ रक्खी जायगी तो फ़िर कोई महान् उपद्रव खडा होगा ? इससे उसने पादरा गाँव के निवासी संघवी वरजिंग–महाजन को मूर्त्ति सोंप दी। उसने भीनमाल में नया मंदिर बनवा कर, उसमें इस मूर्त्ति को बिराजमान कर दी।

विक्रम सं० १७४६ के लगभग पं० शिवविजयजी के शिष्य कवि शीलविजय पंन्यास रचित तीर्थमाला में पश्चिमादिशि के तीर्थ वर्णन में लिखा है कि—

"जालोरनयरि गजनीखांन, पिसुन वचनि प्रभु धरिया वान।
वरजग संघवी वरीउ जाम, पास पेखीनिं जिभस्यूं धान॥ २५॥
स्वामी प्रतिमा धरणेंद्रि धर्यो, मानी मलिकति वली वसी कर्यो।
पूजी प्रणमी आप्या पास, संघचतुर्विध पूगी आस ॥२६॥
स्वामी सेवातणि संयोगि, पाल्हपरमारनो टलियो रोग।
सोल कोसीसां जिनहरासिरि, हेमतणां तिणि कीधां धरि॥२७॥
भीनमालि भयभजंनन नाथ,.....श्रीपारसनाथ।"

इस तीर्थमाला से प्रायः ऊपर की हकीकत मिलती जुलती ही है। इससे यह प्रतिमा कैसी चमत्कारिणी और महिमावाली है? यह भी साफ जाहिर हो जाता है।

संवत १६६१ में तपागच्छीय हंसरत्नसूरिजी के प्रशिष्य और पं० सुमतिकलश के शिष्य **कवि पुण्यकलशने** इन्हीं प्रभावशाली पार्श्वनाथ का **स्तवन** बनाया है। उसमें लिखा है कि—

" श्रीमाल में किसी व्यवहारीने सौधशिखरी सुन्दर जिनालय बनवा कर, उसमें स्वर्णपित्तलमय पार्श्वनाथ की भव्य मूर्त्ति विराजमान की थी, जो म्लेच्छों के शासनकाल में स्वर्णाभूषण सहित भूमि में भंडार दी गई थी। संवत १६५१ में देवल की ईंटे खडकाते हुए वह प्रतिमा प्रगट हुई। मेता लक्ष्मण और भावडह गच्छीय पंन्यास आदिने उसको शान्तिनाथ भगवान् के मन्दिर में स्थापन कर दी।

इस समय देशपति जालोर का गजनीखान था। उसका एक सुबा भीनमाल रहता था। उसने गजनीखान को सूचना दी कि

गरीबपरवर ! भीनमाल में सोने का एक अद्‌भुत भूतखाना जमीन से निकला है, उसको मंगा लीजिये, इतना धन छोडना नहीं चाहिये । इस सूचना को पाते ही गजनीखानने उस पार्श्वनाथ प्रतिमा को जालोर मंगवा ली ।

इधर सारा संघ एकत्रित होकर जालोर आया, और गजनीखान से अर्ज करना शुरू की कि ' यह भूतखाना बाबा आदम का रूप है, ईसकी खिजमत करना चाहिये, किन्तु इसका खून नहीं । आप इसको हमारे सुप्रत करिये और इसके एवज में चार हजार पीरोजी हमसे ले लीजिये ।

गजनीखानने जबाब दिया कि एक लाख रुपयों के मामले में चार हजार पीरोजी पर यह भूतखाना किस प्रकार छोडा जा सकता है !, अगर एक लाख रुपया देने को हो तो बात करो; बरना यहाँ से चले जाओ. ज्यादः शिरपच्ची करोगे तो नतीजा अच्छा नहीं आवेगा ' ।

यह सुनते ही सारे संघ में कोलाहल मच गया, उदासीनता छा गई और प्रतिमा वापिस किस तरह प्राप्त करना यह विचार करना भी भुला गया । कई भावुकोंने नाना अभिग्रह लिये । भीनमाल के संघवी—वीरचंद म्हेताने तो यहाँ तक दृढ निश्चय किया कि ' जबतक पार्श्वनाथ प्रतिमा ' की पूजा न करूं, तब तक अन्न जल भी नहीं लूंगा और यहां से हटूंगा भी नहीं । लोगोंने वीरचंद को इस कार्य के लिये बहुत रोका, पर वह अपनी प्रतिज्ञा से किसी प्रकार नहीं हटा ।

बाद में श्रीपार्श्वकुमार हरिताश्व पर चढ़ कर, और आभूषण-सहित नीलाम्बर वस्त्र पहने हुए धरणेन्द्र-पद्मावती के साथ प्रगट हुए। वीरचंदमेता को कहा कि 'तुं क्यों लंघन कर रहा है ?, इस हटको छोड़ दे ! जिसके लिये भूखे मरता है वह पार्श्वनाथ प्रतिमा तो गजनीखानने तोड डाली। वह अब किसी तरह आने (मिलने) वाली नहीं है।' इसके जबाब में वीरचंदमेताने कहा कि 'यदि वह प्रतिमा मिलनेवाली नहीं, तो मुझे अब जीना भी नहीं है। चाहे प्राण कल जाते हों तो आज ही चले जायँ, परन्तु मैं अपनी कृत-प्रतिज्ञा से किसी प्रकार भ्रष्ट होना नहीं चाहता।'

वीरचंदमेता की अचल प्रतिज्ञा से प्रसन्न होकर, धरणेन्द्रने गजनीखान के पास जाकर, कहा कि-'अरे अधम ! क्यों निश्चिन्त सो रहा है ? उठ, और भूतखाने को जल्दी भीनमाल पहुंचा दे। अगर मैं रुष्टमान हो गया तो तेरा खेदान-मेदान हो जायगा। इस पर भी तुं ध्यान देगा नहीं, तो तेरे ऊपर कलिकाल रूठ गया समझना।

धरणेन्द्रजी के कथन से गजनीखान तनिक भी भय-भीत नहीं हुआ। प्रत्युत उसके हृदय में अभिमान के बादल छागए। उन्मत्त की तरह वह एकदम बोल उठा कि-'अरे ! मैं खुदा का यार, चढियाते भाग्यवाला और सच्चे मुसलमान का बच्चा हूँ, तेरे जैसे काफर का जोर मेरे ऊपर नहीं चल सकता। अरे तुं तो मेरा सेवक है, तुं मुझे क्या डरा सकता है, तेरे जैसे सैंकडों भूतखाने को मुठी में रखता हूँ।' बस एसा कहके गजनीखानने सिरोही के सोनियों को बुला के आज्ञा दे दी

कि—'मूर्त्ति को तोड़कर टुकड़े करो, और इससे बीबी के लिये आभूषण और घोडे के गले में डालने को घूघरमाल बनाओ।'

आज्ञा मिलते ही सोनी मूर्त्ति को तोडने की तैयारी करने लगे, इतने में तो वहाँ हजारों भ्रमर गुंजारव करते हुए निकले। उन्होंने सोनियों, खान की बीवियों और पहरेदारों को काटना शुरु किया, जिससे चारों ओर हा हा कार मच गया। चारों तरफ घनघोर काली घटाओं के सहित प्रलयकारी तूफान खडा होने से जीने का भी संशय होने लगा। लश्कर में मार पडना शुरु हुई, हाथी घोडों का संहार होने लगा और स्थान स्थान पर लोग मरने लगे। गजनीखान भी भयविह्वल हो जमीनपर गिर पड़ा। हजारों लोग पोकार करने लगे कि—'खूनकार! पार्श्वनाथ की मूर्त्ति को भीनमाल पहुंचाओ, नहीं तो हम—आप सभी मर जायँगे।

आकाश से गेबी आवाज हुआ कि पार्श्वनाथ—प्रतिमा को सन्मान के साथ वापिस भीनमाल पहुंचा दे, नहीं तो वगैर मोत मर जायगा, तेरे को कोई यहाँ दफनानेवाला भी नहीं मिलेगा। गजनीखानने विचारा कि—'यह असली आदम का रूप है, यह केवल मान चाहता है, इसलिये अब हठ पकडना ठीक नहीं है।' ऐसा निश्चय करके पार्श्वनाथ—प्रतिमा को सिंहासन पर विराजमान की और हाथ जोडकर गजनीखान बोला कि—

'प्रभो! आप अल्ला, अलख और आदम हो, आपकी

जोड में पीर, पेगम्बर आदि कोई नहीं आ सकता। तुं साहेब, सुलतान और खुदा है, सारी दुनिया का तुंही एक पालक है। अतएव बालक पर महेर करो, आयंदे मैं कभी ऐसा अपराध नहीं करूंगा।' इस प्रकार अर्ज करके और सभी श्रीसंघ को बुला के भारी समारोह और जुलुस के साथ पार्श्वनाथ–प्रतिमा भीनमाल पहोंचा दी।

संघवी वीरचंद मेता बहुत प्रसन्न हुआ, उसने अष्टाह्निका–महोत्सव पूर्वक पार्श्वनाथ–प्रतिमा की पूजा कर के १७ दिन के बाद कृत अभिग्रह का पारणा किया। पार्श्वनाथ-प्रतिमा का अतिशय चारों तरफ प्रसरा, जैनधर्म की उन्नति हुई, सभी सन्ताप दूर हुए और प्रतिगृह मंगल बधाईयाँ हुई। संघने एकत्रित होकर स्वर्ग के समान कोरणी धोरणी से सुशोभित सौध-शिखरी नया मन्दिर बनवा कर उसमें सुरम्य मुहूर्त्त और बलिष्ट शुभ लग्न में सातिशयवाली पार्श्वनाथ–प्रतिमा को महा महोत्सव पूर्वक विराजमान की।"

कवि पुण्यकलशने यह हकीकत अपने समय में हुई घटना के दश वर्ष बाद लिखी है। अतएव इस घटना में बहुत कुछ सत्यांश माना जा सकता है। उक्त सभी उपलब्ध सामग्री से इस निश्चय पर निर्विवाद आना पड़ता है कि यह प्राचीन पार्श्वनाथ–प्रतिमा अद्‌भुत महिमशालिनी और अतिदर्शनीय है, और ऐसी प्रभावशालिनी प्रभुप्रतिमाओं के विद्यमान रहेने से ही इस पवित्र नगर को भिन्न भिन्न तीर्थमालाओं में तीर्थ तरीके स्थान मिला है।

इस प्रभावशालिनी मूर्त्ति की अञ्जनशलाका किस समय में किस समर्थ जैनाचार्य के हाथ से हुई, इसका कुछ भी पत्ता नहीं लगता। इस मन्दिर में पाषाण की छोटी बडी २३ और सर्वधात की ४ मूर्त्तियाँ स्थापित है, जो १२ और १८ वीं सदी तक की प्रतिष्ठित हैं। इसके दहिने तरफ के मैदान में एक पक्का भोंयरा है, जो हमेशा बन्द रहता है। उसके प्रवेश मार्ग के ऊपर के पाषाण के पाट में शिलालेख लगा है कि—

" श्रीपार्श्वपते नमः। संवत् १६७१ वर्षे शाके १५३६ वर्त्तमाने चैत्रसुदि १५ सोमवारे श्रीपार्श्वनाथदेवलमध्ये श्री-चन्द्रप्रभ-मंदिरं कारापितं, रुपइया सहस्र २०१५६) खर-चाणा, जालोरे खां पहाडखान गजनीखान सुतराज्ये, भीन-माल सोलंकी वीदा रहनेरा दोकड़ा श्रीपारसनाथरा देव का खरचाणा, प्र० उदिम श्रीवडवीरभीमशाखावाला श्रीभाव-चन्द्रशिष्य भट्टारक श्रीविजयचन्द्रसूरिवराभ्यां सलावट जसा सोढा देदा काम कीधुं नाम उकेर्यो श्री श्री "

५—पांचवां मन्दिर बाजार में जो छोटा, पर रमणीय शिखरवाला है। इसमें बादामी वर्ण की दो फुट बड़ी श्रीशान्ति-नाथजी की सुन्दर मूर्त्ति विराजमान है। इनके अलावा पाषाण की ६, और सर्वधात की २६ मूर्त्तियाँ भी स्थापित हैं, जो १२ से १८ वीं शताब्दी तक की प्रतिष्ठित हैं। कहा जाता है कि—प्रथम यहाँ मूलनायक श्रीआदिनाथस्वामी थे, परन्तु उनके कहीं विलोप हो जाने से, उनके स्थान पर यह नये श्रीशान्तिनाथजी

पधराये गये हैं जो १५ वीं सदी के प्रतिष्ठित हैं। इसके मण्डप के वांये तरफ के छवने में एक लेख खुदा हुवा है कि—

" श्रीश्रुताय नमः। संवत् १२१२ वैशाखसुदि ३ गुरुवासरे रत्नपुरे भूपतिश्रीरायपालदेवसुत महाराज सुवर्णदेवस्य प्रतिभुजायमान—महाराजाधिराजभूपतिश्रीरत्नपालदेवपादपद्मोपजीविनः पादपूज्यभांडारिकवीरदेवस्य महं० देवहृत्साढापातूसन्मतिमहामातृसलखणा श्रेयसे धानन्यासक्रयमहनीयजूपाभिधाना श्रेयो निमित्तं श्रीऋषभदेवयात्रायां भूपश्रीमान् मातृजागेरवलिनिमित्तं दत्तं शतमेकं द्रम्माः। देवकस्मलके प्रविष्टमत्र शतसुवर्णव्याजेन गोवृषसोलस्य लाषावतश्रेयोऽर्थप्रवर्द्धने लाषासाढा प्रभृतिश्रावकैर्येन सेसमलकेन वर्ष प्रति द्र० १२ द्वादशं देयं सेवार्थेति, मंगल महाश्रीः। "

इस मन्दिर के विषय में एक किवदन्ती भी प्रचलित है कि—कोई यति सात जिनमन्दिरों को कहीं से उड़ा के लेजा रहा था, उनमें से दो जिन मन्दिर अंचलगच्छ के यति भीमजी गुरांने मंत्र—बल से रोक लिये। जिनमें से एक भीनमाल में जिसका हाल उपर दिया गया है और दूसरा भीनमाल से उत्तर २० मील के फासले पर गाँव धाणसा में रख दिया। यह किंवदन्ती कितनी सत्यता रखती है ? इसको पाठक स्वयं समझ लेवें।

६—७ भीनमाल से १ मील पश्चिमोत्तर एक छोटे देवल में श्रीगोडीपार्श्वनाथ के चरण स्थापित हैं, जो अति प्राचीन हैं और इनको जैन जैनेतर दोनों मानते हैं। इसी प्रकार पौन मील

दक्षिण–पश्चिम कोन में परकोटे सहित मजबूत देवल है, जिसमें श्रीशंखेश्वर–पार्श्वनाथ के चरण विराजमान हैं जो प्राचीन हैं। यहाँ कार्त्तिक सुद १ का हरसाल मेला भराता है, जिसमें भीनमाल के अंचलगच्छीय और कुछ तपागच्छीय जैन दर्शनों के लिये आते हैं।

पंडित हीरालाल हंसराज संग्रहित 'श्रीजैनगोत्र–संग्रह' की प्रस्तावना में लिखा है कि–विक्रम सं० २०२ भीनमाल नगर में सोलंकी अजितसिंह का राज्य था। उसके समय में मीरगामोचा नामक म्लेच्छराजा भीनमाल पर चढ़ाई करके आया। उसके साथ यहाँ खूब युद्ध हुआ और इस युद्ध में आखिर राजा अजितसिंह सोलंकी मारा गया। बाद में कितने एक वर्ष तक इस नगर से बहुत लक्ष्मी लूट कर और कसबे को निर्जनप्राय करके मीरगामोचा चला गया। फिर सं० ५०३ में शहर को आबाद करके सिंह नामक राजाने राज्य किया। तदनन्तर इसकी गादी पर नीचे मुताबिक राजा हुए—

१	जइयाणकुंवर	५२७	७	जयन्त	७१९
२	श्रीकरण	५८१	८	जयमल	७३५
३	मूलजी	६०५	९	जोगसिंह	७४१
४	गोपालजी	६४९	१०	जयवंत	७४९
५	रामदास	६७९	११	भाणजी	७६४
६	सामन्त	७०५			

राजा भाणसिंह के शासनकाल में जैनशाहूकारों के सिवाय श्रीमालब्राह्मणों में ६२ और प्राग्वाटब्राह्मणों में ८ करोड़

पतियों की गणना में थे और उनको राजा के तरफ से खूब सन्मान मिलता था। इन सभी श्रीमन्त श्रीमाली और प्राग्वाट ब्राह्मणों को प्रतिबोध देकर शंखेश्वरगच्छीय श्रीउदयप्रभसूरिजीने जैनी बनाये थे। उनमें श्रीमालब्राह्मणों की गोत्र सहित नामावली इस प्रकार है—

	नाम.	गोत्र.		नाम.	गोत्र.
१	विजय	गौतम	१७	मना	सांख्य
२	शंख	हरियाण	१८	मना	महालक्ष्मी
३	श्रीमल्ल	कात्यायन	१९	वर्द्धमान	विज्जल
४	नोडा	भारद्वाज	२०	गोधा	द्वीपायन
५	बदा	आग्नेय	२१	भीम	पारध
६	भूना	काश्यप	२२	सारंग	चक्रायुध
७	राजा	वारिधि	२३	रायमल	जांगल
८	सोमा	पारायण	२४	धना	वाछिल
९	भूमच	वंसियाण	२५	जीवा	माढर
१०	जोगा	खुड्डीयाण	२६	विजय	तुंगियान
११	सालिग	लोढायण	२७	वायड	पायन्ना
१२	तोला	पारस	२८	कडुया	एलायन
१३	नारायण	चंडीसर	२९	झांझण	चोखायण
१४	झम्बा	देहिल	३०	प्रोषा	अछायण
१५	समघर	पापच	३१	राजपाल	प्राचीन
१६	शंकर	दाडिम	३२	सहदेव	कामरु

३३	कर्मण	मोभान	४८	घोड	जालंधर
३४	गोवर्द्धन	लाछिल	४९	मुंज	तक्षक
३५	मोका	चन्द्र	५०	सांतु	खागिल
३६	आदित्य	टाटर	५१	लखु	वायव
३७	हरखा	छाहिल	५२	डूंगा	सारधि
३८	विष्णु	राजल	५३	वाधा	धीरध
३९	देपा	स्वस्थित	५४	श्रीपाल	आत्रेय
४०	चंड	अमृत	५५	कीका	आहटा
४१	नाना	चामल	५६	गोना	कर्कश
४२	हरदेव	कौशिक	५७	सहसा	बंवायन
४३	भूमच	बहुल	५८	भीम	कुंभक
४४	भोला	नागड	५९	हपा	दीर्घायण
४५	सीपा	भायण	६०	रंग	तोतिल
४६	नथुय	डोड	६१	धरण	वदुसर
४७	हाथी	जीतधर	६२	गोविंद	वर्णिका

प्राग्वाट ब्राह्मणों के नाम गोत्र—

	नाम	गोत्र		नाम.	गोत्र.
१	नरसिंह	काश्यप	५	नीना	पारायण
२	माधव	पुष्पायन	६	नागड	कारिस
३	भूना	आग्नेय	७	रायमल्ल	वैश्यक
४	माणिक	बच्छस	८	अन्नो	माढर

ऊपर के सभी ब्राह्मण श्रीमन्त और बहुल कुटुम्बी थे। उपरोक्त नामवाले ब्राह्मण और उनके कुटुम्बियों में से जिन्होंने

जैनधर्म अंगीकार किया वे श्रीमाल और पोरवाड जाति के महाजन कहलाये। भीनमाल की दशा बिगडे बाद यही, या इन्हों के वंशज हिन्दुस्थान के चारों और जाकर वस गये।

कुलगुरु की स्थापना—

विक्रम सं० ७७५ में श्रीसोमप्रभाचार्य के उपदेश से माणराजाने सिद्धगिरि और गिरनारजी का संघ निकाला, जिसमें ७ हजार रथ, १२५००० घोडे, १००११ हाथी, ७००० पालखी, २५००० ऊंट, ५०००० बैल और ११००० गाड़ी आदि सामग्री थी। श्रीउदयप्रभसूरि, और सोमप्रभाचार्य आदि साधु साध्वी समुदाय भी संघ के साथ बहु संख्या में था। यात्रा करके संघ जब सकुशल वापिश लोट के भीनमाल आया, तब भाणराजा को संघवी पद का तिलक निकालने के निस्वत हकदारी का झगड़ा उठा। उदयप्रभसूरिने कहा—तिलक निकालने का हक हमारा है और सोमप्रभाचार्यने कहा कि हमारा है। इस झगड़ें को हमेश के लिये मिटा देने को वर्द्धमानपुर में चोरासी गच्छ के आचार्योंने सभा (कान्फ्रन्स) भरके यह निर्णय किया कि—

कोई आचार्य किसीके श्रावक को उसके परंपरागत कुलगुरु की आज्ञा विना संघवीपद का तिलक, व्रतोच्चार और दीक्षा आदि न करे। उसको हरएक कार्य अपने कुलगुरु के पास, या उनकी आज्ञा से करना चाहिये। यदि कुलगुरु दूर देश में होवे तो उसको बुलाके, अथवा उसकी आज्ञा के आने बाद ही संघवीतिलक आदि कार्य करना कराना चाहिये। इस मत-

लब का लेख करके उसके ऊपर नागेन्द्रगच्छीय सोमप्रभाचार्य, उपकेशगच्छीय सिद्धसूरि, निवृतिगच्छीय महेन्द्रसूरि, विद्याधर-गच्छीय हरियानन्दसूरि, ब्रह्माणगच्छीय जज्जगसूरि, षंडेरक-गच्छीय ईश्वरसूरि, और बृहद्गच्छीय उदयप्रभसूरि आदि चोरासी गच्छ के नायकों ने सहीयाँ की और उसमें भाणराजा की साक्षी डाली। यह निर्णय विक्रम सं० ७७९ चैत्रसुदि ७ के दिन हुआ। बस तभी से महाजनों के पीछे कुलगुरुओं का रगडा लगा और धीरे धीरे वे कुलगुरु परिग्रह धारी बन कर घरबारी बन गये। इस प्रकार कुलगुरुओं की उत्पत्ति भीनमाल में हुई।

१७७ रोपी—

यह सागी नदी के दहिने तट पर वसा हुआ है। यहाँ औदीच्य ब्राह्मणों के ९० घर हैं, जो खेती से गुजारा करते हैं। ओसवालों की भीनमाल की यहाँ दो दुकाने हैं, इससे यहाँ साधुओं को किसी तरह की तकलीफ नहीं पडती।

१७८ सीलाण—

विकट छोटी छोटी पहाडियों की समविषम जमीन पर वसा हुआ यह छोटा गाँव है। यहाँ विवेकशून्य ओसवाल और पोरवाडों के ९ घर हैं। गाँव में एक उपासरा और उसके ऊपर के कमरे में सर्वधात की एक चोवीसी सिंहासन में विराजमान है, जो सं० १९३८ की प्रतिष्ठित है और प्रतिष्ठाकार आणन्दसूर-गच्छ के श्रीपूज गुणरत्नसूरि हैं।

१७९ छोटा रानीवाड़ा—

यहाँ ओसवाल जैनों के १५ और जैन पोरवाडों के ७ घर हैं, जो खेतला, भोपा और जैनेतर देवों के उपासक हैं। गाँव में एक उपासरा और उसीके एक कमरे में बीस अंगुल बड़ी सफेदवर्ण की श्रीपद्मप्रभस्वामी की प्रतिमा स्थापित है, जिसकी अंजनशलाका सं० १९९५ फागुण वदि ५ के दिन आहोर (मारवाड़) में श्रीराजेन्द्रसूरिजी महाराज के हाथ से हुई है।

१८० जाखड़ी—

यह छोटा गाँव है, इसमें पोरवाड़ जैनों के २० घर हैं, जो भावुक और धर्मप्रेमी हैं। गाँव में एक पुराना अच्छा उपासरा और उसके ऊपरी भाग में गृह मन्दिर है जिसमें मूलनायक श्रीसहसफणा—पार्श्वनाथ और उनके दोनों तरफ अनन्तनाथ भगवान् की सफेद वर्ण की तीन फुट बड़ी मूर्त्तियाँ विराजमान हैं। इनकी पलांठी पर एक ही मतलब के इस प्रकार लेख है—

संवत १९२१ शाके १७८६ प्र० माघशुक्ला ७ गुरु वा० अंचल० कच्छ० सांधाण० वा० ओसवं० लघुशा० लोडाइयाधुलागोत्रे शा० मांडणतेजसी भा० कुंअरबाई पु० शामाणक श्री सिद्धक्षेत्रे श्री पार्श्वनाथजिनबिंबं भरापितं गच्छनायक भ० श्री ७ रत्नसागरसूरिप्रतिष्ठितं। (मूल नायक)

"संवत् १९२१ शाके १७८६ प्रथम माघशुक्लपक्षे सप्तमी गुरुवासरे अंचलगच्छे कच्छदेशे मालनपुरनगरे

वास्तव्य ओसवंशे लघुशाखायां मामडागोत्रे सेठ नरशी नाथा भार्या कुंअरबाई तत्पुत्र सेठ हरसंगभाई श्रीसिद्धक्षेत्रे श्रीअनंतनाथजिनबिंबं भरापितं गच्छनायक भट्टारक श्री ७ रत्नसागरसूरीश्वर प्रतिष्ठितं । (दोनों बगल की)

१८१ रतनपुर—

मारवाड राज्य के दक्षिण भाग में डीसा स्टेशनसे २० कोश और जसवंतपुरा से १८ कोश के फासले पर यह कसबा आबाद है । विक्रम की ११ तथा १२ वीं सदी में यह एक अच्छे शहरों में शुमार किया जाता था । परन्तु श्रीमाल के ध्वंस के साथ साथ यह भी आज गामडे के रूप में आ गया । इस समय यहाँ एक भी जैन का घर नहीं है, शिर्फ तीस घर किसानों के है । जैनगोत्र संग्रह में जिखा है कि राजा हमीरजीं परमार के वंशज गोविन्द-शेठने सं० १३४१ के लगभग रतनपुर में ७२ जिनालयवाला आदिनाथ का विशाल मन्दिर बनवाया था और उसकी प्रतिष्ठा अंचलगच्छीय जयशेखरसूरिने की थी । वर्त्तमान में इसका खंडेहर मात्र है कुमारपाल के कतिपय चरित्रों से भी पता मिलता है कि—

परमार्हत राजा कुमारपालने भी रतनपुर में भगवान् पार्श्वनाथ का भव्य जिनालय बनवाया था जो श्रीहेमचन्द्राचार्य के हाथ से अन्तिम प्रतिष्ठा मन्दिर था । इसका भी हाल में यहाँ निशान तक दिखाई नहीं देता । गाँवसे पश्चिम बाहर एक महादेव का देवल है उसके गुंबज में एक शिला लेख इस प्रकार लगा हुआ है—

ॐ नमः शिवाय, भूर्भुवस्स्वश्चरं देवं वंदे पीठं पिनाकिनं

स्मरसि श्रेयसे यस्त्वं.....समस्तराजावलिविराजित महाराजाधिराज परमभट्टारक परमेश्वर निजभुजविक्रमरणांगण-विनिर्जित.....पार्वतीपतिवरलब्धप्रौढप्रताप श्रीकुमार-पालदेवकल्याणविजयराज्ये स्वे स्वे वर्त्तमाने श्रीशंभुप्रसादावाप्त-स्वच्छपूरत्नचतुराशिकायां महाराज भूपाल श्रीरायपालदेवान्म-हासन प्राप्त श्रीपूनपात्तदेव श्रीमहाराज्ञीगिरजादेवी संसारस्या-सारतां विचिंत्य प्राणिनामभयदानं महादानं मत्वाऽत्र नगर-निवासी समस्तस्थानपतिब्राह्मणान् समस्ताचार्यान् समस्तमहा-जनान् तांबोलिकान्प्रकृतिकिंकृतिनः संबोध्य संविदितं शासनं संप्रयुति। यथा—

अद्यामावास्यापर्वणि प्राणिनामभयदानशासनं प्रदत्तं स्नात्वा देवपितृमनुष्यान् केन संतर्प्य वारावार.....पूर्देवतां प्रसाद्य ऐहिकपारत्रिक फलभंगीकृत्य प्रेत्य यशोभिवृद्धये जीवस्यामारी-दानं मासे मासे एकस्यां चतुर्दश्यामामावास्यायां उभयोः पक्षयोः श्रेष्टतिथौ भूसहायशासनोदकपूर्वं स्वित्परंपराभिः प्रदत्तं, अस्म-दीय भुविभोक्ता महामात्यः सांधिविग्रहिक प्रतीतस्वपुरोहितप्रभृति समस्तठकुराणां तथा सर्वान्संबोधयत्यस्तु वः संविदितं..... .....कारापनाय.....महाजनानां पणेन लिख्यते राज्ञा समयं निग्रहणीयः श्रुत्वा शासनमिदमा चन्द्रार्कं यावत् पालनीयं। उक्तं च यथा व्यासेन—

बहुभिर्वसुधा भुक्ता, राजभिः सगरादिभिः।
यस्य यस्य यदा भूमी, तस्य तस्य तदा फलम् ॥१॥

सर्वानित्थं भविनः पार्थिवेन्द्रान्, भूयो भूयो याचते रामचन्द्रः ।
सामान्योऽयं धर्मसेतुर्नृपाणां, काले काले पालनीयो भवद्भिः ।२।

अस्मद्वंशसमुत्पन्नो धन्यः कोऽपि भविष्यति ।
तस्याहं करसंलग्नो, न लोप्यं मम शासनम् ॥ ३ ॥

अमावास्यां पुण्यतिथिं भांडप्रज्वालनं च पौर्विकैः कुंभकारैश्च नो कार्यं । तासु तिथिष्ववज्ञा विभयः प्राणिवधं कुरुते तस्य शिक्षापनां दद्मिद्र४चत्वारि। नदूलपुरवासी प्राग्वाटवंशजः शुभं कर्णाभिधानः सुश्रावक साधुधार्मिकः तत्सुतौ इह हि योनौ जातौ पूतिगसालिगौ ताभ्यां कृपापराभ्यां प्राणिनामर्थे विज्ञप्य शासनं कारापितं । स्वहस्तः श्रीपूनपात्तदेवस्य लिखितमिदं पारि० लद्धमीधरसुत ठ० जसपालेन प्रमाणमिति ।

यह फरमान–पत्र परमार्हत राजा कुमारपाल के राज्य समय में जैनमहाजन और विशेष करके नाडोल के रहनेवाले पूतिग सालिग दोनों भाइयों के प्रयत्न से जारी किया गया था । इससे उस समय यहां के राजाओं की जैनियों के साथ कितनी उदारता थी, इस बात का भी पता भले प्रकार लग सकता है ।

किसी समय यह नगर अपनी जैनसमृद्धि और धनसमृद्धि से इतर नगरों से किसी प्रकार कम नहीं था । परन्तु कालदोष से आज यहाँ तीस घरो से अधिक वसति नहीं रही । जैन घरों की आबादी से तो यह नगर हाथ ही धो बैठा है । अपसोस है कि जहाँ अमरपुरी के समान अद्वितीय शोभा विलास करती थी, वहाँ आज कुछ भी दिखाई नहीं देता, यह सब कालकराल का कोप नहीं तो और क्या है ?

१८२ भाटी—

इस गाँव में जैनों के तीन घर हैं जो धर्मभावना से रहित हैं। यहाँ जिनालय, उपासरा, धर्मशाला या साधु साध्वियों के उतरने लायक कोई भी स्थान नहीं है।

१८३ जाडिया—

इस गाँव में श्रीमालजैनों के ७ घर हैं जो समकितगच्छ के कहलाते हैं परन्तु इनमें तद्गच्छ संबंधी नियमों की गंध तक नहीं है और प्रायः जैनधर्म से अनभिज्ञ हैं। यहाँ जिनमन्दिर या जिन दर्शन नहीं है। गाँव में एक उपासरा है जो द्रव्य के अभाव से कई वर्षों से अधूरा ही पडा है।

१८४ धानेरा—

पालनपुर स्टेट का यह छोटा पर रमणीय कसबा है। यह रियासत पहले सोलंकी सरदारों और बाद में देवडा राजपूत सरदारों के और उनके वंशजों के अधिकार में कई सौ वर्ष तक रही। पालनपुर के गुजराती इतिहास में लिखा है कि सन् १७६८ इस्वी में पालनपुर के राजा बहादुरखान ने कतिपय सेना के साथ धानेरा जागीर पर चढाई की और अपने प्रबल तेज से राजपूत सरदारों के बल को कम करके इसके चोवीस गावों में राज्य का हिस्सा कायम किया और देवडा राजपूत सदाजी तथा सोनाजी के तीस गांवों को खालसे कर दिये। पेश्तर के मुताबिक हाल में भी ये गाँव तीसी चोवीसी के नाम से प्रसिद्ध हैं और धानेरा जागीर में शामिल हैं।

यहाँ तपागच्छ के ८०, समकितगच्छ (त्रिस्तुतिक संप्रदाय) के २८ और लोंकागच्छ के ८० घर हैं जो सभी श्रीमाली ओसवाल हैं। गाँव में एक उपासरा दो धर्मशाला, एक स्थानक, एक सार्वजनिक लायब्रेरी और एक श्रीयतीन्द्र जैन शिक्षा प्रचारक युवक नामक मंडल है। गाँव के सदर बाजार में सौधशिखरी भव्य जिन मन्दिर है जिसके नीचे का हिस्सा जो तलघर के नाम से पहचाना जाता है. प्राचीन है और इसके बांये हाथ की भींत के स्तम्भे में ७ पंक्ति का लेख खुदा हुआ है। इससे जान पडता है कि सं० १६७४ में देवडा पीथाजी जेपालजी के राज्य में ओसवाल श्रीमालज्ञातीय वृद्धशाखा के शाहजी श्रीरिखवा गोलेने इस मन्दिर (तलघर) को बनवाया और इसमें मूलनायक श्री शान्तिनाथजी की प्रतिमा स्थापित की। इसके उपर के भाग में यहाँ के संघने नया सुन्दर शिखरवाला मन्दिर बनवाया है।

१८५ रामसेण—

यहाँ श्रीमालओसवालों के १९ घर हैं जो जैन और जैनेतर सभी धर्मों को माननेवाले हैं। गाँव के दक्षिण किनारे पर एक प्राचीन जिनालय है जिसका जीर्णोद्धार थोडे ही दिन पहले हुआ है। इसके नीचे के हिस्से में मजबूत तलघर है जिसमें सफेदवर्ण की तीन तीन फुट् बडी श्रीऋषभदेवजी आदि ४ मूर्त्ति, तीन का उसगिया और चक्रेश्वरीदेवी की मूर्त्ति बिराजमान हैं। इनके अलावा एक पार्श्वनाथ भगवान की पंच तीर्थी भी है जो डीसातावे के गाँव सरत वासी कोली ठाकरडा के खेत से मिली है। इसके पृष्ठिभाग में लिखा है कि—

" संवत् १२८६ वर्षे वैशाखवदि १ गुरौ वा० राज सिंघस्तयोः सुत केल्हणभ्रातुर्वाग्भटप्रभृतैः कारिताः, प्रतिष्ठिता पं० पूर्णकलशेन । "

आचार्य श्रीमुनिसुन्दरसूरि स्वरचित गुर्वावली में लिखते हैं कि विक्रम सं० १०१० में आचार्य सर्वदेवसूरिजीने रामसैन्य नगर के श्रीऋषभदेव भगवान् के मन्दिर में आठवें तीर्थंकर श्री-चन्द्रप्रभ स्वामी के बिम्ब की विधिपूर्वक प्रतिष्ठा की । इस आशय को प्रगट करनेवाला गुर्वावली का श्लोक यह है—

नृपाद्दशाग्रे शरदां सहस्रे, यो रामसैन्याह्वपुरे चकार ।
नाभेयचैत्येऽष्टमतीर्थराजबिम्बप्रतिष्ठां विधिवत्सदर्च्यः

रामसेण से पूर्व १ मील जंगली धूल के ढुब्बे को खोदते हुए सर्वधात की एक जिनप्रतिमा की बैठक का परिकर निकला है जो बहुत सुन्दर और इस समय नवीन मन्दिर में रक्खा हुआ है । इसके नीचे दो पंक्ति का पद्यबद्ध ऐसा लेख खुदा हुआ है—

" अनुवर्त्तमानतीर्थप्रणायकाद्वर्द्धमानजिनवृषभात् ।
शिष्यक्रमानुयातो जातो वज्रस्तदुपमानः ॥ १ ॥
तच्छाखायां जातस्थानीयकुलोद्भुतो महामहिमा ।
चन्द्रकुलोद्भवस्ततो वटेश्वराख्यः क्रमबलः ॥ २ ॥
थीरापद्रोद्भूतस्तस्माद् गच्छोऽत्र सर्वदिक्ख्यातः ।
शुद्धाच्छयशोनिकरैर्धवलितदिक्चक्रवालोऽस्ति ॥ ३ ॥
तस्मिन्भूरिषु सूरिषु देवत्वमुपागतेषु विद्वत्सु ।
जातो ज्येष्ठार्यस्तस्माच्छ्रीशान्तिभद्राख्यः ॥ ४ ॥

तस्माच्च सर्वदेवः सिद्धांतमहोदधिः सदागाहः ।
तस्माच्च शालिभद्रो भद्रनिधिर्गच्छगतबुद्धिः ॥ ५ ॥

श्रीशान्तिभद्रसूरौ व्रतपतिजा.....पूर्णभद्राख्यः ।
रघुसेना....स्ति.....बुद्धिम् ॥ ६ ॥

....पयदिदं बिम्बं, नाभिसूनोर्महात्मनः ।
लक्ष्म्याश्चञ्चलतां ज्ञात्वा जीवितव्यं विशेषतः ॥ ७ ॥
गंगलं महाश्रीः ॥ संवत् १०८४ चैत्रपौर्णमास्याम् ॥ "

इस प्रशस्ति लेख से जाहिर होता है कि थीरापद्रगच्छीय आचार्य शान्तिभद्र के समय में वि० सं० १०८४ चैत्रसुदि १५ के दिन पूर्णभद्रसूरिजीने श्रीऋषभदेवस्वामी के बिम्ब की प्रतिष्ठा की और छट्ठे श्लोक के अनुसार रामसैन्य के राजा रघुसेनने प्रतिष्ठा कराई मालूम होती है ।

गुर्वावलीकारने सं० १०१० में जिस ऋषभदेवमन्दिर में चन्द्रप्रभस्वामी की प्रतिष्ठा का उल्लेख किया है । वह प्रशस्ति लेखवाले मन्दिर से पुराना मालूम होता है । संभव है कि सं० १०८४ के प्रशस्तिवाली प्रतिमा सर्वधातुकी और प्रमाण में आबु अचलगढ पर बिराजमान प्रतिमा के बराबर होगी ।

इन लेखों से यह बात निःसंशय हो जाती है कि विक्रम की ११ वीं सदी में यहाँ अनेक प्रभावक आचार्यों के हाथ से प्रतिष्ठाएँ हुई थीं और उस समय में रामसैन्य का राजा रघुसेन था, जो जैनी था और उसने यहाँ जैनप्रतिमाओं की स्थापना की थी। इस समय यहाँ के कतिपय स्थानों का खोदकाम करते प्राचीन

प्रतिमाएँ, इमारतों के खंडेहर, मन्दिरों के पत्थर, कूआ वावडियों के देखाव और सिक्के आदि प्राचीन उन्नति के स्मारक देखनेवालों के हृदय को खींचते हैं।

रामसेण का प्राचीन नाम रामसैन्य है। यह भीमपल्ली (भीलडिया) से उत्तर १२ कोश और डीसारोड़ से वायव्यकोण में १० कोश दूर है। यह गाँव वाघेला राजपूत ठाकुर के ताबे में है। यहाँ के जैनेतर लोगों का भी जिनमन्दिर पर यहाँ तक दृढ विश्वास है कि जिनमंदिर की कोई भी चीज कोई नहीं वापरता। एक वख्त बहार पडे हुए जिनमन्दिर के एक पत्थर को किसी किसानने उठा कर अपने कुए पर रख दिया। जोग ऐसा बना कि उसी दिन उसका बंधा हुआ कुआ गिर पड़ा। इससे किसानने पत्थर को लेकर पीछा जिनमन्दिर में रख दिया। इसी प्रकार मन्दिर की एक शिला को उठा कर ठाकुरने अपने बैठक के चौंतरे पर जड दी। मौका ऐसा बना कि उसी दिन ठाकुर को रात्रि के समय मरणान्त कष्ट होने लगा जिससे घबरा कर ठाकुरने शिला को पीछी मन्दिर पहुंचा दी। ऐसी एक दो नहीं किन्तु, अनेक घटनाए यहाँ के लोग कहते हैं। इसी भय से यहाँ के लोग मन्दिर की किसी वस्तुको उठाने तक की इच्छा नहीं करते।

१८६ वरण—

यहाँ पोरवाड़जैनों के छः घर और एक छोटा शिखरबद्ध जिनमन्दिर है। मन्दिर में एक फुट् बडी महावीरप्रभु की पाषाणमय मूर्त्ति स्थापित है। इस मन्दिर को गाँवो गाँव से उघराणी करके श्राविका भूतिने बनवाया है।

१८७ वरनोडा—

इस गाँव में धर्मजिज्ञासु और जैन साधुसाध्वियों के भक्त जैनों के पांच घर हैं। यहाँ उपासरा या जिनमन्दिर नहीं है।

१८८ भीलडिया—

यह गाँव पालनपुर एजन्सी में डीसारोड से १६ मील के फासले पर पश्चिम दिशा में है। इसके प्राचीन नाम भीमपल्ली और त्रंबावती हैं। यह तीर्थस्थान है। और कईएक स्तोत्र तथा चैत्यपरिपाटी (तीर्थमाला) ओं में इस स्थल को तीर्थरूप मान कर वन्दन किया गया है। इस समय यह छोटा गाँव है और गाँव में धर्मशाला के अन्दर एक तरफ गुंबजबाला गृहमन्दिर है जिसमें कतिपय छोटी बड़ी जिनप्रतिमाओं के सहित मूलनायक श्रीनेमनाथ भगवान् की १॥ फुट बडी मूर्त्ति विराजमान है जो सं० १८९२ की प्रतिष्ठित है और प्रतिष्ठाकार तपागच्छ के कोई श्रीपूज हैं। इसके बाहर एक ताक में अम्बिकादेवी की प्रतिमा है, उसके नीचे लेख खुदा हुआ है कि ' सं० १३४४ वर्षे ज्येष्ठसुदि १० बुधे श्रे० लखमसिंहेन अंबिका कारिता।'

गाँवसे पश्चिम किनारे पर एक विशाल धर्मशाला है जो नयी बनी है और इसमें एक कुआ, एक भोजनालय, एक वांचनालय तथा ५८ कोठरियाँ है। इसके एक भाग में उत्तर तरफ तीन शिखरवाला नया जिनमन्दिर है, जिसमें श्रीमहावीरस्वामी आदि की प्रतिमाएँ विराजमान हैं जो सर्वाङ्ग सुन्दर और दर्शन से चित्त को शान्ति देनेवाली हैं। इसीके नीचे पूर्वद्वार वाला

एक जूने समय का बना भोंयरा है जिसमें श्यामरंग की तीनफुट बड़ी श्रीपार्श्वनाथ की प्राचीन मूर्त्ति स्थापित है जो भीलडिया पार्श्वनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। इसके दोनों तरफ नेमनाथ-स्वामी आदि की मूर्त्तियाँ स्थापित हैं जो प्राचीन और दर्शनीय हैं।

इसके आसपास के गाँवों में इस तीर्थ की खूब प्रख्याती है और यहाँ प्रतिवर्ष पोषवदी दशमी का मेला भराता है जिसमें केम्प, डीसा, पाटण, राधनपुर, पालनपुर, थराद, वाव, धानेरा आदि गाँवों से हजारों यात्रालु एकठे होते हैं। इस तीर्थ का वहीवट डीसाटाउन का जैनसंघ करता है। डीसा जैनसंघ के हस्तक होने बाद यह तीर्थ अच्छी स्थिति में आगया है।

इस तीर्थ के विषय में जुदी जुदी दन्तकथाएँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि जिस समय राजा श्रेणिक अपने भाईयों के अनबनाव से राजग्रही से चला गया, तब वह परिभ्रमण करता हुआ यहाँ आया और किसी रूपवती भीलकन्या के प्रेम में फँस गया। अपने प्रेम को खींच लेनेवाली भीलडी का प्रसंग चिर-स्मरणीय रखने के लिये श्रेणिकने इसका त्रंबावती नाम पलटा कर 'भीलडिया' नाम कायम किया।

इस दन्तकथा में सत्यांश कितना है ? इसको पाठक स्वयं समझ लें। मारतवर्ष में अनेक नगर और तीर्थों के संबन्ध में ऐसी अनेक दन्तकथाएँ खाली महत्त्व बढाने के लिये गढ़ी गई हैं।

दूसरी दन्तकथा यह है कि भीलडिया, या भीमपल्ली नगर की अकाल घटना होने की खबर किसी निमित्तज्ञ—मुनि को

पहले ही से पड गई। इससे उसने यहाँ के अधिवासियों को कहा कि तुम इस नगर को छोड़ कर भग जाओ, क्योंकि यह नगर अमुक दिन जल के भस्म हो जायगा। मुनि के कथनानुसार लोक अपने जान--माल को लेकर भीलडिया से एक साथ निकल गये और दूर जाकर वस गये, इन्हीं की बसति का नाम राधनपुर हुआ। वस सब लोगों के निकल जाने बाद भीलडिया एकदम जल के भस्म हो गया।

इस घटना की सत्यता दो बात से मानी जा सकती है। एक तो यह कि यहाँ की जमीन खोदनेसे दो तीन हाथ ऊंडाई से राख के थर और इमारतों के खंडेहर देख पडते हैं। दूसरी बात यह कि राधनपुर के अनेक कुटुम्ब विवाहादि प्रसंगो पर यहाँ अब तक अपनी कुलदेवी का जुहार करने को आते हैं। आचार्य मुनिसुन्दरसूरिजीने स्वरचित गुर्वावली में भी लिखा है कि—

श्रुतातीशायी पुरि भीमपल्ल्यां वर्षासु चाद्येपि हि कार्त्तिकेऽसौ।
अगात्प्रतिक्रम्य विबुद्धय भाविभङ्गं परैकादशभूर्यबुद्धम् ।६३।

—अतिशयवान् श्रुतज्ञान के धारक (आचार्य धर्मघोष के शिष्य श्रीसोमप्रभसूरि) भीमपल्ली नगरी में चोमासे रहे। इस चातुर्मास में दो कार्त्तिक थे इससे शास्त्र–नियम प्रमाणे दूसरे कार्त्तिक की सुदि में चोमासी प्रतिक्रमणकरके चातुर्मास समाप्त करने का था, किन्तु लग्नकुंडली के बारहवें भुवन में पडे हुए सूर्य पर से मालूम हुआ कि थोडे ही दिन में इस नगर का भंग होनेवाला है। अतएव प्रथम कार्त्तिक में ही चोमासी प्रतिक्रमण करके सोमप्रभसूरिजी भीमपल्ली से विहार कर गये।

इस पद्य से साफ जाहिर होता है कि—विशाल और समृद्ध भीमपल्ली नगरी का किसी अकस्मात् से ध्वंस (नाश) आचार्य सोमप्रभसूरि के समय में हुआ है और सोमप्रभसूरि का साधुत्व काल गुर्वावली के लेखानुसार सं० १३२१ से १३७३ तक है। याने विक्रम की चौदहवीं सदी के लगभग मध्यभाग में भीमपल्ली का नाश हुआ है। इसके पहले यह नगर जन और लक्ष्मी से परिपूर्ण था। परन्तु वर्त्तमान में यह एक छोटे गाँवडे के रूप में रह गया है।

इस तीर्थ के नायक भीलडिया पार्श्वनाथ के मन्दिर (भोंयरा) में एक धातु की प्रतिमा है। उस पर लिखा है कि—

संवत् १२१५ वर्षे वैशाखसुदि ९ दिने श्रे० तिहणसर भार्या हांसी श्रेयोऽर्थं रतमानाकेन श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं न....ति...गच्छीय श्रीवर्द्धमानसूरिशिष्यैः श्री-रत्नाकरसूरिभिः।

इसी प्रकार तीर्थनायक के सामने एक ताक में गौतमस्वामी की प्रतिमा स्थापित है। उसके नीचे लिखा है कि—

संवत् १३२४ वैशाखवदि ५ बुधे श्री गौतमस्वामि मूर्त्तिः श्रीजिनेश्वरसूरि-शिष्य-श्रीजिनप्रबोधसूरिभिः प्रतिष्ठिता, कारिता च सा ...पुत्र सरिवइजनेन मूलदेवादि भ्रातृ-सहितेन स्वश्रेयोर्थं कुटुम्बश्रेयोर्थं च।

भीलडिया में छोटी बड़ी पाषाण की प्रतिमाओं पर लेख

देखने में नहीं आता, परन्तु ये प्रतिमाएँ प्रायः विक्रम की ग्यारहवीं, या बारहवीं शताब्दी की होनी चाहिये। सबब कि उस समय प्रतिमाओं के ऊपर लेख लिखने की पद्धती नहीं जैसी थी। ऊपर के लेखों से मानने को कारण मिलता है कि चौदहवीं सदी तक भीमपल्ली में धार्मिक प्रवृत्ति चालु थी, किन्तु उसके बाद भीमपल्ली सदा के लिये शान्त निद्रा में सो गई।

१८९ नेहडा—

यहाँ श्रीमालजैनों के १८ घर, एक उपासरा, और एक गुंबजवाला छोटा जिनालय है। जिनालय में श्रीपार्श्वनाथस्वामी की एक फुट् बडी सुन्दर प्रतिमा स्थापित है, जो अर्वाचीन है।

१९० वात्यम—

दियोदर थाने के नीचे यह छोटा गाँव है। इस में श्रीमाल-जैनों के १८ घर हैं जो सभी मोरखिया गोत के गोत्रज भाई हैं। गाँव में एक छोटा शिखरवाला जिनमन्दिर है, जिसमें ऋषभ-देवजी की प्राचीन मूर्त्ति विराजमान है।

१९१ वाहणा—

यहाँ श्रीमालजैनों के २५ घर हैं और एक कच्चे उपासरे में धातु की पंचतीर्थी है। यहाँ के जैन खेतलादि मिथ्यात्वीदेवों के उपासक हैं।

१९२ लुआणा—

इसमें श्रीमालाजैनों के ३९ घर, और एकही कंपाउंड में

व्याख्यान वाचस्पति मुनिराज श्री यतीन्द्रविजयजी महाराज.

मु० थराद (उत्तर गुजरात) बनासकांठा, ता. २९-५-२८

उपासरा तथा जिनालय है। मन्दिर में दो फुट बड़ी ऋषभदेवजी की प्राचीन मूर्त्ति है और धातु की छोटी १३ पंचतीर्थियाँ हैं।

१९३ जेतडा—

यहाँ भावुक और धर्मप्रेमी श्रीमालजैनों के १८ घर, एक उपासरा और गृहमन्दिर है, जिसमें ऋषभदेव भगवान् की भव्य प्रतिमा स्थापित है।

१९४ पावर—

यहाँ साधुओं के ठहरने लायक कोई स्थान नहीं है और न जिनदर्शन हैं। जैनों के चार घर हैं, जो नहीं जैसे और धर्मभावना से रहित हैं।

१९५ थराद—

यह बनासकांठाएजन्सी में अच्छा संस्थान है, इसका क्षेत्रफल ९४० चोरस मील और आबादी ५२८३९ के लग-भग है। जिनमें ४६७६५ हिन्दु, १९४८ मुसलमान और ४१०७ जैन तथा २३ गेर जात के हैं। सन १९२१ की गणनानुसार थराद कसबे की आबादी ८२७ घरों की है जिनमें पुरुष १९६३ और स्त्रियाँ १९३५ हैं। इसके उत्तर मारवाड, पूर्व में पालनपुर, दक्षिण में दीओदर और सुइगाँव, तथा पश्चिम में वाव परगना है। यहाँ शीतकाल में ४० से ४८, ग्रीष्मकाल में ९० से ११८ और वर्षाकाल में ७० से ९५ ड़ीग्री तक गरमी पडती है।

इसका जूना नाम थिरपुर थिरादि, थारापद्र और थिरापद्र है,

जिसको विक्रम सं० १०१ में सोलंखी परमार थिरपाल धरुने अपने नाम से वसाया था। कहा जाता है कि थिरपाल धरु की बहिन हरकुने घेराली मडी के ७५ फुट चौरस मेदान में १४४४ स्तंभ और ५२ जिनालय विशाल जिनमंदिर बनवाया था, जो इस समय भूमिशायी हैं। यह विशाल मन्दिर किस समय भूमिशायी हुआ ? यह इतिहास अभी अंधारे में ही है। मालूम होता है कि वाव में जो यहाँ से गई धातु की अजितनाथ प्रतिमा है, वह इसी विशाल मंदिर की हो। इस स्थान की जमीन खोदते हुए इस रमणीय जिनमंदिर के पत्थर, ईंट आदि निकलते हैं, जिससे यहाँ विशाल जिन–मन्दिर होने का अनुमान किया जा सकता है।

थिरपाल धरु के वंशजोने यहाँ विक्रम की ७ वीं सदी तक राज्य किया है। अन्तिम परमार राजा गढसिंह धरु हुआ, उसने अपने भानेज नांदौल के चौहान राजा को थराद जागीर दे दी। किसी किसी का यह भी कहना है कि नांदोल के चौहान राजाने गढसिंह परमार को मार करके थराद पर अपना अधिकार जमा लिया। इसके बाद छः पीढी तक चौहानोंने यहाँ राज्य किया। बाद में महमद–शाहबुद्दीनगोरी और कुतबुद्दीनईबर के समय में सन् ११७४ से १२०६ इस्वी तक खुब युद्ध करके और अन्तिम चौहानराजा पुंजाजीराणा को मार करके मुलतानी मुसलमानोंने थराद जागीर पर अपना कब्जा जमाया।

राणा पुंजाजी चौहान के मारे जाने पर उसकी सेढी नामक राणी अपने बाल कुँवर वजाजी को लेकर गुप्त–रीत से दीपा-

भुलडा नामक टेकरी (पहाड़ी) पर दीपा भील के आश्रय में जा रही। दीपा भील उन दोनों को पारकर गाँव में अपने पिता के घर छोड आया। यहाँ वजाजी कुंमर का लालन पालन अच्छी तरह से होने लगा। वजाजी कुमर जब योग्य अवस्थावाला हुआ तब उसने कतिपय भीलों की सहायता से थराद से पश्चिम १० मील दूरी पर एक वावडी बनवाई और वहाँ उसीके नाम से वाव नामक कसबा (गाँव) नया वसा कर अपना राज्य कायम किया। यह कसबा सन् १२४४ इस्वी में वसाया और अब तक वजाजी के वंशजों के ही अधिकार में है।

इस्वी सन् १४०३ में गुजरात के मुख्य अमीर फतेखानने तेरवाडा और राधनपुर मुलतानी कुटुम्ब से छीन लिये, इससे मुलतानी कमजोर पड गये और उनके हाथ से थराद जागीर निकल गई। इस्वीं सन् १७०० में फीरोजखान जालोरी ने थराद को अपनी सत्ता में ले लिया और सन् १७३० के लगभग यह तालुका जालोरियों के हाथ से निकल कर राधनपुर के जबानमर्दनखान बांबी के अधिकार में गया। अभेसिंहजी सर सुबाने बांबियों को निकाल कर थराद को एक नायब की देखरेख नीचे कायम किया। इसके बाद सन् १७३६ इस्वी में यहाँ का हाकिम जेतमल चौहान हुआ जो वाव का भायात था।

वाव के गणा वजाजी चौहानने सोचा कि जेतमल बल पकडने पर भविष्य में अपने लिये हरकत पहुंचानेवाला हो पड़ेगा। ऐसा समझ के उसने पालनपुर के बहादुरखान के द्वारा जेतमल को निकलवा दिया और थराद जागीर को अपने हस्तगत कर ली।

सन् १७४० इस्वी में नवाब कमालुद्दीनखान को यह जागीर जागीरदार तरीके, अथवा फोजदारी चलाने के लिये सोंपी गई। कमालुद्दीनखानने सन् १७५९ में सग्धराशाखा के मोरवाड़ा के खानजी बाघेला को यह जागीर दे दी। खानजीने अपनी अक्ल और जोरावरी से इस जागीर पर स्वतंत्र अधिकार कर लिया। तब से अब तक यह जागीर खानजी के वंशजों के ही अधिकार में है। खानजी से वर्त्तमान ठाकुर तक वंशवृक्ष इस प्रकार है—

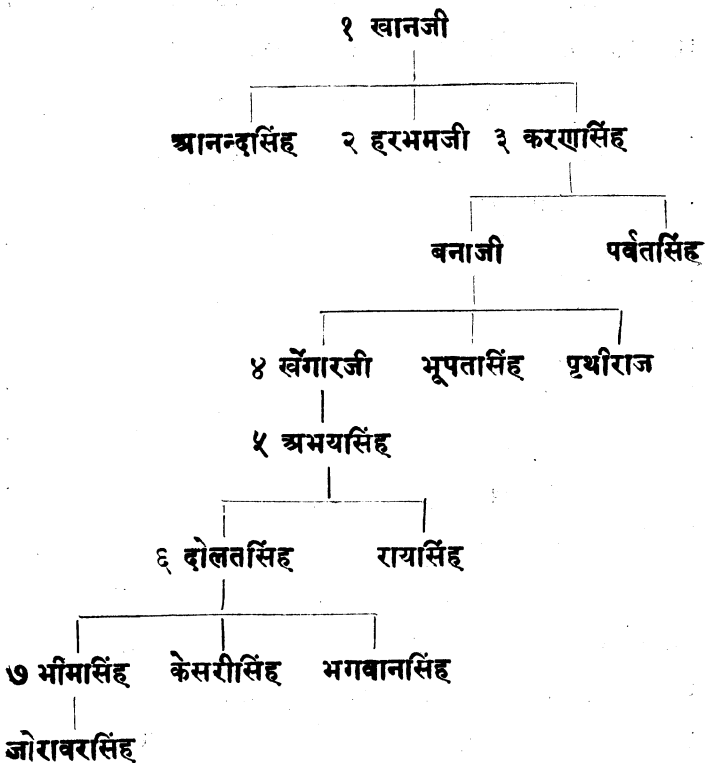

इस समय थराद में कुल जैन-मन्दिर १० हैं, जिनमें तीन शिखरबद्ध और सात गृह-मन्दिर हैं। ये सभी मन्दिर प्रायः १८ से २० वीं सदी तक के बने हुए हैं। इन सभी जिनालयों में प्राचीन, सुन्दर और दर्शनीय जिन प्रतिमाएँ विराजमान हैं, जो विक्रम की १२ से १८ वीं शताब्दी तक की प्रतिष्ठित हैं। मुहल्ले वार जिन-प्रतिमा और जिनालयों की संख्या की तालिका इस प्रकार है—

	मूलनायक	धातु की प्रतिमा	पाषाण प्रतिमा	धातु प्रतिमा	मुहल्ला
१	ऋषभदेव	३३	९	४२	सेठों की-सेरी
	शांतिनाथ	२५	०	०	,,
	पारसनाथ	२३	०	०	,,
२	आदिनाथ	५३	९	२४०	,,
३	महावीर	६२	१०	२८	,,
४	वासुपूज्य	१४	१	२५	,,
५	अभिनंदन	८	२	५	रासिया-सेरी
६	विमलनाथ	२४	२	१९	देसाई-सेरी
७	विमलनाथ	१२॥	०	१४	आमली-सेरी
८	शांतिनाथ	१५॥	४	१६	सुतार-सेरी
९	गोड़ीजी	१२	०	६	सुनार-सेरी
१०	सुपार्श्वनाथ	१३½	०	१०	आमली-सेरी

इनके सिवाय संघवी–सेरी में भगवान् मुनिसुव्रतस्वामी का एक गृह–मन्दिर फिर भी था, परन्तु वह भूमिशायी हो गया। इस समय इसका खंडेहर पड़ा है और इसकी सर्वधात की मूलनायक श्रीमुनिसुव्रतस्वामी सहित २६ जिनप्रतिमाएँ देसाई–सेरी के श्रीविमलनाथजी के गृह–मन्दिर में विराजमान हैं। इस जिनालय के लगते ही दहिने तरफ झमकाल–देवी का देवल है जो श्रीविमलनाथ भगवान् की अधिष्ठायिका देवी है और उसका असली नाम विजया–देवी है।

थराद से पश्चिम–दक्षिण कोण में २५ कदम के फासले पर 'वरखड़ी' नामक स्थान पर एक छोटा परकोटे सहित देवल है, इसमें प्राचीन समय के श्रीगोडी–पार्श्वनाथ के चरण स्थापित हैं। इनकी प्रतिष्ठा किसने कब की और कब यहाँ स्थापित हुए इसका कोई पता नहीं है।

सेठों की सेरी में रहनेवाले महात्मा (कुलकर) उत्तमचंदजी के मकान की एक जुदी कोठरी में भी प्राचीन छोटी आठ जिन प्रतिमाएँ स्थापित हैं। सं० १९७९ में यहाँ ओडजाति के जेठा के मकान की राँग खोदते समय जमीन में से श्रीवासुपूज्य भगवान् की पाषाणमय १, और सर्वधात की चोबीसी, पंचतीर्थी २४ एवं २९ जिनप्रतिमाएँ निकली थीं, जो संवत् १९७९ श्रावणसुद ८ के दिन महोत्सव के साथ भगवान् श्रीमहावीरस्वामी के गृह–मन्दिर में विराजमान की गई हैं।

यहाँ सब से प्राचीन और प्रभावशालिनी मूर्त्ति श्री अजि-

तनाथ भगवान् की थी, जिसकी प्रतिष्ठाञ्जनशलाका थिरपुर बस जाने बाद विक्रम संवत् १३६ श्रावण वदि अमावास्या बुधवार के दिन हुई थी। यह मूर्त्ति सर्वधात की है, तथा ३१ इंच बडी है और इस समय यह वाव—स्वस्थान में विराजमान है। किंवदन्ती से मालूम पड़ता है कि मुसलमानी हमलों के भय से यह प्रतिमा थराद से वाव भेज दी गई।

थराद से पूर्वोत्तर कोण में अन्दाजन पौन मील के फासले पर नाणदेवी का देवल है, जो चौहानों के शासन काल में बनाया गया था। थरादवासियों का कहना है कि विक्रम की १४ वीं सदी में नाणदेवी की हद तक थराद वसती थी और यह देवल नगर के नाके पर था।

इसका असली नाम आशापूरी माता है और इसके विषय में यह किंवदन्ती प्रचलित है कि—नांदोल जागीर जब चौहानों के हाथ से निकल गई, तब चौहान सरदार निराश हो गये। उनकी निराशता को मिटाने के लिये आशापूरी माताने स्वप्न में दर्शन दिये और धैर्य बंधाकर कहा कि भीनमाल से तुम लोग मेरी मूर्ति गाड़ी में रख कर ले जाओ। जहाँ पर गाड़ी की नाण (डोरी) टूट जाय वहीं मूर्त्ति की स्थापना कर देना, इससे तुम्हें फायदा पहुंचेगा।

देवी के कथनानुसार चौहान सरदार मूर्ति को भीनमाल से गाड़ी में रख के थराद तरफ रवाने हुए और इस स्थान पर आये कि गाडी की नाण टूट गई। चौहानोंने नाणदेवी नाम

कायम करके मूर्त्ति की स्थापना इसी स्थान पर कर दी । उस समय से चौहान और थराद के श्रीमाली महाजनोंने नाणदेवी (आशापुरी–माता) को कुलदेवी तरीके मानना शुरू की । दूर प्रदेशों में जा कर बसे हुवे श्रीमाली महाजन अब भी यहाँ आ कर पुत्रजन्म और लग्नादि प्रसंगों पर जुहार करने को आते हैं । कटुकमतिगच्छीय शाहजी धनजी रचित 'माजी आशापुरी' के छन्द में लिखा है कि–

मारुं स्थल भीनमालथी, आवतां गुर्जर मांह ।
स्वप्नुं रयणी आपीयुं, परमार भुवने त्यांह ॥ १४ ॥

तुज साथे रथ जेह छे, तेनुं त्रूटे नाण ।
ते स्थाने मुज नामथी, स्थिरपुरी करवी ठाण ॥ १५ ॥

तेहिज रथ लइ आवतां, त्रूटयुं ज्यां ते नाण ।
स्थिरपुरी नगरी त्यां वसी, मात प्रतापे जाण ॥ १६ ॥

मात नाम आशापुरी, द्वितीय कल्पना नाम ।
नाणदेवी पण नामथी, नमे लोक निज काम ॥ १७ ॥

धेनु झरे वली जे स्थले, भुवन निपावो त्यांह ।
मुज प्रतिमा त्यां स्थापिने, तीर्थ भजो मन मांह ॥ १८ ॥

धेनु उरोज न पण वह्युं, मातस्थान थयुं तेह ।
प्रत्यक्ष परचो पेखिने, सहु धरी आवे नेह ॥ १९ ॥

इस छन्द में लिखी गई हकीकत बिन पायेदार मालूम पडती है । क्योंकि नाणदेवी माता के एक स्तंभ पर के लेख से

जान पडता है कि यह देवल विक्रम की तेरहवीं सदी के आरंभ में बना है जो लगभग ऊपर की किंवदन्ती को ही सिद्ध करता है।

इस कसबे (नगर) के नाम से 'थिरापद्र' नामका एक गच्छ भी निकला था, जो थिरापद्र, थीरापद्र, थीरापद्रीय, थारापद्र और थीयारा इन नामों से भी प्रसिद्धी में आया। रामसेण से मिले एक प्रशस्ति लेख से पता लगता है कि 'चन्द्र-कुलीन वटेश्वराचार्य से यह गच्छ उत्पन्न हुआ जिसने अपनी निर्मलता से दिग्मंडल को समुद्योतित किया।' इस गच्छ के वादिवैताल शान्तिसूरिजीने सं० १०८९ में उत्तराध्ययन-सूत्र पर विस्तृत और गूढाशयवाली पाई नामक टीका रची है। शालिभद्राचार्य के शिष्य नमिसाधुने रुद्रट रचित काव्यालङ्कार पर टिप्पन और सं० ११२२ में बडावश्यक टीका बनाई है। इस गच्छ में अनेक विद्वान् दिग्गज आचार्य हो गये हैं और उनके कृत कार्य आज तक उनकी विमल कीर्त्ति के सौरभ से संसार को सुवासित कर रहे हैं। इस गच्छ के अस्तित्व को बतानेवाले कतिपय जिनप्रतिमाओं के लेख इस प्रकार हैं—

१ विमलवसही—आबु देलवाडा—

संवत् १११९—

---

१ चन्द्रकुलोद्भवस्ततो, वटेश्वराख्यः क्रमबलः ॥
थिरापद्रोद्भूतस्तस्माद्, गच्छोऽत्र सर्वादिकुख्यातः।
शुद्धाच्छयशोनिकरैर्धवलितदिक्चक्रवालोऽस्ति ॥

" थारापद्रीयसंताने, सोमरुपालवल्लभः
शांत्यमात्यो महीख्यातः, श्रावकोऽजनि सत्तमः ॥१॥
भार्या तस्य शिवादेवी, श्रेयसे प्रतिमामिमां ।
नीन्नगीग्ययोः सुन्वोः, कारयामास निर्मलं ॥ २ ॥"

—सं० ११११९ में थारापद्र (थराद) निवासी सोमरुपाल के पुत्र पृथ्वी में प्रसिद्ध और परमश्रावक शांति नामक मांत्रि की स्त्री शिवादेवी के पुण्यार्थ उनके पुत्र नीन्न और गीगीने यह प्रतिमा भराई–बनवाई ।

२ कडी प्रान्त के रांतेज गांव का मंदिर—

" संवत् ११५७ वैशाख सुदि १० श्रीथारापद्रीयगच्छे श्रीशालिभद्रसूरौ सुभद्रासुतया ठ०रघुकया स्वात्मदुहितुः सूहवायाः श्रेयोऽर्थं रातहजस्थ श्रीपार्श्वदेवबिंबं कारितमिति ।

—सं० ११५७ वैशाखसुदि १० के दिन थारापद्रगच्छीय शालिभद्रसूरि के समय में सुभद्रा की पुत्री ठ० रघुकाने अपनी पुत्री सूहवा के श्रेयके लिये रांतेज में पार्श्वनाथ भगवान का बिम्ब कराया ।

३ श्रीमाल का महावीर मंदिर—

" यः पुरात्र महास्थाने, श्रीमाले स्वयमागतः ।
स देवः श्रीमहावीरो, देयाद्वः सुखसंपदं ॥ १ ॥
पुनर्भवभवत्रस्ताः, संतोऽयं शरणं गताः ।
तस्य वीरजिनेन्द्रस्य, पूजार्थं शासनं नवं ॥ २ ॥

थारापद्रमहागच्छे, पुण्ये पुण्यैकशालिनाम् ।
श्रीपूर्णचंद्रसूरीणां, प्रसादाल्लिख्यते यथा ॥ ३ ॥

स्वस्तिसंवत् १३३३वर्षे आश्विनसुदि १४ सोमे अद्येह श्रीश्रीमाले महाराजकुलश्रीचाचिगदेवकल्याणविजयिराज्ये तन्नियुक्त महं० गजसिंहप्रभृतिपंचकुलप्रतिपत्तौ श्रीश्रीमालदेशवहिकाधिकृतेन नैगमान्वयकायस्थमहत्तमसुभटेन तथा चेट्टकर्मसींहेन स्वश्रेयसे अश्विनमासीययात्रामहोत्सवे आश्विन सुदि १४चतुर्दशीदिने श्रीमहावीरदेवाय प्रतिवर्षे पंचोपचारपूजानिमित्तं श्रीकरणीयपंचसेलहथडाभीनरपालं च भक्तिपूर्वं संबोध्य तलपदे हलसवडीपदमध्यात् फरकरहलसहडीएकसक्तद्र० ५।२ सप्तविंशोपकोपेतपंचद्रम्माः। तथा सेलहथाभाव्ये आठडां मध्याद् अष्टौ द्रम्माः। उभयसप्तविंशोपकोपेतत्रयोदशद्रम्मा आचंद्रार्कं देवदाये कारापिताः वर्त्तमानपंचकुलेन वर्त्तमानसेलहथेन देवदायकृतमिदं स्वश्रेयसे पालनीयं ।"

—जो पहले महास्थान श्रीमालपुर (भीनमाल) में स्वयं पधारे थे, वे श्रीमहावीरदेव आपको सुखसंपत्ति देवें १, जन्म मरणरूप भवों से दुःखित जीव जिसके शरण को प्राप्त हुए उन महावीरप्रभु की पूजा के लिये यह नवीन शासन (फरमान-पत्र) किया २, थारापद्रगच्छ के आचार्य श्रीपूर्णचन्द्रसूरि के प्रसाद से प्रस्तुत लेख लिखा जाता है ३, जैसे—

संवत १३३३ आसोजसुदि १४ सोमवार के दिन इस श्रीश्रीमालनगर में महाराजकुल श्रीचाचिगदेव के शासनकाल में

उसके नियुक्त किये हुए महं० गजसिंह पंचकुल के समय में वहि-वटदार नैगमजाति के कायस्थ महत्तम सुभट और चेटक कर्म-सिंहने खुद के कल्याण के लिये आसोज की यात्रा के निमित्त तथा आसोजसुदि १४ के दिन महावीरदेव की पूजा भणाने वास्ते गाँव के पंच और अधिकारियों के पास से मांडवी की जकात में से प्रतिवर्ष १३ द्रम्म और ७ विंशोपक महावीर मन्दिर में देने का ठहराव किया। यह ठहराव स्वश्रेय के लिये किया गया अतएव चन्द्रसूर्य की स्थिति पर्यन्त इसका सब को पालन करना चाहिये।

४ शंखेश्वरजी की देवकुलिका—

"संवत् १३३४ वर्षे राधसुदि १० रवौ श्रीथीयारागच्छे सलखणपुरे श्रीसर्वदेवसूरिसंताने श्रीश्रीमालज्ञातीय भा०... सुत लूणसिंहकेन भगिनी श्रीसूहडश्रेयोर्थं सुविधिनाथस्य परिकरकारितः बिंबं च कारितं।"

—सं० १३३४ वैशाखसुदि १० रविवार के दिन सलखणपुर निवासी थीयारागच्छीय सर्वदेवसूरिकी संतान में लूणसिंह भंडारीने अपनी बहन सूहड के श्रेय के लिये श्रीसुविधिनाथ का परिकर और बिम्ब कराया।

५ कुंभारिया पार्श्वनाथमंदिर—

संवत् ११६१ थिरापद्रीयगच्छे श्रीशीतलनाथबिंबं कारितं।"

— सं० ११६१ में थिरापद्रगच्छीय (किसी श्रावकने आरासण के पार्श्वनाथ की देवकुलिका में) श्रीशीतलनाथ का बिंम्ब कराया।

इन लेखों से साफ जाहिर होता है कि थिरापद्रगच्छ के अनेक आचार्यों के करकमलों से जुदे जुदे स्थान पर अनेक जिन-प्रतिमाओं की प्रतिष्ठाएँ हुई हैं और यह गच्छ मारवाड, गुजरात, मेवाड और काठीयावाड़ आदि देशों में भी फेला हुआ था ।

श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छ–मुखमंडन–सुविहित–शूरिकुलतिलक
साधुक्रियोद्धारकारक–जैनशासनसम्राट–परमयोगिराज–
कलिकालसर्वज्ञकल्प–जङ्गमयुगप्रधान–जगत्पूज्य श्री
श्री १००८ श्रीमद्–विजयराजेन्द्रसूरीश्वरचरण-
कमलचतुरभृङ्गायमाण–व्याख्यानवाचस्पत्यु-
पाध्याय–मुनि श्रीयतीन्द्रविजयसङ्कलिते–
' श्रीयतीन्द्रविहार–दिग्दर्शनो ' नाम
ऐतिहासिकग्रन्थे प्रथमो
भागः समाप्तः ।

बाण–वसु–निधि–चन्द्र में, पौषमास जयवन्त ।
शुक्लपक्ष गुरु–सप्तमी, संपूरण यह ग्रन्थ ॥ १ ॥

परिशिष्ट, नम्बर–१

जो गाँव थराद स्वस्थान के निकटवर्त्ती हैं, पर एक रास्ते में श्रृंखला–बद्ध नहीं है। उनका बयान इस परिशिष्ट में दिया जाता है। इस प्रान्त में इनमें के कतिपय स्थान प्रायः पवित्र तीर्थ स्वरूप माने जाते हैं और उनमें प्रान्तवर्त्ती अनेक जैन इनकी यात्रा के लिये आते हैं। अतएव थराद से लगते ही इन पवित्र स्थानों का उपलब्ध वृत्तान्त इस पुस्तक के परिशिष्ट में लिख देना अस्थान नहीं है।

१ वाव स्वस्थान—

थराद से पश्चिम ५ कोश के फासले पर यह कसबा वसा हुआ है। यहाँ के ठाकुर चौहान राजपूत हैं, परन्तु वे यहाँ राणा के नाम से व्यवहृत हैं। इनके वंशज प्रथम थराद के राज्यकर्त्ता थे। लेकिन पुंजाजी चौहाण जब मुसलमानों के साथ लडाई में मारे गये, तब उनकी सेढी नामक राणी अपने नव जात बालक वजाजी को लेकर दीपाथुंलडा टेकरी पर दीपा भील के आश्रय में जा रही। वजाजी जब लायक उम्मर का हुआ तब उसने प्रथम यहाँ एक वाव (वावडी–वापिका) बनवाई और बाद सन् १२४४ इस्वी में वाव के नाम से कसबा वसा कर स्वयं

राणा के खिताब से राज्य किया। धीरे धीरे वजाजी राणाने ९१ गाँवो पर अपनी सत्ता जमा कर इस कसबे को स्वस्थान बना लिया। वस, तब से अब तक यह स्वस्थान उन्ही के वंशजों के अधिकार में है और इसके वर्त्तमान राणा हरिसिंहजी है तथा उनके तखतसिंह नामका एक पुत्र है।

इस कसबे का क्षेत्रफल ३८० चोरस मील है। स्वस्थान की कुल वस्ती ८२७९ मनुष्यों की और वावकसबे की आबादी २६९८ मनुष्यों की है। यह कसबा उत्तर अक्षांस २४–१८, और पूर्वरेखांश ७१–३७ है। यहाँ पर कमसे कम ४६ और अधिक से अधिक ११२ डीग्री तक गरमी पडती है। इसके उत्तर सांचोर (मारवाड), दक्षिण सुईगाम, पूर्व थराद और दक्षिण कच्छ का रण है। इसकी उत्तर–दक्षिण लंबाई २५ मील, और पूर्व–पश्चिम पहोलाई १५ मील है। यहाँ के राणा को काठीयावाड के पांचवे वर्ग के दीवानी और फोजदारी का अधिकार है।

यहाँ श्वेताम्बर श्रीमाल ओसवाल जैनों में मन्दिरमार्गियों के १००, और तेरहपंन्थी ढुंढियों के ५० घर हैं। गाँव में दो उपाश्रय, एक थानक और तीन मन्दिर है। सब से बडे जिनमन्दिर में सर्वधातु की ३॥ फुट बडी श्रीअजितनाथ भगवान् की अति सुंन्दर मूर्त्ति विराजमान है। इसकी प्रतिष्ठा विक्रम संवत

१३६ में हुई है। कहा जाता है कि थिरपालधरुने संवत्–१०१ में थराद कसबा वसाया और सं० १३६ में इस प्रतिमा को भराई–बनवाई। यह प्रतिमा पहले थराद में विराजमान थी परन्तु थराद पर जब मुसलमान बादशाहों का हमला आया, तब वहाँ से यह प्रतिमा वाव पदुंचा दी गई।

दूसरे मन्दिर में श्रीऋषभदेव स्वामी और तीसरे मन्दिर में श्रीगोडीपार्श्वनाथ की डेढ़ डेढ़ फुट बडी मूर्त्तियाँ स्थापित हैं, जो प्रायः विक्रमीय १८ वीं सदी की प्रतिष्ठित हैं। इन दोनों मन्दिर में छोटी बडी सर्वधात की चोवीसी और पंचतीर्थियाँ २०० के अन्दाजन हैं, जिनकी बराबर पूजा भी नहीं होती। यहाँ के जैन आडम्बरी, कलहप्रिय और विघ्नसन्तोषी हैं। इसी कारण स्वच्छन्दचारी साधुओं के सिवाय यहाँ किसी अच्छे क्रिया पात्र साधु की स्थिरता नहीं होती।

ईढाटा—

यहाँ जैनों के एक ही गोत्र के सात घर हैं जो अच्छे भावुक, साधुभक्ति करनेवाले और धर्मजिज्ञासु हैं। यह गाँव थराद से वायव्य कोणमें पांच कोश के फासले पर है। यहाँ के जैनेतर लोग भी अच्छे सत्संगी और वास्तविक साधुओं के अनुरागी हैं। छोटा गाँव होने से यहाँ देहरासर या उपासरा नहीं है, साधुओं को गृहस्थों के मकान में ही ठहरना पडता है।

ढीमा—

यह इस नामकी जागीर का सदर कसबा है। इसका प्राचीन नाम **दारानगर** है। विक्रम संवत २३५ में यहाँ थिरपालधरु के वंशजों में भोजराज धरु हो गया, उसने यहाँ पर एक सौधशिखरी जिनमन्दिर बनवाया था और उसमें श्रीपार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा स्थापन की थी। इसके बाद परमार्हत राजा कुमारपालने इस भव्य मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया था। इस समय वह भव्य मूर्त्ति इस मन्दिर में नहीं है, परन्तु पीछे से विराजमान की हुई सफेदवर्ण की दो फुट बडी सर्वाङ्ग सुन्दर मूर्त्ति विराजमान है। इसकी पलांठी की बैठक पर लिखा है कि—

"संवत १६८३ वर्षे श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं, प्रतिष्ठितं तपागच्छे विजयदेवसूरिभिः।"

मुसलमानोंने इस नगर को ऊजड़ किया, उसके बाद चारण ब्राह्मणोंने अपने कुलदेव ढीमानाग के नाम से यहाँ ढीमा गाँव वसा कर स्वयं राज्य किया। लेकिन वावस्वस्थान के राणा पचाणजी के बडे पुत्र जेतमलजीने चारणों से छीन कर ढीमा में अपना अधिकार जमाया और उसके नीचे दूसरे सात गाँव डाल कर ढीमा जागीर बना ली। तब से अब तक उनके ही वंशज यहाँ का राज्य करते हैं।

इस जागीर के तालुकदार चौहाण राजपूत हैं। ढीमा जागीर की कुल आबादी ३३८९ मनुष्यों की है। इसके नीचे ७ गाँव है, यह जागीर वावस्वस्थान के अधिकार में है। यहाँ

श्वेताम्बर जैनों के ४० घर हैं, जो सभी श्रीमाली ओसवाल और धार्मिक भावना से रहित हैं। गाँव में एक पोसाल है, जो साधु साध्वियों के उतरने में काम आती है। गाँव के बाहर का प्रदेश कंटकपूर्ण है, अतएव नंगे पैर विचरनेवाले साधु साध्वियों को यहाँ मुसीबत पडती है।

इस गाँव के बाहर तालाव के किनारे पर 'धरणिधर' का दो धर्मशाला के सहित मन्दिर बना हुआ है। जिसमें खडे आकार की श्यामवर्ण वाली वंसुरी वजाती हुई श्रीकृष्ण की मूर्त्ति स्थापित है जो विक्रमीय १५ वीं सदी की प्रतिष्ठित है। इसके लगते ही एक कम्पाउन्ड में महादेव और महालक्ष्मी का देवल है जो नये बनाये गये हैं। वैष्णवों के अनेक धामों में से यह एक है। इस स्थान पर प्रतिवर्ष तीन मेला भराते हैं, जिनमें इसके माननेवाले हजारों वैष्णव यात्री उपस्थित होते हैं।

भोरोळ तीर्थ—

यह इस जागीर का सदर स्थान है, इसके नीचे दश गाँव हैं जिनकी कुल जनसंख्या ३४७८ हैं। इसका क्षेत्रफल ३३ मील चोरस है। यहाँ के उपलब्ध लेखों में इसका जूना नाम **पीपलपुर, पीपलग्राम** और **पीपलपुर-पट्टण** है। विक्रमीय १४ वीं शताब्दी तक इसकी अच्छी जाहोजलाली थी ऐसा यहाँ के कतिपय खंडेहर और भूमि निर्गत ईंट-पत्थरों से अनुमान किया जा सकता है।

गाँव से पश्चिमोत्तर विशाल मैदान में १४४४ स्तम्भों वाला

७२ जिनालय सौधशिखरी जिनमंदिर था। लेकिन यह विशाल मन्दिर मुसलमानी हमलों में तोड दिया गया। इसके इस समय यहाँ की जमीन से अनेक नक्सीदार पत्थर निकलते हैं और सैंकडों पत्थर यहाँ के कुओं में भी लगे हुए देख पडते हैं।

विधिपक्ष (अंचल) गच्छीय बडी पट्टावली जो जामनगरवाले पं० हीरालाल हंसराज के तरफ से गुजराती में प्रकाशित हुई है। उसके पृष्ठ ८९ पर लिखा है कि 'कात्यायनगोत्रीय श्रीमाली सेठ मुंजाशाहने भोरोल में अंचलगच्छ की वल्लभी शाखा के आचार्य पुण्यतिलकसूरिजी के उपदेश से विक्रम सं० १३०२ में शिखरबद्ध जिनमन्दिर बनवाया और उसकी प्रतिष्ठा कराई और एक वाव बंधवाई; कुल सवा क्रोड रुपया खर्च किया।

संभव है कि चौदहसौ चवांलीस स्तम्भोंवाला विशाल जिनमन्दिर सेठ मुंजाशाह का ही बनवाया हो। वर्त्तमान में मुंजाशाह की वाव भी यहाँ जीर्ण-शीर्ण अवस्था में मौजूद है और उसके बनाने में हजारो रुपया लगने का स्वाभाविक अनुमान किया जा सकता है। इस कसबे की सपाट भूमि के धौरों के खोदने से अब भी अनेक खंडित प्रतिमाएँ निकलती हैं। सं० १९२२ भाद्रवा शुदि ३ के दिन नष्टावशिष्ट एक जीर्ण तालाव के डुब्बे को खोदते हुए श्यामवर्णवाली २॥ फुट बडी श्रीनेमनाथस्वामी की सर्वावयवपूर्ण मूर्त्ति प्रगट हूई थी, जो भोरोल के एक गृहमन्दिर में स्थापित है।

यह मूर्त्ति अतिशय प्रभावशालिनी है। इस प्रान्त के कई

भावुकों की मनोकामनाएँ इसकी मान्यता से सिद्ध हुई हैं। इसी से इधर के जैन और जैनेतरों की इस मूर्त्तिपर अटल श्रद्धा है। दर असल में यह स्थान भी इसी प्रभावशालिनी मूर्त्ति के कारण तीर्थ स्वरूप माना जाता है।

इस चमत्कार पूर्ण प्रतिमा की प्रतिष्ठा कब किस समर्थ आचार्य के हाथ से हुई ?, इसका परिचायक यहाँ कोई शिला-लेख नहीं है, परन्तु मूर्त्ति के देखने से अति प्राचीन होने का अनुमान किया जाता है।

कसबे से उत्तर–पश्चिम एक जीर्ण तालाव की पाल पर हिंगलाज–माता का देवल है। जिसमें प्रायः सभी पत्थर जैन-मन्दिर का लगा हुआ है और इसीमें नेमनाथ भगवान् की अधिष्टायिका अम्बिकादेवी की खंडित–मूर्त्ति और जैनप्रतिमा की बठक का खंडित परिकर रक्खा हुआ है। उन पर लिखा है कि—

" संवत १२६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ रवौ श्रीब्रह्माण गच्छे श्रेष्ठि बहुदेवसुत श्रेष्ठिदेवराणाग भार्या गुणदेव्या श्रीनेमिनाथबिंबं कारितं, प्रतिष्ठितं श्रीजयप्रभसूरिभिः ।"

(खंडित परिकर)

" संवत १३५५ वर्षे वैशाखवदि ७ पीपलग्रामे श्रीने-मिनाथबिंबानि निजपूर्वजगुरूणां मुनिकेशी अवलोक शिषर-प्रदाऽऽम्रशांबसहिता श्रीअंबिकामूर्त्तिः पं० विजयकलशेन कारिता, श्रीजयप्रभसूरिशिष्य–श्रीगुणाकरसूरिभिः प्रतिष्ठितं।

(अम्बिका की खंडित मूर्त्ति)

"संवत १५६८ वैशाखवदि ८ शुक्रे उपकेश सा. लूणड सा. वीरी आत्मजेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्र० विजयप्रभसूरिभिः" (उपाश्रयस्थित-खंडित जिनप्रतिमा)

उक्त श्रीनेमिनाथ भगवान् की भव्य प्रतिमा इन लेखों से भी पहले की प्रतिष्ठित है और इन लेखों से यह भी पता लगता है कि विक्रमीय १५ वीं, तथा १६ वीं शताब्दी तक यहाँ प्रखर विद्वान् जैनाचार्यों के हाथ से प्रतिष्ठाएँ हुई हैं। इस लिये उस समय तक यह नगर अपनी समृद्धि से समृद्ध और प्रसिद्ध था। कहा जाता है कि पेश्तर यहाँ अकेले श्वेताम्बर जैनों के ही ग्यारहसौ ११०० घर थे जो ऋद्धि से परिपूर्ण थे। लेकिन ऊपरा ऊपरी मुसलमानी हमले होने और दुकाल पडने से वे सभी यहाँ से निकल कर गुजरात, काठीयावाड, कच्छ और सिंध में चले गये। वर्तमान में यहाँ साधारण स्थितिवाले श्वेताम्बर जैनों के २० घर रह गये हैं, जो भावुक, श्रद्धालु और वीसाश्रीमाली ओसवाल हैं।

इस जागीर के तालुकदार चोहाण राजपूत है, जो अपने को पृथ्वीराज चौहाण के वंशज बतलाते हैं। संवत् १४१० में रामजी चोहाणने सुंबर राजपुतों को मार-भगा करके भोरोल जागीर पर अपना अधिकार जमा लिया। तब से अब तक इस जागीर के तालुकदार उन्हीं के वंशज हैं। उनकी वंशावळी इस प्रकार है--

१ रामाजी (रामसिंह)

२ हरिसिंह, पबजी, सवसिंह

३ रुगनाथसिंह

४ फतेसिंह, सेरसिंह

५ हरनाथसिंह

६ अगरसिंह

७ किसनदास

८ भाखरसिंह

९ कल्याणसिंह

१० रायसिंह

११ सरदारसिंह

१२ दजुजी

खेतोजी १३ गजसिंह

१४ पीरदानजी (दत्तक)

केशरीसिंह

भोरोल कसबा थराद से ७ कोश पश्चिमोत्तर, और डीसा-स्टेशन से ३० कोश पूर्व है। यहाँ यात्रियों के लिये एक छोटी और एक बड़ी, एवं दो धर्मशालाएँ हैं। छोटी धर्मशाला में इस तीर्थ की पेढ़ी है, जहाँ यात्रियों को केशर, धूप आदि पूजा का सरसामान और गोदडे; बरतन वगेरह मिलते हैं। यात्रियों को यहाँ किसी तरह की तकलीफ नहीं होने पाती। अतएव यह तीर्थस्थान दर्शनीय है।

यहाँ के वर्त्तमान तालुकदार पीरदानजी दयालु और धर्म-प्रेमी हैं। उन्होंने अपनी जागीर के गाँवों में पशुवध और सि-कार करना बिलकुल बन्द कर दिया है। इतना ही नहीं बल्कि इस विषय का सख्त हुक्म भी जाहेर कर दिया है। हुक्म की नकल नीचे मुताबिक है—

भु. ष्यु. नं. १४७

ભોરોલ ઠાકોર સા. (સે. ક. મે.)ની કોર્ટથી.

'જાહેરનામું.'

પૂજ્યપાદ વ્યા. વા. મુનિરાજ શ્રીયતીન્દ્રવિજયજી મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી ભોરોલ તાલુકાના સર્વે લોકોને આથી ખબર આપવામાં આવે છે કે-કેટલાક લોકો દેવી દેવલાંને નામે અવાચક પ્રાણી જેવાં કે-બકરાં ઘેટાંનો વધ કરે છે, તેમજ વગડામાં કેટલાંક ભીલ-કોલી લોકો હરણ સસલાં વિગેરેનો સિકાર કરે છે. આ બાબત સખત મનાઇ કરવામાં આવે છે અને આ લેખી ખબર આપવામાં આવે છે કે-કોઇ પણ અવાચક પ્રાણી ઘેટાં,

બકરાં, હરણ, સસલાં વિગેરેનો વધ કરશે અને કોઇપણ ધર્મની લાગણીને દુભવશે તો તેના સામે હુકમ તોડયા-નો ચાર્જ રાખીને તેમજ ધર્મની લાગણી દુઃખાયા બાબત સખત સજા કરી યોગ્ય નશીહત કરવામાં આવશે. તા. ૨-૧-૨૯

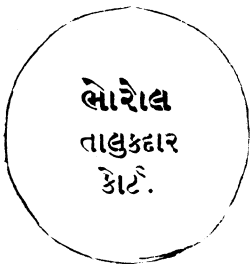

સહી પીરદાનજી ગજસંગજી.
તાલુકદાર-ભોરોલ.

गणेशपुरा—

यह छोटा गाँव है, इसमें श्रीमाली श्वेताम्बर जैनों के ४ घर हैं जो भावुक और अच्छे श्रद्धालु हैं। यहाँ जिन-मन्दिर या उपासरा नहीं है। यह गाँव भोरोल से थराद की तरफ़ एक कोश पूर्व है।

वामी—

यहाँ श्रीमाली श्वेताम्बर जैनों के ६ घर हैं जो साधु साध्वियों के अच्छे भक्त और अनुरागी हैं। गाँव में जिनालय, या उपासरा नहीं है, परन्तु साधु योग्य स्थान उतरने को मिलता है। यहाँ औदिच्य-ब्राह्मणों के ६० घर हैं जो खेती करते हैं और अच्छे धर्म-प्रेमी हैं। ये लोग जैन साधुओं के व्याख्यान अच्छे प्रेम से सुनते हैं।

दूधवा—

यह गाँव थराद से ४ कोश पश्चिम और इसके तालुकदार थराद के देशाई हैं जो जैन महाजन हैं। यहाँ श्रीमाली श्वेताम्बर जैनों के साधारण स्थितिवाले २० घर हैं, जो विवेकी, भावुक और श्रद्धालु हैं। गाँव में जैनों की इतनी वस्ती होने पर भी जिनालय और उपासरा नहीं है। साधुओं को गृहस्थों के घरों में ही उतरना पडता है। यहाँ के आंजणा जाति के कणबी (पाटीदार) लोग अच्छे सत्संगी है और जैन साधुओं के अनुरागी हैं।

जाणदी—

यहाँ श्वेताम्बर श्रीमाली जैनों के दो घर हैं, जो अच्छे भावुक हैं। इस गाँव का पानी अच्छा नहीं है, यदि एक मर्त्तबा भी दूसरे गाँव का मनुष्य जल पी लेगा तो उसको एक महिना तक तकलीफ देखना पड़ेगा। यह गाँव थराद से दो कोश पश्चिमोत्तर है।

ता. २१—१—२९

मुनि—यतीन्द्रविजय।
मु० थराद (उत्तर—गुजरात)

परिशिष्ट नम्बर २.

इस दिग्दर्शन में दर्ज किये गये संस्कृत-शिलालेख और प्रशस्तिलेखों का हिन्दी-अनुवाद।

३ राजगढ़— (१)

" वि० सं० १९८२ मगसिर सुदि १५ सोमवार के दिन राजगढ़ निवासी लालचंद और चम्पालाल खजानचीने श्रीराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज की चरणपादुका कराई और उनकी प्रतिष्ठा (अञ्जनशलाका) मुनिश्री यतीन्द्रविजयजीने की।" पृष्ठ ४३

राजगढ़ के मध्यभाग में श्रीमहावीरप्रभु के भव्य जिनालय के बांये तरफ बने हुए विशाल राजेन्द्रभवन के व्याख्यानालय के होल में एक आरसोपलकी छोटी देहरी में ये चरण-पादुका विराजमान हैं।

(२)

" श्रीसौधर्मबृहत्तपोगच्छीय श्रीविजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज का सं० १९६३ पोष सुदि ६ शुक्रवार के दिन (रात्रि के प्रथम प्रहर में) राजगढनगर में निर्वाण (स्वर्गवास) हुआ। उनके शरीर का अग्निसंस्कार संघने मोहनखेडा में किया और वहीं पर प्रवर्त्तिनी श्रीमानश्रीजी के सदुपदेश से आरसोपल की छत्री (भव्यदेहरी) तैयार करवाई १-२.

श्रीमान् यतीन्द्रविजयजीने राजगढ़ में तीन महिना ठहर

कर और संघ का आपसी क्लेश (कुसंप) दूर करके आनन्द पूर्वक प्रतिष्ठाञ्जनशलाका का सारा प्रबंध किया ३.

साधुमंडल सह श्रीभूपेन्द्रसूरिजी महाराज को बुला कर, उनके हाथ से सं० १९८१ ज्येष्ट सुदि २ बुधवार के दिन राजगढ़स्थ संघने अति उत्साह और महोत्सव से श्रीसद्गुरु (प्रतिमा) की स्थापना की ४." पृष्ठ ४६

इस गुरुप्रतिमा को यहाँ के कतिपय भक्ताभिनन्दी द्वेषियोंने खंडित कर दी थी। इस लिये उसके स्थान पर दूसरी हुबोहुब प्रतिमा बिराजमान की गई। उसका लेख यह है कि—

(३)

" संवत् १९८२ मगसिर सुदि १० बुधवार के दिन राजगढ निवासी त्रिस्तुतिक जैनसंघने प्रतिष्ठाञ्जनशलाका कराई और श्रीविजयभूपेन्द्रसूरिजीके आदेश से मुनिश्रीयतीन्द्रविजय-जीने प्रतिष्ठा (अञ्जनशलाका) की।" पृष्ठ ४७

१ पाटण— (४)

१—पाटण (अणहिल्लवाडे) में अपने पिता त्रिभुवनपाल के नाम से त्रिभुवन—विहार नामक चैत्य बनवाया। उसके चारों तरफ बहत्तर देवकुलिका बनवाई, उनमें रत्नों की २४, पीतल तथा स्वर्णमयी २४ और चांदी की २४ जिनप्रतिमाएँ, तथा मूलमंदिर में अठारह भारमयी १२५ अंगुल की रत्नों की श्रीने-मनाथजी की प्रतिमा बिराजमान की। इसके बनाने में कुल सोलह क्रोड रुपये खर्च हुए। (उपदेशतरंगिणी) पृष्ठ ९५.

१ सिरोडी— (५)

आबू से पश्चिम सिरोही रियासत के वापी, कूप, सरोवर, उपाश्रय, आवास, चोवटा; आदि से और रम्य जिनालयों से शोभित सिरोडी नामक नगर में तत्रत्य श्रावकों की प्रार्थना से तपागच्छीय श्रीविजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के शिष्य श्रीयतीन्द्रविजयजी भुवनविजय और अमृतविजय के सहित पधारे (आये) १–४

सं० १९७३ ज्येष्ठसुदि १ गुरुवार के दिन विजयमुहूर्त्त में दंड से खंडित प्राचीन प्रार्श्वनाथ के मन्दिर पर विधिपूर्वक पूजा और महोत्सव कराके उन्होंने (यतीन्द्रविजयजीने) स्वर्णदण्ड और स्वर्णकलश आरोपण कराया. ५–७, पृष्ठ ११९

४ हमीरगढ़— (६)

१ सं० १३४६ फाल्गुनसुदि २ सोमवार के दिन सेठ वोहरि, भार्या अच्छिणी पुत्र छोगा, भार्या कडु पु० सेठ समधर, स्त्री लाडी पु० पूनपाल, इसकी स्त्री दो चांपल तथा नाल्हू, इनके पुत्र देवपाल, मदन, कर्मसिंह और सेठ आसपाल। आसपाल की लाछू स्त्री के पुत्र महीपालने अपनी स्त्री ललिता के माता पिता के श्रेयोऽर्थ शान्तिनाथ की कायोत्सर्गस्थ प्रतिमा कराई और उसकी प्रतिष्ठा चन्द्रसिंहसूरिसन्तानीय पूर्णचन्द्रसूरि शिष्य वर्धमानसूरिजीने की। पृष्ठ १२१

(७)

२ सं० १५९६ वैशाखसुदि १३ रविवार के दिन पोरवाड संघवी वाछा, स्त्री बीजलदे पु० सं० कान्हा कुलिंगदे जाणीदेसी सुत सं० रत्नपाल, स्त्री करमाने अपने पति के श्रेय के लिये वृद्धतपापक्षीय उदयसागरसूरिजी के उपदेश से जीराउला पार्श्वनाथ के मन्दिर में देवकुलिका कराई। संघवण करमा की पुत्री मांगी और सं० कान्हा की पुत्री की पुत्री करमा श्री पार्श्वनाथ को वंदन करती है। पृष्ठ १२२

(८)

३ सं० १५९६ द्वितीय ज्येष्ट सुदि १ शुक्रवार के दिन महाराजा श्रीराणाजी के प्रसाद से पोरवाड संघवी समहाने सं० सचवीर स्त्री पदमाई पुत्र सं० देवादि कुटुम्ब सहित स्व कल्याणके लिये श्रीजगनाथ (पार्श्वनाथ) के मंदिर में देवकुलिका कराई, और उस की प्रतिष्ठा भ० श्रीहेमविमलसूरिजीने की, श्री संघ का कल्याण हो। पृष्ठ १२२

(९)

४ सं० १५९२ पोषसुदि ७ सोमवार के दिन श्रीबृहत्तपापक्षीय भ० धर्मरत्नसूरिजी के उपदेश से स्तंभतीर्थ वासी वीसा ओसवाल सा नाथा की स्त्री वा० हेमीसुता जीवी, तथा शिवाने अपने पिता की बहिन के श्रेय के लिये जीरापल्ली—पार्श्वनाथ के प्रासाद में दो ताक (आलक) कराये। पृष्ठ १२२

१ आहोरनगर— (१०)

१–सुवासित जलों से अभिषिक्त, केशर–चन्दन–धूप–दीप आदि से पूजित, उत्तम स्तवनाओं से संस्तुत और जयध्वनि से शोभित श्रीगोडीजिनेश सदा सुस्थिर लक्ष्मी देवें।

२–जिनके राज्य में शोभा की वृद्धि, प्रजा में अमनचेन (आनन्द), गो समुदाय की सुरक्षा, विद्वानों से पूजित और सत्फलों को देनेवाले धर्म की समुन्नति हो रही है, वे मारवाड़ देश के अधीश शिरदारसिंहजी जयवन्त रहें।

३–५ धैर्यवान् और तेज से यथार्थ नामवाले प्रजाओं के रक्षक राजा प्रतापसिंहजी जिनके काका (पितृभ्राता) विराजमान हैं। जो भारतेश (अंग्रेज सरकार) के शत्रुओं को जीतकर वीरता को पाये और गौराङ्ग प्रजा के सन्मानपात्र बन कर देशान्तरों में प्रसिद्ध हुए। जिस प्रतापसिंह भूपति के सुप्रबन्धों से राज्य भर की प्रजा आनन्द भोग रही है, विरोधि भी वशवर्त्ती हो गये और कुरीतियाँ नष्ट हो कर सर्व समृद्धियाँ प्राप्त हो रही हैं।

६–१२ सर्व समृद्धियों से पूर्ण, जालोर प्रान्तस्थित आहोर नगर में बहुत भूभाग का स्वामी, मरुधरेश कुल से परम्परागत वीरता से उन्नत कुल में प्रसूत, मारवाडदेशाधिप से सन्मान पाया हुआ, राजाओं में बलवान् और प्रभुत्वशाली राठोडवंशीय राजाओं में श्रेष्ठ और शत्रुरूप हाथियों को भगाने में सिंह समान अनारसिंह हुआ। बल और दान से विक्रमादित्य के समान

उसकी गादी पर शक्तिदानसिंह हुआ। उसका पुत्र कीर्त्तिशाली यशवन्तसिंह हुआ। उसका पुत्र लालसिंह हुआ। जिसने अपनी प्रजा को लालन पालन से ही वश की। उसके भव्य सिंहासन पर भवानीसिंह विराजमान हुए। जो दाता, दयालु, बलवान्, सुशील, देवद्विजार्चानिरत, मनस्वी, धर्म-परायण, समस्त समृद्धि से पूर्ण और भाग्यशाली हैं। जिनके शासन में सभी प्रजा नवीन अनुरागवाली हुई, वे अतुल सुख समृद्धि भोगी ठाकुर पुत्र प्रपौत्रों के साथ चिरकाल तक जयवंत रहें।

१३ मारवाडदेश का अलङ्काररत्न, भाग्यशाली जनता से शोभित, जगत्प्रख्यात, चतुरजनों से सेवित, समृद्धिशाली गुणि जनों से परिपूर्ण, और जालोर से पश्चिम आहोर नगर है जिसको विद्वान् लोग लक्ष्मी का विलास कहते हैं।

१४–१९ पृथ्वी (संसार) में प्रसिद्ध पवित्र कीर्त्तिवाला जहाँ का जैन संघ मुनिवरों से शास्त्रों का श्रवण करता है, अधर्म का त्याग करता है, स्वधर्म में प्रयत्न, अहिंसक वृत्ति से धर्मोपार्जन और विना कष्ट के सुकृत कार्यों में धन व्यय करता है। जहाँ का समृद्ध श्रीसंघ न कलह करनेवाला है, न परापवादी (निन्दक) है। न दुष्ट स्वभाववाला और न निज स्वार्थ में गृद्धी रखनेवाला है।

१६–१८ इसी संघने भव्य और रमणीय यह जिनालय

बनवाया, जो अति सुन्दर बावन देवकुलिकाओं से शोभित है। और दर्शक महानुभावों के नेत्रों को चुरानेवाला है। देवकुलिकाओं में विराजमान जिनप्रतिमाओं की विधिपूर्वक अञ्जनशलाका सं० १९९९ फाल्गुनवदि ५ गुरुवार के दिन जैनाचार्य **श्रीविजयराजेन्द्रसूरिजीमहाराजने** की। आर्हतों के अनुयायी सच्चरित्रवाले आचार्यों की पट्टावली (वंशावली) कही जाती है, जिस को सुन कर इस परम्परा की सच्चरित्र आदर्श-आत्माओं का जानपना मनुष्य को होता है।

१९-२१ विश्ववेदी (सर्वज्ञ) श्रीवर्द्धमानस्वामी के पांचवे गणधर **सुधर्म्मस्वामी** हुए। बहुत वर्ष व्यतीत होने बाद उन्हीं सुधर्मस्वामी के पट्टाधिकारी मेवाडाधिपति राणाओं के मान्य, तपागच्छरूप समुद्र में चन्द्र के समान, प्रसिद्ध नामवाले **जगच्चन्द्रसूरि** नामक आचार्य हूए। और उनकी पट्टपरम्परा में बालब्रह्मचारी **श्रीरत्नसूरीश्वर** हूए, जिन्होंने पाट पर बैठ कर आर्हत शासन की समुन्नति की। उनकी गादी पर यथार्थ नामवाले और तीक्ष्णबुद्धि वाले श्री **क्षमासूरि** नामक आचार्य हुए।

२२-२४ उनके पाट पर **विजयकल्याणसूरि** हुए, जिन्हों के द्वारा स्थान स्थान पर धार्मिक प्रभावना होने से भावुकों को आनन्द प्राप्त हुआ। उनकी गादी पर श्रीमान् **विजयप्रमोदसूरि** हुए, जिन्होंकी धर्मकथा (धर्मदेशना) रूप सुधा के पान से श्रावकगण अत्यन्त आनन्दित हुए। उन विद्वानों से प्रशंसा करने योग्य और सच्चरित्र महर्षी (प्रमोदसूरिजी) के शिष्य सुविनीत, समयज्ञ, और विद्वानों में उत्तम **विजयराजेन्द्रसूरि** हुए।

२५—जो आर्हत आगमों और परकीयदर्शनों के अद्वितीय वेत्ता, श्रामण्य में परायण, कुशाग्रमति, और अतिचार आदि दोषों से रहित थे। जिन्होंने अनेक भव्यों को दृढ सम्यक्त्वी बना कर सद्गति के पात्र बनाये और मोक्षाभिलाषी कृतिनरों को संसार कारागार से छोड़ाये।

२६—विजयराजेन्द्रसूरि रूप सूर्य के उदय होने पर स्वच्छन्दचारी कुलिङ्गीरूप घुग्घु भयवश से नीड के समान कुवादिरूप गृहों (गुहाओं) में शीघ्र छिपजाते हैं और भविकरूप उत्तम कमल विकसित होते हैं, तथा भूतल में (शासन का) विकास होता है।

२७—२८ जो जैनधर्मानुयायी अनेक शिष्यों को शिक्षा देकर, और उनके चारित्र को शुद्ध बनाके निर्ग्रन्थ मुनिवरों को शिक्षा करते हैं और जिनकी दश दिशाओं में कीर्त्तिसमुदाय को फैलाने वाली, और स्पष्ट गुरुगुण कीर्त्तन से पवित्र हृदयवाली श्रावकमण्डली, जिनेन्द्र चरणकमलों के अमन्द मकरन्द में लोलुप भ्रमरी स्वरूप बन गई है।

२९—३२ जिनके उपदिष्ट नाना देशों के श्रद्धावन्त श्रावकोंने निजोपार्जित द्रव्यों से सेंकडों जिनमन्दिर बनवाये, और साधुयोग्य भूमि पर सुरम्य उपाश्रय बनवाये, जिनमें कि उत्तम मुनिवर सुखपूर्वक ठहरते हैं। जिनके उपदेश से प्रतिग्राम में ज्ञानभण्डार स्थापित हुए, जिनमें कि स्वशास्त्र और परकीय शास्त्रों का अच्छा संग्रह है और श्रावकोंने

अतिसुन्दर पौषधशालाएँ बनवाई, जिनमें कि तपस्या करते हुए साधु और गृहस्थ संपतयोग्य फल को प्राप्त करते हैं।

३३–३४ श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरिजी से रक्षित श्वेताम्बर मुनिवरों का सुसंयत गच्छ (साधुसमुदाय) शोभायमान हो रहा है। जिस गच्छ में समस्त तत्त्व और उनके शास्त्रार्थ संबन्धी रहस्यों के ज्ञाता, समस्त साधुमंडल के शासक, निजगुणों से श्रेष्ट आचार्यों को प्रसन्न करनेवाले, सिद्धिमार्ग में उद्यमवंत, सच्चरित्रों से विषय रूप विषलता को दूर करनेवाले और उपाध्यायो में मुख्य शिष्यसमुदाय के साथ **धनविजय वाचक** शोभायमान हैं।

३५–३८ जिस गच्छ में मोहादि अन्तरंग शत्रुओं से रहित **मोहनविजय**, नित्य सिद्धि के लिये प्रयत्नशील तपस्वी **रूपविजय**, उत्कृष्ट तत्त्व का ध्यान करते हुए **हिम्मतविजय, लक्ष्मीविजय**, दीपवत् प्रकाशित बुद्धिवाले **दीपविजय**, सर्व शिष्यों में विचित्र बुद्धिवाले **यतीन्द्रविजय**, साधु **पद्मविजय, गौतमविजय, गुलाबविजय, केशरविजय, हर्षविजय, हंसविजय वल्लभविजय** और भिक्षु **चिमनविजय** ये मुनिवर सुशोभित हैं।

३९–महाराज श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी के उपासक हजारों श्रावक प्रशंसा के योग्य हैं जिन्होंने कि अञ्जनशलाका रूप कार्य को आचरण किया।

४०–४१ **गोड़ीदास**के पुत्र, श्रद्धालु, कल्याणशाली, पुण्यकार्यों में कटिबद्ध, सब साहूकारो में मुख्य, श्रावक **वागमलजी**

सेठ हैं। उनके छोटे भाई **नवलमल**, उनका पुत्र **यशराज**, और मुनीम **प्रतापमल** जो नित्य कार्य करनेवाला और गुरुदेव का पूर्ण भक्ति करनेवाला है।

४२–४४ श्रावकप्रवर **कपूरचन्द्र** के सुपुत्र बाफणा जीतमल भूताने जिनेन्द्रचरण कमल का ध्यान करते हुए अञ्जनशलाकारूप कार्य में अत्यंत भक्ति से कर्तृत्व पद को धारण किया अर्थात्–प्रचुर धनव्यय करके नवसौ ९०० जिनप्रतिमाओं के ऊपर '**जसरूप जीतमल**' ऐसा नाम रखवाया। जीतमल के बडे भाई यशोरुपजी के **कस्तूरचन्द्र, यशराज**, और **चिमनीराम** ये तीन पुत्र, और **खूबचन्द** तथा **हर्षचंद** ये दो पौत्र (पोतरे) कस्तूरचन्दके **सिरेमल** नामक पुत्र हुए, जो अति श्रद्धालु और भक्ति करनेवाले हैं। पृ० १३३–४०

इस प्रशस्ति में अञ्जनशलाका महोत्सव पर जो साधु मौजूदा थे उन्हीं के नाम दर्ज किये गये हैं, सब के नहीं। परन्तु महाराज श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी का शिष्य प्रशिष्यादि पूरा समुदाय इस प्रकार है—

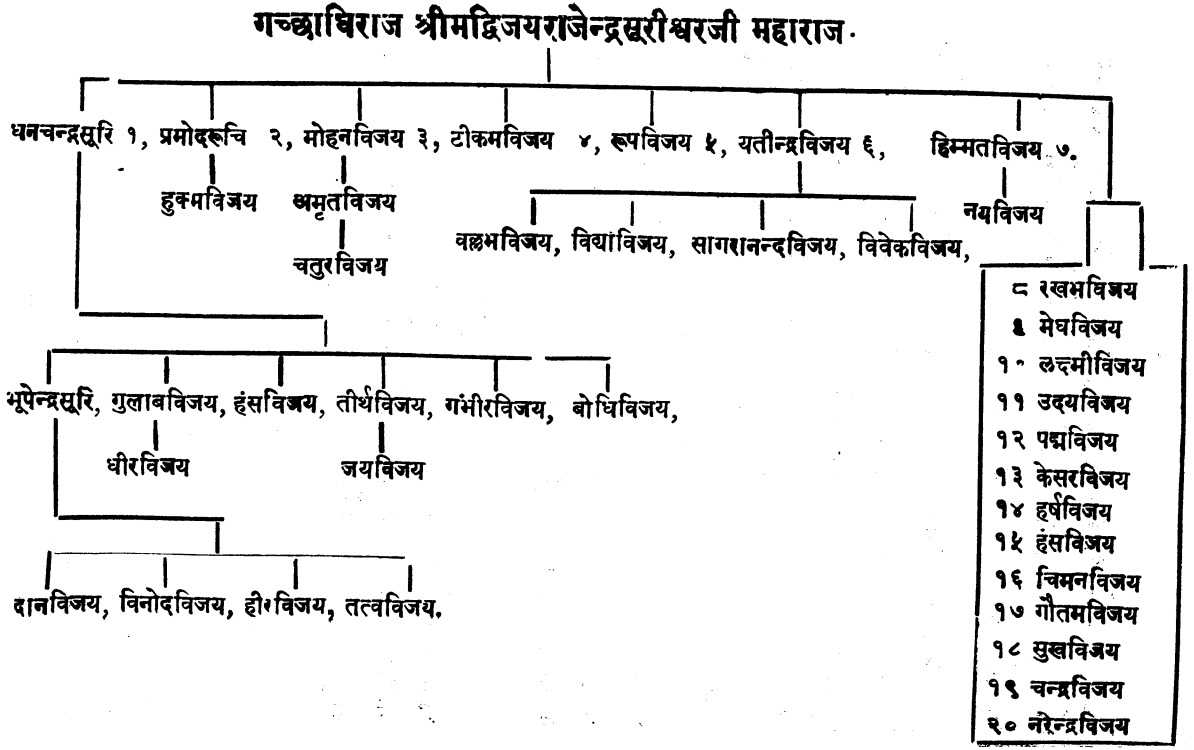
गच्छाधिराज श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज.
धनचन्द्रसूरि १, प्रमोदरूचि २, मोहनविजय ३, टीकमविजय ४, रूपविजय ५, यतीन्द्रविजय ६, हिम्मतविजय ७.
हुक्मविजय
अमृतविजय
चतुरविजय
वल्लभविजय, विद्याविजय, सागरानन्दविजय, विवेकविजय,
नयविजय
८ रखभविजय
९ मेघविजय
१० लक्ष्मीविजय
११ उदयविजय
१२ पद्मविजय
१३ केसरविजय
१४ हर्षविजय
१५ हंसविजय
१६ चिमनविजय
१७ गौतमविजय
१८ सुखविजय
१९ चन्द्रविजय
२० नरेन्द्रविजय
भूपेन्द्रसूरि, गुलाबविजय, हंसविजय, तीर्थविजय, गंभीरविजय, बोधिविजय,
धीरविजय
जयविजय
दानविजय, विनोदविजय, हीरविजय, तत्वविजय.

१ मादर्डी— (११)

१–सं० १२८८ ज्येष्ठसुदि १३ बुधवार के दिन षंडेरक गच्छीय श्रीयशोभद्रसूरि की सन्तान में दुस्साधु श्रीउदयसिंह के पुत्र श्रीयशोवीर मन्त्रीने अपनी माता की बगीची में जिनयुगल (खडे आकार की दो जिनप्रतिमाएँ) कराई और उनकी प्रतिष्ठा (अञ्जनशलाका) श्रीशान्तिसूरिजीने की। पृ० १४४

३ सांडेराव— (१२)

१–संवत् ११९७ वैशाख वदि ३ के दिन थिरपाल शुभंकरने पं० जिनचन्द्र गोष्ठिक के सहित सिद्धि की कामना से षंडेरकगच्छीय विजयदेवनागाचार्य की प्रतिमा कराई। पृ० १५३

(१३)

२–सं० १२२१ माघवदि २ शुक्रवार के दिन राजा केल्हणदेव के समय में उसकी माता आनलदेवीने षंडेरकगच्छीय मन्दिर के मूलनायक श्रीमहावीरप्रभु की जन्मतिथी चैत्रसुदि १३ उजमने के लिये राजकीय भोगमें से युगन्धरी (जुआर) का एक हाएल दिया। तथा इसी कल्याणक तिथी के निमित्त राठौरवंशीय पातु, केल्हण और उनके भतीजे उत्तमसिंह, सूद्रग, काल्हण, आहड, आसल, अणतिग आदिने तलारा की आवक में से एक द्रम्म अर्पण किया और इसी प्रकार सांडेराव के रथकार धनपाल, सूरपाल, जेपाल सिगडा, अमियपाल, जिसहड, देल्हण आदिने जुआर का एक हाएल भेट किया।" पृ० १९४

(१४)

३—थांथा के पुत्र राल्हा और पाल्हाने अपनी माता के स्मरणार्थ यह स्तंभ दिया—बनवाया। सं० १२३६ कार्त्तिक वदि २ बुधवार के दिन नाडोल के महाराजाधिराज श्री केल्हणदेव के राज्यकाल में राणी जाल्हणदेवी की भुक्ति में आये हुए सांडेराव के देव श्रीपार्श्वनाथ की सेवा में थांथां का पुत्र राल्हाक और राल्हाक का भाई पाल्हाक, उस के पुत्र सोढा, शुभकर, रामदेव, धरणि, हर्ष, वर्द्धमान, लक्ष्मधिर, सहतिग, सहदेव, रासा, धरण, हरिचन्द्र, वरदेव आदिने मिलकर अपना निज घर समर्पण किया। राल्हाक के घर में वसनेवाले मनुष्यों को प्रतिवर्ष ४ द्रायेला देना और शेष जनों को साधु गोष्ठिकों के साथ इसकी अच्छी तरह संभाल रखना चाहिये। सं० १२३६ ज्येष्ट सुदि १३ शनिवार के दिन माता धारमती के पुण्यार्थ स्तंभ का उद्धार किया।" पृ० १५४

२ भूति— (१५)

१—सं० १९६९ शाके १८३४ माघसुदि १० के दिन मंडवारिया निवासी, खूमाजी सुत जेठा डाहा विनयचन्द्र की कराई हुई अञ्जनशलाका में भूति के रहनेवाले ओसवाल वेदमूथा खीमा सुत सहसमल की माता केशादेने श्रीमहावीरबिम्ब की अञ्जनशलाका कराई और सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय श्रीविजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी के शिष्य श्रीधनचन्द्रसूरिजीने अञ्जनशलाका की। यह लेख उपाध्याय मोहनविजयजीने लिखा।" पृ० १६२

(१६)

२–" सं० १९६९ माघसुदि १० रविवार के दिन पुनर्वसुनक्षत्र में मंडवारिया निवासी शा० खूमाजी के पुत्र जेठा डाहा विनयचन्द्र की कराई हुई अञ्जनशलाका में भूति के रहनेवाले ओसवाल वेद मूता हीराजी देवीचंद खेमराजने श्रीआदिनाथ के बिम्बकी अंजनशलाका सह प्रतिष्ठा कराई और सौधर्मबृहत्तपागच्छाधिराज भट्टारक श्रीविजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी के शिष्य भ० श्रीविजयधनचन्द्रसूरीश्वरजीने अंजनशलाका की। यह लेख मुनि यतीन्द्रविजयजीने लिखा, कल्याणकारक हो।" पृ० १६२

२ हरजी— (१७)

१–" सं० १९५९ वैशाखसुदि १५ गुरुवार के दिन मारवाड में हरजी निवासी वीसापोरवाड़ चांपा के पुत्र केरा की स्त्री जेतीदेने अपने कल्याणार्थ श्रीआदिनाथ का बिम्ब कराया। श्रीकोरटा नगर में सौधर्मबृहत्तपागच्छीय–भ० श्रीरत्नसूरि, तत्पट्टे क्षमासूरि, तत्पट्टे देवेन्द्रसूरि, तत्पट्टे कल्याणसूरि, तत्पट्टे श्रीविजयप्रमोदसूरिशिष्य भ० श्रीविजयराजेन्द्रसूरिजीने अंजनशलाका की। यह लेख मोहनविजयजीने लिखा।" पृ० १६७

(१८)

२–" वि० सं० १९५५, शालिवाहनशाके १८२० मासोत्तममास फाल्गुन वदि ९ गुरुवार के दिन मारवाड में राष्ट्रकूट वंशीय महाराजाधिराज राजराजेश्वर श्री श्रीसिरदारसिंहजी के मान्य राठौर चांपावत ठाकुर श्री रत्नसिंहजी के समय में आ-

दिनाथ का बिम्ब कराया। वीसापोरवाड़ मनाहुत सूरातिंग, तत्पुत्र चमना टेकचंदने अपने पिता के सहित आहोर नगर में अंजनशलाका कराई और श्रीसौधर्मबृहत्तपागच्छीय भट्टारक श्रीविजयरत्नसूरि, तत्पट्टे क्षमासूरि, त० देवेन्द्रसूरि त० कल्याणसूरि, त० प्रमोदसूरि, तत्पट्टप्रभावक क्रियोद्धारकर्त्ता भट्टारक श्रीविजयराजेन्द्रसूरिजीने अंजनशलाका की। यह लेख मोहनविजयजीने लिखा।" पृ० १६७

१४ जालोर— (१६)

१—" विक्रम संवत १९३३ माघसुदि १ सोमवार के दिन जालोरगढ के ऊपर तेज से सूर्य के समान और शत्रुओं को खंडन करनेवाले श्रीयशवंतसिंहजी के शासनकाल में और धर्मी तथा बलवान् विजयसिंह किलादार के समय में श्रीसंघने जीर्णोद्धार कराया. १–३

चोमुख मन्दिर और पार्श्वनाथ के मन्दिर की प्रतिष्ठा महाराज श्रीराजेन्द्रसूरिजीने की और चोधरी कानूगा निहालचंद ओसवाल के पुत्र प्रतापमल्लने प्रतिमाएँ स्थापन की।" ४–५

श्रीऋषभदेव भगवान के प्रसाद से यह प्रशस्ति–लेख लिखा गया।" पृ० १७५

(२०)

२—" जिसके स्कन्ध पर महिषशृंग के समान अति श्याम केशों का समूह मानो नमस्कार करनेवाले भक्तजनों को मोक्षमन्दिर में प्रवेश करने के लिये मांगलिक माला के सदृश विलास

कर रहा है; ऐसे त्रैलोक्यलक्ष्मी के विस्तीर्ण कुल भवन, धर्मरूप वृक्ष के आलवाल (क्यारेरूप) श्रीमान् नाभेयनाथ (श्रीऋषभदेव) के चरणकमलयुग आप लोगों को मंगल का विस्तार करें.

श्रीचाहुमानकुलरूप आकाश में चन्द्र समान महाराज श्री अणहिल के वंश में उत्पन्न, महाराज आल्हण के पुत्र, निज कार्यावलियोंसे प्रबल शत्रुदलों को जीतनेवाले महाराज के शासनकाल में उनके चरणकमलों का सेवक, निजप्रौढ प्रताप से पाल्वाहिक प्रान्त के समस्त तस्करों को स्वाधीन करनेवाले राज्यचिन्तक जोजल—राजपुत्र के वर्त्तमान समय में—

२—शत्रुकुलरूप कमल के लिये चन्द्रसमान, पुण्यरूप सौन्दर्य का पात्र, नीति और विनय का विस्तार करनेवाला, सौन्दर्य और लक्ष्मी का धाम (गृह), संसार की युवतियों के नेत्रों को आनन्द देनेवाला, और सिंह के समान पराक्रमी राजा समरसिंह जयवन्त है। और—

३—औत्पत्तिकी आदि चार बुद्धियों से राजभवन के योग्य कार्यों का निर्णय करनेवाले और निजप्रबल भुजाओं से शत्रुओं के दुर्जय पक्ष का अन्त करनेवाला जोजल नामका जिस (समरसिंह) का मामा था।

चन्द्रगच्छ के मुख का मंडन, सुविहित साधुओं के घर, श्रीचन्द्रसूरिजी के चरणकमलद्वय में विलसित राजहंस के समान, श्रीपूर्णभद्रसूरिजी के चरणारविन्द में विचरनेवाले चतुर भ्रमर के समान, समस्त श्रावकों (गोष्ठिकों) से युक्त श्रीश्रीमालवंश का

भूषण शेठ यशोदेव, उसके पुत्र सदाज्ञाकारी और निज के भाई यशोराज, जगधर से सब मनोरथों को पाये हुए परमश्रावक सेठ यशोवीरने सं० १२३६ वैशाख सुद ५ गुरुवार के दिन संपूर्ण तीन लोकभूमी के सुख के लिये परिभ्रमण करने से थके हुए कमलाविलासी (धनार्थी) लोगों को विश्राम करने का विलास भवन स्वरूप यह मंडप राजा को दिया।

४–जिस (मंडप) की रचना (बनावट) को देखकर नाना देशों से आये हुए नवीन नवीन स्त्री पुरुष वर्गोंने तृप्ति को प्राप्त नहीं की। तदनन्तर अपने अपने घर आये हुए भी उन लोगोंने उस (मंडप) की विचित्र और तेजस्वी रचना को प्रतिदिन वारं वार याद करके उत्कंठा से इस प्रकार वर्णन की।

५–क्या ? यह पृथ्वीरूप उत्तम स्त्री के भालस्थल का तिलक है ?, अथवा लक्ष्मी के हाथ में रहा हूआ क्रीडा कमल है ?, क्या यह यहाँ देवताओं से स्थापित अमृत पूर्ण कुंड है ? इस प्रकार जिस के देखने की बिधी में अनेक विकल्प होने लगे।

६–इस मंडपने अपनी गंभीरता से पाताल को, विस्तार से भूतल को और उँचाई से आकाश को, इस प्रकार भुवनत्रय को व्याप्त किया।

७–मीन, मकर के सहित, कन्या वृश्चिक और कुम्भ से व्याप्त, मेष से युक्त, कर्क, सिंह और मिथुन से देदीप्यमान, वृषभ से अलंकृत, तारा रूप कुमुदों से विभूषित, चन्द्रकिरणरूप अमृत से परिपूर्ण, और उत्तम राजहंसों से सेवित आकाश

रूप सरोवर (तालाव) जब तक विद्यमान (कायम) रहे, तब तक इस श्रीआदिनाथस्वामी के मन्दिर में यह मंडप वृद्धि को पाता रहे।

श्री पूर्णभद्रसूरिजी की यह कृति (प्रशस्ति रचना) है। श्रीसंघ के लिये संपूर्ण कल्याण हो।" पृ० १७८–८०

(२१)

२—" सं० १२२१ में जावालीपुर (जालोर) कांचनगिरिगढ के ऊपर प्रभुश्रीहेमचन्द्रसूरि से प्रतिबोध पाये हुए गुजरात के राजा चौलुक्यवंशी महाराजाधिराज परमार्हत श्रीकुमारपालदेवने श्रीकुँअरविहार नामक जिनालय बनवाया। यह शास्त्रोक्तविधि से पूजा विधि चालु रखने के लिये चन्द्रसूर्य की स्थिति पर्यन्त बृहद्गच्छीय वादीन्द्र श्रीदेवाचार्य के समुदाय को अर्पण किया गया।

सं० १२४२ में इस देश (मारवाड) के अधिपति चाहुमान कुलतिलक श्रीसमरसिंहदेव की आज्ञा से भां० (भंडारी) पांसू के पुत्र भां० (भांडागारी=भंडारी) यशोवीरने इस मंदिर का उद्धार कराया।

सं० १२९२ ज्येष्ट सुदि ११ के दिन श्रीपार्श्वनाथ के मन्दिर में राजा की आज्ञा से श्रीदेवाचार्य के शिष्य श्रीपूर्णदेवाचार्यने तोरणादि की प्रतिष्ठा कार्य करते हुए मूलशिखर पर स्वर्णमय धजादंड की स्थापना की।

सं० १२६८ दीवाली के दिन नवीन बने हुए प्रेक्षामंडप

के ऊपर श्रीपूर्णदेवाचार्य के शिष्य श्रीरामचन्द्राचार्यने स्वर्णकलश की प्रतिष्ठा (स्थापना) की, कल्याण हो । " पृ० १८०

भंडारी पांसू का पुत्र यशोवीर उस समय जालोर में जैन समाज का एक मुख्य श्रीमान् और राजमान्य था और इसने एक आदिनाथ का भव्य मन्दिर बनवाया था । उसमें यात्रोत्सवों के समय भजने के लिये वादिदेवसूरिजी के प्रशिष्य और जयप्रभसूरि के शिष्य कविरामचन्द्रने 'प्रबुद्धरोहिणेय' नामक नाटक की रचना की थी । नाटक में पारिपार्श्व के प्रवेश होने बाद सूत्रधार उच्चरित अवतरण से पता लगता है कि- यशोवीर के उसीके सम न गुणवाला अजयपाल नामका एक छोटा भाई भी था। ये दोनों भाई राज्यकर्त्ता चाहुमान समरसिंहदेव के अत्यन्त प्रीतिपात्र, सब लोगों के हितचिन्तक, जैनधर्म की उन्नति के अभिलाषी और बडे भारी दानेश्वरी थे ।

जालोर के लेखसंग्रह में से जालोर निवासी और समकालीन नामाङ्कित तीन यशोवीर का पता मिलता है। एक लेख नं० १४ में बताया हुआ श्री श्रीमालवंश विभूषण शेठ यशोदेव का पुत्र यशोवीर, दूसरा लेख नं० १५ में बताया हुआ भां० पांसु का पुत्र यशोवीर और तीसरा उदयसिंह का पुत्र कविबन्धु यशोवीर मंत्री, यह गुर्जर महामात्य वस्तुपाल का मित्र था और जालोर के राजा उदयसिंह का मंत्री (महामात्य) था ।

(२२)

३–"सं० १२९४ में श्रीमाली जाति के श्री वीसल का पुत्र नागदेव, नागदेव के पुत्र देल्हा, सलक्षण, और झांपा । झांपा

के पुत्र बीजाक ने देवड के सहित अपने पिता झांपा के श्रेय के लिये श्रीजाबालीपुर (जालोर) के श्रीमहावीर–मन्दिर में करोदि कराई कल्याण हो । " पृ० १८०

(२३)

४–" सं० १३२० माघसुदि १ सोमवार के दिन नाणक गच्छ के अधीन रहे हुए श्रीचन्दनविहार नामक देवालय के श्री महावीरप्रभु के आसोजमास के अष्टाह्निका महोत्सव में चींबरायेश्वर स्थानपति के भट्टारक रावल लक्ष्मीधरने १०० द्रम्म अर्पण किये। उसके व्याज में से गोष्टिकों के सहित स्थानपति को श्री महावीरदेव की पूजा में १० द्रम्म खर्च करना चाहिये । " पृ० १८१ (२४)

५–" सं० १३२३ मगसिर सुदि ९ बुधवार के दिन महाराज श्रीचाचिगदेव के शासनकाल में उसके मुद्रारूप अलंकारहार को धारण करनेवाले महामात्य श्री जयदेव के समय में श्री नाणकीयगच्छ के आश्रित, श्रीमद्धनेश्वरसूरि के द्वारा स्थापित श्रीचन्दनविहार नामक मंन्दिर में तैलगृह (तेलिया) गोत्र में उत्पन्न महं नरपतिने खुद के भराये हुए, जिनयुगल की पूजा के निमित्त मठपति गोष्ठिक के सामने श्री महावीर स्वामी के भंडार में ९० द्रम्म दिया। उसके व्याज से उत्पन्न आधे द्रम्म से प्रतिमास पूजा खर्च देना चाहिये । " पृ० १८१

(२५)

६–" सं. १३५३ वैशाख वदि ५ सोमवार के दिन स्वर्णगिरि पर राज्यकर्त्ता महाराजकुल श्रीसामन्तसिंह, तथा उनके चरणकमल की सेवा और राज्यधुरा को धारण करनेवाले श्री कान्हडदेव के

समय में सुवर्णगिरि के रहनेवाले संघपति गुणधर, ठाकुर–आम्बड का पुत्र ठाकुर–जसा, उसका पुत्र सोनी महणसिंह, उसकी प्रथम स्त्री माल्हणि के पुत्र रतनसिंह, णाखो, माल्हण और गजसिंह, द्वितीय स्त्री तिहणा के पुत्र नरपति, जयता और विजयपाल। नरपति की प्रथम स्त्री नायकदेवी के पुत्र लखमीधर, भुवणपाल और सुहडपाल, द्वितीय स्त्री जाल्हणदेवी; इत्यादि कुटुम्ब सहित स्वस्त्री नायकदेवी के स्मरणार्थ श्रीपार्श्वनाथ के मन्दिर में पंचमी के दिन पूजा के निमित्त नरपतिने बाहर गाँव भेजे जानेवाले मालको रखने की दुकान अर्पण की। उसके भाडे से श्रीपार्श्वनाथस्वामी के गोठियों को प्रतिवर्ष आचन्द्रार्क पर्यन्त पंचमी (ज्ञानपंचमी) के दिन पूजा करना चाहिये।"

पृ० १८१

नरपति की वंश परम्परा—

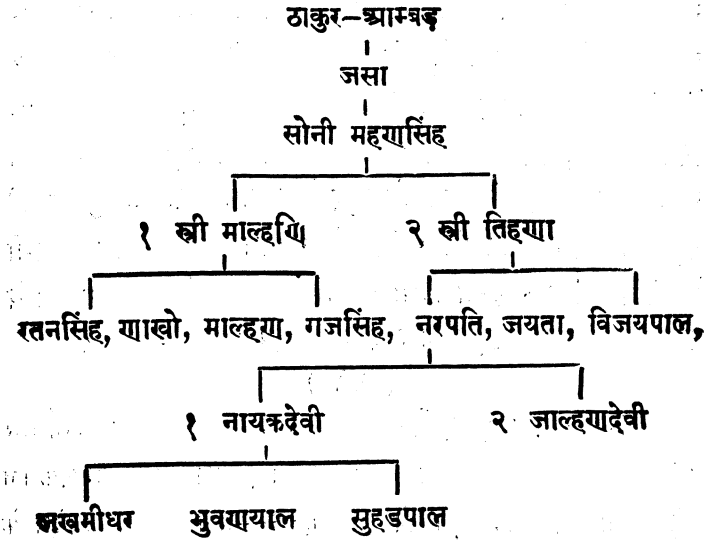

इस लेख में संघवी गुणधर का नाम दिया गया है। यह भी सुवर्णगिरि पर वसते हुए जैनसद्गृहस्थों में का उस समय का कोई मुख्य सद्गृहस्थ मालूम होता है, जो ठाकुर आम्बड़ का मित्र (साथी) होगा।

(२६)

७—" श्री परमात्मा (ईश्वर) को नमस्कार हो सं० १८६३, शाके १७२८ उत्तममास फाल्गुन सुदि १२ भृगुवार के दिन कुन्द, कुमुद और देदीप्यमान सुन्दर चन्द्र—चन्द्रिका से भी अतिस्वच्छ विलास करती हुई यशोराशि से धवलित किया है समस्त भूमंडल को जिसने, और ग्रीष्मकालिक सूर्य के समान अखंडित शश्वत्तेज से उत्पन्न वन्हि ज्वालावलियों से व्याप्त वैरिजन रूप काननोत्पन्न धूमजाल से धूमायित किया है आकाश मंडल को जिसने ऐसे राजराजेश्वर महाराजाधिराज श्री १०८ श्रीमानसिंहजी के पुत्र महाराज राजकुमार श्री छत्रसिंहजी के बिजय से सुरक्षित श्रीजालोरगढ में श्रीमान् गोडीपार्श्वनाथ भगवान् का यह मन्दिर बृहत्खरतरगच्छ में भट्टारकीय गच्छाधिराज जंगमयुगप्रधान भट्टारक श्रीजिनहर्षसूरीश्वरजी से प्रतिष्ठित हुआ। वट्टाभिधानगोत्रीय मुख्यमंत्री मू० अखयचन्द्र ओसवालने अपने पुत्र लक्ष्मीचन्द्र के सहित यह मंदिर कराया। सोमपुरा कारीगर काशीरामने इसको बनाया।" पृ० १८२

(२७)

८—" सं० ११७५ वैशाख वदि १ शनिवार के दिन श्री जाबालिपुर (जालोर) के मन्दिर में श्रावक सामन्त के पुत्र वीरकने अपने पुत्र उल्लोचन, शुभंकर, खेहड सहित खेहड, पुत्र देवांग,

देवधर तथा निज स्त्री जिनमति से प्रोत्साहित होकर श्रीसुविधिनाथ के खत्तक (ताक) का द्वार धर्मार्थ कराया, महामंगल और शोभा का कारण हो । " पृ० १८३

(२८)

९–" संवत् १६८१ प्रथम चैत्रवदि ९ गुरुवार के दिन राठोडवंशीय सूरसिंहजी के उत्तराधिकारी महाराज श्रीगजसिंह के राज्य समय में मुहणोत्रगोत्रीय वींसा ओसवाल सा० जेसा, उसकी स्त्री जयवंतदे, उसका पुत्र सा० जयराज, उस की स्त्री मनोरथदे उसके पुत्र सा० सादा, सुंभा, सामल, सुरताण, प्रमुख परिवार के पुण्यार्थ सोनगिरि के ऊपर कुमार-विहार नामक श्रीमहावीर–मन्दिर में सा० जेसा, स्त्री जय-वंतदे, पुत्र सा० जयमल, उसकी बडी स्त्री सरूपदे के पुत्र सा० नहणसी, सुंदरदास, आसकरण । छोटी स्त्री सोहागदे, उसके पुत्र जगमाल आदि पुत्र प्रपौत्रादि के कल्याणार्थ सा० जयमलजीने प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्वक श्री महावीरबिम्ब कराया और उसकी तपागच्छीय सुविहित आचार के पालक, शिथिलाचार के टालक साधुक्रिया के उद्धारक श्रीआणन्दविमलसूरिजी, उनके पाट पर सूर्य के समान श्रीविजयदानसूरिजी, उनकी गादी के शृंगारहार, महा-म्लेच्छाधिपति श्रीअकबर बादशाह को प्रतिबोध देनेवाले, बादशाह से प्राप्त जगद्गुरु के विरुद को धारण करनेवाले, श्रीशत्रुंजयादि तीर्थों का जीजीया नामक कर छुडानेवाले और अकबर से छः महिना की अमारी प्रवर्त्तानेवाले भ० श्रीहीरविजयसूरिजी, उनके

पाटपर मुकुट के समान भ० श्रीविजयसेनसूरिजी, उनके पाट पर वर्त्तमान और सुविहित मुनिवरों में अग्रगण्य श्रीविजयदेवसूरीश्वरजी के आदेश से महोपाध्याय श्रीविद्यासागरगणि शिष्य पं० श्रीसहजसागरगणि शिष्य पं० जयसागरगणिने प्रतिष्ठांजनशलाका की।" पृ० १८३

इस लेख में कहा गया नहणसी (नेणसी) अति प्रख्यात पुरुष हुआ है और मारवाड का प्रसिद्ध पतिहास का मुख्य लेखक है। इसकी बनाई हुई 'मुता नेणसीजीरी ख्यात' केवल मारवाड के लिये ही नहीं, किन्तु मेवाड और राजपुताना के लिये भी उसके ऐतिहसिक के क्षेत्र को विशाल बनानेवाली है। इस लेख के निर्माता जयमल की वंशपरंपरा इस प्रकार है—

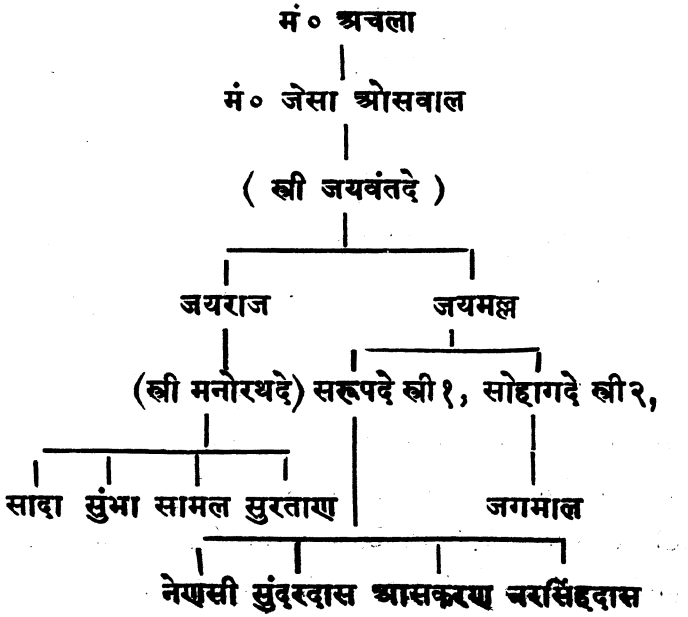

(२९)

१०–" सं० १६८३ आषाढवदि ४ गुरुवार के दिन श्रवणनक्षत्र में श्रीजालोरनगर के स्वर्णगिरि गढ के ऊपर महाराजाधिराज महाराजा श्रीगजसिंहजी के शासनकाल में मुहणोतगोत्र में दीपक समान मं० अचला पुत्र मं० जेसा स्त्री जयवंतदे पुत्र मं० श्रीजयमल्ल भा० सरूपदे, दूसरी स्त्री सोहागदे, पुत्र नयणसी, सुंदरदास, आसकरण, नरसिंहदास प्रमुख कुटुम्ब सहित स्वकल्याण के लिये श्रीधर्मनाथ भगवान का बिम्ब भराया। श्रीतपागच्छ नायक भट्टारक श्रीहीरविजयसूरिजी की गादी के अलङ्कार भ० श्रीविजयसेनसूरिजीने उसकी प्रतिष्ठा की।" पृ० १८४

(३०)

११–" सं० १६८३ आषाढवदि ४ गुरुवार के दिन सूत्रधार उद्धरण, उसके पुत्र तोडग, ईसर, डाहा, दुहा हाराकने कराया और तपागच्छीय भ० श्रीविजयदेवसूरिजीने प्रतीष्ठा की। पृ० १८५

इस लेख में किसी भगवान् का नाम नहीं है। इससे पता नहीं लग सकता कि यह किस भगवान् की मूर्त्ति की प्रतिष्ठा हुई है?

(३१)

१२–" सं० १६८१ प्रथम चैत्रवदि ५ गुरुवार के दिन मुहणोतगोत्रीय सा० जेसा भार्या जसमादे पुत्र सा० जयमल भार्या सोहागदेवीने श्री आदिनाथ का बिम्ब कराया और उसकी प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्वक तपागच्छीय श्रीविजयदेवसूरि के आदेश से जयसागरगणिने की।" पृ० १८५

(३२)

१३—" सं० १६८४ माघसुदि १० सोमवार के दिन मेडतानगर के रहनेवाले पामेचा गोत्रतिलक ओसवाल सं० हर्षा लघुभार्या मनरंगदे, पुत्र संघपति सामीदासने श्रीकुन्थुनाथ भगवान् का बिम्ब कराया, उसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय भ० विजयदेव सूरिजीने आचार्यश्री विजयसिंहसूरि प्रमुख परिवार से की, शोभाकारक हो।" पृ० १८९

१ सायला— (३३)

१—" सं० १६६६ वैशाखवदि १३ के दिन शमदानगर में समस्त संघने श्रीमहावीर का मन्दिर कराया। तेलहरागोत्रीय शाह खेताने शाह धाडशी सहित बृहत्खरतगच्छीय युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरीजी की आज्ञा से पं० प्रमोदगणि शिष्य नन्दिजय के हाथ से प्रतिष्ठा (अञ्जनशलाका) कराई। पृ० १८८

४ भीनमाल (३४)

१—" सं० १८७३ माघसुदि ७ शुक्रवार के दिन भीनमाल के समस्त संघने महावीर प्रभु का बिम्ब कराया और तपागच्छीय भ० श्री विजयजिनेन्द्रसूरिजीने उसकी प्रतिष्ठा की, कल्याण हो।" पृ० १९८

(३५)

२—" सं० १६८३ आषाढ वदि ४ गुरुवार के दिन श्रीमाल (भीनमाल) वासी सा० पेमा खेमाने पार्श्वनाथ का बिम्ब कराया और विजयदेवसूरिजीने उसकी प्रतिष्ठा की।" पृ० १९९

(३६)

३–" श्री पार्श्वप्रभुको नमस्कार हो। सं० १६७१, शाके १५३६ चैत्रवदि १५ सोमवार के दिन श्रीपार्श्वनाथ के मन्दिर में श्री चन्द्रप्रभस्वामी का मन्दिर बनवाया। इसके बनवाने में रुपया २०१५६) खर्च हुए और वे जालोर के खां पहाडखान गजनीखान के राज्य समय भीनमाल के सोलंकी वीदा के रहने के दोकडा सहित पार्श्वनाथजी–मंदिर में से खर्च हुए। इसकी प्रतिष्ठा उदयमान वडवीरशाखाके भावचन्द्र के शिष्य भट्टारक विजयचन्द्रिजीने की। यह लेख चन्द्रप्रभ के मन्दिर को बनानेवाले सलावट जसा सोढा देदाने उकेरा (खोदा) है।" पृ० २०६

(३७)

४–" श्री श्रुत को नमस्कार हो। सं० १२१२ वैशाखसुदि ३ गुरुवार के दिन रतनपुर के राजा श्रीरायपालदेव के पुत्र महाराज सुवर्णदेव के प्रतिभुजा समान महाराजाधिराज श्रीरत्नपालदेव के चरणकमलों का सेवक पादपूज्य भंडारी वीरदेव के पुत्र महं० देवहृत् साढा, पातू सन्मति की माता सलखणा के श्रेयोऽर्थ और धान्यरत्नक तथा उसके वेचनेवाले पूज्य जूपा के कल्याणार्थ श्री ऋषभदेव की यात्रा में राजा की माता जागेरवली के निमित्त १०० द्रम्म दिया। इस मन्दिर में प्रवेश करते हुए देवकस्मलने लखावत के श्रेय निमित्त १०० सुवर्ण के व्याज में १६ बेल भेट किये। लाखा साढा आदि श्रावकों के सहित सेसमलने प्रतिवर्ष पूजा के लिये १२ द्रम्म समर्पण किये। महामंगल तथा शोभाकारक हो।" पृ० २०७

२ जाखडी (३८)

१—"सं० १९२१, शाके १७८६ प्रथम माघसुदि ७ गुरुवार के दिन कच्छदेश के मालनपुर निवासी दशा ओसवाल मामडागोत्रीय सेठ नरसी नाथा भार्या कुंअरबाई पुत्र सेठ हरसंगभाईने पालीताणा में श्रीअनन्तनाथ भगवान् का बिम्ब भराया और उसकी प्रतिष्ठा अंचलगच्छीय भ० रत्नसागरसूरीश्वरजीने की।" पृ० २१३

(३९)

२—" सं० १९२१, शाके १७८६ प्रथम माघसुदि ७ गुरुवार के दिन कच्छदेश के सांधाणनगर वासी दशाओसवाल लोडाइया धुलागोत्रीय शा० मांडण तेजसी भा० कुंअरबाई पुत्र शा० माणकने पालीताणा (गिरिराज) में श्रीपार्श्वनाथजी का बिम्ब भराया और उसकी प्रतिष्ठा अंचलगच्छ नायक श्रीरत्नसागरसूरिजीने की।" पृ० २१४

१ रतनपुर (४०)

१—" महादेव के लिये नमस्कार हो, पाताल, मर्त्य और स्वर्गलोक में व्याप्त जिसको तुम याद करते हो उस महादेव के पीठदेव को नमस्कार करता हूं.... समस्त राजावलि से विराजमान, महाराजाधिराज परमभट्टारक परमेश्वर पार्वतिपति लब्धप्रौढप्रताप श्रीकुमारपालदेव के राज्य समय में महाराज भूपाल श्रीरायपालदेव की हुकमत में आये हुए रत्नपुर संस्थान के मालिक पूनयाक्षदेव की महाराणी श्रीगिरिजादेवीने संसार और जीवितव्य की असारता का विचार करके, प्राणियों को अभयदान देना महादान है ऐसा समझ के, नगर निवासी समस्त ब्राह्मण, पूजारी, महाजन,

तंबोली आदि प्रजाजनों को बुलाकर, उनके समक्ष इस प्रकार का शासनपत्र किया कि—

आज अमावास्या के दिन स्नान कर, देवता तथा पितरों का तर्पण और नगरदेवों को पूजा आदि से प्रसन्न करके इस जन्म तथा परजन्ममें पुण्यफल प्राप्त करने और यश बढाने की अभिलाषा से प्राणियों को जीवित दान देने के लिये प्रतिमास में कृष्ण और शुक्ल पक्ष की एकादशी, चतुर्दशी, अमावास्या और पूनम के दिन किसी को किसी प्रकार के जीव की हिंसा हमारी सीमा में न करना चाहिये। हमारी सन्तति में होनेवाले प्रत्येक मनुष्य को, हमारे प्रधान, सेनानायक, पुरोहित और जागीरदारों को इस आज्ञा का पालन करना, कराना चाहिये। सब को विदित करने के लिये महाजनों की सम्मति से यह फरमान पत्र जाहिर किया गया है। अतएव इसको चन्द्रसूर्यस्थिति पर्यन्त सब कोई को पालन करना चाहिये। जो कोई इस को खंडित करेगा वह दंडनीय समझा जायगा।

व्यासजीने भी कहा है कि सगरादि राजाओं से भोगी गई यह भूमि जब जिस जिस राजा के अधीन होती है, तब उस भूमि का फल उस उस राजा को मिलता है १, रामचन्द्र होनेवाले सभी राजाओं से वारंवार इस प्रकार याचना करते है कि राजाओं का यह सामान्य धर्म है कि समय समय उनको धर्मरूप पुल का सेवन करना चाहिये २. हमारे वंश में उत्पन्न कोई भी धन्य (प्रशंसा के लायक) पुरुष होगा उसके मैं करसंलग्न हूँ, अतः उसको मेरे शासन का लोप न करना चाहिये।

अमावास्या पर्व के दिन कुंभारो को भी निभाडा नहीं सुलगाना चाहिये। उपरोक्त तिथियों में जो जीवहिंसा करेगा उसको ४ द्रम्म का दंड होगा। नाडोल के रहनेवाले साधु धार्मिक सुश्रावक सुभंकर के पुत्र पूतिग और सालिगने कृपातत्पर हो प्राणियों के हितार्थ विनति करके यह फरमान पत्र करवाया। श्रीपूनपालदेव की सही, पारिख लक्ष्मीधर पुत्र ठाकुर जयपालने इस फर्मानपत्र को लिखा।" पृ० २१४–१६

२ रामसेण— (४१)

१–"सं० १२८९ वैशाख वदि १ गुरुवार के दिन वाघेला गजसिंह के पुत्र केल्हण उसके भाई वाग्भट आदिने पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी करवाई और पं० पूर्णकलशने उसकी प्रतिष्ठा की।" पृ० २१९

(४२)

२–"वर्त्तमान शासन के नायक भगवान् वर्द्धमानस्वामी की शिष्य परंपरा में वज्र की उपमा धारण करनेवाले वज्राचार्य हुए। उनको शाखा (वज्रीशाखा) में स्थानीयकुलोद्भूत, चन्द्रकुलीन महामहिमावंत वटेश्वराचार्य हुए।

३–वटेश्वराचार्य से थारापद्रनगर के नाम से 'थारापद्र' नामक गच्छ उत्पन्न हुआ, जो सब दिशाओं में प्रसिद्धि पाया और जिसने अपने निर्मल यश से सब दिशाओं को उज्ज्वल बनाई।

४–५ इस गच्छ में अनेक विद्वान् आचार्य उत्पन्न होकर स्वर्गवासी होने बाद ज्येष्ठार्य नामक आचार्य हुए, फिर क्रमशः शान्तिभद्र, सिद्धान्तमहोदधि सर्वदेवसूरि और शालिभद्रसूरिजी हुए, जो (शालिभद्रसूरि) सरल प्रकृति के निधान और गच्छ की चिन्ता करनेवाले थे।

छट्ठा और सातवां पद्य खंडित है, तथापि उनसे यह मतलब निकलता है कि—

६–७ आचार्य शान्तिभद्र के समय में सं० १०८४ चैत्र सुदि १९ के दिन पूर्णभद्रसूरिने भगवान् श्रीऋषभदेव के बिंब की प्रतिष्ठा की और राजा रघुसेनने उसकी प्रतिष्ठा कराई। मंगल और महाशोभाकारक हो।" पृ० २१६–२०

२ भीलडिया— (४)

१–" सं० १२१५ वैशाखसुदि ९ के दिन श्रेष्ठी तिहणसर की स्त्री हांसी के श्रेय के लिये सा० रतना मानाने शान्तिनाथजी का बिम्ब कराया और उसकी प्रतिष्ठा.....गच्छीय वर्द्धमानसूरि के शिष्य रत्नाकरसूरिजीने कीं। पृ० २२५

(४४)

२–" सं० १३२४ वैशाखवदि ५ बुधवार के दिन श्री-गौतमस्वामी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा श्रीजिनेश्वरसूरि शिष्य श्रीजिन-प्रबोधसूरिने की और सा.....के पुत्र सरिवइजनने अपने भाई मूलदेव आदि के सहित स्व और कुटुम्ब के कल्याणार्थ यह प्रतिमा कराई।" पृ०२२५

मु० थराद (उत्तर गुजरात)
श्रीवीर सं० २४५५
ता० २५–१२–१९२८

व्याख्यानवाचस्पति–
मुनि–श्रीयतीन्द्रविजय.

परिशिष्ट नम्बर ३

आबु के जिनमन्दिर और प्रतिमाएँ।

(देलवाडा–आबू)

विमलवसहि (आदिनाथ)—

यह सौधशिखरी भव्य मन्दिर चौलुक्यवंशी राजा भीमदेव प्रथम के दंडनायक विमलशाह पोरवाडने बनवाया है, जो शिल्पकारी के विषय में भारतवर्ष में अद्वितीय माना जाता है। इसकी जमीन ब्राह्मणों से सोने के सिक्के बिछाकर खरीदी गई थी और इसके बनवाने में विमलशाह के १८५३००००० रुपये खर्च हुए थे। इसकी प्रतिष्ठा विक्रम संवत् १०८८ (इ० स० १०११) में आचार्य श्रीवर्द्धमानसूरिजी महाराज के कर–कमल से हुई थी। इस समय इसमें छोटी बडी जिन प्रतिमाओं की संख्या इस प्रकार है—

१ मूलनायक–श्रीऋषभदेव।

४ मूलनायकजी के परिकर में छोटी।

३२ दो कायोत्सर्गस्थ बड़ी प्रतिमाओंके सहित काउसगिया।

२४ दो कायोत्सर्गस्थ प्रतिमा के परिकर में छोटी।

१६ चोमुख देवल नग चार में।

१७० सप्ततिशतजिन–पट्टक नग १ में छोटी।

७२ त्रिचतुर्विंशतिजिन–पट्टक नग १ में छोटी ।

१६८ चोवीसी जिन–पट्टक नग ७ में छोटी ।

४ धातुमय प्रतिमा ।

१५ धातुमय पंचतीर्थी नग ३ में

५ धातुमय सिद्धचक्रजी का गट्टा ।

१८५ देवकुलिकाओं (देरीयों) में ।

९४ देहरीगत प्रतिमाओं के परिकर में छोटी ।

४ हस्तिशाला के चोमुख नग १ में

१० हस्तिशाला के वांये तरफ महावीर मन्दिर में ।

८०४

इनके सिवाय श्री आचार्यप्रतिमा ३, चरण–पादुका जोड १ और यक्ष यक्षिणियों की मूर्तियाँ ११ हैं ।

२ लूणगवसहि (नेमनाथ–मन्दिर)—

यह सौधशिखरी जिनमन्दिर भी अपनी शोभा के लिये भारतवर्ष में एक ही है । इसको चौलुक्यराज वीरधवल के मंत्री तेजपालने अपने पुत्र लावण्यसिंह (लूणगसिंह) के श्रेयोऽर्थ बनवाया है । इसके बनवाने में तेजपाल के १२५३००००० रुपये खर्च हुए थे । इसी भव्य मन्दिर में देराणी–जेठाणी के खोखडे हैं जो वस्तुपाल की स्त्री ललितादेवी और तेजपाल की स्त्री अनुपमादेवीने अपने निज द्रव्य से बनवाये हैं और इनके बनवाने में अठारह लाख रुपये खर्च हुए हैं । इस विशाल जिन

मन्दिर में छोटी बडी सभी जिन प्रतिमाओं की संख्या नीचे मुताबिक है—

१ मूलनायक—नेमनाथजी श्यामवर्ण ।

४ मूलनायकजी के परिकर में छोटी ।

२४ कायोत्सर्गस्थ (खडी) प्रतिमाएँ ।

२६ दो कायोत्सर्गस्थ प्रतिमा के परिकर में छोटी ।

७० सप्तति जिन—पट्टक नग १ में छोटी ।

७२ चोवीसी जिन—पट्टक नग ३ में छोटी ।

७२ खेलामंडप की पूतलियों के वीच में छोटी ।

६६ चार स्तम्भों के ऊपर छोटी ।

३५ धातुमय पंचतीर्थी नग ७ में

७५ देवकुलिकाओं में विराजमान प्रतिमा ।

२० देहरियों में स्थापित प्रतिमाओं के परिकर में ।

३ गिरनारटोंक के ऊपर तीन छत्रियों में ।

१२ हस्तिशाला के तीन खंडवाले श्याम रंग के चोमुख में ।

४८०

इनके अलावा आचार्य प्रतिमा २, चांदी की पादुका जोड १, देव देवियों की मूर्त्तियाँ ६ और एक जुदे दिगम्बर देवल में प्रतिमा २४ और भी हैं ।

३ **भीमावसहि** (आदिनाथ-मन्दिर)—

यह जिनमन्दिर श्रावक भीमसिंह का बनवाया हुआ है। इसमें धातुमय श्री आदिनाथ भगवान् की विशाल प्रतिमा परिकर सहित बिराजमान है, जो साक्षात् कंचन के समान देख पडती है। इसकी पलांठी के नीचे लिखा है कि—

संवत् १५२५ फा० सु० ७ शनिरोहिण्यां श्री अर्बुदगिरौ देवडा श्रीराजधर-सायर डूंगरसी राज्ये सा० भीमचैत्ये गूर्जर श्रीमाली राजमान्य मं० मंडनभार्या मोली पुत्र महं० सुन्दर पु० मं० गदाभ्यां भार्या हांसी परमाई महं० गदा भा० आसू पु० श्रीरंग वाघादि कुटुंबयुताभ्यां १०८ मणप्रमाणं सपरिकरं प्रथमजिनबिंबं का०, तपागच्छनायक श्री सोमसुंदरसूरिपट्टप्रभाकर श्री लक्ष्मीसागरसूरिभिः प्रतिष्ठितं, श्रीसुधानंदनसूरि-श्री सोमजयसूरि-महोपाध्यायश्री जिनसोमगणि प्रमुख परिवार परिवृतैः, विज्ञानं सूत्रधार देवाकस्य श्रीरस्तु.

—सं० १५२५ फाल्गुन सुदि ७ शनिवार रोहिणी नक्षत्र में आबूजी के ऊपर देवडा श्री राजधर सायर डूंगरसी के शासन काल में शा० भीमसिंह के मन्दिर में गुर्जरश्रीमाली राजमान्य मंत्री मंडन की स्त्री मोली के पुत्र महं० सुन्दर के पुत्र मंत्री गदाने अपनी स्त्री हांसी परमाई महं० गदा की स्त्री आसू के पुत्र श्रीरंग, वाघा, आदि कुटुम्ब सहित १०८ मण प्रमाण वजनवाला सपरिकर श्री आदिनाथ भगवान् का बिम्ब कराया, और तपागच्छीय श्री सोमसुन्दरसूरि के पाट पर सूर्य के समान

श्रीलक्ष्मीसागरसूरिजीने सुधानन्दनसूरि, सोमजयसूरि, और महोपाध्याय जिनसोमगणि आदि परिवार से उस की प्रतिष्ठा (अंजनशलाका) की ।

मंत्री गदा अहमदावाद का रहनेवाला, गुर्जरज्ञाती के श्रीमाली महाजनों में आगेवान और राजमान्य था । इसने इस प्रतिष्ठा के लिये अहमदावाद से बडा भारी संघ निकाला था, जिस में सेकडों हाथी, घोडे, हजारों मनुष्य और सातसौ गाडियाँ थीं । आबू पर आने बाद इसका स्वागत भानु (भाणजी) और लक्ष (लाखा) आदि राजाओंने किया था । आबू पर इसने एक लाख सोना महोर खर्च के प्रतिष्ठा, संघभक्ति और स्वामिवच्छल किया था ।

भीमसिंह के सौधशिखरी जिनमन्दिर में छोटी बडी जिन-प्रतिमाओं की संख्या इस मुताबिक समझना चाहिये—

१ धातुमयमूलनायक—आदिनाथ ।

४ मूलनायकजी के परिकर में छोटी ।

४ धातुमय इतर प्रतिमा ।

३८ पाषाणमय जिनप्रतिमा ।

५ मूलद्वार के ऊपर छोटी पाषाण प्रतिमा ।

१ श्रीगौतमस्वामीजी की मूर्त्ति ।

६४ देवकुलिकाओं की प्रतिमा ।

२० देहरीगत प्रतिमाओं के परिकर में छोटी ।

४ खरतरवसहि (चोमुख मन्दिर)—

यह मन्दिर खरतरगच्छीय संघ के तरफ से बना है। परन्तु वर्त्तमान में लोग इसको ' सिलावटों का मन्दिर ' कहते हैं। यह तीन खंडवाला चोमुख मन्दिर हैं, जो बहुत ऊंचा और रमणीय है। इसके प्रथम खंड में आदिनाथ, सुमतिनाथ, शान्तिनाथ और पार्श्वनाथ, तथा द्वितीय खंडमें श्रीपार्श्वनाथादि प्रतिमाएँ मूलनायक तरीके विराजमान हैं, जो सं० १५२१ और १५२३ की प्रतिष्ठित हैं और प्रतिष्ठाकार खरतरगच्छीय श्रीजिनहर्षसूरिजी हैं। इसी प्रकार तृतीयखंड में भी पार्श्वनाथ की चार प्रतिमाएँ स्थापित हैं। तीनों खंड में मूलनायक सहित कुल प्रतिमाएँ ६६ हैं।

इस प्रकार आबुदेलवाड़े में सभी श्वेताम्बर जैनमन्दिरों की छोटी बड़ी जिनमूर्त्तियाँ संख्या में १४८७ हैं। जिनमें विक्रम सं० १०८८ से १७५२ तक की प्रतिष्ठित मूर्त्तियाँ है और उनके प्रतिष्ठाकार जुदे जुदे कई आचार्य हैं।

ओरिया के महावीर मन्दिर और परमार्हत् राजा कुमारपाल के शान्तिनाथ मन्दिर में छोटी वडी सब मिलाकर कायोत्सर्गस्थ प्रतिमाओं के सहित १० जिनप्रतिमाएँ हैं। इन दोनों मन्दिरों में से एक ओरिया गाँव में और दूसरा सोमेश्वर के सामने स्थित है।

अचलगढ़–आबू—

१ अचलसी अमरसिंह जैन कारखाना जो अचलगढ की पेढी है। उसके एक कमरे में एक गुंबजवाला जिनमन्दिर है जिसमें मूलनायक श्रीकुन्थुनाथ भगवान् की धातुमय प्रतिमा

स्थापित है। इसके अलावा इस मन्दिर में १६८ धातुमय प्रतिमा और भी हैं जो छोटी बडी सब तरह की हैं।

२ अचलगढ के चतुर्मुखविहार नामक मुख्य मंदिर के सामने के मैदान में श्री ऋषभदेवस्वामी का मंदिर है, जो चोवीस जिनालय है। इसमें छोटी बडी सब मिलाकर देवकुलिकाओं के सहित २७ जिनप्रतिमा, एक जोड चरण पादुका और एक देवी की मूर्त्ति है।

३ चतुर्मुख-विहार—

इस विशाल और उच्चतम मन्दिर को प्राग्वाटज्ञातीय संघवी सहसा शाहने बनवाया है। इसके चारों द्वारों में विशालकाय अतिसुन्दर धातुमय प्रतिमाएँ विराजमान हैं, जो स्वर्ण के समान और दर्शकों के चित्त को अत्यानन्द उत्पन्न करने वाली हैं। इस मन्दिर के मुख्य द्वार उत्तर में मूलनायक श्रीआदिनाथस्वामी की जो विशाल प्रतिमा स्थापित है, उसकी पलांठी के नीचे लिखा है कि—

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुन सुदि १० दिने श्री अचलदुर्गे राजाधिराज श्री जगमालविजयराज्ये प्राग्वाटज्ञातीय सं० कुरपाल पुत्र सं० रत्ना, सं० धरणा, सं० रत्नापुत्र सं० लाखा, सं० सलखा सं० सोना; सं० सालिग भा० सुहागदे पुत्र सं० सहसाकेन भा० संसारदे पुत्र खीमराजं द्वि० अनुपमदे पुत्र देवराज, खीमराज भा० रमादे पुत्र जयमल्ल, मनजी प्रमुख युतेन निजकारित चतुर्मुखप्रासादे उत्तरद्वारे पित्तलमय—मूलनायकं श्री आदिनाथबिंबं कारितं, प्र० तपागच्छनायकश्रीसोमसुंदरसूरिपट्टे

श्रीमुनिसुंदरसूरि–श्रीजयसुंदरसूरि पट्टे श्रीविशालराजसूरि पट्टे श्रीरत्नशेखरसूरि पट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरि–श्रीसोमदेवसूरि शिष्य श्रीसुमतिसुंदरसूरि शिष्य गच्छनायक श्रीकमलकलशसूरि शिष्य संप्रतिविजयमान गच्छनायक श्रीजयकल्याणसूरिभिः श्री चरणसुंदरसूरि प्रमुखपरिवारपरिवृतैः । सं० सोना पुत्र सं० जिणा भ्रातृ सं० आसाकेन भा० आसलदे पुत्र.....युतेन कारितप्रतिष्ठामहे श्रीरस्तु । सूत्रवाछा पुत्र सू० देवा पुत्र सू० अरबुद पुत्र सू० हरदास ।

—विक्रम सं० १५६६ फाल्गुन सुदि १० के दिन अचलगढ के राजाधिराज श्रीजगमालजी के शासन काल में पोरवाड सं० कुरपाल के पुत्र सं० रत्ना, सं० धरणा, सं० रत्ना के पुत्र सं० लाखा, सं० सलखा, सं० सोना, सं० सालिग, सालग की स्त्री सुहागदे के पुत्र सं० सहसाकने अपनी स्त्री संसारदे उसका पुत्र खीमराज, दूसरी स्त्री अनुपमदे का पुत्र देवराज, खीमराज की स्त्री रमादे के पुत्र जयमल्ल, मनजी प्रमुख कुटुम्ब सहित खुद के बनवाये चतुर्मुख मन्दिर के उत्तर द्वार में धातुमय मूलनायक आदिनाथजी का बिम्ब कराया ।

तपागच्छनायक श्रीसोमसुन्दरसूरि, तत्पट्टे मुनिसुन्दरसूरि, जयसुन्दरसूरि, तत्पट्टे विशालराजसूरि, तत्पट्टे रत्नशेखरसूरि, तत्पट्टे लक्ष्मीसागरसूरि–सोमदेवसूरि, उनके शिष्य सुमतिसुन्दरसूरि, उनके शिष्य गच्छनायक कमलकलशसूरि के शिष्य वर्त्तमान गच्छनायक जयकल्याणसूरिजीने चरणसुन्दरसूरि प्रमुख शिष्य परिवार से उसकी प्रतिष्ठा की ।

प्रतिष्ठा का महान् उत्सव सं० सोना के पुत्र सं० जिणा और आसाकने अपनी स्त्री आसलदे तथा उसके पुत्र परिवार से कराया। सलावट वाछा के पुत्र सू० देवा के पुत्र सू० अरबुद पुत्र सलावट हरदासने यह मूर्त्ति बनाई।

इस लेख से चतुर्मुखविहार (अचलगढ—मन्दिर) का बनवानेवाला पोरवाड सं० सहसाशाह सिद्ध होता है। उक्त लेख के अनुसार सहसाशाह की वंश परम्परा इस प्रकार है—

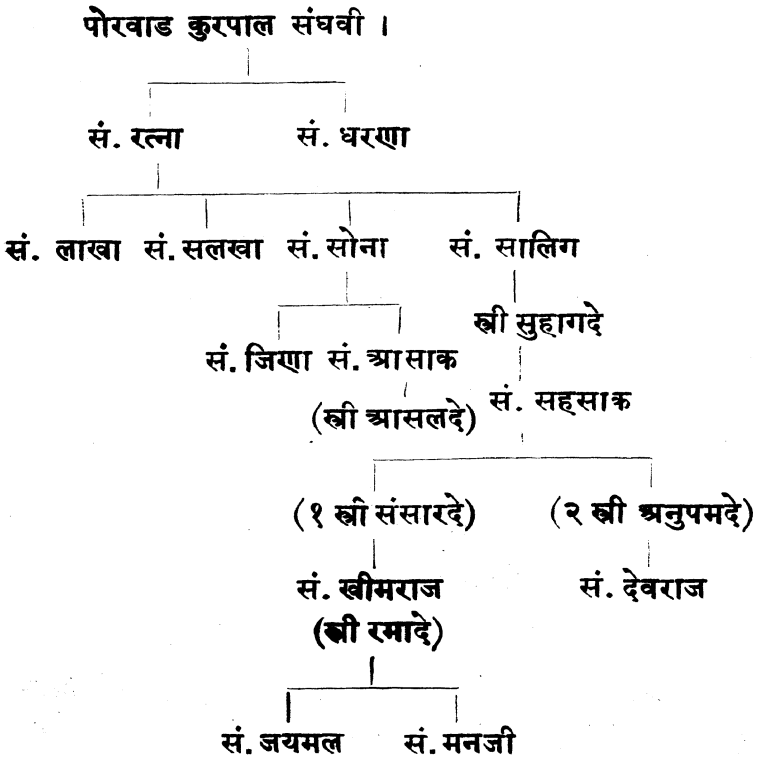

श्रीकमलकलशसूरिजी से तपागच्छ में एक कमलकलशा नाम की शाखा जुदी निकली है। उक्त लेखवाली धातुमय आदिनाथ प्रतिमा के प्रतिष्ठा-कार जयकल्याणसूरिजी इसी शाखा के आचार्य समझना चाहिये, जिनकी वंशावली उक्त लेख में ही मौजुद है।

इसी चतुर्मुखविहार के प्रथम खंड में द्वितीयादि (पूर्व, दक्षिण और पश्चिम) द्वारों में स्थापित धातुमय जिनप्रतिमाओं की पलांठी के नीचे प्रायः एक ही किस्म के लेख हैं। उनमें से एक प्रतिमा का लेख नीचे मुताविक है—

संवत् १५१८ वर्षे वैशाख वदि ४ दिने मेदपाटे श्रीकुंभलमेरुमहादुर्गे राजाधिराजश्रीकुंभकर्णविजयराज्ये तपापक्षीयश्रीसंघकारिते श्रीअरबुदानीतपित्तलमयप्रौढश्रीआदिनाथमूलनायकप्रतिमालंकृते श्रीचतुर्मुखप्रासादे द्वितीयादिद्वारे स्थापनार्थं श्रीतपापक्षीयश्रीसंघेन श्रीआदिनाथबिंबं कारितं। डूंगरपुरनगरे राउलश्रीसोमदासराज्ये ओसवाल सा० सामा भा० कर्मादे पुत्र सा० माला सा० साल्हा कारितविस्मयावहमहोत्सवैः प्रतिष्ठितं तपाश्रीसोमसुंदरसूरिपट्टे श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयसुंदरसूरि, मुनिसुंदरसूरिपट्टे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः श्रीसोमदेवसूरिप्रमुख परिवारपरिवृतैः। डूंगरपुरे श्रीसंघोपक्रमणासूत्रधारलुंभालांपाद्यैर्निर्मितं।

—विक्रम सं० १५१८ वैशाख वदि ४ के दिन श्रीकुंभलमेरुमहादुर्ग (मेवाड) के महाराजा कुंभकर्ण के वर्त्तमानराज्य

में तपागच्छीय संघ के कराये और आबू पर लाये हुए पित्तलमयय प्रौढ आदिनाथ के बिंब से शोभित श्रीचतुर्मुखमन्दिर में द्वितीयादि द्वारों में स्थापन करने के लिये तपागच्छ के संघने आदिनाथ का बिम्ब कराया और उसकी प्रतिष्ठा डूंगरपुर में राउल श्रीसोमदास के राज्य में ओसवाल शा० साभा की स्त्री कर्मादे के पुत्र माला और सल्हा के कराये हुए आश्चर्यजनक प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्वक तपागच्छीय श्रीसोमसुन्दरसूरि के पटधर मुनिसुन्दरसूरि और जयसुन्दरसूरि, उनके पटधर रत्नशेखरसूरि के शिष्य श्रीलक्ष्मीसागरसूरिजीने आचार्य सोमदेवसूरि प्रमुख परिवार के सहित की। डूंगरपुर के श्रीसंघ की आज्ञा से सलावट लुंभा और लांपा आदिने यह मूर्त्ति बनाई।

प्रतिष्ठा महोत्सव का करानेवाला साल्हा डूंगरपुर का रहनेवाला और राउलसोमदास का मंत्री था। इसने १२० मण वजनवाली पित्तलमय एक जिनप्रतिमा तैयार कराई थी। ऐसा गुरुगुणरत्नाकर—कारने लिखा है। अस्तु. चतुर्मुखविहार नामक अचलगढ़ के मुख्य मन्दिर में सब मिलाकर धातुमय प्रतिमा १४ और पाषाणमय ६ प्रतिमाएँ हैं।

इस प्रकार अर्बुदगिरि नामक पवित्र तीर्थ के जिनमन्दिरों (देलवाडा, ओरिया, कुमारपाल और अचलगढगत मन्दिरों) में धातु और पाषाण की छोटी बड़ी सब जिनप्रतिमाओं की संख्या १७१३ हैं। यह संख्या हमने खुद आबु रह कर सं० १९८६ चैत्रसुदि ११ शुक्रवार के दिन स्वयं सावधानी से गिन करके लिखी है।

पवित्र तीर्थ श्रीअरबुदाचल (आबूजी) की दयाणा १, लोटाणा २, नांदिया ३, अजारी ४ और वामनवाड ५; ये पंचतीर्थी मानी जाती हैं और इन पंचतीर्थियों में मूलनायक श्रीमहावीरस्वामी की सुन्दर और प्राचीन प्रतिमाएँ विराजमान हैं, जो जीवितस्वामी के नाम से प्रसिद्ध हैं। नांदिया, अजारी और वामनवाड इन तीनों तीर्थों में ५२ जिनालय सौधशिखरी भव्य जिन मन्दिर बने हुए है।

दयाणा में ४, लोटाणा में ७, नांदिया में ९२, नांदिया गांव में १०, अजारी में १६६ और वामनवाड में ९५ इस प्रकार आबूजी की पंचतीर्थी के जिन-मन्दिरों में देवकुलिकाओं सहित छोटी बड़ी पाषाण और धातु की सब मिला कर ३७४ जिन प्रतिमाएँ हैं जो विक्रम की १२ वीं और १३ वीं सदी की प्रतिष्ठित हैं। पिंडवाडा-स्टेशन से वामनवाड २ कोश, नांदिया ३ कोश, लोटाणा २ कोश, और दयाणा २ कोश; अथवा रोहिडा-स्टेशन से नीतोरा ४ कोश, नीतोरा से दयाणा २ कोश, लोटाणा २ कोश, नांदिया २ कोश, और वामनवाड ३ कोश; इस प्रकार एक एक के परस्पर अन्तर (छेटी) जानना चाहिये।

सिरोही के जैनमंदिर और जिनप्रतिमाएँ—

नम्बर.	मूलनायक.	संवत्.	पाषाण प्रतिमा.	धातु प्रतिमा.	आचार्य प्र०	पादुका.
१	शान्तिनाथ	१५५१	५१	३५	२	०
२	चोमुखजी	१६३४	२९	७	०	२६
३	गोडीपार्श्वनाथ	१७८८	४	५	०	०
४	शीतलनाथ	०	२	०	०	०
५	पार्श्वनाथ	१७६६	८	३	०	०
६	कुन्थुनाथ	१६५३	१	२	०	०
७	महावीर	१७३६	२	२	०	०
८	शीतलनाथ	०	२	२	०	०
९	आदिनाथ	१४२४	८०	६५९	०	१
१०	अजितनाथ	१६४४	७५	१७२	३	१
११	संभवनाथ	१५३४	१	१४	०	०
१२	नमिनाथ	१६८३	१	२	०	०
१३	ऋषभदेव	१३२३	११	५	०	०
	☞ कुलजोड		२६७	९०८	५	२८

ये तेरह सौधशिखरी जिनमन्दिर एक ही श्रेणी में स्थित हैं और इस मुहल्ले का नाम भी देहरा–सेरी है। इनमें आदिनाथ और अजितनाथ का मन्दिर बावन जिनालय है और सबसे

बडा चोमुख–मन्दिर है, जो ऊपरा ऊपरी तीन खंडवाला है। इन सभी जिनमन्दिरों में छोटी बडी पाषाणमय प्रतिमा २६७ और धातुमय प्रतिमा ९०८ मिला कर ११७९ जिन मूर्त्तियाँ (प्रतिमाएँ) बिराजमान हैं। इन के अलावा आदिनाथ के मन्दिर में तीन चोवीसी का पट्टक १, नन्दीश्वरद्वीप का पट्टक १ तथा सिद्धाचल का पट्टक १ और अजितनाथ–मन्दिर में श्री सिद्धचक्रजी का पट्टक १ एवं ४ पट्टक हैं।

देहरा–सेरी के सिवाय श्रीजीरावला–पार्श्वनाथ का मन्दिर जिसमें पाषाणमय प्रतिमा ९ और धातुमय प्रतिमा २९ हैं, और श्रीचिन्तामणि–पार्श्वनाथ के मन्दिर में पाषाण की १ तथा धातु की ७ प्रतिमा हैं।

शहर के बाहर थूभ नामक स्थान पर बने हुए श्रीमहावीर मन्दिर में पाषाण की ३ और धातु की ३ प्रतिमा स्थापित हैं। इस प्रकार सिरोही के सोलह मन्दिरों की छोटी बडी सभी जिनप्रतिमाओं की संख्या १२२७ हैं। इन में धातुमय गट्टाजी भी शामिल समझना चाहिए और आचार्य प्रतिमा ६ तथा चरण–पादुका जोड ४७ इन के अलावा जानना चाहिये। सिरोही भी इस प्रान्त (मारवाड) में अर्ध शत्रुंजय माना जाता है। अतएव यह स्थान भी पवित्रतीर्थ और दर्शनीय है।

पं० कान्तिविजयजी रचित 'सिरोहीचैत्य परिपाटी–स्तवन' में सिरोही के जिनमन्दिरों की संख्या १८ दी है, उसमें उन्होने छोटी दो देरियाँ जो बावन जिनालय मन्दिर के अन्तरगत हैं, उनको

जुदी गिन कर अठारह की संख्या पूर्ण की है। चैत्यपरिपाटी-स्तवन नीचे मुताबिक है—

होरी—सांवरो सुखदाई—देशी—

प्रभुजी से प्रीति लगाई, सुमति मोरी अति हरखाई ॥ टेर ॥
पास आस पूरे भविजन की, जीरावलो जग मांई।
चिंतामणि चित चिंता चूरे, इन बिच क्या है नवाई ॥ १ ॥
शांतिजिनेश्वर मूर्त्ति मनोहर, जगगुरु पदवी पाई।
नाभिनरेश्वर नंदन निरख्यो, मुगति बधुकी वधाई ॥ २ ॥
गोडीपास शंखेश्वर साहेब, कीर्त्ति जगमें गवाई।
कुंथु कल्पतरु वीरजिनेश्वर, शीतल ऋषभ सवाई ॥ ३ ॥
पद्मप्रभ जिन सुमति सुहंकर, अजित चिंतामणि पाई।
संभव नेमिजिणंद दयालु, ऋषभ श्रीवीर दुहाई ॥ ४ ॥
नगर सिरोही सुरपुरी मानुं, जिनघर हार हीराई।
कांतिविजय प्रभु चरण कमल को, दर्शन जगत बढाई ॥ ५ ॥

विक्रम सं १९८६
वैशाख शुद १५

मुनि यतीन्द्रविजय.
मु० खुडाला (मारवाड)

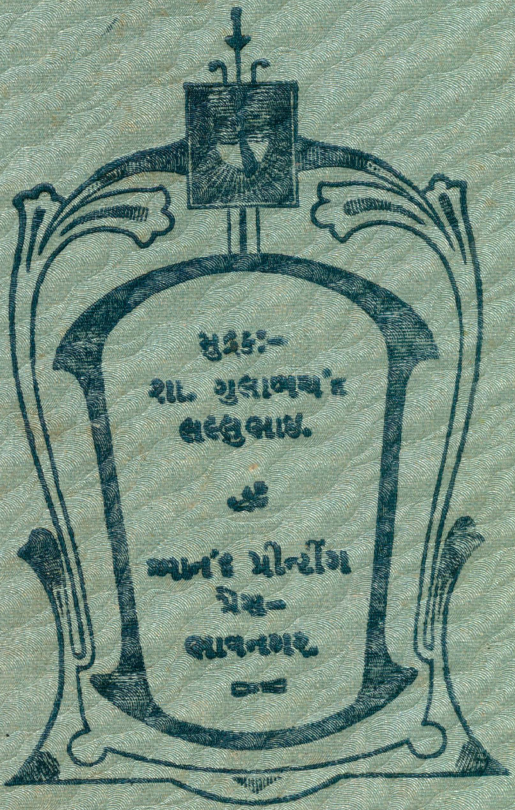
મુદ્રક:-
શા. ગુલાબચંદ
લલ્લુભાઈ.
આર્ય પ્રીન્ટીંગ
પ્રેસ-
ભાવનગર.